भूमिका।

दोहा–अति रति गति मति एक करि, विविध विवेक विलास।
रसिकन को रसिकप्रिया, कीन्हीं केशवदास ॥

कविकुल कुमुद कवि केशवदास की प्यारी हितकारी महारसवारी कविता का गौरव जगत् प्रख्यातहे तिसपर इस " रसिकप्रिया " की कविता तो सविताके समान जनप्रियहोरहीहै हो क्यों न ? इसमें उक्त कविने कवित्त और दोहा के मध्य करुणारस, हास्य रस, बीभत्सरस, शृंगाररस, वीररस अरु भयानक रस संतत निरंतर अरु वेर सहित विचार कर वरणाहै इस रसिकप्रियाके पढनेसे रति मति अतिशय करके बढती है और सब रस विरस कहे नवरस तिनकी रति का ज्ञान होताहै तथा मूल स्वार्थ चातुर्यताकी प्राप्ति होती है और तब सब राजा प्रजाको वल्लभ होताहै तथा, इसमें श्रीकृष्ण राधाको वर्णन हैइससे तिनके ध्यानको परमार्थभी होताहै भावरसिकप्रियाकी प्रीतिते दोनों बातें स्वार्थ और परमार्थकी सिद्धि होतीहैं । इसमें प्रच्छन्न प्रकाश संयोग वियोग वर्णन, नायक नायका वर्णन, स्वकीया परकीया वर्णन, दर्शन वर्णन, चेष्टादि मिलनस्थान वर्णन, राधा कृष्ण हावभाव वर्णन, अष्टनायका नायक संभोगशृंगार वर्णन, दशदशा वर्णन, मानवर्णन । विप्रलंभशृंगार मानमोचन वर्णन । करुणादि विरहप्रवास वर्णन । सखी जन वर्णन, नवरस वर्णन । चतुर्विधिवृत्तिरस वर्णन रस अनरस वर्णन, आदि नानाप्रकारके वर्णन हैं और फिर तिनके भेदोंका वर्णन है भाव कोई विषय रसके अंग प्रत्यंग का शेष नहीं रहा तिसपर महामान्य सरदार कविने सोनेमें सुगंधकिया है अर्थात् श्री १०८ काशीराजकी आज्ञासे बहुतही सुंदर और रोचक तिलककियाहै तथा किसी २ स्थानपर नारायण कवीश्वरनेभी सुंदर भावभरित अर्थ किया है जिनका विशेष वर्णन कहां तक लिखें सज्जन रसिकवर आप अवलोकन कर आनंदके भागी होंगे । इन्हीं कविवर कविकेशवदासप्रणीत "रामचन्द्रिका–सटीक" कोभी हमने अत्यंत सुंदर और शुद्ध छापाहै जिसका मूल्य २ रु० है.

आपका कृपाकांक्षी–

खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष–मुम्बई.

रसिकप्रिया–

भाषाटीका समेत।

सरदार कवि कृत.

दोहा–सीता सीतापति करत, शीतल हीतल जासु ॥
तासु दास सरदार बनि, छाडो करम कुवासु ॥ १ ॥
उदितउदित नंदहै, जगमें आनँदकंद ॥
ईश्वर भूपति भावते, जस राकाकेचंद ॥ २ ॥
करतजु निशिदिन भूपमणि, शुचिविलास सुखसंग ॥
सो तरंगिनी तासुकी, भाषत एक तरंग ॥ ३ ॥
निशाअंतजप रामप्रभु, सीतालषण समेत ॥
जागत हैं भूपालमणि, बहुविप्रन धनदेत ॥ ४ ॥

छंदभुजंगप्रयात।

रहैं यामिनीभूमिकेनाथजागे। सदानाथसीताहुवोपाँइपागे ॥
पढेवेदताविप्रवंदीउचारैं। चहूँओरसौधामकेदिव्यद्वारैं ॥
बजीनौबतें ढोलओ झाँझनीकी। भली साहनाई करन्नालपीकी ॥
नचैंपातुराँ द्वारपैभूपऐसी। मनोसिद्धशोभा धरेरूपवैसी ॥
सुहायेकई भूमिकेभूपभारी। अयेराजके द्वारआनंदकारी ॥
सबैशूरसानी लयेसंगथोरे। जुहारे करैं भूमछूराखघोरे ॥
महाराजश्रीईश्वरनैनखोले। तबैद्वारकेपालतोमैनबोले ॥ ५ ॥

छप्पै–महाराजमणिमुकुटनाथकाशीप्रतापवर।
महावीर रणधीर धरमअवतारधरा पर ॥
सीतापति पदपद्म प्रेमपालक अधिकारी।
चंचरीक चितचार चंदजस चतुरविहारी ॥

सरदारभूमि पालनसकलस्वच्छस्वच्छशोभाठये ।
तजजानजोरयुग पाणिसबदेवदरशकारणअये ॥ ६ ॥
दोहा–सुनतश्रवणमंगल करण, नित्यक्रिया करचार ॥
दिव्यदिवाकरसेदिपत, अयेदेवदरवार ॥ ७ ॥
करिप्रणाम महिपाल मणि, शीशनाइ करजोर ॥
देनलगे आशीषवर, विप्रवृन्द सबओर ॥ ८ ॥
छप्पै–सरससुयश शशिउदित होहिदिनरैनिप्रकाशित ।
मारतण्डउद्दण्डतेजब्रह्मण्डविलासित ॥
पंचदेवपरपूरक्रिया दृगकोरनिहारैं ।
दुश्मनदावादारपाँयपर शीशशुधारैं ॥
सरदारस्वच्छ अतलच्छ ग्रह अच्छअच्छ क्रीडाकरो ।
पुत्रनसमेतईश्वर नृपति जो शीशविप्रआशिषधरो ॥ ९ ॥
दोहा–बंदीवर विरदावली, बोलनलगे अनूप ॥
शत्रुनकेशिर अम्बदे, विचरोभारी भूप ॥ १० ॥

विरद ।

भूपमणिमुकुट विकटभटपटकनकटिपटतटतूणीरवीरवर वर-छीकृपानपान कमानतान शत्रुप्राण भंजन रंजन जगमित्रमित्र प्रताप तापत्रयखंडन। महाराज ऋतुराजसाज साजनसमाज सुमन-दराज कविराज भ्रमरमकरंद वृंदलच्छ अच्छ स्वच्छदिनदान ग्रीषमगुमान अरिसरतानमुखावन उदंडवाग्शूर नृरमंडन पावसप्र चंड भूअमंडल पालनखल वलपालन गजराजघनसवनशैलवरसपा-सानसान गरजतोपगोलागाज अरिपुर पहारफारन शरदजसशशि हेमंत शिशिरसुरससकलसभा शोभन पुत्रपरिवार पुनपालन ॥११॥

दोहा–पालनयश शालन, अरिन चालन दारिद भूमि ॥
रहोवीर आनंदयुत, जाहिरजगत सुधूमि ॥ १२ ॥

तोटक ।

महिपालसबैमिलिभूपलसे । करजोरिसुपाईनशीशरसे ॥
मिलिशूरसबैसरदारजिते । करजोर उहे रतआनतिते ॥

सरजालिखवाठरहरुचिसे । निजथाननथानपशुविसे ॥
नरजासुनरायण नामलसें । कर दक्षिणआपवली विलसें ॥
लघुबंधुमहीपतिके कहिये । बलरवारथपारथसोलहिये ॥
तिनतेंउतभूपनकीअवली । बलवीरजु धीरनकी सवली ॥
शहिजादिनके मिलियूथ रहे । रुखपावतबोलतबोलचहे ॥
इतशूरअनूपअनूपलसे । सबअत्रअनूपमअंगकसे ॥ १३ ॥

दोहा–तहाँआइ सरदार कवि, दैअशीप सुखमान ॥
आयसुपाय महीपकी, बैठिगयेनिजथान ॥ १४ ॥
ताहिनिहारि महीपमणि, कहेवैन सुखदैन ॥
रसिकप्रिया भूपणरचो, कविकुलआनँदऐन ॥ १५ ॥
धरिशिर आयसु भूपकी, मनमहँमानिअनंद ॥
रसिकप्रिया भूपणरचो, जसराकाको चंद ॥ १६ ॥
शिवदृग गगनोग्रहसुपुन, रदगणेशकीशाल ॥
जेठशुक्लदशमीसुगुरु, करोग्रंथसुखमाल ॥ १७ ॥
वासललितपुरनंदहै, हरिजनकोसरदार ॥
वंदीजनरघुनाथको, पालतपवनकुमार ॥ १८ ॥
नहिं विद्याबलवालमति, नहींअंगमेजोर ॥
लखकपूतपालनकरत, श्रीकेशरीकिशोर ॥ १९ ॥
कहुँकहुँनारायणकियो, याकोतिलकअनूप ॥
चित्तवृत्तिदैकरिकृपा, मुदितभयेसबभूप ॥ २० ॥

मूल छप्पै ॥

एकरदनगजवदनसदनवुधिमदनकदनसुत ।
गौरिनंदआनंदकंदजगवंदचंदयुत ॥
सुखदायकदायक सुकृतजगनायकनायक ।
खलघायक [illegible]कदरिद्रसबलायकलायक ॥

गुणगण अनंतभगवंतभवभगतवंतभवभयहरण।
जयकेशवदासनिवासनिधिलंबोदरअशरणशरण ॥ १ ॥

टीका—या छप्पय में कवि मंगलाचरण करत हैं ॥ मंगलाचरण को विचार यह कि ग्रन्थ निर्विघ्न निबाहै सो तीनि रीतिको होतहै नमस्कारात्मक १, आशीर्वादात्मक २, वस्तुनिर्देशात्मक ३ ॥१॥

अथनमस्कारात्मकलक्षण।

दोहा—करिप्रणाम सुमिरणकरै, इष्टदेवताजोइ ॥
नमस्कारआत्मकसुतो, ग्रंथनमतिते होइ ॥ १ ॥

आशीर्वादात्मकलक्षण।

आवतहै जयशब्दजहँ, देव नामकेसंग ॥
मंगलआशिर्वादसो, कहत सुकविरुचि रंग ॥ २ ॥

वस्तुनिर्देशलक्षण।

नमस्कारजयरहितपद, ग्रंथवस्तुकोरूप ॥
जानिपरैसुरविनयजत, कहतताहिकविभूप ॥ ३ ॥

तो इहां इतनी जानलीजै दो प्रथमधारे तो एकरूप हैं ॥ काहे नमस्कार जय खाली नाहीं होत ॥ अरु वस्तु निर्देश को भी पाछे अर्थ कहैंगे ॥ अथ नमस्कारात्मक को अर्थ यह है कि एक रदन है जिनके। एकको आशय यह कि, अभिमान रूप जो दशन सो नाशकीन्हों है जिनने। काहे आपुन आपनो स्वरूप हीनकरदयो गज हाथी-वत् वदनते इहां जो केशव गजवदन कहो है तामें यह जनावत कि, प्रणवरूप गजानन हैं जो दोई कुंभ हैंहैं तीनके अंककी रीतिसे तीनको अंक मध्यमें हीनहोइ हैं जानो कुंभ जो उठेहैं सोइ तीनके अंकवत् ॥ अरु शुण्ड जो है सोई है प्रणव को दण्ड. आशय यह कि, प्रथम प्रणव उच्चारण कियो ॥ यह प्रणव अरु गणेश कैसेहैं बुद्धिके घर मदन जो काम ताको कीन्हों है कदन नाश जिन शंभु तिनके हैं सुत पुत्र ॥ अरु प्रणव में मदन कदन करता है जाके सुतका तीनदेव प्रणवमेंहैं ॥ गणेश कैसे हैं गौरीके नन्द हैं अरु प्रणव गौरी माया नंद पुत्र मय संसार ताके है आनन्दके कन्द जर जगवन्दव दोहुन में चन्द्रयुत दोऊ गणेश के भालमें चन्द्रहै प्रणवपै चन्द्राकार मात्रा है सुखदातारहैं ॥ सुहृत्व के भी दातारहैं ॥ गण जो देवहैं तिन के नायकहैं इन्द्र ॥ तिनके भी नायकहैं गणेश ॥ अरु प्रणव गणनायक ब्रह्मा तिनके नायकहैं ॥ हाल दायकहैं ॥ अरु दरिद्र घायकहैं ॥ अरु सब लायक जो मन्त्रशास्त्र अरु गुणको जो, दमकद्दर सो हैं अमन्द दोहुन में अरु भव जो संसार ता विषे भगवन्तहैं भग ऐश-

म्यवन्तहैं अशरण के शरणहैं ॥ दोऊ जय करो केशवदास की कहे सकल निधि निवास स्थान हो औ लम्ब है उदर अशरण शरण हो ॥ प्रणवको भी जा विषे सर्व सिद्धरहत अशरण जेहैं वेद जिन आनको शरण नाहींराखो सो भी जाके शरणहैं ॥ प्रथम प्रणव उचार वेद पाठ लोकमें भी प्रसिद्ध है ॥ यह तो परण अर्थ अब गणे श में या प्रश्न ॥ सदन बुद्धिदाता नाहिं होत ताकी यह उत्तर के दांत नहीं तो अबु-द्धि सदन कहावैगो ॥ अरु मदन कदन प्रथम करचुके तो कृष्ण ने मदन उत्पन्न कीन्हों ताको कदन कहियो अनुचित तहाँ मदन धतूरा को नाम है ॥ तो यामें विशि-सता के पुत्र कौन नीकीतहां ऐसी भी कहैहैं कि कदनहीं है जिनको कदन में नाश करने की है सामर्थ्यता जिन को तो या अर्थ में एक मदन मात्ररहो यामें सब संसार-आयो यह अति व्याप्ती है ॥ तहाँ मदनही है अरु कद शरीर भी नाहीं है ॥ ज्ञानरूप शिव सुतहैं अरु कोई कहै कि यवन भाषा काहे राखी तहाँ भाषा लक्षण,

दोहा–भाषा व्रजभाषा रुचिर, कहैं सुमति सब कोय ॥
मिलै संस्कृत फारसी, जो अति प्रगटी होय ॥

अथवा मद संयुक्ति है जिन को गजवदनन कदनसु न नाश नाहीं जिनको तिनके पुत्र हैं इति ॥ अब सुगम अर्थ कीजियत है यामें केशव ने सब पद साभिप्राय दियेहैं ॥ परकरांकुर अलंकार धर गौरीनन्द को यह अभिप्राय कि गणेश गोद महामंगल दाता हैं ॥ ताको लक्षण ॥ दोहा ॥ साभिप्राय विशेष जहँ, परकर अंकुरनाम ॥ एक है रदन जिनके या एकदन्तको गज ॥ गजायुर्वेद में शुभ लिखो है ॥ यामें कोई कहै दो अशुभ सो नहीं जैसे हाथ में तिल उत्तम सामुद्रिक वारने कहो तो का आन अशुभ है ॥ सदन बुद्धि को अभिप्राय तुम बुद्धि पावहो इत्यादि जानलीजै ॥ अरु वस्तु निर्देश अर्थ ॥ एक है रदन दशन जिन के हाथ में का जब कंस बधो है तहां गये कृष्ण तब एककुवलयापीड़ को दांत आप लयो एक बलराम सदन बुद्धिके धरहैं मदन कदन नाशभयो का अनंग ताहि कीन्हों है उत्पन्न जिनने अरु गौरी यशोदा नन्द तिनको आनन्ददेन हारे जग जिनकी वन्दना करता है ॥ चन्द्रयुत चन्द्रवंश कहि ॥ अथवा चन्द अंतमें देके कृष्णचन्द्र अथवा मोर चन्द्रिका है ॥ शिर पै सुखदायकहैं भूभार हरण सुकृत दायकहैं इत्यादि सुगमहैं सुखके गण समूह जो अनन्त बलरामहैं सो भवसंसार को भगवन्त ज्ञान भय हरण करता अरु लंबो है उदर जिनको यशो-दाको माटी के मिस सब ब्रह्माण्ड आपने मुख में दिखायो देखे जो केशव जिनकी जप यामें देवरतिभाव ध्वनि है ॥ सुभावोक्तिअलंकार लक्षण जाको जैसो रूप गुण कहिये तैसो जान ॥

गुणगण अनंतभगवंतभवभगतवंतभवभयहरण।
जयकेशवदासनिवासनिधिलंबोदरअशरणशरण ॥ १ ॥

टीका–या छप्पय में कवि मंगलाचरण करत हैं ॥ मंगलाचरण को विचार यह कि ग्रन्थ निर्विघ्न निबाहै सो तीनि रीतिको होतहै नमस्कारात्मक १, आशीर्वादात्मक २, वस्तुनिर्देशात्मक ३ ॥१॥

अथनमस्कारात्मकलक्षण।

दोहा–करिप्रणाम सुमिरणकरै, इष्टदेवताजोइ ॥
नमस्कारआत्मकसुतो, ग्रंथनमतिते होइ ॥ १ ॥

आशीर्वादात्मकलक्षण।

आवतहै जयशब्दजहँ, देव नामकेसंग ॥
मंगलआशिर्वादसो, कहत सुकविरुचि रंग ॥ २ ॥

वस्तुनिर्देशलक्षण।

नमस्कारजयरहितपद, ग्रंथवस्तुकोरूप ॥
जानिपरैसुरविनयजत, कहतताहिकविभूप ॥ ३ ॥

तो इहां इतनी जानलीजै दो प्रथमवारे तो एकरूप हैं ॥ काहे नमस्कार जय खाली नाहीं होत ॥ अरु वस्तु निर्देश को भी पाछे अर्थ कहेंगे ॥ अब नमस्कारात्मक के अर्थ यह है कि एक रदन है जिनके। एकको आशय यह कि, अभिमान रूप उ दशन सो नाशकीन्हों है जिनने। काहे आपुन आपनो स्वरूप हीनकरदयो गज हार्थ वत् बदनते इहां जो केशव गजबदन कहो है तामें यह जनावत कि, प्रणवरूप गजान हैं जो दोई कुंभ तेईहैं तीनके अंककी रीतिते तीनको अंक मध्यमें हीनहोइ हैं जानो कुंभ जो उठेहैं सोइ तीनके अंकवत् ॥ अरु शुण्ड जो है सोई है प्रणव को दण्ड. आ शय यह कि, प्रथम प्रणव उच्चारण कियो ॥ वह प्रणव अरु गणेश कैसेहैं बुद्धिवे यर मदन जो काम ताको कीन्हों है कदन नाश जिन शंभु तिनके हैं सुत पुत्र ॥ अर प्रणव में मदन कदन करता है जाके सुतका तीनदेव प्रणवसेहैं ॥ गणेश कैसे हैं गौरीवे नन्द हैं अस प्रणव गौरी माया नंद पुत्र सब संसार ताके है आनन्दके कन्द ज जगबन्दत दोहुन में चन्दयुत दोई गणेश के भालमें चन्द्रहै प्रणवपै चन्द्राकार मात्र है सुखदाताहैं ॥ सुकृत के भी दाताहैं ॥ गण जो देवहैं तिन के नायकहैं इन्द्र ॥ तिनके भी नायकहैं गणेश ॥ अरु प्रणव गणनायक ब्रह्मा तिनके नायकहैं ॥ खल घायकहैं ॥ अरु दरिद्र घायकहैं ॥ अरु सब लायक जो मन्त्रशास्त्र अरु गुणको ज गणसमूह सो हैं अनन्त दोहुन में अरु भव जो संसार ता विषे भगवन्तहैं भग ऐश्व

र्य्यवन्तहैं अशरण के शरणहैं ॥ दोऊ जय करो केशवदास की काहे सकल निधि निवास स्थान हौ औ लम्ब है उदर अशरण शरण हौ ॥ प्रणवको भी जा विधे सर्व सिद्धरहत अशरण जेहैं वेद जिन आनको शरण नाहींराखो सो भी जाके शरणहैं ॥ प्रथम प्रणव उच्चार वेद पाठ लोकमें भी प्रसिद्ध है ॥ यह तो वरण अर्थ अब गणेश में या प्रश्न ॥ सदन बुद्धिदाता नाहिं होत ताकी यह उत्तर कै दांत नहीं तो अबुद्धि सदन कहावैगो ॥ अरु मदन कदन प्रथम करचुके तो कृष्ण ने मदन उत्पन्न कीन्हों ताको कदन कहिबो अनुचित तहाँ मदन धतूरा को नाम है ॥ तो यामें विक्षिप्तता के पुत्र कौन नीकीतहां ऐसी भी कहैहैं कि कदनहीं है जिनको कदन में नाश करने की है सामर्थ्यता जिन को सौ वा अर्थ में एक मदन मात्ररहो यामें सब संसार आयो यह अति व्याप्ती है ॥ तहाँ मदनही है अरु कद शरीर भी नाहीं है ॥ ज्ञानरूप शिव सुतहैं अरु कोई कहै कि यवन भाषा काहे राखी तहाँ भाषा लक्षण,

दोहा–भाषा व्रजभाषा रुचिर, कहैं सुमति सब कोय ॥
मिलै संस्कृत फारसी, जो अति प्रगटी होय ॥

अथवा मद संयुक्ति है जिन को गजवदनन कदनसु न नाश नाहीं जिनको तिनके पुत्र हैं इति ॥ अब सुगम अर्थ कीजियत है यामें केशव ने सब पद साभिप्राय दियेहैं ॥ परकरांकुर अलंकार कर गौरीनन्द को यह अभिप्राय कि गणेश गोद महामंगल दाता हैं ॥ ताको लक्षण ॥ दोहा ॥ साभिप्राय विशेष जहँ, परकर अंकुरनाम ॥ एक है रदन जिनके का एकदन्तको गज ॥ गजायुर्वेद में शुभ लिखो है ॥ यामें कोई कहै दो अशुभ सो नहीं जैसे हाथ में तिल उत्तम सामुद्रिक वारेने कहो तो का आन अशुभ है ॥ सदन बुद्धि को अभिप्राय तुम बुद्धि घरहो इत्यादि जानलीजै ॥ अरु वस्तु निर्देश अर्थ ॥ एक है रदन दशन जिन के हाथ में का जब कंस बधो हैं तहां गये कृष्ण तब एककुवलयापीड़ की दांत आप लयो एक बलराम सदन बुद्धिके परेहैं मदन कदन नाशभयो का अनंग ताहि कीन्हों है उत्पन्न जिनने अरु गौरी यशोदा नन्द तिनको आनन्ददेन हारे जग जिनकी वन्दना करता है ॥ चन्द्रयुत चन्द्रवंश कहि ॥ अथवा चन्द अंतमें देके कृष्णचन्द्र अथवा मोर चन्द्रिका है ॥ शिर पै सुखदायकहैं भूभार हरण मुकत दायकहैं इत्यादि सुगमहैं गुणके गण समूह जो अनन्त बलरामहैं सो भवसंसार को भगवन्त जान भय हरण करता अरु लंबो है उदर जिनको यशोदाको माटी के मिस सब ब्रह्माण्ड आपने मुख में दिखायो ऐसे जो केशव जिनकी जय यामें देवरतिभाव ध्वनि है ॥ सुभावोक्तिअलंकार लक्षण जाको जैसो रूप गुण कहिये तैसो जान ॥

छप्पै–श्रीवृषभानुकुमारिहेतु शृंगाररूपभय ।
वासहासरसहरेमातबंधनकरुणामय ॥
केशीप्रति अतिरौद्रवीरमारोवत्सासुर ।
भयदावानलपानपियोवीभत्सवकीउर ॥
अतिअद्भुतवंचविरंचिमतिशांतसंततेशोचचित ॥
कहिकेशवसेवहुरसिकजन नवरसमेंब्रजराजनित ॥ २ ॥

इहां उक्ति कविकीते देवरति भाव ध्वनि है ॥ यह कविजनावत है कि ब्रजराज नव-
रसमें हें जाको जो रसमें प्रीतिहोइ सो ताही रस में कृष्णचन्द्रको सेवन करै अर्थ स्मरण
श्रीवृषभानु कुमारी राधा ताकेहेतु तो शृंगार रूप होतभये ॥ तहाँ प्रथमहीं रसरूप
कहियत है कि रसरूप काको कहिये॥ १॥

दोहा–मिल विभाव अनुभाव पुनि, संचारी सुअनूप ॥
व्यंगकरै थिरभावजो सोई रस सुख रूप ॥२॥

ये जो चार हैं तिनते रस उत्पत्ति होत है ॥ यह मत तो लोलट्ट भट्टको है ॥ अरु
शंकुक अनुमान कहै हैं कि उत्पत्तिका दीसि परति यह अनुमान है ॥ अरु भट्टनायक कहै
हैं कि अनुमान तो यह का कहावै कै जो कल्पना मात्र मन में निश्चय करै यह भोग
है ॥ अरु अभिनभ गुप्तपाद कहैहैं ॥ कि भोग जो दृष्टिगोचर नहीं ताको कहांते भयो
अभिव्यंजित होत है सो कहियत है कि विभावना इक नायका परस्पर ताको नाम आल-
म्बन विभाव ॥ विभाव यांहे इनके आश्रय में रहत है अरु चनवन शरद वसंत ये
उद्दीपन जो भाव जहां नाहीं तहां ताको उत्पन्न करै सो उद्दीपन अथवा प्रकाश ज्यादा
करै अरु कटाक्ष भ्रूक्षेपन अनुभाव अरु निर्वेदादि संचारीतातें स्थायी ते रस उत्पत्ति
होत है ॥ यह लोलट्टभट्ट कि मति ॥ काहे जैसे राम स्वरूप की उत्पत्ति नहीं तथापि
लीला रामते रामरूप की उत्पत्ति होत है तब शंकुककी कै उत्पत्ति तो देखबे में आवत
नहीं यहां राम देखबे में आवत अनुमान करो कै ऐसे राम रहे अथवा ये राम सद-
श हैं ॥ यह रीति अनुमान की है ॥ अरु भट्टनायक कहतहैं कि अनुमान नहीं है याको
भोग कहो काहे माया आवरणरहित जो चैतन्य परमात्मा जो रस ताको विशिष्ट जो
[illegible] सो लीला रामते होतहै अरु अभिनव गुप्तपाद कहैहैं ॥ आलम्बन कारण सत्त
अरु [illegible] भी सत्त है अरु संचारी भी सत्त है स्थायी भी अनुभावतें सत्त
[illegible] नवरस के कारणहैं पर वस्तव में नहीं जान परत जैसे जब रस-
आनन्द कर होजात है देहाध्यास नाहीं रहत सो केवल कहैहैं कि

श्रीवृषभानु कुमारी के हेतु आप शृंगाररूपह्वैगये तहां श्रीवृषभानु कुमारी काहे को यह हेतु कि श्री शोभा देनहार तत्तनहीं ॥ अरु यमुना में व्याप्ति वारन अर्थ श्रीकही यमुना भी पत्नी है ॥ अथवा श्रीलक्ष्मी जो है वृषभानुकुमारी सो राधा तामें प्रश्न कविकरत हैं कि शृंगार रूप कहा तहाँ उत्तर शृंगार को रंग श्याम है सो आपभी श्याम गये तहाँ प्रश्न शृंगार पाछे भयो येश्याम जन्मकेहैं यह उत्तर नहीं बनत ॥ शृंगार अवस्था होगये जैसे कोई बूझत अमुकको आजकाल्हि कहारूप है तौरूप-नहीं लक्षनातेवाकी अवस्था बूझतेहैं ॥ रूप कहा कहावै है तहां यह कही चाहिये कि शृंगारको रूप ह्वैगये ॥ आपनरूप भूलिगये बिहारी दोहा ॥ कहालटे ते दृग करे परे, लाल बेहाल ॥ कहूं लकुट कहुं पीतपट, कहूं मुकुट बनमाल ॥ यहां नायका आलंबन विभाव ॥ बेहाल नेत्र देख ह्वै गये यह अनुभाव ॥ मोहसंचारी रतियाई ताते विंजित शृंगार ॥ अथवा पांच वर्षमें षोडश वर्ष को कर्म कियो यह गीत गोविन्दमें ॥ मेघैर्मेदुर ॥ अरुवास हास रसहरे जब गोप कन्याके वस्त्र हरे तब हास रस ह्वैगये ॥ प्र० ॥ तहां विभावनहीं बनत । काहे हास तो अयोग्य वस्तु ॥ जो उलटो कार्य्यते होतहै ॥ तामें यह उत्तरहै ॥ कि गोपी जल विषे वस्त्र हीन रहीं सोई विभावहै ॥ अरु आप कृष्ण पर वस्त्र लेन अनुभाव हर्ष संचारी हास व्यंग ॥ अरु माताके बंधन विषे करुणा नहीं बनत । काहे ॥ यहरस माता को है ॥ तहां यह कही कि ॥ माता बांधत रही तहां रसरी छोटी होजात ॥ तब माताको दुःख जान के आप बंधगये तो यामें भी शोकस्थायी न हो सकैगी कि माता बांधत यमला-र्जुन तारे तिनकी शाप यादआई ॥ तोभी उनको तारे तब करुणा कहां इहांऐसी कहो चाही कै मान बंधन देखि कंस के गृह में आप करुणारूप भये॥तो वसुदेव देवकीआलं-बन विभाव॥ अरु कृष्ण रुदन करत आये सो अनुभाव मोहसंचारी शोक स्थायी ताते करुणा रस ॥ इहां अवस्था क्रम नहीं विचारी ॥ रसक्रम जानिये ॥ अरु केशीप्रति अतिरौद्र काहे वारंवार कोप करे ॥ केशीविभाव अरुणदृग अनुभाव गर्भसंचारी क्रोधस्थायी ते रुद्ररस अरु उत्साहते वत्सासुरमारो सो शत्रु विभाव आप केअंग अनुपमलीला अनुभाव गर्भसंचारी ॥ उत्साहस्थायी ताते वीर ॥अरु वीर रौद्रमें इतनो भेदहै कि वीरमें समताकी सुध बनीरहत रौद्रमें नहीं अरु भयानक रस दावानल पानविषे काहे केशव को भय देख आपु भी भय मानी ॥ अरु बीभत्सकी उर जब स्तन पान करे तब बहुत गलानी मानि ताको तारी ॥ इहां वाके स्तन पानकीअपने मनमें कदर्यता जानी ॥ सोई वि भाव नेत्रादिको रूप फिरब अनुभाव निंदा संचारी ग्लानिथाई ताते बीभत्स जानिये ॥ अरु ब्रह्मा वत्स हरन में अद्भुत कहाभये ॥ कै देखो ब्रह्मा भी अज्ञानी है सोई विभाव अरु ऐसी आवत रोमांच ह्वै आये ॥ सो अनुभाव शंका संचारी ॥ आश्चर्य स्यायी ताते अद्भुत अरु शांत संतत निरंतर ॥ जब शोच कीनो निरंतर शोच कहा अर्जुन

-रच्योविरंचिविचारतहँ, नृपमणिमधुकरशाहि ॥
गहिरवारकाशीशरवि, कुलमंडनयशजाहि॥ ७ ॥
ऊ आदिरहै चंद्रकुलपाछे कहायो ताते आदिकुलकहो ॥ ७ ॥
-ताकेपुत्रप्रसिद्धमहि, मंडनदूलहराम ॥
इन्द्रजीतताकोअनुज, सकलधर्मकोधाम ॥ ८ ॥
-दीन्हींताहिनृसिंहजू, तनमनजयरणसिद्धि ॥
हितकरलक्ष्मणरामज्यों, भईराजसोवृद्धि ॥ ९ ॥
-तिनकविकेशवदाससों, कीन्होधर्मसनेहु ॥
सबसुखदेकरियोंकह्यो, रसिकप्रियाकरिदेहु॥ १० ॥
-संवतसोरहसेवरस, बीतेअडतालीस ॥
कातिकसुदितिथिसप्तमी, वारवरनरजनीश॥ ११ ॥
रजनीश चन्द्र ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥
-अतिरतिगतिमति एककरि, विविधविवेकविलास॥
रसिकनकोरसिकप्रिया, कीन्हींकेशवदास ॥ १२ ॥
तिका प्रीतिकी गति अर्थप्रीति सब ओरते खींचि मतिकी गति कहा अपनी मति जाइ एककरि कहाँ जापैप्रीति ॥ ताहीमें मतिलगी अरु नानारीति को विवेलास अरु विविध रीतिको जो विवेक ताको विलास यहहै आनशास्त्र चिंतवन सेक जोपुरुष है विषयहीन जैसे राधाकृष्ण उपासक ॥ तिनके हेत रसिकहैं ॥ अथवा जिन रसिकन रति की गति मतिकी गति एककरी है ॥ अरु विवेके विलास तिनकोहित अथवा रतिपाईकी गतिमें करीहै ॥ मतिकीगति की गति मति एक अर्थ क्रम प्रथम विभावजान अनुभाव रूपजान सो संचारी यहं लवलीन आश छूटिगयो है अर्थदेहाध्यास जिनको ॥ १२ ॥
-ज्योंविनडीठनशोभिये, लोचनलोलविशाल ॥
त्योंहींकेशवसकलकवि, विनवाणीनरसाल॥ १३ ॥
-तातेरुचिशुचिशोचिपचि, कीजैसरसकवित्त ॥
केशवश्यामसुजानको, सुनतहोइवशचित्त ॥१४॥
। कवित्त वैसो बनाइये ॥ कै जाकेसुनत श्याम सुजान सुसुन्दर श्याम कृष्ण जानेहैं ऐसे कविको चित्त बशहोइ अथवा श्याम सुजानशृंगार रस जाननहार

को उपदेश करन लगे तब अथवा उद्धव की तो इहां कोई शांत ते पाठ कहेहैं तहाँ सात मुनिनसों मिले अथवा शांत है चित्त जिनको ऐसे महादेव जब ब्रज में आ जब उनको शांतरूप देख आप भी शांत रूप है गये ॥ इहां महादेव विभाव समता ज्ञान अनुभाव ॥ धैर्य हर्ष संचारी निरवेद थाई ताते शांत रस सो कहत त केशव कवि अथवा केशव यह नाम उच्चार कर हे रसिक जन । सेवहु ॥ ब्रजर नवरस भयेहैं ॥ यहां रचना कर बात कही ताते परजा उक्त अरु बहुविधि वर्ण उल्लेख ॥ अरु एक कृष्णको अनेक रीति ते अनेक ठौर कहे ताते तृतीय विशेष शंकर है ॥ दोहा ॥ अलंकार है क्षीर औ, नीर सरस कविराज ॥ मिले समुझ शंकर क जे जानत सुखसाज ॥ २ ॥

दोहा—नदीवेतवैतीरजहँतीरथतुंगारन्न ।
नगरओडछोबहुवसैधरणीतलमेंधन्न ॥ ३ ॥

अब कवि अपने नगर कीस्तुतिकरत हैं कि नदी है जामें बेतवै ताके तीर विषे तीरथ है तुंगार ताके नजीक नगर वसै है धरणीतलमें बहुत धन्यहै धन्य काहे कै जहांनगर तहां तीरतय ना जहां तीरथ तहांनगर नाहीं जहांदोई ॥ तहां उत्तमभूप नाहीं यामें बहु बसे कहनेते य सूचित करै है कै देवता भी बहुत है ताते देव धन्य कहतहै अरु कोई ऐसी भी कह हैके देवलोकते तर हैं ॥ ३ ॥

दोहा—आश्रमचारवसेजहां, चारवरणशुभकर्म ।
जप तपविद्यावेदविधि, सबैवढेधनधर्म ॥ ४ ॥

चारआश्रम गृहस्थ ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यासी चारवर्ण ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रसे स शुभकर्मकरैं हैं यजन याजन अध्ययन अध्यापन दान प्रतिग्रह ब्रह्मज्ञान इत्यादि सबजा नि ये चारआश्रम चारवर्ण जप तप विद्या वेद विधिवारी करतेहैं जाको जो धर्म है सं सब करत हैं ॥ ४ ॥

दोहा—दिनप्रतिजहँदूनोंलहै, जहाँदयाअरुदान ॥
एकतहांकेशवसुकवि, जानतसकलजहान ॥ ५ ॥
दोहा—अपनेअपनेधर्मते, सबैसदासुखकारि ॥
जासोंदेशविदेशके, रहसबैनृपहारि ॥ ६ ॥

अपने अपने धर्म ते सबसुख करहैहैं तिनसबते देशकेनृप हारिगये प्रश्न काहे हारेक राजामें वे बड़े प्रबलहैं उ० । जपूर्वकहि आये अपने अपने धर्ममें सबैं इहिते राज धनरी देशके ते अपराध कोई नहीं करत इहिते हार अरु विदेशके भयते ॥ ५॥६ ॥

दोहा-रचोविरंचिविचारतहँ, नृपमणिमधुकरशाहि ॥
गहिरवारकाशीशरवि, कुलमंडनयशजाहि॥ ७ ॥

रविकुल आदिरहे चंद्रकुलपाछे कह्यो ताते आदिकुलकहो ॥ ७ ॥

दोहा-ताकेपुत्रप्रसिद्धमहि, मंडनदूलहराम ॥
इन्द्रजीतताकोअनुज, सकलधर्मकोधाम ॥ ८ ॥

दोहा-दीन्हींताहिनृसिंहजू, तनमनजयरणसिद्धि ॥
हितकरलक्ष्मणरामज्यों, भईराजसोवृद्धि ॥ ९ ॥

दोहा-तिनकविकेशवदाससों, कीन्होधर्मसनेहु ॥
सबसुखदैकरियोंकह्यो, रसिकप्रियाकरिदेहु॥ १० ॥

दोहा-संवतसोरहसैवरस, बीतेअडतालीस ॥
कातिकसुदितिथिसप्तमी, वारवरनरजनीश॥ ११ ॥

बार रजनीश चन्द्र ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥

दोहा-अतिरतिगतिमति एककरि, विविधविवेकविलास॥
रसिकनकोरसिकप्रिया, कीन्हींकेशवदास ॥ १२ ॥

रतिगतिका प्रीतिकी गति अर्थप्रीति सब ओरते खींचि मतिकी गति कहा अपनी
अनंत न जाइ एककरि कहां जापैप्रीति ॥ ताहीमें मतिलगी अरु नानारीति को
क ॥ विलास अरु विविध रीतिको जो विवेक ताको विलास यहहै आनशास्त्र वि
त्याग रसिक जोपुरुष है विषयहीन जैसे राधाकृष्ण उपासक ॥ तिनके हेत र
प्रिया करीहै ॥ अथवा जिन रसिकन रति की गति मतिकी गति एककरी है ॥
विविध विवेकके विलास तिनकेहित अथवा रतियाईकी गतिमें करीहै ॥ मति
संचारिन की गति मति एक अर्थ क्रम प्रथम विभावजान अनुभाव रूपजान सो
तैयाईह्वैगयेहैं लवलीन आशा छूटिगयो है अर्थदेहाध्यास जिनको ॥ १२ ॥

दोहा-ज्योंबिनडीठनशोभिये, लोचनलोलविशाल ॥
त्योंहीकेशवसकलकवि, बिनवाणीनरसाल॥ १३ ॥

दोहा-तातेरुचिशुचिशोचिपचि, कीजैसरसकवित्त ॥
केशवश्यामसुजानको, सुनतहोइवशचित्त ॥१४॥

सरस कवित्त कैसा बनाइये ॥ कै जाकेसुनत श्याम सुजान सुसुन्दर श्याम
जिनने जानेहैं ऐसे कविको चित्त बशहोइ अथवा श्याम सुजानशृंगार रस जान

अथ प्रच्छन्नसंयोगउदाहरण ॥ सवैया ।

वनमेंवृषभानकुमारिमुरारिरमेरुचिसों रसरूपपिये ।
कलकूजतपूजतकामकलाविपरीतरचीरतिकेलिहिये ॥
मणिसोहतश्यामजराइजरीअतिचौकीचलैचलचारहिये ।
मखतूलकेझूलझुलावतकेशवभानुमनोंशनिअंकलिये॥२०॥

वनमें वृषभानकुमारी राधा अरु माधव रमन करें हैं ॥ बहुत रुचिसों रस जो रूप ताहिको पीकरके तो रसनाम जड़ को सोईरूप वारुणी को अर्थांश मदमत्तह्वैगये॥ ़मनोहर कूजतहैं शब्दकरत हैं ॥ अरु काम कलानको पूजके पूर्ण करतहैं तहां ़रीत रतिहै ॥ रतिकेलिहियेमें ॥ विचार ताते मणिमय जो चौकीश्याम है ॥ सो ़ाके हियेमें सोहत है । अरु चलत है सो कैसी लागत । मानों मखतूल श्याम पाट ़के झूला में झूलावत है भानु शनि अंक गोदीमें लेके ॥ इहां चौकीभानु । श्यामम शनि अरु जो वेणिके बार सोई मखतूल अथवा मखतूलही में वहचौकी गोईहै ़में पांचप्रश्नहैं । एकनायक को नाम शृंगारमें मुरारी दूसरो प्रथम कवित्तमें विप- ़शब्द अमंगल तीसरे सखीउक्ति सखीप्रति प्रच्छन्न में चौथो सूर्य अरुण है सुवर्ण ़में ॥ पंचम स्त्री पुरुष में पिता पुत्रकी उत्पेक्षा तामें उत्तर । कै मुरनामा नरका- ़ कोई दैत्य रह्यो स्त्री इच्छाकारी ताहि मारि सोरह हजार कन्याल्याये ताते महा ़गाररूप नामहै ॥ अरु कोई कहैकीमुरारि नाम पाछेभयो ॥ द्वारका में यह लीला ़तकी है ॥ तहां परमेश्वरके नाम सब अनादिहैं ॥ तो इहांवृषभानकुमारी नामपै ़न ॥ काहे न कीनी गोपकुमारि अथवा राधामुरारि इककहते तहांऐसी कहिये कै प्र- ़च्छन्न संयोग करनकी इच्छाजान वृषभान कुमारि मुरारिनाम राखेहै का वृषभान- ़मारी महा तेजवंत अरु मुरारि महावीर ते यहसूचित करत कै स्त्री तहां आन- ़हीं रहै ॥ ताहि के डरते विहारी को घटाये वृषभानजा वे हलधरके वीर । अरु ़परीतको उत्तर यह कियो कै दोहुन की प्रीति पूर्ण है ताते स्थायी पूर्ण भयो अरु ़नुज्ञा अलंकारकी रीति केशवने राखीहै ॥ ताकी लक्षण । दोहा ॥ होइ अनुज्ञादोष ़, जोलीजैगुणमानि । होइ विपत जामें सदा हिये बसेहरिआनि ॥ तो इहां थोरोदोष ़हुतगुग ॥ तो इहां भी दोष बनोरह्यो । तहां ऐसी कहेचाही एकै पूजत काम कला. ़ामकी कला सबपूजत नाम पूर्ण होत तब विपरीत रचि ॥ कै कामकला कौनहु बाकी न ़ीमयम तो रमण पहिली तुक में करचुके जो मंगल रूप है ॥ अरु अंत में पूर्णमें रति विप- ़त रचि तीजो उत्तर । कि सखी एक नायककी रही एक नायक कीरही सो ऐसेही ़॥ अरु सखीते लक्षण कर सखी भी बनतहै । काहे सखी मंडन शिक्षा करन उपा ़भ परिहास ॥ सखाविट चेटकादि कहे हैं तो यामें प्रश्नहू नाहीं है ॥ अंतरंग सखा-

अंतरंग सखी चारों तिन समानेंहं ॥ माते के नायका की मान नायक की सखी छुटा-वत नायक । नायका की सखी सों अंतरंग ॥ सखी अंतरंग सखी सों कहै । अरु चौथो उत्तर के मणिरक्त में श्याम को प्रतिबिंब परो तहां एक बात रहिजात है के उपमान तीन उपमेय दो है सो न बनैहैं तहां ऐसी कहै चाही कि उपमानते उपमेय बोध होतहै । सो प्रसिद्ध है।इहां मखतूल ते गुणको बोध कीन्हो॥परंतु ऐसो अर्थ करै तो सरिल अर्थ होइ । कै मणि शोभावान् होइ है॥श्यामते मध्य की जराउ जरी ॥ अति चौकी भी का सुवर्ण नाहिं देखि परत । ऐसी जराउते जरी है सो अति सोहत है काहे जे ॥ मणि के कण लागेते रूप देखिपरत । तो जो बाहिरकिनारेकी मणि सोझूला अरु मध्यकी सोईहै-शनि ॥ अरु पांचयें प्रश्नको उत्तर यह कीन्हां । कै उत्प्रेक्षामें दोषनहीं तथापि अनजो मणीहै । चार तरफकीतहां कहिके मणि सोहत है ॥ श्याममूर्तिके श्यामशोभित है । चौकी में सो चौकी चलतहै सो मानों मखतूलके झूलापै झुलावतहैं केशव कृष्णकि-न्हेभाशोभातिनको झुलावत हैं ॥ आस पास जो मणी लगी हैं सो मानों शोभा रूपहैं । रूपवंत तिनको एकअंकमें लैके झुलावत हैं ॥ शनि कहा भीतिमें सनिके । तहां बहुत कलेश ते अर्थहोतहै ॥ उत्प्रेक्षा में इनको दोष नाहीं । बिहारी दो० ॥ भाल लाल बेंदा दिये, छुटे बार छबि देत। गहोराहु अतिआहुकर, जनु शशिसूरसमेत॥ तो इहां शशिसूरस-मेत नाहीं गहत ॥ उत्प्रेक्षालक्षण दोहा । उत्प्रेक्षासंभावना, वस्तुहेत फललेख ॥ पहिली उक्तिअनुक्ति है, सिद्ध असिद्ध विशेष । तो इहां वस्तु चौकीमणि संभावना तामें शनि-सूर्यकी अरु झुलावन क्रिया के आगे मानो ताते अनउक्ति विषयावस्तूत्प्रेक्षा॥ २० ॥

प्रकाशसंयोगलक्षण ।

दोहा–सोप्रकाशसंयोगअरु, कहैंप्रकाशवियोग ॥
अपनेअपनेचित्तमेंजानेंसिगरेलोग ॥ २१ ॥

जो सिगरे लोग न जानों तो आगेस्वकीया के लक्षण में कहा होइगो ॥ लज्जानर-ही तहां एक तो इन लज्जा लक्षण में । नाहीं करी तथापि सिगरेलोग अंतरंग बहिरंग सखी सखा जानें॥ २१ ॥

अथप्रकाशसंयोग उदाहरण ॥ कवित–

केशवएकसमयहरिराधिकाआसनएकलसेरँगभीने ।
आनँदसोंतियआननकीद्युतिदेखतदर्पणमेंदृगदीने ॥
भालकेलालमेंबालविलोक तहीभरिलालनलोचनलीने ।
शासनपीयसवासिनसीय हुताशनमेंजनुआसनकीने॥२२॥

बहिरंग सखीकी उक्ति बहिरंगसखी सों ॥ कै हेसखी एकसमय में हरिअस राधिका आसनपै रसभीने बैठेहैं। तहां कहीके सामुहे बैठेहै तब रसभीने होंहिगे ॥ तामें जब सामुहे बैठे। तबदर्पण दोई कैसे देखिहैं॥ तो बराबर कहो चाहि ये रस भीने भुजउनकी उनके ऊपर उनकी उनके ऊपर। अरु आनंद सों तीय आनन की द्युति दर्पण में देखतहैं हगदैकै॥ तब भाल जो बालकोहै तामें जो लालबेंदा तामें जो परी प्रतिबिंब बालको सो देखतही लालने लोचन भरलये। काहे कि शासन आज्ञा ताको पाइके सवासिन वस्त्रसहित सीता हुताशन मेंमानों आसन कीन्हे है॥ अरु जो आपन भालकहै तो नायक विषे भालमें लालकहा अरुजो मुकुटसहित माणिक है तो भाल के ऊपरहै अरु बालको देखिबो नाहीं रहो जो अपने लाल में देखो ॥ अरु यह कहो तो कि रस भीनेहैं । कहारति विपरीतकर उठेहैं। सो भूषण वसन वैसही बनेहैं तो अर्थ बनत तामें चार प्रश्न एकतो संयोग विषे वियोग दूजे आंशू तीजे वस्त्रको कहा प्रयोजन ॥ चौथे दोसखीमें प्रकाश कैसे ताको उत्तर। कै सीता लंकाविषे अग्निमें पैठी तो संयोग है। अरु सवस्त्र ते सीताके सत्तकी बड़ाई कै सीताकोवस्त्र भी न जरी तहां यहप्रश्नहै कि श्री राम जब जानकी को अग्निप्रवेश करायो तब कालाग्नि सरिस ह्वैगये अरु कृष्ण शृंगार स्वरूप सो कैसेबनेहैं तहां ऐसे कही है ॥ जब जानकी अग्नि प्रवेश कीन्हों तबकी कथा तो। वियोग ताते जब लवकुश कोयुद्ध भयो तबकी कथाहै तो तहां हर्ष होइगो। तो यामें आनंद आंशूबनेहैं अरु कोई कहैकिइहांजानकीकहांतोसुमिरण है ॥अरुचौथे यहकि आन समयकी बात बहिरंग कहतहैं। अरु जो द्युति सो भरिलई कहत तो सब अर्थ नष्टह्वैगयो ॥ काहे जानकीकी सुधिआई सो व्यर्थपरिगई । इहां नायक नायका आलंबनविभाव अरु अविलोकन अनुभाव आनंद संचारी रतियाई ताते शृंगारसे सुमिरण अलंकार ताकोलक्षण दोहा ॥ लखतआनसुधि आनकी, आवत सुमिरणहोइ। भालबाल के पेखते, सियसुधि आईसोइ ॥ २२ ॥

अथराधिकाकोप्रच्छन्नवियोगशृंगार यथा ॥ सवैया ॥

कीटज्योंकाटत्योंकाननकानसोंमानहिमेंकहिआवतऊनो।
ताहिचलेसुनकेचुपह्वैगयेनीकहीकेशवएककहिदूनो ॥
नेकअटेपट फूटतआँखिसुदेखतहैंकबकोव्रजसूनो।
काहेकोकाहूको कीजैपरेखोसुजीजेरेजीवकिनाकदेचूनो ॥२३॥

उक्ति नायकाकी अंतरंग सखीसों कैसे सखीमें जो मान में ऊतीबात कहतरही ते मेरे कानन को जैसेकीट काटतेतैसीलागतरही यह अर्थमें प्रश्नकरी कि जीभको का नायकनीको नाहीं लगतरहो ॥ तहां उत्तर । तूमेरी पक्षकरकान्ह सों कहतरही तहां मानयह शब्दव्यर्थही जाइहै॥ तहांऐसो अर्थकीजिये कि कानन को तो कान्हकी समान काटतरहे अरु जीभमान में भी ऊनो कहै विषम कामों तेंविषममें मानवती। जीभनेहिंनी ताकोचलो सुनचुपह्वैगये ॥ एकन एकजीभनाहीं । दूनोजीभभी कानमें

या कोई कहै का कान बोलतरहे तो भैन तब कानको सुननेकोज्ञान रहत तबत विचारो तो आवाज आवैहै जबबधिर होजात तब आवाज नहींआवत यहरीति इनकी अरु आंखिन की कौनबात ॥ कहूंनेक अटैपट पटजो इनपै नेकअटै ब्रजरा के सामुहे तो फूटतरही सो कबको ब्रजसूनो देखती है तातेकाहे निमित्त काहूको प खो करिये। अबजी जे हैजीव कि नाक यमको चुनोती देके इहां कीटज्यों टहे चुनोती लोकोक्ति है ॥ २३ ॥

अथराधिकाकोप्रकाशवियोगशृंगार यथा ॥ कवित्त ॥ अन्यच्च ॥

जिनकेसुखकीद्युतिदेखतहींनिशिवासरकेशवदीठअटी।
पुनिप्रेमवढ़ावनकीबतियांतजिआनकछूरसनानरटी ॥
जिनकेपदपाणिउरोजसरोजहियेधरिकैपलनैनघटी।
तिनके सँगछूटतहींफटुरेहियतोहिंकहानदरारफटी ॥ २४ ॥

यह कवित्त केशवको नहीं है। तिलक कारने नहीं लिखो ॥ २४ ॥

अथराधिकाकोप्रकाशवियोगशृंगार यथा। कवित्त ॥

शीतलसमीरटारिचन्द्रचन्द्रिकानिवारिकेशोदासऐसहीतोहरप हिरातुहै । फूलनफैलाइडारझारिडारिघनसारचन्दनकोडारे चित्तचौगुनोपिरातुहै ॥ नीरहीनमीनमुरझाइजीवैनीरहीते क्षीरकैछि रीकेकहाधीरजधिरातुहै। पाईहैतैंपीरकैधौंयोंहीं उपचारकरैआगि कोतोडाढ़ोअंगआगहीसिरातुहै ॥ २५ ॥

उक्ति नायकाकी सखीसों ॥ कै शीतल समीर टारिदे । अरु चन्द्र अरु चन्द्रिका भी निवारिका जिन दिखरावै ॥ कि मेरो हर्ष तो ऐसही हराइ जातु है तू काहेको उपचार करति है। अरु फूलनको फैलाइदे अरु घनसार झारदे ॥ अरु चन्दन को डार दे याकों देख मेरोचित्त चौगुन पीडा पावतु है ॥ जलहीन जो मीन मुरझानी सो जल-हीते जीवत है क्षीर दूधके छीटाते वाको धीरज नाहीं होत । तूने पीर नाहीं जानी ॥ वेजाने उपाय कर रही है। आगि को जरो शरीर आगिही के सेकनेते आछोहोत है॥अर्थ वनायक मेरी पीर न जायगी। यह तो वरन अर्थ तो इहां प्रश्नकरी ॥किजहांचन्द्र तहां चन्द्रिका रहत है ताको यह उत्तरकीजै कि चन्द्र शशी चन्द्रिका भूषण। अरु कोई कहै कै भूषण विरह में कहांते आये तो वियोग पांचरीति को होत है ॥रसरहस्य दोहा । अब वियोग कहि पांचविधि जहँ पूरवअनुराग॥विरह ईरषा शाप पुनि गमन विदेश विभाग। तो इहां विदेश गमन सुन करिके दुःखभयो है या पदते जानीजातके॥आग को जरो अंग आगतेसिराति है। तो नायक को रोकनेकी तदबीरकर ॥ अथवा सूरने विरह में लिखे भूषण। जात वेद सनाद मारीवीर भूषणजार ॥ अथवा गेहमें रहीतहां । भूषण धरे

हैं ॥ अरु दूसरीप्रश्न । उन हर्ष हिरात में कि हर्ष कहां रहै ॥ विरह में जो हिरानो है ताको उत्तरकीजे कि ध्यानजन्य सुखरहो सो सखीनके छुवेते गयो तो यामें ध्यान होति ॥ तो शीतल समीर दार काहेको पहिले कहती । इहां ऐसीकहे चाही एकैनाद दशा को प्राप्तहोत है अथवा ॥ नायक विदेश गमनते हर्ष हिराइगो । अथवा ॥ ऐसो अर्थ करो चाही तू ऐसही तो ॥ गतिमें हरपत है । मोकों दुःख दीबेको तहां कोई कहे उकारांत ॥ शब्दको ईकारांत काहेकरो तो ऊकारांत ईकारांत इकारांत उकारांत। अर्थ के निमित्त हो जातिहै ॥ विहारी दोहा । पारो सोर सुहागको इत, विनहीं पियने-ह ॥ उनदोही अँखियां कि के, के अलसोहीदेह ॥ उनींदीसी आंखें कैके चाही तहां कि कैहो है।।याते दोष नाहीं अरु तीसरी प्रश्न में चौगुन काहे कहे१० ॥ २० ॥ गुण-कहते ताको उत्तर ॥ कि चकार मयत्री । तहां फेर प्रश्नके १४ ॥ २४ ॥ २४ ॥ गुणकाहे न कहो ॥ कि चन्दन काष्ट ताते । अग्नि निकसत तो सोभी नाहीं बनतकाहे चौगुन को अर्थ न निकसो तामेंविरह १ दूजो ध्यान छुट व तिसरो रोगआन उपाय आन ॥ चौथेसखी कूरतहां फेरप्रश्नके उपाय बिरोध में सखीकी कूरता हेतुकी फेर-अजात काहेकोकही तहां उत्तर ॥ कै आनवैद्य जो देहकी तासीर नाहीं जानत सो करै तो औषध दोपकाहे प्रकृति वाने नाहीं जानी ॥ अरु जाननहार प्रकृतिको करैतो कूरकहावे । तहां येनाहींबनत काहे कि परपीरके कारण संयोग विरह पाइ भये ॥ इहां-यहकही कि एकपीर नायक जो अवस्था उत्तम में छोड विदेश जात । अथवा गयो दूसरो मदन बाण तीसरे लोकलाज जाते राखनसखी ॥ चौथे शीतल उपचार । अरु सखी बहिरंग काहे कि ॥ विरहदाह नाहीं जानत रही ॥ नायका कहति । तु विन पी-रपाइ उपचार करतिहै ॥ याते प्रकाश । इहां शीतल समीरादि उद्दीपन नायका जोत-लफत सोई अनुभाव दीनता संचारी रतिथाई ताते शृंगाररस ॥ अरुनायकनाहीं तातेवियोग ॥ इहां व्याघात अलंकार ताकोलक्षण ॥ दोहा ॥ व्यघात तो कछु आनते कारज होवेआन ॥ शीतल सबउपचारते बाढी तपन महान ॥२५॥

दोहा–योंप्रच्छन्नप्रकाशसव, वरणैयोगवियोग ॥
अवनायकलक्षणकहों, गूढअगूढप्रयोग ॥ २६ ॥

यों प्रच्छन्न सुगम ॥ २६ ॥

इतिश्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायरसिकप्रियायां प्रच्छन्नप्रकाशवर्णनंनाम प्रथमः प्रकाशः ॥ १ ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेणविरचितायां सुखविलासिकाटीकायांरसिकप्रियायां भूषणे प्रच्छन्नप्रकाश संयोगवियोगवर्णनंनाम प्रथमः प्रकाशः॥ १ ॥

अथप्रकाशअनुकूल यथा ॥ कवित्त ।

केशवसूधीविलोचनसूधीविलोकनकोअविलोकिसदाई ।
सूधियोंवातसुनैसमझैकहिआवतसूधियोंवातसदाई ॥
सूधीसुहांसीसुधाकरसों मुखशोधलईवसुधाकीसुधाई ।
सूधेस्वभावसबैसजनीवश कैसेकियेअतिटेढ़कन्हाई ॥ ५ ॥

बहिरंगसखीकी उक्ति नायकासों ॥ कि तेरी विलोकन सूधीहै । अरु सब स्वभा
भी सूधेहैं ॥ पर टेढ़े कान्ह कैसे वश करे हैं ॥ तो यामें नायक आनते टेढ़ा रहत
यही अनुकूलता है इहां टेढ़े को कारण नहीं अरु वश करलिये ताते प्रथम विभावन
अलंकार । ताकोलक्षण ॥ दोहा । विनकारण कारज उदो, प्रथम विभावन जान
विन टेढ़ि ही रीतिते, वश किय टेढ़े कान ॥ अरु इच्छाफल विपरीतिते विचित्र ॥ ५

अन्यच्च ॥ कवित्त ।

मेरेतोनाहिंनेचंचललोचननाहिंनेकेशववानिसुहाई ।
जानोंनभूषणभेदकेभावनभूलहूनैनहिभौंहँचढ़ाई ॥
भोरेहूनाचितयोहरिओरत्योंघेरकरैइहिभांतिलुगाई ।
रंचकतोचतुराइनचित्तहिकान्हभयेवशकाहेते माई ॥ ६ ॥

उक्ति नायका की बहिरंग सखीसों कि हे सखी! मेरे नेत्र चंचल नहींहें अरु सुह
बाणी भी नहीं है जानोंहों नहीं भूषण भेदके भावको अरु भोरेहूँ भौंहें नहीं चढ़ाई
अरु भोरेभी हरिकी ओर नहीं चितवतहों मेरो घेरनाम गीला लुगाई नाहक कर
हैं । अरु रंचचतुराई भी नहीं है ॥ पर हरि काहे धों वशभये सो मैं नहीं जानत
परंतु भौंहें चढ़ाई नहीं । अरु दूसर भोरही हरिकी ओर नहीं देखो तो अनुकू
की नायका स्वकीया कैसे? यह दूसरी प्रश्न ताको उत्तर ॥ कि मैं भूषण के भेद न
जानती । तथापि उन भौंहें नहीं चढ़ाई तो इहां प्रसंग हत होजात है ॥ काहे अप
रीति तीन तुकमें कहत है ॥ सो बीचहीमें नायककी रीति जनाई । अरु फेरअप
बात कहन लागी ॥ ताते भूषण भावको भेद यह पदको अर्थ नहीं लगो केउ
यह कहत कि ॥ भू(पृथ्वी)स्तनवेवारो भाव ताको भेदमें नहीं जानत । अर्थलघु मध्य
गुरुमानतो मैं जानत नहीं हों यामें यह जनाई कि नायक परकीयान के संग ज
ती तबमैं मान करती अरु भौंहें चढ़ाई नहीं भूलहू यामें यह धानैकशीराद भेदभी न
जानत हों याते यह सूचित करत कि कनिष्ठाके पासभी नहींजात । अरु चितई न
ताको उत्तर करो जैसे घेर लुगाई करती तैसे मैं नहीं चितई ॥ तो यामें लुगाई तो
घेरकरती कि इन नायक वशकर लिये सो क्या नहीं चितवत रही ताको यह उत्तर

भूषण भौंहैं चढ़ाइयेकी कौनकहै ? में भूलहू त्यों हरिकी ओर चितई नहीं त्यों
जैसे तैसे रोषवती चितवतीहि इति । जहां बहिरंग सखी कहै तहां प्रकाशजानने जह
रंग तहां प्रच्छन्न ॥ इहांहू विभावना अलंकार प्रथम जानने पूर्वरीतिते ॥ ६ ॥

दक्षिणलक्षण ।

दोहा–पहिलीसोंहियहेतुडर, सहजबढाई कानि ।
चित्तचलेहूनाचलै, दक्षिणलक्षणजानि ॥ ७ ॥

अनेकहैं नायका जाके विवाहिता तामेंपहिलीसोंहै हीयमें हेतु डरसहज जाकी
होतिहै अरु कानलज्जाकी अरु चित जाको चलेहू तनअचल रहैसो दक्षिण प्रश्न॥
लक्षण दक्षिण को कियो, अक्षिन केशवदास ॥ लक्षण लक्षण कविनको, कीन्हों
नास ॥ उत्तर कि पहिलीसों जैसो हेत है तैसो सब विवाहितासों ॥ ७ ॥

प्रच्छन्नदक्षिणउत्तर ॥ कवित ।

हरिसेहितूसोंभ्रमभूलहूनकीजेमानहातोकरिहियहूसोंहोतहित
नियें । लोकमेंअलोकआननीकहूलगावतहैं सीताजूकोदूतगं
कैसेउरआनियें ॥ आँखिनजोदेखियतसोईसांचीकेशवराइकानन
सुनिसांचीकबहूंनमानियें । गोकुलकीकुलटायेंयोंहीउलटाव
आजलौंतौंवैसहीहैकाल्हिकहाजानियें ॥ ८ ॥

नायकासों काहू कहीं कि नायक एकपर आसक्त भयो सो सुनि अपने मनसों
है कि हरि ऐसे हितसों भ्रम भूलिहू न कीजै हे मन । हात करके नामहत नाश क
होय हानि होति है । अरु लोकके अलौकिक नीकेकों लगावै यामें सीताजू की
दूतने श्रीराम सों नीचकी कहो कैसी कही ॥ तातें जो आंख देखिये सो साँची है
नकी सुनी कबहूं ना पतियाइये । ये जो गोकुल की कुलटा हैं सो ऐसहीं उलटा
हैं आजुलौं तौ कान्ह वैसेही है काल्हकी कहाजानी ? यामें आन कविसों विरोध
काहे एकभांति रहत इहां नायकको अन अपराध वस्तु तातें काव्यलिंग अलंका
लक्षण दोहा । "काव्यलिंग सामर्थ्यता, जहँ दृढ़की जैवात । काननकी झूंटी लियें, सि
दृष्टांत देखात" ॥ ८ ॥

प्रकाशदक्षिण ॥ सवैया ।

चितचोपचितैवेकीतैसियेहैअरुतैसियेभांतिडरातघने ।
अरुतैसेइकोमलवोलगोपालके मोहतहैतिहिभांतिमने ॥
गुणतैसेइहाँसविलाससवैहुते तैसेइकेशवकोनगने ।
सखितूकहोआनवधूकेअधीनहैंसापरतीककिधौंसपने ॥ ९ ॥

उक्ति नायका की वहिरंग सखीसों कि हे सखी! उनके चितैबे में चोंप तैसी है जैसी
गे रही का एकभांति नेह मानत रहे ॥ अरु जैसे डराति रहे तैसेई डराति है। अरु
सेई बोलति है जैसे बोलतरहे ॥ अरु मनको जाभांति मोहत रहे ताभांति मोहत है अरु
ण हासविलास तैसेई हैं जैसे रहे तैसे सब हाव भाव जैसे रहे। कहांतक गनियें ॥
रु तूं कहत है कि आनही के वधू एकके आधीन होगये सो सापरतीक साक्षात्में
देखै कि स्वप्नमें इहाँ नायकाके उत्तरते उत्तरा अलंकार जानोंजात है ॥ ९ ॥

पुनः कवित्त।

वहिअंतरगूढअगूढनिरन्तरकामकलाकुलकोनगने।
कहिकेशवहासविलाससबैप्रतिद्यौसबढेरसरीतिसने ॥
जिनकोजियमेरेईजीवजियेसखिकायमनोवचप्रीतिघने।
तिनसोंकहेंआनवधूकेअधीनहैं सापरतीक किधौंसपने ॥ १० ॥

यह कवित्त केशवको नहीं है ॥ १० ॥

शठलक्षण।

दोहा-मुखमीठीबातेंकहै, निपटकपटजियजान।
जाहिनडरअपराधको, शठकरताहिवखान ॥ ११ ॥

मुखते मीठी बातें निपट करे अरु जियमें कपट राखै जाहि जाको अपराधको
डर न राखै ॥ ११ ॥

प्रच्छन्नशठ यथा ॥ सवैया।

रुचिपंकजचंदनकंचनचम्पकरंचनरोचनहूकिरची।
कहियेकिहिकारणकोइतेलायककापरभामिनिभौंहनची ॥
अनुमानतहौंअँखियांलखिलाल्येनाहिंनेरातिकेरोपरची ।
तनतेरेवियोगतपेतरुणीतिहिमानहुंमोहियमाहँतची॥१२॥

नायक नायकाके नेत्र में लाली देख आपनो अपराध छुपाइवे निमित्त मीठी बातें कह-
त है कि हे प्राणप्यारी। तेरे जे नेत्रहैं तिन में रुचि पंकज (कमल) अरु चंदन अरु कंचन चंपक
की अरु रोचनहू की रचीहै। यामें पंकजरोचन तो अरुण है ॥ पर चंपक कंचन
पीत सो काहे कहो यातें पंथ विरोधी अंबदोष होतहै। पीत नेत्र तो नाहिं काहू बरणें
तामें यह कि कछुक लाली आई है तो रोचन काहे कहो तहां यह कही कि आगे वि-
योग आंचसों तचीहैं तौ तप्त कंचनभी अरुण होत है ॥ अरु चंपकरंच नहीहै कहां
चंपकवारी पीतता रंचभी नहीं है रोचनसी रचीहैं कहिये किहि कारण को है ॥ इनते

लायक का पर भानिमि भेंहिं नचीहिं ॥ तातें में अनुमान करतहों तिहारी आंख लाल लसत कि जो रोषते नाहीं रचीहिं ॥ तेरे वियोगते मेरो तन तपोहै तामें जेरहतीहै ताही आंच सों ये तचीहिं ॥ इहां हेतूत्प्रेक्षा अलंकार है ताको लक्षण । दो० ॥ जाको हेतु न होइ, सो ताकों यांपै होत । हेतूत्प्रेक्षा जान तहँ दग लाली तप चेत ॥ १२ ॥

अथप्रकाशशठ यथा ॥ कवित्त ।

कानरंगरंगेनैनतिनहूकेडोलैंसंगनासाअंगरसनाकेरसहीसमानेहौ। औरगूढकहाकहौंमूढहौंजूजानजाहुप्रौढरूढकेशोदासनकिकरजाने हो॥तनआनमनआनकपटनिधानकान्ह सांचीकहोमेरीआन काहे-कोडरानेहो । वेतौहैंविकानीहाथमेरेहौंतिहारेहाथतुमव्रजनाथहा-थकोनकेबिकानेहो ॥ १३ ॥

उक्ति बहिरंग सखीकी नायक प्रति । कि कान्हके रंगसों रँगेहें तिहारे नैन अर्थ जो सुनपाई आननायका सोई आप चले गये । ताते तिहारे नैन तिनकानन संगडोलत है जहां चाहें तहां लेंजाइ यामें नायक अपराध नेत्रकी बड़ाई ॥ अरु नासा रंग हो तुम नासारंग जैसे भ्रमर कि जहां सुवास पावे तहां को मधु पीवें । अरु और जोगूढ कहिबे योग नाहीं एहो कहा कहों मूढ जो होइ सो भी जानजाइ तुम प्रौढ रूढ केशवदास हो प्रौढ होइ वा रूढ होइ सुंदर असुंदर कोई होइ परंतु तुमताके दासहो या नीके कर जानेहो । तुम्हरो तन आन को है मन आन कीहै हे कप-टके निधान! काहूयात तो सांची कहो काहेको डराने हो ॥ वे मेरे हाथ बिका-नीहैं अरु मैं तिहारे हाथ बिकानी हों परंतु तुम हे ब्रजनाथ कौनके हाथ बिका-नेहो ॥ यामें मुख मीठी बातें नहीं निकासी सो यह निकासी । कि यामें उत्तरा अलंकार नायक कहत होंदू तिहारे हाथ बिकानेहें तब सखी कही । तुम कौनके हा बिकाने हो? तो यामें प्रसंग हतहोजात ॥ कवित्त ॥ तामें यह कह्योचाही । कि नाय आइकर सखीकी खुशामद करत तब सखी कहेहै ॥ कि तुममेरी खुशाम काहेको करत? जिनके पास में रहत तिनकी करो तो इहां एकावली अलंकारहोइ । कि वे मेरे हाथमें तिहारे हाथ । तुम आनके हाथ अरु कारण कांपै संभवते कार माला अरु छवीवात प्रकट करत तातेंविदितको संकरहै । वे मेरे हाथ बिकीकहां अंतरंगको कहीनहीं मानती मैं तिहारे हाथ कहां तिहारे अपराध दुरावत । अरुतुमकौ नके हाथ बिके । अर्थात नितनवीन अपराध करतहौ ॥ १३ ॥

अथधृष्टलक्षण ।

दोहा—लाजनगारीमारको, छांडदईसबत्रास। देख्योदोपनमानहीं, धृष्टसुकेशवदास ॥ १४ ॥

प्रच्छन्नधृष्ट यथा ॥ सवैया।

नेहभरेलैलैभाजतभाजनकोनाहिंगनेदधिदूधमिठाये।
गारीदयेतेहसेंबरजैंघरआवतहैंजनुबोलपठाये॥
लाजकिऔरकहाकहिकेशवजेसुनियेंगुण तेसबठाये।
मामीपियेइनकीमेरीमाइकोहेहरिआठहूगांठहठाये॥ १९॥

याको शब्दार्थ यह है कि नायका मान कीनों। ताके बुलाइबेनिमित्त वाके जे नेहमा-
खनभरे भाजनलै भाजे दूधदधि भी फेंकदीनो ताते अंतरंग सखीसों कहतहै कि मेरे भाज
ननाशकीने गोरस भी अरु गारी देनेते हँसेहें बरजेपर घरकैसे आवत मानों बोल
पठाये है। अरुआनलाजकी कहाकहों जेगुणहें। ते सब नाश कीने। सो इनकी मामी
कौ न पिये जे आठगांठ अठाईहै। मनसा वाचा कर्मणा विहसन चितवन चलन चातुरी
आतुरी सो ये बातें तो परकीयाकीहै। अरुनायकाबहुत प्रीति बराबर सों दक्षिण।
अरु है विवाहिता बहुत तिनमें कबहूं कहूं कबहूं कहूं मिथ्या मीठी ढिठाई समेत सो शठ-
अरु गारी मारकीलाजनाहीं॥अरु त्रास छोड़िदेइ। अरु देखे दोषको नमाने सो धृष्ट से
यामें तो मारनाहीं अरु देखो दोषभी नाहीं अरु वचन परकीया पोषकहै। तातेवाच्य
र्थयाको ऐसोचहिये। कि नेहभरे भाजन कि जो नेह हमारे भरे भाजनहैं आठ जाकों आठगां
ठकहत सो लैकर भाजतहें अरु दधि दूधको गनेनहीं खटाई नहीं मिठाई जो प्रातहोइ ताहि
सों रमैहैं अरु गारीदेत रहतहो॥ अरु आप आनके संग हँसत रहत अरु मैं बरजत
मेरे निकट मति आइये परघरमें कैसे आवत मानों आपते बुलायेहैं अरु लाजकी ओर
कहा कहों। अर्थात् सुरत भी जबरही करतेहें जे गुणहोत ते सब ढाइदये का नाश करदये
हें। ताते तूकहत अबनकरिहै ओजेठ आठगांठ अठाईहै। अरु जो आठगांठ कही सो तीन
होतिहै। कर्मणामें सब भोग। पांचों कहेजात चितवनादिक कर्महें ताते ये आठ गांठ
जानियें नेत्र भ्रू श्रवण जीभ कर पद अधरचितवत तें टेढ़ भ्रू इशारा श्रवण सुनबो सीधे
नाहीं सुनत बोलनकर चलावनपदचलन अधर मुसकान अरु मनइच्छा जहां लो-
कोक्तिअलंकार। जहां लोककी बात कहें सो लोकोक्ति इहां आठोगांठ यह लोकोक्ति
अरुअंतरंगसों। कहत ताते प्रच्छन्न॥ १४॥ १५॥

दोहा-मनसावाचाकर्मणा, विहँसनचितवनलेप।
चलनचातुरीआतुरी, आठोंगांठविशेप॥ १६॥

टीका सुगम॥ १६॥

प्रकाशधृष्ट यथा॥ सवैया।

सोंहकोशोचसँकोचनपांचकोडोलतशाहुभयेकरचोरी।
बैननवंचकताईरचीरतिनैनन केसँगडोरतिडोरी॥

लाजकरैनडरैहितहानितेआनिअरैजियजानिकिभोरी ।
नाहिंनेकेशवशासजिन्हेंवकिकैतिनसोंदुखवैमुसकोरी ॥ १७ ॥

उक्तिनायका की बहिरंग सखीसे केसांह.को इनकों शांन नहींहै का वचन तें जो चाही सो कही अरु पांचको संकोच नहीं । जो कहो सो सुनलेत । अरु चोरी करशाहु भये डोलत है याते पगन में भी भय नहीं । अरु नैनन में वंचकतारचीहै यामें मनकांहू रचीहै ॥ रति इनकी नैननिके संग डोलत डोरी सी होकर । अरु लाज नहीं करत नहीं हितहानिते ॥ डरत करनते जो चाहत सो करत अरु मोसों आन अरत मेरे श्यामुहैं भौंह नचावत मुसक्यात है । नहीं है केशव शास्त्रजिनको वक्के तिनसों सुखको दुखावै ॥ यामें जो पंचम विभावना है चोरी शाहु भये सो नाहीं आनपद में निर्वाह नहींहोत अरु हों वकतये नहीं मानत यहि हेतुते कार्य नहीं भयो ताते विशेषोक्ति जानियें ॥ १६ ॥ १७ ॥

दोहा--वरणहुकविनायकसवै, नायकइहिअनुसार ।
सवगुणलायकनायका, सुनअववहुतप्रकार ॥ १८ ॥

इतिश्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायांचतुर्विधनायकमच्छन्नप्रकाशवर्णनंनाम द्वितीयः प्रकाशः ॥ २ ॥

उक्ति कविकी कि हे कविनायक यहीरीति ते वर्णनहुआ अब नायका सबलायक का नायक शठधृष्ट भी होतहै नायका सर्व गुण लायक कहावै स्वकीया परकीया ॥ १८ ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञाभिगामिलछितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यककवीश्वरेण विरचितायां रसिकप्रियायांभूषणे सुखविलासिकानामटीकायां नायकनायकावर्णनंनाम द्वितीयः प्रकाशः ॥ २ ॥

अथ नायकाजातिवर्णन ।

दोहा--प्रथमपद्मिनीचित्रिणी, युवतीजातिप्रमान ।
वहुरिशंखिनीहस्तिनी, केशवदासवखान ॥ १ ॥

नायकाकी जातिहैं पद्मिनी आदि ॥ १ ॥

पद्मिनीलक्षण ।

दोहा--सहजसुगंधस्वरूपशुभ, पुण्यप्रेम सुखदान ।
तनुतनुभोजनरोसरति, निद्रामानवखान ॥ २ ॥

सहजहै सुगंध अरु स्वरूपहै शुभश्रेष्ठ जाको अरु पुण्यरूपी है प्रेमजाको तनु सूक्ष्म है तनु भोजन रोस राते अरु निद्रा मान ॥ २ ॥

दोहा—सलजसुबुद्धिउदारमृदु, हासवासशुचिअंग ॥
अमलअलोमअनङ्गभुव, पद्मिनिहाटकरंग ॥ ३ ॥

लज्जासहित है सुंदर है बुद्धिउदार है कोमल है अरु हास वास कपड़ा शुचि पवित्र राहतहै अथवा हासवास शुचि है जाके अंगमें अमल है लोमरहित मदनसदन जाको एसी जोहोइ सो पद्मिनी कहावै ॥ ३ ॥

पद्मिनीउदाहरण ॥ कवित्त ।

हँसतकहतबातफूलसेझरतजातगूढ़भूरहावभावकोककैसीका-रिका । पन्नगीनगीकुमारिआसुरीसुरीनिहारिडारोंवारिकिन्नरीनरी-गमारिनारिका ॥ तापैहोंकहाहैजाउँबलिजाउँकेशवराइरचिवि धिएकव्रजलोचनकीतारिका । भौंरसेभ्रमतअभिलापलाखभांति-दिव्यचम्पैकैसीकलीवृषभानुकीकुमारिका ॥ ४ ॥

हँसत बात कहतहै सहजकहतबातभी पाठहै तब फूलसे झरतहैं अरु गूढ़जेहाव भावहैं सुरतिनिमित्त कोककी कारिका है पन्नगी सर्प की कन्या नगी पर्वत की आसुरी असुरन की सुरी देवतनकी किन्नरी किन्नरनकी नरी वारिडारों नरीजे गमार नारिकाहैं॥ तापै मैं कहाकहों करजाउँ है केशवराय मैं बलिजातहों विधाताने व्रजसमूहलोचन की तारिका एकवेरहीं रची है । जापै अभिलाप लाखन भौंर से भ्रमतहैं ॥ ऐसी चंपकी कलीसमान वृषभानु कुमारी है । हँसत बात कहत कावहुत सुगंध आवत अरु बहुत रुचिहोत अरु बहुत कोमलचित्त में लगतहै अरु सोई रतिबात में अरु कोककारिका कहा कहीं गूढ़हैं । वाके अर्थ तैसही गूढ़हैं ॥ हावभाव जाके तातें उपमा दई अर्थ का काम-कलनते पूररहोहै अंग जाको ॥ अरु भोजन निमित्त पन्नगी वारी सो नाहीं बनत काहे तापै वारिये तातें अधिकगुण चाही तोकाज्यादा खातरही । अरु पन्नगीतो पवनआहार करतहै सो जब नायका योरीपवन आहार करै पन्नगी बहुत करै तब बनै ॥ अरु नगी पर्वतकी तिनको रोप नहीं यह कहतहैं । सोभीनाहीं बनतै काहे कि पहारजड हैं जब चैतन्यकहे तब महारोष है श्रीरामायणे । तुमसहित गिरिते गिरौं पावक जरौं जलनिधि में परौं । परजाहु अपयशहोहु जगजीवत विवाहनहौं करौं ॥ अरु आसुरीमें निद्राकहत केनाहीं । तहां श्री हनुमान्जू जबगये तब मंदोदरी आदिक सब सोवतरहैं॥रामायणे । जो सुनकुंभकरण पहँगयऊ॥करिबहुयतन जगावत भयऊ। अरु सुरीमें रतिको अभावहै इहां अभाव नाहीं विहारी ॥ परोजोरविपरीतरतिरूपीसुरतनधीर । करत कुलाहल किंक नीगहो मोनमंजीर ॥ अरु क्रमभंग दूपण है दोहामें रतिनिद्रामान बसानहै । पहिले रतिशब्दहै पाछेनिद्रा है॥कवित्तमें आसुरी सुरीनिहार आसुरीकी निद्राळीन्ही सुरीकीरति-लीन्ही । अरु मनपर किन्नरीवारी ॥ किन्नरीगानपै वारोंचाही । वारौंबहुत मानजाको

२९६१

देहसो ॥ इनकों तो मानहूं महाहै ॥ काहे गानकर्ता है । तब मानकहा इन अर्थनको प्रयोजन यह कि बहुतविस्तार थोरे में दिखादियो ॥ अरु भौंर चंपपर बैठत नाहीं। भ्रमतरहत हैं सो दूतिकहत याये अनेक के मनोरथ भ्रमतहैं परंतु बैठत नहींहें अरु यामें केशव को अभिप्राय यह कि सबगुणसंपन्न है अर्थ अतिउत्तम है ॥ वृषभानु कुमारी इहां उपमा अलंकार है कहूं सुखामी प्रधानहै जानिहै ॥ ४ ॥

चित्रिणीलक्षण ।

दोहा—नृत्यगीतकवितारुचे, अचलचित्तचलिदृष्ट ॥
बहिरतिरतअतिसुरतिजल, सुरससुगंधकीसृष्ट ॥ ५ ॥

टीका सुगम ॥ ५ ॥

दोहा—विरललोमतनमदनगृह, भावतसकलसुवास ।
मित्रचित्रप्रियचित्रिणी, जानहुकेशवदास ॥ ६ ॥

टीका सुगम ॥ ६ ॥

चित्रिणी यथा ॥ सवैया ।

बोलिबोबोलनकोसुनिबोअविलोकनकोअविलोकनजोते ।
नाचिबोगाइबोबीनबजाइबोरीझरिझाइबोजानततोते ॥
रागविरागनकेपरिरंभनहासविलासनतेरतिकोते ।
जौमिलतौहरिमित्रहुसोंसखिऐसेचरित्रजोचित्रमेंहोते ॥ ७ ॥

सखीकी उक्ति नायकासों॥ कि जे गुण साक्षात् हरिमेंहैं ते गुण चित्रमें नाहीं कोन कि आप बोलो अरु बोलआनके सुनिबो आनको अविलोकन करनो अरु आपआनकी अविलोकन तें जीतिका संगचले रामायणे । तेतिनरथन सारथिनजोते ॥ अरु नाचिबं पुनि गाइबो पाछेबीन बजाइबो आपूरीझ आनकों रिझाइबो जानत तो तें ते तोते सूगा समान अर्थयह कि जोकरो कहोसो कहेंकरें ॥ रागअनुराग विरागभये पर आलिंगन अरु हासविलास नरतिको ताकरंत का हासविलास जहां रतियेरीतीका कोई हरि दे मित्रको मिलतो हेसखी जोयेगुण चित्रमें होते तामें कोई कहै। कि नायका चित्रकाहे देखत ॥ जोमानवतीहै तहां माननाहीं है नायका कों प्रथम स्वप्नदर्शन भयो फेर श्रवण तब चित्र भयो । अबसखी नायक को साक्षात् मिलायो चाहतहै ॥ इहां संभावना अलंकार जानियें। ताकोलक्षण दोहा—ज्योंयो त्योंयो होइ तो, संभावना विचार । होतो जे असचित्रतो को, देखत पियप्यार ॥ ७ ॥

शंखिनीलक्षण।

दोहा—कोपशीलकोविदकपट, सजलसलोमशरीर।
अरुणवसननखदानरुचि, निलजनिशंकअधीर ॥ ८ ॥

टीका सुगम ॥ ८ ॥

दोहा—क्षारगंधयुतमारजल, तप्तभूरभगहोइ।
सुरतारतिअतिशंखिनी, वरणतकविजनलोइ ॥ ९ ॥

टीका सुगम ॥ ९ ॥

शंखिनी यथा ॥ सवैया।

जातनहींकदलीकिगली नभलीविधिहोवदलीसुखलावै।
चाहैनचम्पकलीकिथलीमलिनीनलिनीकिदिशानसिधावै ॥
जोकोउकेशवनागलवंगलतालवलीअवलीनचरावै।
खारकदाखखवाइमरोकिनऊँटहिऊँटकटारहिभावै ॥ १० ॥

उक्ति नायकाकी नायकप्रति। अन्योक्ति औरूपकातिशयोक्ति को संकर कहतहैं कि ऊँट कैसोहै कि जात नहीं कबहूंकबहूं कदली की गलिमें कहा कदली सरसजिनके जंघा तिनके पास नहीं जात ॥ बेरके कंटक सरीखे जिनके लोमहैं तिनके पास जात है ॥ अरु चंपकलीथली सरस जिनकी नासिका तिनके पास भी नहीं जात अरु नलिनीकम-लिनी की सुवास तिनपै भी नहीं जात। अरु कोऊ नागवेलि लवंगलवल्ली हरफारेवरी ऐसे गंध बतावै तोभी त्याग देइ खारक छुहारा दाख सरीखे जिनके अधर तेभी पान नहीं करत ऊँटवाकी ऊंट कटारेसरीखी जाकी गंधहै ते भावतीहैं। कि वह शंखिनीहै जो नायक सों कहत तहां आपने शरीर की निंदा कोइ नाहीं करत वह शंखिनी है जोरोम कुवास स्थूल अंग वरणें काहे कि जो शंखिनी होती तो साफ कोपकरती ॥ १० ॥

हस्तिनीलक्षण।

दोहा—थूलअंगुलीचरणमुख, अधरभृकुटिकटुबोल।
मदनसदनरदकंधरा, मंदचालचितलोल ॥ ११ ॥

टीका सुगम ॥ ११ ॥

दोहा—स्वेदमदनजलद्विरदमद, गंधितभूरेकेश।
अतितीक्षणबहुलोमतन, भनिहस्तिनिइहिवेश ॥ १२ ॥

टीका सुगम ॥ १२ ॥

हस्तिनीयथा ॥ सवैया ।

सबदेहभईदुर्गंधमईमतिअंधदईसुखपावतकेसे ।
कछुसालतेलोमविशालसेंहंश्रुतिताड़नकेशवबोलअनैसे ॥
अलिज्योंमलिनीनलिनीतजिकेकरिनीकेकपोलनमंडिततेसे ।
क्षितिछोड़िकेराजसिरीवशपापिनिरयपदराजविराजतजैसे १३॥

इहां हस्तिनी नायका अरु हस्तिनी करिणी जाकी सब देह दुर्गंधमई है । ताके पास मतिते जे अंधहैं ते कैसे सुख पावत अरु साल कांटांतेहं लोम विशाल दोहुनके । अरु श्रुति काननको ताड़ेहं ऐसेहे अनैसे बोल जिनके ॥ सो हे अली ऐसिनके पास अलि भ्रमर अरु नायक जे मलीन कमलिनी तजिके भौंर अरु नलिनी पद्मिनी तजिके नायक ये दोऊ कैसे करिणी हस्तिनी अरु हस्तिनी नायका के कपोल सेवतहें कैसे ॥ राजश्रीभूमिको छोड़के पापके वशहोइके। राजतनिरय पदनाम नरक में ॥ यामें जात- पूर्ण उपमाश्लेप । दृष्टांतको संकर है ॥ सालसेलोम देह दुर्गंधते तोजातिहै । अरु अ- लिउपमान पुरुष उपमेय ज्यों वाचक जाइ वैधरम ताते पूर्ण उपमा अरु नलिनी करिणी में श्लेष राजा दृष्टांतको संकर है ॥ १३ ॥

दोहा—तानायककीनायका, ग्रंथनितीनिबखान ।
सुकियापरकीयाअवर, सामान्यासुप्रमान ॥ १४ ॥

तानायककी नायका ग्रंथमें तीन कही । स्वकीया परकीया अरु सामान्या ॥ स्वकी- या परकीया अरु स्वकीया परकीयाआन। यह भी पाठहै । तहां आनसो कहा सामान्य सो जानलीजै ॥ १४ ॥

स्वकीयालक्षण ।

दो०—सम्पतिविपतिजोमरणहूं, सदाएकअनुहार ।
ताकोस्वकीयाजानिये,मन क्रमवचनविचार ॥ १५ ॥

संपति अरु विपत्ति मरण में एक अनुहारहै कहा। जे धर्म वेद विदिततेन त्यागै॥ मनसा वाचा कर्मणा करके जाको विचाररहे अरु कोई ऐसोभी अर्थ करतहें संपति संकहिये कल्याण कल्याणरूपी है पतिजाको ॥ वेदोक्ति पूर्वक यातें विवाहिता कही । और विपतिमें मर णमें सदा कहिये सुखदाई है सकारको अर्थश्रेय ताकी दाता ॥ संकोशहू कहिये जस सं आकाशहै खचरआकाशगामी कहावैहें ॥ भ नक्षत्रको कहैहें भहूकहतिहें । जैसे समता नताकी भेश भईशचंद्रमा नक्षत्रको ईश ऐसो सदाको अर्थ मंगलदायक है ॥ ते इहां पतिकी सेवाहू उद्योतनभई । क्योंकि विपत्तिमें श्रेयदाता कहा सेवा करै ॥ औ लाजहूको बातें [illegible] लजीली होइ तौ नायक सुख पावै अरु मरणहूमें श्रेयदा कहा पा

को उत्तम गति देन हारी। ऐसे स्वकीया कही परंतु यह अर्थ खींचिके होइहै ॥ तातें याहीमें जे बातें निकस गई ॥ का संपति विपतिमें एक अनुहार ठहरीतो एक अनुहार आन न ह्वैहै ॥ १५ ॥

स्वकीयाभेदलक्षण।

दोहा–मुगधामध्याप्रौढगनि, तिनकेतीनिविचार।
एकएककीजानिये, चारचारअनुहार १६ ॥

मुग्धा मध्या प्रौढा ॥ एक एकके चारचार भेदजानिये ॥ १६ ॥

मुग्धाभेद।

दोहा–नवलवधूनवयोवना, नवलअनंगानाम।
लज्जालियेजुरतिकरै, लज्जाप्राइमुधाम १७ ॥

नवलवधू नवयौवना नवल अनंगा औ लज्जाप्राया लाज लिये रति करैहै यह मुग्धाके चार भेद ॥ १७ ॥

नववधूमुग्धालक्षण।

दोहा–जासोंमुगधानववधू, कहतसयानेलोइ।
दिनदिनद्युतिदूनीबढै, वरणिकहैकविलोइ ॥ १८ ॥

दिनादिन द्युति दूनी बढजाय ॥ १८ ॥

यथा ॥ सवैया।

मोहिवोमोहनकीगतिकोगतिहीपढैबैनकहांधौंपढैगी।
ओपउरोजनकीउपजैदिनकाइमढैअँगियानमढैगी॥
नैननकीगतिगूढचलाचलकेशवदासअकाशचढैगी।
माइकहांयहमाइगिर्दीपति जोदिनदोइहिभांतिबढैगी॥१९॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति ॥ कि हेसखी यह बहुत आश्चर्य मय होत जातिहै। कि मोहनकी जोगति है। का जितेक मोहनमंत्र यंत्रादिक बसहैं ॥ अथवा मोहन कृष्ण-तिनकी जो गति है ताको तो याकी चलन मोहति है अरु ओपजाके उरोजनकी उपजैहैं ऐसी दिनदिन तो कासों मढैगी आंगी तो नमढैगी। अर्थ ऐसी आंगीकहां जासों जाके उरोज मढेंहैं ॥ अरु नयनन की गति बहुत गूढ़है ॥ चलाचल विषे सो केशवदास आकाशश्रवण सीमामें मढैगी ॥ हेमाई यह दीपतिकहां अमाइगी जो या भांति दोदिन मढैगी इहां भविष्य में अधिक अलंकार जहां आधारतें आधेय अधिक होइ सो इहां अंगकी दीप्ति आधेय। अंगआधारते ॥ १९ ॥

नवयौवनाभूषिता मुग्धालक्षण ।

दोहा—सोनवयौवनभूषिता, मुग्धाकोयहवेश ।
बालदशानिकसैजहां, यौवनकोपरवेश ॥ २० ॥

यौवनके प्रवेश में बाल अवस्था छूटतजाय ॥ २० ॥

यथा ॥ सवैया ।

॥ केशवफूलिनचैंभृकुटीकटिलूटिनितम्बलईवहुकाली ।
बैननशोचसकोचसुनैनन छूटिगईगतिकीचलिचाली ॥
धौसकधीरधरोनधरोअबलैमिलिवैतुमकोवनमाली ।
वाकोअयाननिकासनकों उरआयेहैंयौवनकेअवताली २१॥

उक्ति सखीकी नायक प्रति कि धौसक धीर तुमधरो वाके उरते अयान निकासिवेको यौवन के ॥ अवताली निकासनहार आइ चुकेहैं काहे उनको देखभृकुटीफूली नचतीहैं । कि हमारे सहायी आये ॥ अरु नितंबने कटिको लूटलई । बहुकालीजो बहुबरसतें अयानने पोसी रही ॥ अरु बचन कों शोच प्राप्त होगयो अयान वारेके अबहमारी दस्तउठो । अरु नयनन जे अयानपनके रहे तिनको संकोच भयो है ॥ अरु गतिकी जो चलचाल हती अयानपनकी सो छूटिगई तातें तुमधीरधरो नधरो: । अब वाकों तुमको हों मिलावतहों । वाको अयान निकासिबेकें यौवन के अवताली आयेहैं इहां जो काकोक्ति सो लगावत तामें नववधू होजात है ॥ नवयौवना माहीं होति तातें समाधि अलंकार है समाधि कौन कहावै जहां आपन कार्य आनके कारणतें होइ सो इहां यौवनके अवतालीतें तिहारो काजभयो ॥ २१ ॥

मुग्धानवलवधूअनंगालक्षण ।

दोहा—नवलअनंगाहोइसो, मुग्धाकेशवदास ।
खेलैबोलैबालविधि, हँसैत्रसैसविलास ॥ २२ ॥

करै सबपै बालविधितें ॥२२॥

यथा ॥ कवित्त ।

चंचलनहूजोनथअंचलनखैंचौहाथ सोवैनेकसारिकाऊशुकतौसुवायोजू । मंदकरोदीपद्युतिचन्दमुखदेखियत दौरकेदुराइआऊद्वारतौदिखायोजू ॥ मृगजमरालबालवाहिरैविडारदेउँ भायोतुम्हैंकेशवसुमोहूंमनभायोजू । छलकेनिवासऐसेवचनविलाससुनि सौगुनोसुरतहूंतेंश्यामसुखपायोजू ॥ २३ ॥

उक्ति नायका की नायक प्रति ॥ नायक कही नायका सों चलो सेजपै सोंवें सो पुन नायका कही बहुत नीकी यह तो मेरे मनहीं में रही अब बहुत रात्री बीती चलो सोंवें जामें कोई जगावे नाहीं। मेरी चंचल होके अचल न ऐंचो हाथ को शुक सोइ चुकोहै सारिकाहू सोंवे ॥ मंदकर देहु दीपकी द्युति चंदमुख तो देखि परतहै । अरु दौरनाम वेगितें दुराइ आऊँ जो द्वार दिखातहै ॥ अरु मृगज जेहें मराल बालजेहें ते बाहिरे विडारआऊँ। जो तुम्हारे मनमें है सो मेरे भी मन भायोहै छलके निवास जो। नायक सो ऐसे वचन सुनकर सुरततें सौ गुणो श्याम सुखपायो श्याम शृंगार सुख पायो ॥ अरु यामें छल निकासो कि छल सोगयो चाहत शुक सारिका तो ज्ञान वारे हें मराल ना होय वचन है सो तासों पर्य्यायोक्ति अलंकार सो नहीं बनत जब इतनो छलजानो तब नवलवधू कहां। ताते इहां प्रहर्षण अंकार जानियें ॥ २३ ॥

अथलज्जाप्रायरतिमुग्धालक्षण।

दोहा–मुग्धालज्जाप्रायरति, वरणतहैंइहिरीति।
करैजुरतिअतिलाजसों, पतिहिवढ़ावैप्रीति ॥ २४ ॥

सुरति लाज युक्त करिके पतिको प्रीति बढ़ावै ॥ २४ ॥

यथा ॥ सवैया।

बोलिनहोंवेबुलायरहेहरिपांयपरेअरुओलियोओडी।
केशवभेटवेकोंभरिअंक छुडाइरहेजकहोंनहींछोडी ॥
सीधेचितैवेकोंकेतौकियौ शिरचापउठाइअँगूठनठोडी।
मैंभरचित्ततऊँचितयो नरहीगढनेननलाजनिगोडी ॥ २५ ॥

उक्ति नायकाकी सखी प्रति ॥ कि हे सखी नायकने लाज छुटाइवेको बहुत उपाय कीन्हें परंतु लाज न छूटी। काहे निगोडी गोड़तें रहित ॥ वे प्रथम सुरति विषे बुलाय रहे पर हौंनबोली। मेरे पांय परे अरु आलीओढ़ी ॥ अरु भरि अंक भेंटिवे के लिये जक मेरी छुटाइ रहे पर हौं नछोडी। अरु सीधे चितैबे कों केतो उपाय कीनों दोह अंगुठा ठोंढीमें लगाये ॥ अरु शिरदोई बगल अंगुरिनतें दबायो। पै मैं लाज न छोडी अरु कहोंके रतिवाच्यार्थतें नहींकसत तौ विज्ञार्थ ते कहतहै के इतनो उपायभये तऊँ-लाज न गई यातें सूचित रति करावति है इहां विशेषोक्ति अलंकार है ॥ जहां आकाजको कारण होइ अरु कारज न होइ तहां विशेषोक्ति जानिये इहां नायक उपाय करै लाज न छूटी ॥ २५ ॥

मुग्धाशयनलक्षण।

दोहा–मुग्धासोइरहैनहीं, पियसँगसुनोसुजान।
जोक्योंहूंसोवेसखी, सुखनहिंताहिसमान ॥ २६ ॥

मुग्धा नायकके पास नहीं सोवै जो सखी सोवै ठेकै तौ मुख नहीं प्रमाण राधिका मा वै एक ही सेज पै धायलै सोई सुभायसलीने ॥ २६ ॥

यथा ॥ सवैया ।

पांइपरैमनुहारकरै पलकापरपांइधरैभयभीने ।
सोइगईकहिकेशवकैसहू कोरककोरहूंसोंहन कीने ॥
साहसकैमुखसोंमुखछ्वै छिनमेंहरिमानमहासुखलीने ।
एकउसांससहीकिउससे सिगरेईसुगन्धबिदाकरदीने ॥ २७ ॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति । कि हे सखी! पांइपरतें मनुहार करेते पलकापरपांइ भयमें भीनेधरे ॥ कैसहू पलंगपर सोहें करे तें सोगई । तब साहसकर नायकने मुखसों मुख छुवायो ॥ औ हरिने महासुख मानो । तब नायकाने उसासलई तासों सिगरे जे सुगंधके रहे ते बिदा करदिये ॥ अरु जो सोहें सुगंध बिदाकरे तौ का रति न होती यातें यह अर्थ आछोनहीं । यहां कारणके संग कारज भयो तातें हेतु अलंकार है ॥ सोहेंकरिबो कारण पलंगपै आइबो कारज ॥ २७ ॥

मुग्धाकोसुरतिलक्षण ।

दो०—मुग्धासुरतिकरैनहीं, सपनेहूंसुखमान ।
छलबलकीनेहोतहै, सुखशोभाकीहान ॥ २८ ॥

मुग्धा स्वप्नमें भी सुख मानके रतिनहीं करत छलबलते नायक रति करै तौ सुख शोभा घटजाय ॥ २८ ॥

यथा ॥ कवित्त ।

सुखदैसखीनबीचदैकैसोंहैंखायकै खवाइकछूस्वायबशकीनीवर सुहै । कोमलमृणालकासीमल्लिकाकीमालिकासी बालिकाजुडारी माड मानसकैपशु है ॥ जानैनाबिभातभयोकेशवसुनेकीबात देखौ आनिगातजातभयोकैधौंअसुहै । चित्रसीजुराखीवहचित्रिणीबिचि त्रगति देखौधौंनयेरसिकयामेंकौनरसुहै ॥ २९ ॥

उक्ति सखीकी नायकप्रति ॥ कि सुख देके सखीनको बीचदे के अरु सोंहेंखाइ नखावा रीवस्तु खवाइ वाको वरवश सुवाई । फेर महा कोमल मृणाल कासी चमेली मालिकासीतुम बालिकासी जो यह मानसवारीबात है ॥ कि पशुवारी है।अबजानत नहीं बिभातयें है ॥ बातको सुनैगाततो देखो ऐसो अनर्थ भयो जात है वह चित्रिणी चित्रकेसी होगई है।क अचल होगई है ॥ यामें तुम्हेंकौन रसुमिलो । कहेंधों नये रसिकभी पाठहै ॥ इहांविषम अलंकार है अनमिल तके संग तें । नायक प्रौढ़ नायका नवोढ़ ॥ २९ ॥

मुग्धाकोमान।

दोहा-मुग्धामानकरैनहीं, करैतोसुनोसुजान।
त्योंडरपाइछुड़ाइये, ज्योंडरपैअज्ञान ॥ ३० ॥

मुग्धा मानकदापि नहीं करै जो करै तौ अज्ञानकी रीतितें डरपायके छुड़ाइये ॥ करहित सुनहु यहभी पाठहै ॥ ३० ॥

यथा ॥ सवैया।

बोलैनबालबुलावतहू नखरेखलिखैभुवप्रेमपरेखो ।
आपनैहाथविलोकविलोक कहीतवकेशवबुद्धिविशेखो ॥
छोटिबड़ीविधिरेखलिखी युगआयुकिरेखसुकौनसुलेखो ।
प्रेमतेबोलसहोनपरो अकुलाइकहीपियकैसिहैदेखो ॥ ३१ ॥

मुग्धा सखीनके सिखाये मानकर बैठी है नायक बुलावत आपु नाहीं बोलत नखते भूमि लिखतहै जाहीप्रेम परेखो ॥ आनमानकी रीति नाहीं जानत। तब नायक आपने हाथ देख देख बुद्धि विशेष करके कही ॥ कि विधाताने एक छोटी एक बड़ी रेख लिखी है सो नहीं जानत ॥ हमारी आयु की रेख कौन है । इतनी सुनमान छोड़के प्रेमते यह बोलसहो नहींगयो ॥ अकुलाय बोली पीय कैसीहै । तुम देखो तो बोलत मान छूटगयो ॥ तबनायककही जबनायका कही पीय कैसी है। तबनायककही-देखो ॥ इहां संसृष्ट अलंकार है।

जहां तिलतंदुलसे अनेकअलंकार मिलैं तहां संसृष्ट ॥ बलावत नवोली। कारण अछित कारज न भयो यातें विशेषोक्ति अरु नायक छलकरो ॥ आपन हाथ देख तातें दूसर पर्यायोक्ति। अरु कैसीहै नायका वचन देखो नायक वचनते उत्तरा यातें जहां प्रति उत्तरहोइ तहां उत्तरा यातें संसृष्ट इति मुग्धा ॥ ३१ ॥

अथमध्याकेचतुर्भेद।

दो०-मध्याआरुढयौवना, प्रगलभवचनाजान।
प्रादुर्भूतमनोभवा, सुरतिविचित्रामान ॥ ३२ ॥

आरूढ़ यौवना प्रगल्भवचना प्रादुर्भूतमनोभवा उत्पत्तिभयो है कामजाके औ सुरति विचित्रा यह मध्या के चारभेदहैं ॥ ३२ ॥

मध्याआरूढयौवनालक्षण।

दो०-मध्याआरुढयौवना, पूरणयौवनवंत।
भागसोहागभरीसदा, भावतहैमनकंत ॥ ३३ ॥

आरूढ़ यौवना मध्या है यौवन जानायका के परिपूर्ण। भाग सुहाग भरी सदा जाके मनमें कंत भावत है ॥ ३३ ॥

यथा ॥ कवित्त ।

चंदकैसोभागभालभृकुटीकमानऐसी मैनकेसेपैनेशरनैननविलासुहैं । नासिकासरोजगंधवाहसेसुगन्धवाह दारयोंसेदशनकैसोवीजुरीसोहासहै ॥ भाईऐसीग्रीवाभुजपानसोंउदरअरु पंकजसोंपांइगतिहंसऐसीजासुहै । देखीहैगुपालएकगोपिकामैंदेवतासीसोनोसोशरीरसब सोंधेकैसीवासुहै ॥ ३४ ॥

उक्ति सखी की नायकसों कि एकनायकामैंदेखी सांकैसीहै ॥ चंद्रभाग आधेचन्द्र सो जाको भालहै । अरु भृकुटी कमान ऐसी है मैनकाम के शरबाणसेपैनेहैं नैन अरु नासिका सरोजकमल सी गंधवाहसी है॥ सुगंधगंधवाह नाम पवनको है । दारोंसे जाके दशन हैं अरु बीजुरीसी है हास जाकी अरु भाईउतारी ऐसी ग्रीवाहै ॥ अरु बांह है पानपत्रसो उदरहै कमल से पांइ हंससी चालहै॥ हेगुपालएक! गोपिका में देवता सी देखी है । जाकोसुवर्ण सो शरीर है॥ सोंधेकी वास है । तोइहां नायका की रुचिजान । सखी नायक को मिलायो चाहत॥ यह तो काम अरु चलो कहत नहीं यातें मध्या । मध्या की सखी भी मध्या होतहै ॥ किमैनके शरसे पैने नैन ते काम बीजुरी से हास तें। लाज यातें मध्या तो नेत्रके वाण मारत ॥ अरु हँसत । यहलज्जाको धर्म नहीं ॥ अरु पीय की चाह यह । निकासी कि सब नायक के वचनहैं ॥ तीन तुक में चौथी में सखीके कि मैं देखी है तो यामें नायका की चाह कहांतें आई। अरु यह कही सोनो सुगंधहै तोभी न निकसी ॥ कहा यह आन में नहीं होति । कोई कहै यह परकीया में होजात ॥ तातें वही व्यंगते कही । इहां कवि निवद्धवक्ता की उक्ति ते नायका के रूप की अधिकाई वस्तु तातें तुम मिलौ यह दूसरी वस्तुहै ॥ अथवा उपमा अलंकारतें नायक कों मिलायो चाहत यह वस्तुहै । चंदभाग उपमान सो वाचक ॥ भाल उपमेय । इहां धर्म लुप्ता सोई भृकुटी कमान में मैन शर उपमान नैन उपमेय से वाचक पैने धर्म्म यारीति ते सब उपमाके भेद जानियें ॥ ३४ ॥

अथप्रगल्भवचना मध्यालक्षण ।

दोहा–प्रगलभवचनाजानतिहि, वरणैंकेशवदास ।
वचननमाहँउराहनो, देइदिखावैत्रास ॥ ३५ ॥

वचन प्रगलभहोय ।। बोलत में शंका नकरै । वचननमें उराहनो देय औ त्रास दिखावै ॥ ३५ ॥

यथा ॥ सवैया ।

कान्हभलेजुभलेढँगलागे भलेह्वैनैननकेँरँगरागे ।
जानतहौंसवहीतुमजानत आपसेकेशवलालचलागे ॥
जाहुनहींअहोजाहुचले हरिजातजहींदिनहींवनवागे ।
देखकहांरहैधोखेपरे उभटोगेजुदेखवोदेखहुआगे ॥ २६ ॥

नायक तयार होकर बाहिरजात तब नायका कहत है कि हे कान्ह! तुमबहुत भले हो अरु लेढंग सीखेहो ॥ अरु भलेहोके नैनकेरँगरँगे हो ॥ अर्थ जासों नैन लागत ताहीके ।जातहो भले इन नैननिके रँगरागे यहभी पाठ है ॥ जानतहो सब बात तुमहीं ारु तुमको जे तुमसेहैं ते जानत जो या लालचमें लगेहैं ॥ तुम जाहु नहीं जातहो हीं इहांसे चलेजाहु ॥ जहां जातहो दिनमें ॥ बनाइकै बागे । उत्तमजामा बनाइके न्हा देख रहेहो धोखेपरकें उबठौगेजू देखबौजो जोदेखबो उबटत है उबटबौ बढ़ो जो ।भिमान कोई बातकर आनको दिखावे वासों उबटब कहेहैं आगे देखो कहाहोइगो ॥ इहां ।हितअलंकार है ॥ छपी बातको प्रगट करै सो पिहित अरु लाटा अनुप्रासहै यही शब्द- ।रफिर आवत ताते । उलटेकसे देखिहोयभी पाठ है । प्रश्न ॥ यामें स्वकीया नहीं ॥ ।खेपरेइत्यादिक वचननितें परकीयासी भासती है ॥ मध्याके वचन स्वकीयामें कहेहैं ।त्तर यह कहती है नायकाजातहो बनिबनि बागे जहां ॥ तौबागेको पहिर चलिबो निज- ।रही में बने परकीयाके घरवागे कहां ॥ याते स्वकीयाई है ॥ ऐसेभी कोई कहत ॥ ३६ ॥

प्रादुर्भूतमनोभवामध्यालक्षण ।

दोहा–प्रादुर्भूतमनोभवा, मध्याकहैंवखान ।
तनमनभूपितशोभिये, केशवकामकलान ॥ ३७ ॥

जाके तनमन में कामकलाभूषित होइ सो प्रादुर्भूतमनोभवा मध्या ॥ ३७ ॥

सवैया ।

आजुमैंदेखिहैगोपसुता इकहोइनऐसिअहीर किजाई ।
देखतिहाँरहियेद्युतिदेहकि देखतेंऔरनदेखि सुहाई ॥
एकहिवंकविलोकनऊपर वारौंविलोकत्रिलोक निकाई ।
केशवदासकलानिधिसोवरु बूझिहैकामकिमेरोकन्हाई ॥३८॥

बंकविलोकनते तनमन भूषित कामकलान यहकह्यो ॥ तहां तीनवार क्यों कहे ।क,तो यहीबात अनुचित है ॥ दूजे जहां कन्हाई कहे तहां उनकी समता क्यों कला- ।धि अरु काम कहो न चाहिये तहां ऐसो अर्थ केशवदास कलानिधि सों कही ॥

कलानिधि सों पद चाहिये ॥ काहे कलाकामकी ॥ पाठौर दीर्घ को लघुहै ॥ का
किया सो भासत है सो कामको कलाकी निधि है कौन है ॥ मेरोकन्हाई है ॥
एक कान्हही कहेहैं तहां कोईक है यहां नायकामध्या है ॥ सोऊचारभेदके तीनै सा
पैहै ॥ प्रौढ़ा के निकट जाइलगी ॥ सोकहां अयलों विवाही नहीं ॥ यह तो शा
विरुद्ध है ॥ काहे प्रौढ़ाके निकट धैस आई ॥ और सब अवस्था पतिविन बीती
यहबात शृंगारशास्त्रसों विरुद्ध और काहूनें टीकामें लिखी है ॥ तहां कन्या लिखी है
सो जादेश में ऐसी कन्या है ॥ तो प्रौढ़ा कौनबातकी है है प्रौढ़ाही जानपरत
यह बड़ी शंका है॥ तहां ऐसी कहेचाही काहूने कोई अतिसुंदर नायका देखी सो जानउनी
कौनकी है ॥ कि मैं एकगोपसुता देखी है ॥ सो कहती है ॥ मैं एकगोपसुता देखी
सो ऐसी सुंदर है ॥ ताकोवरु कि तो कलानिधिबूझिये ॥ कि मेरो कन्हाई ताकी नायक
बूझिये ॥ ऐसे संदेह सों कहत है ॥ तहां प्रश्न ॥ जो संदेह है जानतीही नहीं
तो मेरो कन्हाई यननो यह प्रश्नताको उत्तर जासों कहत है ॥ सोवा नायकाकी
धाई है सो वह वहिरंगता धाईसों कहत कि मैं आजुदेखीहै गोपसुता नायका ताकी स्तुति
करी और कही कि मेरे अनुमानमेंयों आवत है कि वाकोपति कलानिधिबूझिये॥
कहाके तो चंद्रमाकी स्त्री है कि कामकी ऐसिन के घरकी मोहिलागत है। तब धाई कही
कि मेरो कन्हाई ॥ धाईने जताई दियो । धाईके उत्तर ते उत्तराअलंकार ॥ अब
सीधो अर्थ ऐसोयाको है । सखी सखी प्रति नायकको सुनाई कहत तात नायकाके
नजदीक नायक जाइके ॥ मैं एक गोपसुता देखीहै ऐसी गोपकी कुमारी नहीं होत॥
जाकी देहकी द्युति देखत रहिये ॥ आन को देखबो नहीं सुहात ॥ वाकी एक
वंक विलोकनपै त्रिलोकको निकाई वारिये जाकोकलानिधि सों वर्ण कन्हाई बूझिहै जे
यातें कामकी ॥ अयवा काम बूझिहै काहेवहमनोभव है कलानिधि है अनेककला जान
तकि कन्हाई । अर्थ अर्थ परसमै वाको देखनहार दोहें ॥ कि अंगमें कामके बाहि
रकन्हाई विकल्प अलंकार ते नायक मिलाइबो चाहत यहवस्तु जहां भविष्य कही यह
ह्वैहै कि यह ह्वैहै तहां विकल्प भूतवर्तमानमें संदेह यह भेद संदेह विकल्प को है ॥३८॥

अथसुरतविचित्रामध्यालक्षण ।

दोहा–अतिविचित्रसुरतासुतौ, जाकीसुरतविचित्र ।
वरणतकविकुलकोकठिन, सुनतसुहावैमित्र ॥३९॥

विचित्र सुरता वह है कि जाको सुरतविचित्र होइ॥ औ कविकुलपै कठिनतासों क
जाय । और जो कोऊ सुनै ताहि सुहाय । और मित्र संबोधन है ॥ ३९ ॥

कवित्त ।

केशवदाससविलासमंदहासयुतअविलोकनअलापनकोआनँद
अपारहै । वहिरतिसातअरुअंतरितसातसुन रतिविपरीतनिकोवि

वेधविचारहै ॥ छूटिजातलाजतहांभूपणमुदेशकेश टूटजातहारसब-मेटतशृंगारहै। कूजिकूजिउठैरतिकूजतिनसुनिखग सोईतोसुरत-सखीऔरविवहारहै ॥ ४० ॥

उक्ति नायकाकी अंतरंग सखीसों। कि हेसखी! जो ऐसी होइ जो रति है कि केशव मोहै सो जामें आपनदास होइजाइँ ॥ सो विलास सहित। अरु मंदहास युतहोइ ॥ अरु देखबेको बोलवे को आनंद अपार होइ। फेरअंतर वाहिरकी जे सातरतिहैं ॥ तेहोहिं। तदनंतर विपरीत को नानाप्रकार को विचार होइ अरु लाजछूटि जाइ। अरु भूपण सुंदर देशते बिगरजाइँ केशभी छूटिजायँहीं ॥ अरु हार टूटजाहिं। सब शृंगार मिटजाहिं ॥ अरुरतिके कूजनसुन पक्षी कूजन लगें। यह जानकोई पक्षी कूजतहै सोई सुरतहै और तो व्यवहार है दंपतिको तो यामें कविको कठिन कौन बातकेशवराखि कोई कहै तो रतिकरी है नहीं विचारमात्र रतिहै। तो विन सुरत की सुरत यह कठिनता इहां लाटा अनुमास वृता अनुप्रासवीप्सा है ॥ केशवदास साविलास यह वृता सात सात कूजकूज यह वीप्सा अथ सातवहिररति ॥ ४० ॥

वहिररतिसात।

दोहा–आलिंगनचुंबनपरस, मर्दननखरददान।
अधरपानसोजानियें, वहिरातिसातसुजान ॥ ४१ ॥

टीका सुगम ॥ ४१ ॥

अथसातअंतररति।

दोहा–थितितिर्यकसनमुखविमुख, अधऊरधउत्तान।
सातअंतरतिसमझिये, केशवसकलसुजान ॥ ४२ ॥

स्थिति इत्यादिक आसन जानिये ॥ ४२ ॥

दोहा–सोरहईशृंगाररस, सोरहसुरतसमान।
बुधिविवेकवलसमुझिये, केशवसकलसुजान ॥ ४३ ॥

यहदोहा प्राचीन पुस्तकनमें नहीं मिलत ॥ ४३ ॥

अथषोडशशृंगार ॥ कवित्त।

प्रथमसकलशुचिमज्जनअमलवासजावकसुदेशकेशपाशकोस-म्हारिबो।अंगरागभूपणविविधमुखवासरागकज्जलकलितलोललोच-नविहारिबो ॥ बोलनिहँसनिमृदुचलनिचितौनिचारुपलपलप्रतिप-

तिव्रतपरिपारिबो । केशवदाससाविलासकरहुकुँवरिराधेइहिविधि
सोरहशृंगारनिशृंगारिबो ॥ ४४ ॥

इहां केशव ने सोरह शृंगार कहे । तहां शृंगार जो करने ते होई सोइ कहावै तहां ज
बोलनि चितवनि चलनि पतिव्रत यह शृंगारमें कैसे बनिहै शृंगार जो पतिव्रत तौ कहा पति
छूटत बनतहै ॥ सुरतांतमें सब शृंगार छूटत । बरणेहैं अबहीं केशव पाछिले कवि
काहे चुके कि सुरत विचित्राके उदाहरण में के । टूटजात हार सब मिटत शृंगार है
तो पतिव्रत मिटिहै अरु फेर हैहै । अरु हसनि बोल आदिक सब स्वभावमें हैं ॥ त
ऐसो अर्थ कीजिये । प्रथम सकलशुचि १ मज्जन २ अमलवास ३ जावक ४ केशसमारबे
अंगराग ६ तहां एक अंग को राग अंग बनाइयो तो पहिले पांच ५ भयेमांगसिंदूर
भालखौर ७ फेर चिवुक तिल ८ मेहंदीरचाइयो ९ अरगजा लगाइबो १० फिर भू
ण विविध दो तरहके ॥ मणि सुवर्णके ११ फूल के १२ मुखवासमें तीन मुखमें
वास लवंगादि १३ दन्तमञ्जन १४ अधररंग ताम्बूल ते १५ अरु काजर १६ । ह
कोई कहै कि अंगरागमें सब बनाये तहां जावक काजर काहे जुदा कीनो तौ ये दे
ज्यादा रंग करनहार हैं जैसे नेत्र श्याम कि अधिक श्याम । अरुण अधिक अरु
अरु बोलनि चितवनि को ऐसो अर्थ ॥ इन विलासन सहित इहां केशवदास साविल
स यह पतिव्रत औ वृत्त्यनुप्रास है ॥ ४५ ॥

अथसुरतान्त ॥ सवैया ।

सुन्दरतापयपावकजावकपीकहियेनखचन्दनयेहैं ।
चन्दनचित्रसुधाविषअंजनटूटिसवैमणिहारगयेहैं ॥
केशवनयननिनीदमईमदिरामदघूमतमोहमयेहैं ।
केलिकेनागरिनागरप्रातउजागरसागरभेषभयेहैं ॥ ४६ ॥

उक्ति सखीकी सखी प्रति ॥ कि आज सुरतांत में नागरी अरु नागर उजागर सा
गर के भेषक होइ रहेहैं जो सुन्दरता है सोई पय जलहै । अरु पावक बड़वा अग्नि
सो जावक अरु पीक अरु हियेमें नख तेई चन्दहैं ॥ चन्दनते चित्रित सोई सुधा अ
मृत है । अरु विष अंजनहै ॥ अरु जो हार टूटे सोई मणि है । अरु जो
नींद है सोई मदिराहै ताके मदते घूमत मोह मयहैं । केलिकरिके सागररूप होइ
तहां कोई कहै किचंदन एकहै तौआन पुरानोचाहिये ॥तहां ऐसी कहिये कि चन
पूरण निकसे ये द्विती याके हैं यातें नयेकहे अरु मध्या काहे कि घूम रहे हैं ॥
नायकाकी ओर मुख कीने है नायका पीठदिये यातें लाज अरु सुरत कराई
काम ॥ अरु कोईहार टूटबे में मध्याकही खेंचन क्रियाते । लाजआयो औ प्रौढा

काम सों भेटती है ॥ मुग्धाकी सुरतांत सुन्दरता यह पदने दूरकियो । सो तो प्रौढाकी रतिमेंभी वर्णन करतेहें । देव आदिक सब कविनने वर्णन करे ॥ सौति मखहार है निहार टूटे हारेहें इहां रूपक अलंकार जहां उपमान उपमेय समता वाचक हीनकर होई सो रूपक ॥ तो सागर उपमान नागरि उपमेय । अरु कोई कहे कि इहां वाचक धर्मलुप्ता काहे न होई तो वामें विशेषमात्र होई है ॥ यामें विशेष विशेषण दोनों इतनो भेद ॥ ४५ ॥

अथ मध्याधीरादिभेद ।

दोहा–सिगरीमध्यातीनविधि, धीराऔरअधीर ।
धीराधीरातीसरी, वरणतसुकविअमीर ॥ ४६ ॥
धीराबोलैवक्रविधि, वाणीविषमअधीर ।
पियकोदेइउराहनो, सोधीरानअधीर ॥ ४७ ॥

धीरा वक्रबोलै अर्थ व्यंगलिये कोपकरै ॥ वाणी विषम कहिये टेढ़ी बात कहै व्यंग न राखै । सो अधीरा ॥ पियको उराहनो देय अर्थ व्यंग अव्यंग दोईकरै सो धीरा धीरा ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

धीरायथा ॥ सवैया ।

ज्योंज्योंहुलाससोकेशवदासविलासनिवासहियेअविरेख्यो ।
त्योंत्योंबढ्योउरकम्पकछूभ्रमभीतभयोकिधौंशीतविशेख्यो॥
मुद्रितहोतसखीवरहीमेरेनैनसरोजनिसांचकैलेख्यो ।
तैंजुकह्योमुखमोहनकोअरविन्दसोहैसुतौचंदसोदेख्यो ॥ ४८ ॥

उक्ति नायकाकी सखी प्रति ॥ नायकके सुनाई कहत है कि हे सखी! नायकको मुखकमल सो तू कहत रही सो चंदसो आज मैंने देखो चंदको आशय यह किकलंकीहै अरु शीतकरहै अरु घट बढ़ होतहै अरु प्रात द्युति हीन होजात अरु कमल आपनो स्थान छोड अन्तनहीं जात चंद्रमा घटादिकमेंभी पहुँचै है जोदेखै सो यह जानि कि हमारेनेत्र सामुहे है अरु सोई रीति इनकी है यह तें वक्रउक्तिअलंकार धीरानायका अरु मध्या कोहेतें सो अब कहतहें नायकाको क्रोधते कंप भयो ताको लाजते छपावत है कि हे सखी! जैसे जैसे बड़े हुलाससों विलास को निवास हिये में अवरेख्यो त्यों त्यों मैं कंपनलगी तबमोको भ्रम भयो कि भीतभई है कि विशेपशीत तय वर श्रेष्ट है हे सखी! वरहीसे जो मेरे नैनसरोज है ते मुद्रित ह्वै गये हैंऐसो जानि सखी कहो कि अरविन्दसो मुख हैं सोवह चंदसो हैं अरु कोई कहै कि वरही नेत्रबरही काहे कहे तो कमल चंदते दूर रहत मुदित होतमध्या ॥ ४८ ॥

अथमध्या अधीरा यथा कवित्त।

तात [illegible] रिकैसोम [illegible]
भायोहै। [illegible]
जकैसोगायो है॥ केशौदासवसतअकाशकेप्रकाशवोप घटघट
घरघरैवनोछायोहै। [illegible] सोकहौ
राइझूँठकौनयहपायोहै॥ ४९॥

उक्ति नायकाकी नायकसों। तात वैसो तौ गातहै कहा तात पिता को
अरु तिहारो डगत बलबीर कैसो बल बलवीर बारुणीखाइ मतिजातहै अरु
मुख है का कछु कछु महावर लगो है अरुयलसों शीलवाको नाम क्षमा
तुम क्षमा धारण करहो अरु पवनसो सब शरीर है शीतल संग
चित्त कहा नीचे चलत तेज कहे अग्नि तो तेज मेरे अंगके ते पायो अथवा
आकाश सो होत अरु तुह्मारे घर सर्वदा व्यापक कहे बसत है अरु रति कैसी
पति त्याग अरु रूपमें रूप रतिनाथ कैसो कहा संगिन के सुखद असंगिन कै दुख
विषमवाणीको अर्थ सहजही सब जानत परंतु जो जो झूठ है सो नायकचित्त
अरु साफ नहीं कहत कि यह कीनों ताते मध्याउल्लेस अलंकार
बरनै सो यहां तात आदर्शन कहि दीनो है॥ ४९॥

अथमध्याधीराधीरा यथा सवैया।

कान्हभलेजुभलेसमुझायहौमोहसमुद्रकोज्योंउमड्योंहै।
केशवआपनेमाणिकसोमनहाथपरायेदैकौनौलह्योहै॥
नैननहींमिलवोकरियेसबबैननको मिलबैतौरह्योहै।
जायकह्योतुमजैसेसखीनसोंऐहोगुपालमैंऐसोकह्यो है॥ ५

उक्ति नायकाकी नायक प्रति। कि कान्हभलीने भली समुझाई है नायक
सो उमहो हुतो अरु आपने माणिक सो जो मन है सो पराये हाथदै कौनने
सों मिलिबो करिये अब बैननको मिलिबो तो रहो जैसे तुम सखीनसों जाइके कहत
हो गोपाल में ऐसो कहो है यह अक्षरार्थ परंतु यामें प्रश्न गोपालाने सखीनसों कहा
सो नहीं कही तहां उत्तर॥ कि ऐहोगोपाल मेरे गोपाल ऐहैं यह अर्थ नीको
यामें शब्दको मुख्यदलत शब्द यहां गुपाल है तहां गोपालको अर्थ गोगऊके
[illegible] मनोरहो गोपालको गोपाल कियो अरु सूरत कहेहैं कि आंखिनको
पूरण [illegible] गयो में ऐसो कविकहो काहे यामें प्रीति उदासीन दई बड़ी
नायककी ओर [illegible] यामें प्रीति काहे कहि कि मुकरगई अरु तुम याही लायक
बचन॥ अरु कादृ।

तौ यामें उदासीनता तौ यामें परकीयत दोषको दूसरा प्रश्न उत्तर चाहने परा
तौ धीर भी परकीया हो जाइगी जैसे क्षुद्र कविन लिखदई कि मुग्धापरकीया ऊ-
होसकत ताही गनतीमें केशवदास होजैहैं भलावे तौ धीराको भेद नहीं जानत रहे अरु
नकी हुव तनपाई रही केशव तौ महाराज वीरबर महाराज रामशाहि महाराज
के दरबारी रहे तो वे कैसे कहेंगे काहे धीरा सपत्नी सों कलंकलगावत या अर्थमें
साफ परकीया है गई तहां तीनतुकधारी बात चौथी तुकमें है के काहूभलीने
ों समझाई है कैसे मोह समुद्रम उमहेहैं तौ मोह समुद्रम अपनो मन माणिक पराये
दयो सो काहूने पायो के वेही पावें अरु नयनन को मिलबो तिहारो रहो बैनन को
बोगयो यहमोहि आननै सिखाई ताते तुम उनसों कहो नाराज होके सोमें ऐसी
कहीहै तौयामें मैं नहीं कही अरुकही दोनों बात आई तातें धीरा अधीराभई यामें
ा अलंकार मोह उपमेय समुद्र उपमान ज्यों वाचिक उमह्यो धर्मताते पूर्ण उपमा
ाक उपमान मन उपमेयसो वाचिक तातें धर्म लुप्ता ॥५०॥

अथ प्रौढाभेद चतुर्विधा।

ोहा–सुनिसमस्तरसकोविदा, चितविभ्रमयाजाति।
अनिआक्रामितनायका, लुब्धापतिशुभभांति ॥५१॥

अक्रामित पतिआन औलब्धापतियखान यहभी पाठहै ॥ ५१ ॥

अथ समस्तरसकोविदालक्षण।

ोहा–सोसमस्तरसकोविदा, कोविदकहतबखान।
जोरसभावैप्रीतिमें, ताहीरसकीखान ॥५२॥

समस्त रस कोविदा सब सुखसाधनकी सिद्धिहो अरु जो प्रीति में रस भावै ताही
की खानिहोइ दान भी पाठहै॥ ५२ ॥

कवित्त।

ेखीहैगोपालएकगोपिकाअनूपरूप,सोनेतसलोनीवाससोधेतेसुहा
। शोभाहीसुहाईअवतारुघनश्यामकीधों, कीधोंयहदामिनीयेका
नीह्योआईहै ॥ देवीकोउदानवानमानहानहोइऐसी,भानवानिहाव
वभारतीपठाईहै। केशोदाससवसुखसाधनकीसिद्धयह, मेरेजानमें
ोसोमैनकीकीजाईहै ॥ ५३ ॥

हे गोपालएक गोपिका सोने के से रंगकी जिसकी उपमा ही मो सों नहीं कहिजातकी
घनश्याम शोभा ही ने अवतार लियो है या बिजुलीही स्त्रीको रूपधारण किये

है ऐसी मैंने देखी है ऐसी स्त्री तीन देवतों के और न दानवों के न मनुष्योंके है कीधों सरस्वती है या सब साधनकी सिद्धि है या मेरे जानमें मैन कामदेवकी उत्पन्न की हुई है॥५३॥

विचित्रविभ्रमाप्रौढा।

दोहा—अतिविचित्रविभ्रमसदा, प्रौढ़ाप्रगटबखान।
जाकीदीपतिदूतिका, पियहिमिलवैआन॥५४॥

विचित्र विभ्रमा प्रौढा नायका का उदाहरण। जा स्त्रीका अतिविचित्र विभ्रम होवे जाकीदीप्तिको देखके दूतीकावाके पियका मिलाप करादेवे ऐसी स्त्रीको विचित्रविभ्रमा प्रौढा कहें हैं॥ ५४॥

कवित्त।

हैगतिमन्दमनोहरकेशवआनंदकन्दहियेउमहेहैं।
भौंहविलासनकोमलहासनिअंगसुवासनिगाढेगहेहैं॥
वहै विलोकनिकोअवलोकिसुमारुह्योनन्दकुमारुरहेहैं।
येकतोकामकेबाणकहावतफूलनिकीविधिभूलगहेहैं॥५५॥

जाकी गति मनके हरनेवाली मन्दर होय और मनमें आनंद के कन्दको उमा है और जाके भौंह की मरोडन और कोमल मुसक्यान और अंगकी सुगंध और नयनों की टेढ़ी चितवनि देख कहे नन्दके कुमार श्रीकृष्णजी कामदेव फूलनकी विधिको भूल गयेहें यही तो कामके बाण कहावें हैं॥ ५५॥

अक्रमतिप्रौढा।

दोहा—सोअक्रामतिनायका, प्रौढाकरियेचित्त।
मनसावाचाकर्मणा, वशकीन्हेजेहिमित्त॥५६॥

अक्रामति प्रौढा नायकाको उदाहरण।जो नायका मनसा वाचा कर्मणा करिकेअपने मित्रको वशकरे वाको अक्रामति प्रौढ़ानायका कहे हैं॥ ५६॥

कवित्त।

गोहितगाइबजावतनाचतवारअनेकशृंगारबनायो।
हहिमेंआनकोआनिबीछोड़िबोतेरोतऊनभयोमनभायो॥
विसोतकरिवाकोभामिनभागबड़े वशचोकड़िपायो।
नन्दज्योंमूर्षेनृचाहतनाहिंनेचाहतिहअवपाइलगायो॥५

हे नायका बन्द गति बजावे अरु नाचते हैं अरु अनेक शृंगार करे लगे मन नहीं माने है हे भामिनी तेरे बड़ेभाग होंगे अरु जो यह कृष्ण को छोड़के और को पसन्द करेगी तो तेरे हिरमें भलाई न होगी॥

प्रौढ़ा लब्धापति ।

दोहा–सोलब्धापतिजानिये, केशवप्रगटप्रमान ।
कानिकरैपतिकुलसबै, प्रभुताप्रभुहिसमान ॥ ५८ ॥

लब्धापतिप्रौढ़ा नायकाको उदाहरण ।

जानायका पति औरकुलके सबमनुष्योंकीकानिकरैवाकोलब्धापति प्रौढानायकाकहैं ५८

कवित्त ।

आजुविराजतिहैकाहिकेशवश्रीवृषभानुकुमारिकन्हाई ।
वानीविरंचिवहीक्रमकामरचीजोबरीसोवधूनवनाई ॥
अंगविलोकित्रिलोकमेंऐसीकोनारिनिहारिननारबनाई ।
मूरतिवन्तशृंगारसमीपशृंगारकियेजानोसुन्दरताई ॥ ५९ ॥

हे कन्हाई ! आज वृषभानु कुमारी ऐसी सोहै है कि मानों काम देवने सरस्वती हीको जिस क्रमसेरचीहै वही क्रमसे इनको भी रचा ऐसी तो त्रिलोक में कोई स्त्री नहीं है कीधौं मूरतिवंत शृंगार के समीप मानों शृंगार किये सुन्दरता ही आई होय ऐसी शोभे है ॥ ५९ ॥

प्रौढ़ाधीरा ।

दोहा–आदरमांझअनादरे, प्रगटकरैहितहोइ ।
आकृतिआपुदुरावई, प्रौढ़ाधीरादोइ ॥ ६० ॥

धीराप्रौढ़ा नायका को उदाहरण ॥ जो आदर के बीचमें अनादर करै और प्रकट में हितकरै और आकृति को छिपाये रहै वाको धीरा प्रौढ़ा नायका कहैहैं ॥ ६० ॥

कवित्त ।

आवतदेखिलयेउठिआगेहुइआपहिकेशवआसनदीनो ।
आपुहिपांइपखारिभलेजलपानकोभाजनुलाइनवीनो ॥
बीरीबनाइकेआगेधरीसोजबैहरिकोवरबीजनलीनो ।
बांहगहीहरिऐसोकह्योहंसियेतौइतोअवराधनकीनो ॥ ६१ ॥

जो नायका श्रीकृष्णजीको आवते देखिके आगे उठिके लेवै और आसन बैठबेको देवै और आपही जलके भाजनको लाय के चरण धोयके बीरी खाने के लिये देके आप पंखा हांके ऐसी आराधना करै ॥ ६१ ॥

प्रौढ़ाधीरा आकृति गुप्ता ॥ कवित्त ।

चितवेचितवायेहंसायेहंसोऔवुलायेसेबोलेरहैमतिमौने ।

सोहअनेकनिआवहुअंककरौंरतिकोप्रतिरैनकोरौनै ॥
कोईखवायेतेखाऔविराजत्तुआइहौंकेशवआजुहिगौनै।
मोहनकेमनमोहनकोसखीतोहिनहींसिखईसिखकौनै ॥६२॥

आकृति गुप्ताधीरा प्रौढ़ा नायका को उदाहरण, ॥ जो नायका चितवायेते चितै और हँसाये ते हँसै और बोलायेते बोलै नहीं तौ मौनही रहै और खवाये ही ते खावै मनो गौने या रौनेमें आई है और मन मोहनके मन मोहिबेको मानों काहूने नई सीख सिखाई है ऐसी नायका को आकृतिगुप्ताधीराप्रौढ़ा नायका कहैं हैं ॥ ६२ ॥

कवित्त।

हितकोइतदेखोजुदेखोसबैहितुबातसुनोजोसुनीनिबहीहै।
यहतोकछुऔरवहेसबहैऔरसोहकरोजूकरोजुतुहीहै ॥
समुझाइकह्योसमझायकैकेशवझूठीसबैहमसोंजुकहीहै।
मानकियेअपमानकरैजोहंसोअबकेहंसिवेकोरहीहै ॥ ६३ ॥

हे नायका? यहां हितको देखो जो सबै देखतीहैं और हित ही की बातसुनो जाके सुनेंते निबाह होइगो यह तो सब कछू औरही है याकी सोंहकहे इस तरह ते समझाय के कहो और सब जो हमसों कही है वह सब झूठी है और मान कियेते अपमान करो है ॥ ६३ ॥

प्रौढ़ाअधीरा।

दोहा–मुखरूखीबातैंकहै, जियमेंपीकीभूख।
धीरअधीराजानियें, जैसीमीठीऊख ॥ ६४ ॥
पतिकोअतिअपराधगनि, हितनकरैहितमानि।
कहतअधीराप्रौढ़तिय, केशवदासबखानि ॥ ६५ ॥

अधीरा प्रौढ़ा नायकाको उदाहरण। जो नायका मुखतेरूखी बातें कहै और जियमें पियकी भूख रहै ऐसी ऊखसरसमीठी नायकाको अधीरा प्रौढ़ा नायका कहैहैं ॥ ६४ ॥
बड़ा अपराध गनिकै हित मानिकै जो स्त्री हित न करै ताको केशवदास किह[illegible] ऐसी स्त्री को अधीरा प्रौढ़ा स्त्रीकहते हैं ॥ ६५ ॥

कवित्त।

हौंमनमैंठेनबोलौंकछूअबर्छांड़हुबोलिबोबोल हंसौंहै।
केशवओरनिसारसरासरिसोरसबादसबैहमसोंहै॥

देखहुधौंयकवारसकोचनआरसलोचनआरसीसोहै।
आयजूवेसेईसाजसौआजुसोभूलिगईपियकाल्हिकीसोहैं६६॥

जो स्त्री पतिको अपराध हृदयमें गनिकै वासों नेहनहीं लगावै है उसको अधीरा प्रौढ़ा नायका कहते हैं—सो पतिसों कहे है कि मैं मनसों अधीर हौं यासों हमसों बोलिबो छांडो और हांस आदिक न करो और रात्रिके विषे रास विलासकी वार्ता सोभी न करो काहेसे कि आलसयुक्त पतिके नेत्र देखिकै वाको उपदेश करैहै यामें व्यंगयार्थ दरशातहै कि पतिके नयन आलस युक्त हैं तो सुचितहै कि किसी दूसरी स्त्रीके भवनमें जगेहैंयासों कहै है कि जोई ढंग काल्हिथे सोई आज फिरैहं क्या तुम को काल्हि की सौंह भूलि गई यह स्वकीया नायकोक्ति है ॥ ६६ ॥

अथ परकीया लक्षण।

दोहा—सबतेंपरपरसिद्धजो, ताकीप्रियाजुहोइ।
परकीयातासोंकहैं, परमपुरानेलोइ ॥ ६७ ॥

सबते परका बेद लोकते परका परपुरुषन लोकमें लीनन वेदमें अरु परशब्द जगमें ो देहरी भी दीपक करिकै लीजिये कि पर सिद्धतें पर कहा कोइ न जानें ताकी जो ममाहोयसो परकीया ॥ ६७ ॥

अथ परकीयाभेद।

दोहा—परकीयाद्वैभांतिपुनि, ऊढ़ाएक अनूढ़।
जिन्हैंदेखिवशहोतहै, संततमूढ़अमूढ़ ॥ ६८ ॥

ता परकीयाके द्वै भेद कहे एक ऊढ़ा एक अनूढ़ा जाहि देखि मूढ़ अमूढ़ निरंतर श होत है ॥ ६८ ॥

ऊढ़ा अनूढ़ा लक्षण।

दोहा—ऊढ़ाहोतविवाहिता, अनव्याहिताअनूढ़।
तिनकेकहौंविलाससब, केशवगूढ़अगूढ़ ॥ ६९ ॥

ऊढ़ा व्याहिता विना व्याहिता अनूढ़ा तिनके विलास गूढ़ और अगूढ़ है ॥ ६९ ॥

ऊढ़ा यथा ॥ सवैया।

बैठीसखीनकीशोभैसभासवहीकेजुनैननमांझबसै।
बूझेतेबातबराइकहैमनहीमनकेशवराइहँसै ॥
खेलतिहैइतखेलउतैपियचित्तखिलावतयोंविलसै।
कोउजानैनहींदृगदोरेकवैकितह्वैहरिआननछ्वैनिकसै॥७०॥

सब सखिनकी सभामें बैठी है मंडन शिक्षाकरन उपालंभपरिहासकी अरु सबके नैनन मांझ बसे है कहा सबकी दृष्टि वाहीकी ओर है अरु कोई बूझे बात तो बराइके कहे जामें मित्र आपन बूझे प्रीतम आपुन ऐसे वचन बोलें कैसे कि यह दिन तन मन मिथ्याहै तो सखिन को वैराग नायकको उदासीके तुमसे अपराधी हमें मिले अरु मित्रको यह कहत तुम न मिले तो सब वृथा ऐसे बराई बोलती है अरु मनही मन हँसैहे का जे सब मूदेंहें अरु खेलतीं सखिन संग खेलती पैपीयके चित्त को खिलावत अरु यह कोई नाहीं जानत दृगन को दौराई कब हरिके नैनन छूके निकसत यहां कारण चित्तको दौराइबो कारज हरि आनन छूवो तातें चपला अतिशयोक्ति॥७०॥

अनूढा यथा ॥ सवैया ।

बैठीहुतीब्रजनारिनमेंवनिश्रीवृपभानकुमारिसभागी ।
खेलतहींसखीचौपरचारुभईतिहिंखेलखरीअनुरागी ॥
पीछेतेकेशवबोलिउठेसुनिकेचितचातुरिआतुरिजागी ।
जानैनकाहूकवैहरिकेसुरमारगहीसरसीदृगलागी ॥७१॥

वृषभानु कुमारी जहां सभागी वन बैठीरही सभागी कहा वा दिन पिताने वाक्य द आनके गेह कीनों राधा विवाह आन संग ब्रह्मवैवर्त पुराणमें हैं सो खेलनहीं चारु चं रताके खेलमें अनुरागिन व्हैगई यह सुनिके आनके वाक्यदान भयो तहां पीछे जाइ व बहानेते हरि बोलउठे सो सुनि आतुरी चित्तमें जग गई सो काहूने न जानी कि हरि सुर बाण मारो यातें चितवनते शब्दवेधी बाणमारो जो ऐसो अर्थ कीजै तौ अनूढा हो है नाही तो पारवती जानकी दमयंती अविवाह विष अनुरागिन भई सो सब अ व्हे जाइँगी अरु वैसे अर्थमें परकीयाको जो आपपति त्याग पर पतिसों प्रीतिकरे अविवाहिता पतिहीन है वह कब परकीया भई अरु कोईकहे के परज्ञात में तौ स्वज्ञा पर ज्ञातको यामें विचार नहीं यहां तौ पतिपर पतिको विचारहै कि एक गोपकन्या गोप आसक्तरही अविवाहिता विषे अरु फेर वही गोप सों विवाह भयो तौ वह कहा कहावै जैसे दो० ॥ दिखरायो पै वंदपिय, पीपरमें वरलाइ । समुझिपाछिली पक्ष तिय र सकुचि शिरनाइ ॥ पीयने एक पैवंदका पेडनायकाको दिखायो तामें जर पीपरकी ड वरकीका जानावो वाच्य लिंगते के हम तुह्मारे पीपर नाम पराये पीरहें अविवाहि विषे अरु अबवरहें तो वह परकीया व्हे है किनहैहै तहां संकल्प दो रीतिको एक मान एक साक्षात् तामें मानसीको फलज्यादहकाहे देवयानीने शुक्राचार्य्यसों कहीकि अब मारो हाथ क्षत्रीनें ग्रहण करो तो हम ययाति के संग जैहें सो सुनि मानस संक जानि राजाको विवाहि दई अरु रुक्मिणी ऐसेही कृष्णके संग गई तौवें स्वकीया छ

परकीया न है हैं आनकी कहा वहतो बात दिव्य प्रकृतिकी है तुम अदिव्यमें कही तहां संयोगितादि राजाके संग आपतें गई तौ स्वकीया की गति पाई अरु कोई कहे कि सामा न्याकी पुत्री प्रथम समागम जाके साथ भयो ताहीके पास पतिव्रताकी रीति ते रही जैसे यह। दोहा॥ अनरुपसों पियसँग कियो सबसों सरुप सुभाइ। वासुदेव पूजौन- तरु अनगन धनि धन पाइ॥ तहां जाने वासुदेव तरु न पूजौ यह आनके यह पीपरहै सो परपतिसंगकी कौन कहै तहां कहा होइगो तौ याहीते चार विवाह ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र एक लिख्यो है यातें वही अर्थ कीजैके सभागी भई है का पिता वाक्पदान करचुको यहांभी चपलातिशय उक्ति अलंकार कहत सो नाहीं। कोईके कृष्णको अभि- प्राय जान रसीली चितवनते जवाब कियो कि मैं तुह्मारे पासरहोंगी॥तहां कोई कहै कि व्यंगमें अलंकार नहीं होत। काहे लक्षणमें अलंकारको ऐसो शब्द है कि जुदोरहै इस व्यंगते तौ रस अरु व्यंग ते जुदो चाहिय सो अर्थ याको नहीं॥ याको अर्थ ऐसो- कीजे कि रस धारी जो व्यंग है। विभाव अनभाव संचारी अस्थायी ताते जो व्यंग है सो नहीं ताते जुदो रहै॥ अपिहित सूक्ष्म परजा उक्ति आदिक गूढोक्ति गूढोत्तर ये व्यंग हीन नहीं होत॥ ७१॥

दोहा–काहूसोंनकहैंकछू, बातअनूढ़ागूढ।
सखीसहेलीसोंकहै,ऊढागूढअगूढ॥ ७२॥

गूढ़बात काहू सों न कहै सो अनूढ़ा। अंतरंगसों गूढ़ कहै अरु सहेली बाहिरंग स अगूढ़ कहै ताको ऊढ़ा जानियें॥ ७२॥

ऊढ़ा बचन यथा॥ सवैया

केशवरायकिसौंहकिकैकछुएकनआपुमेंहोडपरी।
एकचितैमुसक्यायइतैउतबातकहैबहुभाइभरी॥
चारुचकोरविलोचनभासीचहूंदिशितेंअंगुरीपसरी।
ससिआजुगईहूतिगोकुलहेंसबहीमिलिद्वैजकोचंदकरी॥७३॥

इहां ऊढ़ाके बचन उदाहरण निमित्त॥ दूसरो कवित कीनों प्रश्न अरु कोई कहै कि पहिले कह फेर क्यों कह्यो॥ ऊढ़ा की कवित्त ताको उत्तर यह कि। दोहामें कह्यो॥ अनूढ़ा काहूसे न कहै। औ ऊढ़ा बातकहै ताके कहिवेको उदाहरण दियो चाहिये याही ते कवित्त दूसरो केशवने कियो प्रश्न॥ होड परी सो कहाहै? उत्तर। तहां नायका को देखिकै॥ गोलमें सब कहन लागीं इन्हींसों मोहनकी प्रीति लगी है। अरु कोई कहै कि यह नहीं औ बातकी होड परी है॥ का छुटाई बडाई की होडाहोडी परी है। यामें रस नहीं होत॥ तहां नायका अपनी बात कहत है कि ऐसी मेरी ओर

नायकको प्रकाश साक्षात दर्शन ॥ सवैया।

इकतोउरऔरउरोजअनूपमतैसेमनोहरहारमहारी।
चित्तचलैतरुणीनहुको अरुनैनकिकेशववातकहारी ॥
हितकीहितसोंकहिहीवनिआवतकौलगिहोहुंरिकौतुकहारी।
अंचरुदैनंदलालविलोकतरीदधिनोखिविलोवनहारी ॥ ९ ॥

ऽ तू अनोखी दधिविलोवन हारीहै ॥ अंचल की ओट करिकै नायक को देखती है तो तेरो उर उत्तम दूसरे उरोज तीसरे हार मनहरणहार सो तेरो चित्त जो है सो ं है ॥ तरुणी नैनको अरु नैनकी को अरु नैनकी कौन बात कही जे हित आपन नसों हितकी कहेई बनत है कभीतक में कौतुक देखन हारीहों ॥ इहां सार अलं- उरतें उरोज अधिक उरोजतें हार अधिक किंवा एकतो उरोजमें मनोहरता वनीही हार पहिरे यामें मनोहरताकी अधिकाईभई ॥ ताते अनुगुनालंकार भयो हो ाँ ताते बहिरंग सखीते प्रकाश ॥ ९ ॥

-प्रकटकामकोकल्पतरु, कहिनसकतिमतिमूढ़।
चित्रहुमेंहरिमित्रकी, अतिअद्भुतगतिगूढ़ ॥ १० ॥

ाहा केशव को नहीं है ॥ १० ॥

राधाकीमच्छन्नचित्रदर्शन॥सवैया।

लोचनऐंचिलियेइतकोमनकीगतियद्यपिनेहनहीहै।
आननआइगयेश्रमसीकररोमउठेउरकंपगहीहै ॥
तासोंकहांकहियेकहिकेशवलाजसमुद्रमेंबूड़िरहीहै।
चित्रहुमेंहरीमित्रहिदेखतियोंसकुचीजनुबांहगहीहै ॥ ११ ॥

अंतरंग सखीकी अंतरंगमति कि देखौ याके चरित्र चित्र देखि सात्विक भाव है लोचन नेत्र इतको ऐंचलये तदपि नैनकी गति नेह नहीं है जोतो है अरु रके सीकर आइ गयेहैं अरु रोमभी उठि आये कंपभी ह्वैगयो कही यासों कहा हम तुमको देख सात्विक जान लाजरूपी समुद्रमें बूडीहैं चित्रही में हरिमि- ाके कैसी सकुची मानो बांहगहि लई है इहां दूसरो विभावना अलंकार है हेतु- ा है कहा तसबीर देखत, अरु सात्विक भाव कार्य्य पूरण है अरुस्वभावो- है ॥ ११ ॥

अन्यच्च ॥ सवैया।

ानुमोहनकेचितयोकछुऐसेकहीजसमोसोंकहीहै।
जतजैनहिंखेलतहीमनकीमतिगूढ़कहांधोंरहीहै ॥

आंगुरी पसरी जैसे द्वैजके चन्दकी देखतहैं ऐसे देखिरही या बातमें ऊढ़ाके वाक्य को वर्णन सिद्ध भयो चारुचकोरविलोचनभासी कह्यो ताते उपमायअलंकार भयो॥ ७३ ॥

दोहा—जगनायककीनायका वरणीकेशवदास ।
तिनकेदरशनरसकहौं सुनहुप्रछनप्रकाश ॥ ७४ ॥

इतिश्रीमन्महाराजकुमारइंद्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायांस्वकीयापरकीयादिभेदवर्णननामतृतीयःप्रकाशः॥३॥

जगसंसारके नायकश्रीकृष्णचंद्र तिनकीनायकाश्रीराधा ताको वरणन केशव दासकरचुके अब तिनके दरशन अरु रस प्रछन्न कहिये छिपो अरु प्रकाश कहिये जाहिर वरणन करतहैं ॥७४ ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञाभिगामिलछितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेणविरचितायां रसिकप्रियायां भूषणयुतविलासिका नामटीकायां स्वकीयापरकीया वर्णननाम तृतीयः प्रकाशः ॥ ३ ॥

अथ दरशनवर्णन ।

दोहा—येदोऊदरशेंदरश,होहिंसकामशरीर ।
दरशनचारिप्रकारको, वरणतहैंमतिधीर ॥ १ ॥

नायक अरुनायका जहां दरशै कहे देखि परें तिहि दरश ते काम संयुक्त होजाय ताको दरशन कहिये सो चार प्रकारको है ॥ १ ॥

दोहा—एकजुनीकोदेखिये, दूजोदरशनचित्र ।
तीजोसपनोजानियें,चौथोश्रवणसुमित्र॥ २ ॥

एकजुनीको देखिये अर्थात् साक्षात् दरशन होहि दूजो चित्रमें ॥ तीजो स्वप्नेमें चौथो श्रवण दरशन होहि ॥२॥

दोहा—दरशननीकेदरशियह,दंपतिअतिसुखमान ।
ताहिकहतसाक्षातहै,केशवदाससुजान ॥ ३ ॥

यह दोहा केशव दासके नहीं ॥ प्राचीन पुस्तकमें नहीं मिलत याते तिलक नहीं कियो ॥ ३ ॥

अथसाक्षातदरशन ।

दोहा—नींदभूखप्यासनिदुहुकी, गईसुननदींजाहि ।
कोजानेंहृदकहा, केशवदेखनजाहि ॥४॥

नींद भूख अरु देहकी धुति जा राधाके सुनत गई ता राधाको केशव देखो देखै हैं को जानै अब कहा हैहै। अरु राधापक्ष ऐसो अर्थ कीजै ताहि राधा देखतीहैं ॥ प्रश्न अरु कोई कहै कि पहिले श्रवण स्वप्न तब चित्र तब साक्षात् चाहतरहो उत्तर तहां यह है कि दरशन में क्रमनहीं ऊषाको प्रथम स्वप्नभयो अरु रंभावतीको अरु पद्मावतीको प्रथम साक्षात् सोनाहीं यामें श्रवणक्रम केशव देखाइ चुके कि नींदभूखद्युति देहकी जाके सुनतगई अरु कोई कहै कि स्वप्नलोभी याहीमें है कहि नींदगई जब स्वप्न में देखी भूखगई जब चित्रमें देखी अरु सुनत देहकी धुतिगई अब साक्षात् दोई देखतेहैं किंवा मित्रपरस्पर चित्र नहीं चित्रजड है सो नहीं देखिसकत स्वप्नेमेंभी एकही देखत एकको परस्पर स्वप्न अरु देखिवो नहीं बनत ऐसेही श्रवणमें दोऊ सुनें सो न हीं बनत जहां प्रत्यक्ष बैठेहैं तहां श्रवण दर्शन कहावै अरु साक्षात् में दोऊ दोहुन को देखत यह दोहा दंपति दर्शन की है आगे कवित्त में एक एकको दर्शन कहैंगे यामें मिलायके कह्यो है दोहुन को ॥ ४ ॥

दोहा–देखनकोपियरूपदृग,तजीसकलजगकाज।
कोटियतनहूं कै रही, रहे नैन गडिलाज ॥ ५ ॥

यह दोहा भी काहूको बनायो है केशव को नहीं ॥ ५ ॥

राधाकोसाक्षातप्रच्छन्नदर्शन यथा सवैया।

कहिकेशवश्रीवृषभानुकुमारिशृंगारशृंगारसवैसरसै।
सविलासचितैहरिनायकत्यों रतिनायकशायकसेवरसै॥
कवहूंमुखदेखतिदर्पणलैउपमासुखकीसुखमापरसै।
जनुआनंदकंदसुपूरणचंददुरचो रविमंडलमें दरसै ॥६॥

उक्ति अंतरंग सखीकी अंतरंग सखी प्रति। दर्शन एकको साक्षात् नहीं है सकत कि वृषभान कुमारी शृंगारकरिचुकी कैसो है वह शृंगाररसको सरसै नाम बढावैहै यामें कोई कहै कि शृंगार कहा सरस रहीअबै तो नायक देख्यो नहीं तो पहिले दोहामें चारों दर्शन दिखायचुके अब केवल ग्रन्थकी रुचिकेलिये बनावतहैं अरु सविलास ताही समय हरिनायक त्यों नाम तैसही रति नायक सायक से बरसावत ज्यों राधाशृंगार सरसत अरुनायक सविलास है तैसेही रतिनायक सायक बरसावत है अरुकबहू दर्पण में मुख देखती सो दर्पण अरुणमतिको है तामें राधाको मुख कैसी शोभादेत मानों आनंद को कंद जो पूरणचंद है सो रविमंडल में दुग्यो दर्शतहै यहां फल उत्प्रेक्षालंकार मानों राधाको आनन देखिकै आप ह्वैगयो आनंद को कंद सो दुरिकै देखत है चंद अरु अहेत के हेतते हेतुउत्प्रेक्षा भी होतहै अरु दर्पणमुख वस्तु में चंद सूर्यकी संभावना करीतातेवस्तूत्प्रेक्षा ॥६॥

साक्षात् दर्शन प्रकाशराधाको यथासवैया।

पहिलेतजिआरसआरसीदेखिघरीकघसैघनसारहिले।
पुनिपोंछिगुलावतिलौंछिफुलेलअंगोछेमें आछेअंगोछनके॥
कहिकेशवमेदजवादसोंमांजिइतेपरआजेमेंअंजनदे।
बहुरेदुरिदेखोंतोदेखोंकहासखिलाजतेलोचनलागेइहें॥ ७॥

उक्तिनायकाकी सखीप्रति हे सखी!में छिपिके भी देखती हों तौभी हमारे लोचन के नायकसामुहे नहीं होतलाजमें लगेई रहतेहें आलस तजिके आरसी घनसारादि उपाय बहुत कियो परन्तु इनने लाज न छोडी प्रश्न घनसारादिते लाज कैसे जायगी॥ उत्तर। इहां मौग्धभाव की अधिकता है नायका यह सुनेरही कि उद्दीपन ते लाज छुटिजात याते घनसारादि उपाय किये ॥अर्थ। इन सबको नेत्रमें लगायो। प्रश्न-अरु यामें परस्परदर्शन दोऊको कैसे ॥ उत्तर। लाज तबहीं आवत कि जब दूसरी त... कोऊ देखतहोय इहां लाजती हैई है ॥ अरु येतेउपाय आप किये अंतरंग सखीप... नहीं है अरु जासों कहत सो बहिरंगहै याते प्रकाश जानिये या कवित्त के तिलक विस्तार कविप्रिया के तिलकमें कीनों है याते इहां नहींकियो कारण बहुतकिये ... कार्य्य नहीं भयो ताते विशेषोक्ति अलंकार जानियें ॥ ७ ॥

नायककोप्रच्छन्न साक्षात् दर्शन ॥ कवित्त।

भालगुहीगुनलाललटैंलपटीलरमोतिनकीसुखदेनी।
ताहिविलोकतआरसीलैकरआरससोइकसारसनैनी॥
केशवकान्हदुरेदरसीपरसी उपमामतिकोअतिपैनी।
सूरजमंडलमेंशशिमंडलमध्यधसीजनुताहितिबेणी॥ ८॥

उक्ति अंतरंग सखीकी अंतरंग प्रति ॥ कि भालमें तो गुही हैं लालगुनते लटें अ... तामें लपटि रही हैं लर मोतिन की ताको विलोकत नाम देखत है ॥ आरसी करमे... लैकर आरस अलसौहीं दीठिकरिकै आलसते सात्विक भाव जनायो। सारस कमलनैने... सो कान्ह दुरे देखतहें तहां उपमा मनमें कैभीभासत कि मानों दरपण जो है मणिमय... तामें है मुख सो दर्पण सूर्यमंडल मुख शशिमंडल ताके मध्यमें त्रिवेणी है ॥ इह... लटश्यामयमुना मोती गंगा लाल गुन सरस्वती अरु कोई क है यामें राधा नहीं देखैते... सात्विक कहांते आयो ॥ आपनो रूप देखि आपको सात्विक न आयो चाहिये॥रामा... यणे ॥ मोहननारिनारिकेरूपा। मानोंपदते उत्प्रेक्षालंकार ॥ ८ ॥

नायककौ प्रकाश साक्षात दर्शन ॥ सवैया।

इकतोउरऔरउरोजअनूपमतैसेमनोहरहारमहारी।
चित्तचलैतरुणीनहुको अरुनैनकिकेशववातकहारी ॥
हितकीहितसोंकहिहीवनिआवतकौलगिह्वाहुरिकौतुकहारी।
अंचरुदैनंदलालविलोकतरीदधिनोखिविलोचनहारी ॥ ९ ॥

के तू अनोखी दधिविलोचन हारीहै ॥ अंचल की ओट करिके नायक को देखती है एक तौ तेरो उर उत्तम दूसरे उरोज तीसरे हार मनहरणहार सो तेरो चित्त जो है सो चलत है ॥ तरुणी नैनकी अरु नैनकी को अरु नैनकी कौन बात कहो जे हित आपन हैं तिनसों हितकी कहेहूं बनत है कभीतक में कौतुक देखन हारीहैं ॥ इहां सार अलंकार उरते उरोज अधिक उरोजते हार अधिक किंवा एकतौ उरोजमें मनोहरता बनीही रही तापै हार पहिरे यामें मनोहरताकी अधिकाईभई ॥ ताते अनुगुनालंकार भयो हो कबलौं देखों ताते बहिरंग सखीते प्रकाश ॥ ९ ॥

दोहा-प्रकटकामकोकल्पतरु, कहिनसकतिमतिमूढ़।
चित्रहुमेंहरिमित्रकी, अतिअद्भुतगतिगूढ़ ॥ १० ॥

यह दोहा केशव को नहीं है ॥ १० ॥

राधाकीमच्छन्नचित्रदर्शन॥सवैया।

लोचनऐंचिलियेइतकोमनकीगतियद्यपिनेहनहींहै।
आननआइगयेश्रमसीकररोमउठेउरकंपगहीहै ॥
तासोंकहाकहियेकहिकेशवलाजसमुद्रमेंबूड़िरहीहै।
चित्रहुमेंहरीमित्रहिदेखतियोंसकुचीजनुबांहगहीहै ॥ ११ ॥

इति अंतरंग सखीकी अंतरंगप्रति कि देखौ याके चरित्र चित्र देखि सात्विक भाव हो आयो है लोचन नेत्र इतको ऐंचिलये तदपि नैनकी गति नेह नहीं है जोतो है अरु मुखमें श्रमके सीकर आइ गयेहैं अरु रोमभी उठि आये कंपभी हैगयो कहो यासों कहा कहीं अबै हम तुमको देख सात्विक जान लाजरूपी समुद्रमें बूड़ीहै चित्रहीमें हरिमित्रको देखिके कैसी सकुची मानो बांहगहि लई है इहां दूसरो विभावना अलंकार है हेतु तो अपूरण है कहा तसवीर देखत, अरु सात्विक भाव कार्य्य पूरण है अरु स्वभावोक्ति भी है ॥ ११ ॥

अन्यच्च ॥ सवैया।

तैंजनुमोहनकेचितयोकछुऐसेकहीजसमोसोंकहीहै।
लाजतजैनहिंसेलतहीमनकीमतिगूढ़कहांधोंलहीहै ॥

केशवचित्रितमंदिरआजुदिसावतहीमतिरीझिरहीहै ।
चित्रहुमेंहरिमित्रहिदेखतयोंसकुचीजनुवांहगहीहै ॥ १२ ॥

यह कवित्त केशव को महीं याते तिलक नहीं कियो ॥ १२ ॥

राधाकोप्रकाशचित्रदर्शनयथा ॥ कवित्त ।

केशोदासनेहदशादीपकसंयोगकेसेज्योतिहीकिध्यानतपतेजहिन शाइहै । आंखिनसोंबांधेअन्यकाहूकीनभागीभूखपानीकीकहाना रानीप्यासक्योंबुझाइहै ॥ येरीमेरीइंदुमुखीइंदीवरनैनलिखेइंदिराकेमं दिरक्योंसंपतिसिधाइहै । ऐसेदिनऐसेहीगवावँतगवाँरकहाचित्रदेखे मित्रकेमिलेकोसुखपाइहै ॥ १३ ॥

उक्ति बहिरंग सखी की नायका चित्र देखिरहीहै ताको देखिकहत है कि विनर्द तुम भोजनक्षुधा वे लक्ष्मी संपति वे मित्र मिले काहूको सुख होतहै? तुम गवांरि कों भई गवांरपद कहेते बहिरंग जानी जात याते प्रकाशकाकोक्ति अलंकार ॥ १३ ॥

नायककोप्रच्छन्नचित्रदर्शनयथा ॥ कवित्त ।

रूठवेकोतूठवेकोमृदुमुसक्याइकैविलोकिवेकोभेदकछूकह्योि परतुहै । केशोदासबोलेविनबोलनकेसुनेविनाहिलनमिलनविनामो हक्योंसरतुहै ॥ कौलगअलोनोरूपप्यायप्यायराखोंनैननीरविन मीनकैसेधीरजधरतु है । चित्रनीविचित्रकिननींकेईचितैयेमनचि त्रचितयेतेचित्तचौगुनोंजरतु है ॥ १४ ॥

नायक आप मनसों कहत है कि हे मनरूठवेको अरुतूठवेको अरु कोमल मुसुक्या नको अरु बिलोकिवेको भेद कछू कहतनहीं बनत वे बोले अरु बिना नीके बोल सुने अरु हिलन मिलन बिन मोह कैसे सरे ये नयन कबलों अलोनोरूप प्याय प्याय राखिये बेनीर मीन धीरज नहीं धरत वह जो चित्रनीविचित्रहै ताको चल देखिये चित्रको देखतो चित्त चौगुनो जरतु है चौगुन जरन को आशय प्रथम तौ श्रवनदर्शन ते जरो दूजे स्वप्नते तीजे चित्रते चौथे हेमन तू नहीं चलत चित्रमें चेष्टा नहीं उपमानते विशेषता उपमेय में है याते व्यतिरेक अलंकार जानियें चित्रते नायकाविशेष भई ॥ १४ ॥

नायककोप्रकाश चित्रदर्शन यथा कवित्त ॥

अंतरिक्षगच्छनीनियक्षनसुलच्छनीनिअच्छीअच्छीअच्छनीनि छविक्षमनीयहै । किन्नरीनरीसुनारिपन्नगीनगीकुमारिआसुरीसुरीन

हूंनिहारिनमनीयहै ॥ भोगिनकोभामिनीओदेहधरेदामिनीयोंकाम
कामनीयोंकहाऐसीकमनीयहै । चित्रहूमेंचित्तहिचुरायेलेतकोऊ
यहरामकैसोरमनीरमासोरमनीयहै ॥ १५ ॥

नायक जाको चित्र देखत ताकी स्तुति करतहै । अंतरिक्ष गच्छनी परीपक्षनी तिन सबकी छविकी क्षमनीय है क्षमा करावनहारी का उनकी छवि निंदनहार जिनके छविसंबंधी क्रोध है याको देखि जेरहें यह उन्हें दीन जान क्षमा करतहें यातें यहक्षमनीयहै और सबको नमनीयहै नमस्कार सब याको करत हें ऐसी कोऊ यहहै जासों छपायो सो बहिरंग है याते बहिरंगने देखे चित्र देखत तो चित्र दर्शन प्रकाश भयो किन्नरी जोहैं अरुण रण में जे सुनारीहैं अरु पन्नगी नगी पर्वतकुमारी । अरु आसुरी सुरी आदि सब पद सुगमहैं इहां वृत्तानुप्रास उपमा अलंकार अंतरिक्ष गच्छनी पक्षनी ये वृत्तानुप्रास ॥ अरु देहधरे दामिनी यह उपमा ॥ १५ ॥

स्वप्नदर्शन ।

दोहा—केशवदरशनस्वप्नको, सदादुरोईहोय ॥
कबहूं प्रकटन देखिये, यहजानतसबकोय ॥ १६ ॥

स्वप्न दर्शन छिपो रहतहै ॥ प्रकट नहीं होत ॥ १६ ॥

राधाको प्रच्छन्न स्वप्नदर्शन ॥ सवैया ।

आतुरज्योंउठिदौरिअलीजनुआतुरज्योंगहियेसुगहीत्यों ।
हेमेरीरानीकहाभयोतोकहँबूझतकेशवबूझिरहीत्यों ॥
डीठिलगीकिधोंप्रेतलग्योकिलग्योउरप्रीतमजाहिडरीयों ।
आननसीकरसीकहियेधकसोवततेअकुलायउठीक्यों ॥१७॥

उक्त अंतरंग सखी कहै नायिकाने स्वप्नमें नायक देख्यो।अकुलायकै अंकलगि चाही ताही समय नींदखुली तो सखी को पकरो सो सखी कहतिहै हे अली! जिन आतुर याकोदेखो अरु आतुर सब पकरो जैसे में पकरी हूं अथवा मोहि पकरो।अरु बूझति कै सो को कहा भयो है बूझतिहै ॥ तैसे ही सुन बूझकै रहिगई । ताको दृष्टि लगीहै कि प्रेतलगी है कि प्रीतम उरसों लगी है ॥ ताते ऐसी डरानी आनन जो मुखहै तापर सीकर स्वेद के है आये । अरु सीसी करत है धक वेग सोवततें क्यों अकुलाइ उठीहै औ स्वप्न में नायक अंतपदते जानोजात । काहे वह अंतरंग है सो जानत याते निश्चयांत संदेह अलंकार । आगे दृष्टि प्रेतमें संदेह प्रीतमने निश्चय ॥ १७ ॥

नायकको प्रच्छन्न स्वप्न दर्शन यथा ॥ कवित्त।

नखपदपदवीकोपावैपदद्रौपदीनएकौविसेउरवसीउरमेंनआ वी। लोमसीपुलोमजानतिलसीतिलोत्तमानमैलहूसमानमनमेंनका मानिवी ॥ जानियेनकौनजातिअबहींजगायेंजातजानुजानिहींजोउ हिकेहूंपहिंचानिवी । बातकीसीबानीमांहभावसोभवानीमांहकेश दासरतिमेंरतीकज्योतिजानिवी ॥ १८ ॥

नखपदवीको द्रौपदी कही । अरु उरमें उरबसी लोममें पुलोमा ॥ तिलमें ति त्तमा ॥ मैलमें मैंनका ऐसी जो नायका जानी नगई जो स्वप्नमें दर्शनदे जगाइ गई अपनी जान जानहै जो वाको पहिंचानिहै बातमें बानी कही भावमें भवानी रति रतीपातें दूसर पर्य्याय अलंकार जानिये काहै एकको छबि अनेक ठौर बर्णी कहीसो यामें क्रम नहीं है कहां तिलोत्तमा तिलमें कहां मैनका मैलमें सो इहां मयत्री हेत ये नाम राखे ताते उल्लेख जहां एकको एक अनेक प्रकार समुझै यामें नायका अनेक भांति समुझी ऐसीजो महाराज सवाई आपने तिलक मे लिखे नहीं उल्लेखमें धर्म्म मात्र अनेकको होत पर्य्याय में विशेषण यह भेदहै अरु दर्शन प्रकाश नहीं होत ॥ १८ ॥

दोहा–भूखहोइजिहिबातकी, बिनदेखतहीपीव ।
सखीसुनावैगुणश्रवण, अंगअंगसबजीव ॥ १९ ॥

यह दोहा केशव को नाहीं ॥ १९ ॥

श्रवण दर्शन ।

दोहा–शीलरूपगुणसमुझिकै, सखीसुनावैआनि ।
केशवताकोकहतहैं, दरशनश्रवणबखानि ॥ २० ॥

यह भी दोहा केशवदास को नहीं है ॥ २० ॥

नायककोप्रच्छन्नश्रवणदर्शनयथा ॥ सवैया ।

सोहैंदिवायदिवायसखीइकवारककाननआनबसाये। जानेंकोके शवकाननतेकितह्वैहरिनैननिमांझसिधाये ॥ लाजकेसाजधरेंईरहे तबनैननलैमनहींसोमिटाये। कैसोकरोंअबक्योंनिकसैरीहरेइंहरेहि यमेंहरिआये ॥ २१ ॥

उक्ति नायकाकी सखीसों । कहूं सखीने शिक्षा पूर्वक कहीहै ऐसो तदाकार हरकै मन है तनक सो मन और टेराको सो नायका अपनी व्यवस्था कहतहै मनकी बा

ायकको सखी नायकके गुण सुनायगई है सोंह दिवाइ के याको प्रयोजन के जिन २
ाकी बातें सुनीहैं तेते व्याकुल होगई तब नायकके सखीने सोंहें दिवाय दिवाय कही
ाली वाकी एकही बात सुन सो भली कहाँतें जानी सो कवित्त के पाठमें यहीहै कैमोको
ाने सोंहें दिवाइ दिवाइ इक बार का मनमें बसाये कहा एकही बार मोको सुनाई
ो में नाहीं जानती कब धों नैनन मांह सिधारे अरी हे सखी लाजके साज सब धरे
हे जब नैनन ने मनसों मिलाइ दिये सो अब में कैसी करों वे कैसे निकसें? मनते
रे हरे जो हीय में हरि आये यह तो शब्द अर्थ अरु यामें यह प्रश्न है कि मन नहीं
ो कानन सुनतें ताते मनही ने कानन नैनन दियसों मिलाये सो नाहीं कहूं ऐसी भी
ोत मन नाहीं रहतअरुइन्द्रीको ज्ञान हैजात ॥ जैसे त्वक्इन्द्री के तत्तवस्तु को ज्ञान-
ोत इहां हरिनाम सुनिबो कारण मनआइजैबो कार्य्य ताते हेतु अलंकारहै॥ २१ ॥

नायकाको प्रकाश श्रवण दर्शन ॥ कवित्त ।

कौलौंपीहौकानरसरूपकीबुझैहैप्यासकेशवदासकैसेनयननभर
ीजिये । बीरकीसोंमेरीबीरबारीहैजुवारीआननकहांसिहांकरबलइते
ोलिजिये। वरसकमांझयहवैसअलवेलीबीतेदेहौसुखसखिनक्योंअब
ानदीजिये । येरीलड़बावरीअहीरऐसीबूझोंतोहिनाहिंसोंसनेहकी
ैनाहसोंनकीजिये ॥ २२ ॥

उक्ति बहिरंग सखीकी नायकासों । वाको कबलौं कानरस पीजिये रूपको प्यास
ुझैहै कैसे नयननभर पीहै । मोको बीरकी सोंहहै तू बालकहै अरु बारी आननके जो त
हैं सो नेकहँस तेरी बलाइलउं हेअलबेली! वर्षमें यह तेरी अलबेली वैस बीतिजैहै जो
ुख सखिनको देहै सो अबहीं काहे नहीं देती है तू लड़ बावरीहै हों अहीर ऐसी बू-
ाहीं ताको नाह सों सनेह कर नाहीं सों नकर । ये बातें लड़बावरी अहीरकी बहिरंग
हत ताते प्रकाश ॥ अरु यह अलबेली वैस बीति जैहे । सनेह नाहसों न कीजे । क-
ाकीजे यामें काकोक्ति । यहशृंगार को अंगशांत है ताते रसवत अलंकार मुख्य जा-
ेयें ॥ २२ ॥

नायका को प्रच्छन्न श्रवण दर्शन ॥ कवित्त ।

लंपतहैलोकलोकलीकनाउलंघीजातसबहीतूसमझावैतोहिसम
झावैको । छोड़नकहततनतनकौनछूटैलाजधनमीतराखदोऊकोवि
दकहावैको । शोचकोसंकोचहूकोपूरवपच्छिमपंथकेशोदासएको
कालएकोजनधावैको । दुखसुखदूरदुरादूरहोतेमेरेमनजैसोसुनीते
ीतोहिआंखिनदिखावैको ॥ २३ ॥

नायका मनसों कहत कि तू मत विस्तार छोड़न कहतअथवा तन छोड़न कहत अथवा तन जे तेरे अंतरंग बहिरंग तिनको छोड़न चाहत। अरु लाज नाहीं छोड़त। घन मीत देईरास पंडितको कहायोहै। तैसे तू लोक लंघत अरु लोक नहीं लंघी जात तातै अरु यह शोच संकोचकी पूरुब पश्चिम पंयहै एक वेर एक जनि कौन धावै। तातै दुख अरु सुख दूर दुराईके दूरते हेमेरे मन जैसी तैने कानते सुनीहै तैसी आंख ते क्यों न दिखावत यह दृष्टांत अलंकार है धननीत यह लोकोक्ति ॥ २३ ॥

नायकको प्रकाशश्रवणदर्शन ॥ कवित्त।

निपटकपटहरिप्रेमकोप्रकटकरवीसोविसेवशीकरकैसेउरआनिये। कामकोप्रहरपनकामनाकोवरपनकान्हकोसकरपनसबजगजानिये। किधौंकेशवराइमनमोहनीकोभूपणहैकिधौंव्रजबालनिकोदूपणवखानिये। सुनतहींछूट्योधामबनबनडोलैश्यामराधेतेरोनामकेउचाटमंत्रमानिये ॥ २४ ॥

निपट कपट हिय प्रेमको प्रकट करनहार है कै वीस विसे वशीकर है यह कैसे उरमें आनिये कि काम को उत्कर्ष रुप बढावन हारहै कै कामना के वर्षन हारहै केकाहूको कर्षनहार या कैसे उरमें आनिये कैमोहनीकी भूषण है कै व्रजबालन को दूषण है जाके सुने श्याम घरछोड़ बन बनडोलत सो राधे तेरोनाम है कि उच्चाटन मंत्रहै यातै संदेह अलंकार दो तुकमें किधौं साक्षात् दोमें लुप्त जैसे लुप्तोत्प्रेक्षामें मानों जनलुप्तहै तैसही संदेहमें किधौं लुप्त होत अरु यामें ब्रजबालनको दूपणहरणहै सो यह उपासनाको ग्रंथ नहीं शृंगार ग्रंथ है ऐसी अर्थ करेते दूषण है जात राधाके रूपकी उत्कर्षता नहीं होति इहां जब सबकेरूप को दूपण करै तब भूपण ॥ २४ ॥

दोहा—दरसनरसरमनीयके,कहेपरमरमनीय।
प्रकटनप्रेमप्रभावअब, कहौंकछूकमनीय ॥ २५ ॥

इति श्रीमन्महाराजकुमार इंद्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां चतुर्विधदर्शनप्रच्छन्नप्रकाशवर्णनं नाम चतुर्थःप्रकाशः ॥ ४ ॥

दर्शन प्रत्यक्षादि तिनको रसकहिये आनंदरमनीय नामदंपति के परम रमनीय सुंदर कहे अब प्रेमको प्रभाव कहौंहों दर्शन रमन रमनीनको अरु दर्शन रसरमनीनके यहभी पाठहै ॥ २५ ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराज श्रीमदीश्वरीप्रसाद-नारायणसिंह-बहादुर-स्याज्ञाभिगामिललितपुरनिवासि हरिजनकवीश्वरारमजन सरदाराख्य-कवीश्वरेण विरचितायां रसिकप्रियाभूपणे सुखविलासिकानाम टीकायां दर्शनवर्णनंनाम चतुर्थः प्रकाशः ॥ ४ ॥

अथ दंपतीचेष्टा वर्णन ।

दोहा–तियकेचितकीजानसखि, पियसोंकहैसुनाय ।
कहैसखीसोंप्रीतिमें, आपुनतेअकुलाय ॥ १ ॥

तियके चित्तकी बात जानके सखी पियसों सुनायके कहै सो सखी प्रीतिमें कही आपु अकुलाय कि सखी सखी सों प्रीति में कहै औ आप व्याकुल होय राधिकाकी किंवा नायक सखीसों कहै तौ प्रीतिमें व्याकुल होजाय आप ॥ १ ॥

सखीको वचन नायकासों विरह निवेदना ॥ सवैया ।

कालिहकीग्वारितौआजहुतौनसम्हारातिकेशवकैसहुंदेहै । सीरी ह्वैजातउठैकबहूंजरिजीवरहैकैरहीरुचिरेहै । कोरिविचारविचारतिहै उपचारनकेबरसैसखिमेहै । कान्हबुरोजिनमानौतिहारी विलोकनमें-विसर्वासविसेहै ॥ २ ॥

उक्ति सखीकी नायकप्रति ॥ कै हे कान्ह कालिह जबते तुम वाको देखो तबते आजुलों देह नहीं सम्हारति है । रेहरेखा रेहारेख छंद शास्त्रमें एकहै ॥ कबहूं सीरी होजात कबहूं जरउठत जीवरहौ कै रुचिकी रेहरेखि रहीहै ॥ कोटिन विचार उपचारनके सखीमेह बरसावती तथापि नाहीं उठत याते वीसाविसे तिहारी चितवनमें विष है यहां विषचितवनको रूपकहै ॥ २ ॥

नायकाकी सखीप्रति नायक अपनीबात कहतहै ॥ कवित्त ।

प्यासैव्हरहीउदासभागीभूखगईवास केशोदासनींदहूकीनिंदा नितठानीहै । मतिकोमतौनलेयविद्याकीविदाईदेयशोभासुकीसेइ सेइसयसुखसानीहै ॥ विपसोंलगतगीतकेलिकीनपरतीतप्रीतिउरपा हुनीसीपाचिपहिचानीहै । तोविनकोकहैगाथधीरजतालैकसाथमोहिं कोमिलवैहाथलाजकेविकानीहै ॥ ३ ॥

नायक वचन सखीप्रति । कि प्यास तो तनते उदास है गई अरु भूख भागी त्रास गई अरु नींदकी निंदा भई है मेरी मतितें मतो नहीं लेत अरु विद्या जो है ताकी विदाई देत है सो भासुकी सेयके सब सुखमें सनीहै । सेजसूनी पाठमें सेजसूनीहै अरु गीत विपसो मानत॥अरु केलिकी तो प्रतीतहू नहीं करत अरु प्रीति उरकी पाहुनी बरोबर पाचिपाचि पहिंचानी है ऐसो जो मेरो तनहै जो बातें कीनी सो याकी गाथा तो विन को कहनहार है । या धीर्य्यता सायलै मोको हाथमें मिलावै जो बाला जाके हाथ विकानीहै तुक प्रति जहां वरन की समता बारंवार आवै सो वृत्तानुप्रास अरु विपसो गीत इत्यादिक में व्याघात जानियें ॥ ३ ॥

अथचेष्टालक्षण।

दोहा–पियसोंप्रकटनपीतिकहुं, जितनेकरतउपाय।
तेसबकेशवदासअब, वरणतसवनसुनाय ॥ ४ ॥

नायका जितनो उपाय अर्थ चेष्टा करै तामें यह जानी जाय कि तासों पियासों प्रीति प्रकट नहीं है ॥ ४ ॥

दोहा–जबचितवैपियअनतहूं, तवचितवैनिरशंक।
जानविलोकतआपुसों, अलिहिलगावैअंक ॥ ५ ॥

जब पियाकी दृष्टि अन्यओर जाय तब आप निश्शंक देखन लगै अरु जबनायक वाकी ओर देखे तब सखीको अङ्कमें लगावै ॥ ५ ॥

दोहा–कबहूंश्रुतिकंडुनकरै, आरससोंऐंडाय।
केशवदासविलाससों, वारवारजमुहाय ॥ ६ ॥

कबहूं श्रवण खुजलावै कभी आलस्यभरिके ऐंड़ाय अरु विलासते वारम्वार जमुहाय ॥ ६ ॥

दोहा–झूठेऊहंसिहंसिउठै, कहेसखीसोंवात।
ऐसेमिसहीमिसप्रिया, पियहिदिखावैगात ॥ ७ ॥

झूठे हँसिहँसिके काहू बहानेते पियाको तिया अङ्गदिखावै ॥ ७ ॥

दोहा–योंहीपीयप्रियानिप्रति, प्रकटतअपनीप्रीत ॥
सोप्रच्छन्नप्रकाशकर, बुधिवलकरतसमीत ॥ ८ ॥

ऐसेही प्रीतम प्यारी सों अपनी प्रीति प्रकट करै कहूं चेष्टा छिपावै अरु कहूं प्रकट करै ॥ ८ ॥

राधाजीको प्रच्छन्नचेष्टा ॥ कवित्त।

चोरिचोरिचितचितवतमुहँमोरिमोरिकाहेतेहँसतहियेहरपवढ़ायोहै। केशोरायकीसोंतूजम्हातिकहावारवार विसिखाहमेरीवीरआरजोरआयोहै। ऐंड़सोऐंड़ातअतिअंचलउठातउरउघरिउवरिजातगातछविछायोहै ॥ फूलफूलभेंटतिरहतिउरझूलिझूलिभूलिभूलिकहतकछूतेंआजपायोहै ॥ ९ ॥

सब चेष्टा नायकाकी देख बाहिरंगसखी कहतिहै कै तू कौन को चित चोरि चोरि मुहँ मोरि मोरि चितवत इत्यादि चेष्टा करत सो आज कहूं कछू पायोहै नायकको देख

करत सो नहीं जानत ताते प्रच्छन्न स्वभावोक्ति अलंकार स्वभाव वर्णन ते बीरी खाय मेरी वीर आरस ज्यों आयो है दूसरीतुकमें यहभी पाठहै उर उरज उघरिजात तीसरे चरणमें ऐसो भी पाठ है ॥ ९ ॥

अथ प्रियाजूकी प्रकाशचेष्टा ॥ कवित्त ।

मेरोमुँहचूमैतेरीपूरीसाधचूमवेकीचाटैओसआंशूक्योंरीरातप्यासडाढ़ेहैं। छोटेछोटेकरकहाछुवत छबीलीछातीछावोजाकेछवायवेकेअभिलापवाढ़े हैं ॥ खेलनजोआइहौतौखेलोजैसेखेलियतकेशवरायकीसौंतैयेखेलकौनकाढ़े हैं । फूलफूलभेंटतिहैमोहिंकहामेरीभटूभेंटेकिनजायजेवेभेंटवेकोठाढ़ेहैं ॥ १० ॥

यहिरंगसखी॥ नायका की चेष्टा देख कहत है मेरो मुँहचूमै तेरी चूमनेकी साधन पूरहै अरु कहूं ओसचाटे प्यास बुझात है आंशू क्यों सिरात पाठ भी है तेरी जो छविवारी छाती है तामें मेरे छोटे छोटे हाथ कहा छुआवत है याही छुआवो जाके छुवाइवेकी अभिलाषहै खेलिवे को आई तो खेल खेलो ये कौन खेल निकासे हैं मोकों काहेको भेंटतिहै जिनसे भेंट जे सामुहें खड़ेहैं यहां बहिरंग जानो याते प्रकाश अरु सूक्ष्म अलंकार लिखो सो नहीं नायका सों सखीवचन न होते तौ होतो ताते छिपी बात जनाई याते पिहितहै ऐसी सवाई महाराज लिखी सो नहीं यामें भाव याही यहां साफ कहत ताते विवृतोक्तिहै काहेके छपी जो आशय सो प्रकट दिखायो विवृतोक्ति दो रीतिकी होत कहूं श्लेष सों कहूं साफ ॥ १०॥

नायकाकी प्रच्छन्न चेष्टा ॥ कवित्त ।

छोरछोरबांधेपागआरससोंआरसौंलैअनतहींआनभांतिदेखतअनैसेहौ । तोरितोरिडारततिनूकाकहौकौनपर कौनकेपरतपांयबावरेज्योंऐसेहौ ॥ कबहूंचुटकदेतचटकीखुजावोकान मटकीयोंडाउजुरीज्योंजम्हातजैसेहौ । बारबारकौनपरदेतमणिमालामोहिंगावतकछूकछूआजुकान्हकैसेहौ ॥ ११ ॥

उक्ति सखीकी नायकप्रति ॥ बारबार पाग बांधत हो अरु अनत चितवतहो कौनपै तृण तोरत हो कौनके पांय बावरेसे परतहो कहा बार बार चुटकी दे दे कान खुजावत हो कौन पै मटकी चलावतहो काहे ऐसे जम्हातहो मटकि एँड़ात ज्यों जुही जम्हात भी पाठ है कौन पै बार बार मणि माल देत हो कछूको कछू गावत आजु तुम कैसे भयेहो सखी बहिरंग ताते प्रच्छन्न है स्वभावोक्ति अलंकार ॥ ११ ॥

नायककी प्रकाश चेष्टा ॥ सवैया।

जालगिलांचलुगायनदै दिननाचनचावतसांझयहांऊं।
केशवमंत्रकरोंवशकारक हारिकयंत्रकहांलगिनाऊं॥
हारिरहेहरिकेहूँमिलीनमिलाउंजोजाहितोंमांगसुपाऊं।
ठाढ़ीवेजाहुमिलौमिलवेकहं औरकहांकनियांकरल्याऊं॥१२॥

उक्ति सखीकी नायकप्रति ॥ जाके हेतु लुगाइनको लाचदई लाच नाम रुसवत लोंच भी पाठ है अरु तुमको उन नाचनचाये अरु तुम बश करन हेतु मंत्र करे अरु यंत्र करि हारे कहांतक गनाऊं तुम हारगये वह न मिली ताको हों मिलाउती जे मुख मांगो पाउती जाहु वे ठाढ़ेहैं मिलौ और का कनियां के लेआऊं यहांऊं विवृतोक्ति पूर्ववत् बहिरंग सखी तें प्रकाश जानवो ॥ १२ ॥

अथ स्वयंदूतत्व वर्णन।

दोहा—जोक्योंहूंनमिलैकहूं, केशवदोऊईठ।
तौतवअपनेआपहीं, बुधिवलकरतवसीठ ॥ १३ ॥

जो क्योंहूं प्रकारते कहूँ दोऊकी अर्थ नायक नायका की चेष्टा न मिलै अरु सखी दूती के मिलाये ते भी ईठ चेष्टा न मिलै अर्थ सखी आदिकते छिपावै तो तब अपने ते आपही बुद्धिके बलते बसीठ दूतपन करै ॥ १३ ॥

नायक को प्रच्छन्न स्वयंदूतत्व॥ सवैया।

दूरतेदेखवेकोह्वैदीनमनाइहुतीलिखहूलिखचीठी।
देखेमिलौमनहौंहुमिली मिलखेलवेहूंकोमिलीमतिमीठी॥
ऐसेमेंऔरचलाइहैकेशवकैसहूंकान्हकुमारिदैदीठी।
लागैनवारमृणालकेतार ज्योंटूटैगीलालहमैंतुम्हैंईठी॥ १४ ॥

नायका नायकसों कहति है देखो दूरते तो परस्पर चिट्ठीलिखी ताते अब मिले मन भी खेल है तब मति भी मिली जो ऐसे में कोऊ बालकी दीठि परजायगी तो हम तुमसे मृणालके तार सी ईठ टूटजै है अभिप्राय यह रतिकरोचाही स्वयंदूतीकैयो रीति की होति यहां रतिहित दूतपनकीनो. पठाईहुतीभी पाठ है गूढ़ोक्ति अलंकार आशय गूढ़ के प्रश्न स्वयंदूती के लक्षण में यह है कि जहां कोऊ न मिलै अर्थ सखी दूतीआदि निकट न होय तहां आप दूतत्व करै वे पहिंचान पीयसों यहां पहिंचान है नायक अरु आन मिल्यौ है नायक नायका पासही है यहां स्वयंदूतत्व कैसे ॥ उत्तर। नायका के स्वयं दूतत्वमें दो भावहैं जो नायकानिकट होय तौ आप काहू भांतिते संकेतस्थल जताव

दूसरी भेद नायक पासही होय संकोचवशतें कुछ न कहिसकै कि नायकाके मन में न जाने का है तहां नायका सुरत स्वयंदूत करे यहां सुरतस्वयंदूत है संकेतस्थल नहीं संकेत स्थलमें नायक आयके प्राप्तहोत हैं प्रच्छन्न तो प्रसिद्ध ही है ॥ १४ ॥

पुनःप्रियास्वयंदूतत्व ॥ यथा-सवैया।

छुवोजनिहाथसोंहाथकियेपलहीपलबाढ़तप्रेमकला।
नजानियेजीमेंकहाबसिजायचलैपुनिकेशवकौनचला ॥
भलेहीभलेनिबहैजोभलीयहदेखवेहीकीहलाहुभला।
मिलौमनतोमिलवौयकहूंमिलवौनअलौकिकनंदलला ॥ १५ ॥

उक्ति नायकाकी नायकप्रति ॥ एकान्तमें नायक नायका हैं सो नायक संकोच वश हाथ नहीं पसारत यह जान नायका कहत कि हमारे हाथसों हाथ मत छुआवे प्रेमकी कला हमारे उर बढ़तजात है नहीं जानियें फेर जीमें का आय जाय तब हम तुह्मारो का कर सकिहैं जो भलाई में निबहै सोई भली है यह देखिबे की हला भला तो है जो हमारो तुह्मारो मन मिलो है तब अब मिलवो अलौकिक नहीं अलंकार भाव पूर्ववत् ॥ १५ ॥

प्रियाको प्रकाश स्वयंदूतत्व ॥ यथा-सवैया।

धाइनहींघरदाइपरीजुरिआइखिलाइकिआंखवहाऊं।
पौरपेआवैरतौधीइतैपरऊंचोसुनैसुमहादुखपाऊं ॥
कान्हनवेरहुयाउनयोंइनआलिनकोलगहींवहराऊं।
येसबमेसंगसोवनआवेकैमैंइनकेसंगसोवनजाऊं ॥ १६ ॥

अक्षरार्थ सुगम ॥ परंतु सखी न जानै तो प्रकाश नहीं जानै तौ स्वयं दूती नहीं तह यह स्वयंदूती के प्रच्छन्न प्रकाश में है कि एकांत नायकसों कहै सो प्रच्छन्न समुदाय में कहै सो प्रकाश ॥ अरु वचन विदग्धा स्वयंदूतीभिद प्रथम मिलाप सो स्वयंदूती दूती सो वचन विदग्धा अलंकार पूर्ववत् अरु जहां स्वयं तत्व तहां यही अलंकार जानियें ॥ १६ ॥

नायकको प्रच्छन्नस्वयंतत्व ॥ कवित्त।

आपनोईभाइकेयेसोहतसरीकसेवेकेशोदासदासज्योंचलत चित्तलीनेहैं। आपहींअटाउकेयेलेतनाउंमेरोवेतोवापुरेमिलापकेस तापकरहीनेहैं। प्रियाकोसुनायककैकहतऐसीवनश्यामसुवलकोलै लैनामकामभयभीनेहैं। साथलैसखानअबजैवोवनछांडोहमसेल वेकोसंगसखाशाखामृगकीनेहैं ॥ १७ ॥

नायककी प्रकाश चेष्टा ॥ सवैया ।

जालगिलांचलुगायनदै दिननाचनचावतसांझयहांऊं ।
केशवमंत्रकरौवशकारक हारिकयंत्रकहांलगिनाऊं ॥
हारिरहेहरिकेहूमिलीनमिलाउंजोजाहितैमांगसुपाऊं ।
ठाढ़ीवेजाहुमिलौमिलवेकहं औरकहाकनियांकरल्याऊं ॥ १२ ॥

उक्ति सखीकी नायकप्रति ॥ जाके हेतु लुगाइनको लाचदई लाच नाम रुश्वत लांच भी पाठ है अरु तुमको उन नाचनचाये अरु तुम वश करन हेतु मंत्र करे अरु यंत्र करि हारे कहांतक गनाऊं तुम हारगये वह न मिली ताको हौं मिलाउती जो मुख मांगो पाउती जाहु वे ठाढ़ेहैं मिलो और का कनियां के ले आऊं यहांऊं विवृतोक्ति पूर्ववत् बहिरंग सखी तें प्रकाश जाननो ॥ १२ ॥

अथ स्वयंदूतत्व वर्णन ।

दोहा—जोक्योंहूंनमिलैकहूं, केशवदोऊईठ ।
तौतवअपनेआपहीं, बुधिवलकरतवसीठ ॥ १३ ॥

जो क्योंहूं प्रकारते कहूं दोऊकी अर्थ नायक नायका की चेष्टा न मिलै अरु सखी दूती के मिलाये ते भी ईठ चेष्टा न मिलै अर्थ सखी आदिकते छिपावै तो तब अपने ते आपही बुद्धिके बलते बसीठ दूतपन करै ॥ १३ ॥

नायक को प्रच्छन्न स्वयंदूतत्व ॥ सवैया ।

दूरतेदेखेनकोहूदीनमनाइहुतीलिखहूलिखचीठी ।
देखेमिलेमनहांहुमिली मिलखेलवेहूंकोमिलीमतिमीठी ॥
ऐसमेंऔरचलाइहकेशवकेसहूंकान्हकुमारिदैदीठी ।
लागनवारमृणालकेतार ज्योंटूटगोलालहमेंतुम्हंईटी ॥ १४ ॥

नायका नायकसों कहति है देखो दूरतेतो परस्पर चिट्ठीहूमी तानें अब मिलै मनभी मिल है तब मति भी मिली जो ऐसे में कोऊ बालकी दीठि परजायगी तो हम तुमसों मृणालके तार भी ईट टूटने है अभिप्राय यह रतिकरोनाही स्वयंदूतीकैयां रीति भी होति यहां रतिहित दूतपनकीनो ‹टदईहूनीभी पाठ है गूढ़ोक्ति अलंकार आशय गूढ़ है प्रश्न स्वयंदूती के लक्षण में यह है कि जहां कोऊ न मिलै अर्थ सखी दूतीआदि निकट न होय वहां आप दूतत्व करै ये पहिचान दीपमों यहां पहिचान है नायक और आन मिस्यों है नायक नायका पासही है यहां स्वयंदूतत्व कैसे ॥ उत्तर । नायका के स्वयं दूतत्वमें दो भाव हैं जो नायकाविकट होयतौ आप कछू भांतिसे संकेतादिक बताबै

दूसरो भेद नायक पासही होय संकोचवशते कुछ न कहिसकै कि नायकाके मन में न जाने का है तहां नायका सुरत स्वयंदूत करै यहां सुरतस्वयंदूत है संकेतस्थल नहीं संकेत स्थलमें नायक आयके प्राप्तहोत हैं प्रच्छन्न तो प्रसिद्ध ही है ॥ १४ ॥

पुनःप्रियास्वयंदूतत्व ॥ यथा-सवैया।

छुवोजनिहाथसोंहाथकियेपलहीपलबाढ़तप्रेमकला।
नजानियेजीमेंकहावसिजायचलैपुनिकेशवकौनचला॥
भलेहीभलेनिबहेजोभलीयहदेखवेहोकीहलाहुभला।
मिलोमनतोमिलवोयकहूंमिलवोनअलौकिकनंदलला ॥ १५॥

उक्ति नायकाकी नायकप्रति ॥ एकान्तमें नायक नायका हैं सो नायक संकोच वश हाथ नहीं पसारत यह जान नायका कहत कि हमारे हाथसों हाथ मत छुआवे प्रेमकी कला हमारे उर बढ़तजात है नहीं जानियें फेर जीमें का आय जाय तब हम तुह्मारो का कर सकिहें जो भलाई में निबहै सोई भली है यह देखिये की हला भल तो है जो हमारो तुह्मारो मन मिलो है तब अब मिलवो अलौकिक नहीं अलंकार भाव पूर्ववत् ॥ १५ ॥

प्रियाको प्रकाश स्वयंदूतत्व ॥ यथा-सवैया।

धाइनहींघरदाइपरीजुरिआइखिलाइकिआंखवहाऊं।
पौरपेआवैरतौंधीइतैपरऊंचोसुनैसुमहादुखपाऊं॥
कान्हनवेरहुयाउनयांइनआलिनकोलगहांवहराऊं।
येसबमोसंगसोवनआवैंकेमैंइनकेसंगसोवनजाऊं॥ १६॥

अक्षरार्थ सुगम ॥ परंतु सखी न जानै तो प्रकाश नहीं जानै तौ स्वयं दूती नहीं तह यह स्वयंदूती के प्रच्छन्न प्रकाश में है कि एकांत नायकसों कहै सो प्रच्छन्न समुदाय में कहै सो प्रकाश ॥ अरु वचन विदग्धा स्वयंदूतीभेद प्रथम मिलाप सो स्वयंदूती दूती सो वचन विदग्धा अलंकार पूर्ववद् अरु जहां स्वयं तत्व तहां यही अलंकार जानियें ॥ १६ ॥

नायकको प्रच्छन्नस्वयंतत्व ॥ कवित्त।

आपनोईभाइकेयेसोहतसरीकसेवेकेशोदासदासज्योंचलत चित्तलीनेहैं। आपहीअटाउकैयलेतनाउंमेरोवेतौबापुरेमिलापकेस तापकरहीनेहैं। प्रियाकोसुनायकेकहतऐसीघनश्यामसुबलकोलै लैनामकामभयभीनेहैं। साथलैसखानअबजैवोबनछांडोहमखेल वेकोसंगसखाशाखामृगकीनेहैं॥ १७॥

उक्ति अंतरंग सखीकी अंतरंग प्रतिकि देखकै कान्हकौ चरित्र आजनायककी बनमें बुलावन हेत ये उपाय नधि चलेजात ताको सुनायकै कि हमारे साथ के सखा अपने भाइनके शरीकेहं उनहीं के दासकी रीति भयवान चलतेहं ॥ आपु आनको बिगार करत हमारो नाम लगावत ऐसे बाबरे मिलाप की सलापकर होने भयेहैं अरु सुयल अपने यलको नामलेत कि हम ऐसे बलीहैं कि साथमें सखन के जैयो हम छाही शाखामृग बानर सखा करें स्वबलको नाम बानर ते निकसत कि हमारे सखा प्राचीन बानरहैं सुग्रीवादि ॥ १७ ॥

नायकाको प्रकाश स्वयंदूतत्व ॥ सवैया।

बनजैयेचलौकोउठाली हैकेशवहेतुमहींतोअरीअरहौ।
कछूखेलियेखेलनआवत आजहींभूलोनभूलोगरेपरहौ॥
हितहैहियमेंकिधौंनाहिं तऊहितनाहींहियेतोललालरहौ।
हमसोंयहबूझियेऐसी कहौजोकहीतुकहीबकहाकरहौ॥ १८

प्रथम उक्ति नायककी कि बनजैये चलो तब नायका कहति कि कोऊ ठाली नहीं ठाली नाम कोऊबेकामकीहैं अरुताही पदमें नायक को जातवत का हम बे म नकीहैं हमहूं चाहती तब नायक न समझो सो कही तुमहूं हो जब नायका रसन जो यह बोधकरत कि तू हमारो अरी बैरी है सो का अरिहैलरिहै अरु नायकप्रति का कोई हमा अरीहै शत्रुहै जो एकहै तब ना समुझ नायक कही कछू खेल खेलिबेको बुलावत झगरा न करन आवत सखिन समुझावत कि हमें नहीं अब नायक प्रति का आज नहीं आ तब नायक न समुझी अरु कही के ही तें भूलो सो सुन सखिन प्रति कहत का क के गरे परिहो नायक प्रति का मेरे गरे सों लगिहो सो नायक न जानी हित है हीय कि नहीं है सो सुन कहत सखीप्रति हित नहीं तौ लला काहू सों लरिहौ अरु नाय प्रति यह अर्थ लला आजु लरि हो आजु बिहार करिहो तब नायक न बूझी सो नाय सों कही हम सों यही बूझ ऐसे कहो है यहसों यह भी पाठ है तब नायका सखि प्रति जो कही सो कही तुम का करिहौ अरु नायकप्रति जु कही सुही वही अब बक रहिहौ चलौ हम आवतहैं. यद्यपि यामें गूढ़ोक्ति अलंकार है तथापि एकही शब्दमें हि अनहितवारी दोई बातें हैं ताते तुल्य योग्यताजानियें अरु जो उत्तर अलंकार को अर्थ कीजे तौ दुःसंधान रस दोष होत है अरु नायक प्रथम बाक्यते नायककी स्वयंदूतत्व सखिन सामुहें ते प्रकाश ॥ १८ ॥

अन्यच्च कवित्त।

केशोदासघरघरनाचतफिरतगोप एकरहेछकतेमरेईगुनियतहैं।
नारुणीकेवशबलदाऊभयेसखासब संगकोलैजैयेदुखशीशधुनियत

हे ॥ मोहिंतोगयेईवनैदेहदीपमालापायगायनसंवारवेकोचित्तचुनि यतहै । जोनवसौलोलनैनलेरुवामरहिसब खरकखरेईआजसूनैमु नियतहे ॥ १९ ॥

उक्ति नायककी नायकाको सुनायकै कहतहै घर घर गोप नाचत अरु एके छकके मरसे ह्वैगये अरु मदिराके बश बलदाऊ सखन समेत होगये या दुःखते शीश धुनिय- तहै मोको तो जानेई परैगो काहे दिवारीको दिनहै गायनके प्रचारबेको अर्थ देखबेको और मैं जो खिरकमें न बसों हे चंचलनैनी तो लेरुआ नाम बछरू सब मरजायँ खरिकमें सूने सुनियतहै प्रमाणगीतावली ललन लोनेरुवा अलंकार पूर्ववत् ॥ १९ ॥

दोहा–ऊढ़ापुनियहिभांतिकरि, बहुविधिहितनजनाय।
आपनहींतेलाजतज, पियहिमिलैअकुलाय ॥ २० ॥

ऊढ़ा नायका या रीतिते बहु विधिते हित को जनावै और आपुनते लाज तजके प्रीतमसों अकुलाय कै मिलै ॥ २० ॥

कवित्त।

पंथनथकितपलमनोरथरथनकेकेशोदासजगमगजैसेगायगी तमें। पवनविचारचक्रचक्रमनचित्तचढ़िभूतलअकाशभ्रमैघामजल शीतमें ॥ कौलौंराखोंथिरवपुवापीकूपसरसमहरिविनकीनेवहुवास रवितीतमें। ज्ञान गिरिफोरतोरलाजतरुजायमिलौ आपहितेआप- गाज्योआपनिधिप्रीतमें ॥ २१ ॥

उक्ति नायकाकी मनकी रीति बखानत नदीसों रूपक करिकै कि देखौ पंथ राह थकत नहिं पलकहूं नदी अरु मनोरथ जो है ताहीके जे रथ जगमग कैसे होत जैसो गीतमें गाये अरु पवन औ विचार दोईहं चक्रवा रथके अथवा पवन इनके बिचार देख चकित होजात अरु मन जो है सो भी चकित होजात भू पृथ्वी आकाश में घाम जल- शीत नहीं गनत अरु इनको वपु शरीर सों वापी कूप सर समकर कबलौं राखौं हरिके बिनते निकसबहु बासर व्यतीत में ह्वैगये ज्ञानगिरिको फोरिकै अरु लाजरूपी तरु तोरिकै आपही से आपगाज्यो आप निधिरूपी प्रीतिमें यहां नदीरथ मनको रूपक ऊढ़ नायका है ॥ २१ ॥

अन्यच्च ॥ यथा–सवैया।

जातभईसँगजातिलैकीरतिकेशवहैकुलसोंहितफूट्यो।
गभंगयोपुनियौवनरूपकोसोतौ सबैपलहीपलखूट्यो ॥

कान्हतिहारहीआनकियेकहींनीकहिलाजसोंनातोंतोईछूटचो।
छांड्योसबैहमहेरतुम्हैंतुमपैतनकौकपटोनहिंछूटचो ॥ २२॥

कीर्ति जो हमारीहै सो जातिसमेत गई अर्थ यह कि पतिव्रता ते हम व्यभिचारिणी भईं अरु जातिते गई अरु कुलसों भी हित गयो अरु योवन रूपको गर्व गयो यामें॥प्रश्न का नायकाप्रौढ़ भई॥उत्तर । अपनसों बोली तब गर्व कहां ऊतो पलहीपल खोयो भयो अरु हे हरि तिहारी शपथ कर कहत कि लाजसोंतोनातोई टूटो हम सब छांड्यो पर तुम कपट न छांड्यो परकीया खण्डितामें भी लगावतेहैं काहे नायक आनसों रमन-करि आयोहै याते खोटो शब्द घटिगयो जाति अरु कीरति संगगई तातेसहोक्ति अलंकार ॥ २२ ॥

दोहा–अधिकअनूढालाजते, पियपैजायनआप।
केहूंकैसखियोंकहै, ताकेतनकोताप ॥ २३ ॥

अनूढ़ा अधिक लाज ते पिया सों न बोलै ताको दशा सखी जनावै ॥ २३ ॥

कवित्त ।

जानैकोकेशवकौनेकह्योकबकान्हहमारेहिंडोरनझूलै । पानन खाइनपानीपियैतबतेभरिलोचनलेतसमूलै ॥ जाहुनहींचलिबेगब लायल्योंलेहुसकेलकहांयहभूलै । जानहौंतहकामकलीकुम्हिल यगयेबहुरैंफिरफूलै ॥ २४ ॥

उक्ति सखीकी नायकप्राते ॥ कि नहींजानत काहू कहिदई है कि कान्ह हमारे हिंडोरापर झूलनआवत तबते पय पान छोड़ आंखें मूलतक पङनीलों भरलेत ताते बलायल्यों बेगजाहुसकेल लेहु वाको भलो जिन काहे या कामतरुकी कलीहै जोकुम्हि लाय जैहै तोफेर न फूलिहै काकूक्ति अलङ्कारहै । का फूल है न फूलिहै ॥ २४ ॥

प्रथममिलन स्थानवर्णन ।

दोहा–जनीसहेलीधाइघर, सूनैघरनिसँचार।
अतिभयउत्सवव्याधिमिस, न्योंतोसुवनविहार ॥ २५ ॥

दासी सहेली धाईके घरमें औ काहू सून घरमें रात्रिसमयमें किंवा ऐसे मिलनकी संचार प्रचार होय अतिभयते कहूं छिपे तहां मिलन होय किंवा आप नायका डर संयुक्त होय ता समय मित्र आयके उपचार करै अरु काहू उत्सवमें जाय व्याधिरोग के बहानेते और न्यौतेमें अरु सुन्दर वनमें मिलिके विहार करै ॥ २५ ॥

दोहा–इनहींठौरनहोतहैप्रथममिलनसंसार।
केशवराजारंकको रचिराखोकरतार ॥ २६ ॥

याहीठौर में मिलाप होतहै प्रथमराजाको अरु रंकको यह कर्तार रचिराखो ॥२६॥

जनीके घरको मिलन ॥ कवित्त ।

वे-कैकुमारिकाकोव्रजकीकुमारिकानिमांझसांझकेशोदासत्रासप
गपोलिके। कामकीलतासीचलप्रेमपाससीअमलराधिकाकोबुद्धिबल
कंठभुजमेलिकै॥ दौरिदौरिदुरिदुरिपूरि२अभिलापलाखभांतिकेअनू
नरूपबहुकेलिकै। जनीकेआजिरआजरजनीमेंसजनीरीसांचीकीन्ही
श्यामचोरिमिहिचनिखेलिकै ॥ २७ ॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति ॥ कि आजु दासीके घर में सखिन यह काम कीन्हों
रीको कुमारी वेष बनाय सांझ के मध्य त्रास खेल कामलतासी राधाके संग मिलाप
कराय दयौ अरु उन संग संग दौर दौर दुर दुरके अभिलाप पूर्ण करे लाख भांतिके
अनंत रीति केलि करि रातमें सांची चोरि मिहिचनि श्याम कीनी ॥ यहां पर्यायोक्ति
लङ्कार है छलते इष्टसाधन कीन्हों याते ॥ २७ ॥

सहेलीके घरको मिलन ॥ कवित्त ।

नयननकेतारिनमेंराखोप्यारे पूतरीकैमुरलीज्योंलाइराखोदशन
सनमें। राखोभुजवीचवनमालीवनमालाकरचंदनज्योंचतुरचढ़ा
राखोतनमें ॥ केशोराइकलकंठराखोवलिकठुलाकैकरमकरम
कहूआनीहैभवनमें। चम्पककलीज्योंसूंघिसूंघिकाहदेवतासी लेहु
रिलालइन्हैंमेलिराखोमनमें ॥ २८ ॥

अर्थ सुमग दिठाईते कहत ॥ याते सहेलीलुप्तोपमालङ्कार नयन तारिन में पुतरी
रिराखो पुतरी उपमान नायका उपमेय याते वाचकधर्मलुप्ता अरु मुरली उपमान
शन वसन अधरनमें राखो ज्यों वाचक ताते उपमेय धर्मलुप्ता इत्यादि जानियें अरु
र्मक्रिया भी पाठहै ॥ २८ ॥

धाईकेघरको मिलन॥ कवित्त ।

हँसतखेलतखेलमंदभईचंदद्युतिकहतकहानीअरुबूझतपहेली
ाल । केशोदासनींदमिसुआपनेआपनेघरहरेहरेउठिगईग्वालि
ासकलबाल ॥ घोरउठेगगनसघनवनचहूंदिशिउठिचलेकान्हधाइ
ालिउठीतिहिकाल । आधीरातअधिकअँधेरीमांझजैहोंकहांराधि
ाकीआधीसेजसोइरहौनंदलाल ॥ २९ ॥

अरु बालिका पाठ में बालक बालिका स्त्री उठाइबो नहीं गनको उठिबो अकस्मैक
हो भयो जो धाइको कहिराख्यो होइ यह यत्न ठहराओ जो बालक न उठतेतौधाइ सो-

कहती याते यह जानियें कि अकस्मात् इच्छा पूर्ण भई ताते यहां जो प्रहर्षण अलङ्कार लिखो सो नहीं काहेके आगे सखीसब उठगई से जानतरहीं ताते गूढ़ोक्ति होत धाइके कहनेते कहां धाइ की इच्छारही यह जो कोऊ कहै सो नहीं काहे सहेली तौ नींद बश गई धाइकी ये बातें सिखाइबो छलकरि इष्टसाध्यो ताते पर्यायोक्ति होती आहीं अरु धाइ जो कही सो अंधेरी रात जान ताते समाधि अलङ्कारहै कि कार्य सुगम आनकारणते भयो घनकी अँधेरीते ॥ २९ ॥

सूनेघरको मिलन ॥ कवित्त ।

देखतेहीचित्रसूनीचित्रशालाबालाआजुरूपकीसीमालाराधारूपकसुहायेरी । नूपुरकेसुरनकेअनुरूपतानेलेतपगतलतालदेतअतिमनभायेरी ॥ ऐसेमेंदिखाइदीन्हींऔचककुंवरकान्हजैसेहैयेगातैसेजातनबतायेरी । केशोदासकहैपरेअलजसलजसेनजलजसेलोचनजलदसेह्वैआयेरी ॥ ३० ॥

उक्ति सखीकी सखी प्रति ॥ कि आज चित्र सूनो देखि कैसो चित्रहै चित्रनी जबाला है तासमरूपकी मालासी राधारूपक जे सुहायेहैं तिन्हैं देख रूपकनाम ताल विशेष सो नूपुरके जे सुर हैं तिनके अनुरूप तानें लेतहैं पगतल ताल देतहैं मन भाये करतल भी पाठहै ऐसो समय समुझ औचक कान्हने दिखाईदई तब आनगात जैसे भये तैसे नहीं कहत बनत परन्तु जे जलज कमलसे लोचन रहे ते जलद मेघसे ह्वैगये ॥ अर्थ ॥ आंसूनामा भी सात्विक ह्वै गयो । प्रहर्षण अलङ्कार जो चित्त चाहत रही राधा सो हरि मिलिगये ॥ ३० ॥

निशिचारिको मिलन ॥ सवैया ।

एकसमैसबदेखनगोकुलगोपीगोपालसमूहसिधाये ।
रातिह्वआईचलेघरकोदशहूंदिशिमेघमहामाड़िआये ॥
दूसरोबोलतहींसमुझैकहिकेशवयोंक्षितिमेंतमछाये ।
ऐसेमेंश्यामसुजानवियोगविदाकैदियोसुकियेमनभाये॥३१॥

अरु कोई कहै उक्ति कौनकी काहे तहां तौ कोई देखत नहीं रहे तौ पीछे केशव कहि चुके जाने पीउ पिया कि सखी होय जु तिनहिं समान ताते दश दिशि मेघन जब छाय लीन्हों अरु बहुत रीतिके तम ह्व गये एकै रात्रि दूजे बन तीजे मेघ तब सखी संग नहीं छोडो यह कहांते निकसत कि दूसरो बोलतही तें जानो जात तौ आन चले गये सखी संग रही अलंकार समाहित काहे कि देव ज्यो तें जाकार्य होत तहां समाहित होता है ॥ ३१ ॥

अतिभयको मिलन ॥ कवित्त ।

जानिआगिलागीवृपभानकेनिकटभौनदौरिव्रजवासीचढ़ेचहुँदिशिधाइकै । जहाँतहाँशोरभारीभीरनरनारिनकीसवहीकीछूटिगईलाजयहिभाइकै ॥ ऐसेमेंकुँवरकाहसारीशुकवाहिरकैराधिकाजगाईऔरयुवतीजगाईकै । लोचनविशालचारुचिबुककपोलचूमिचंपेकैसीमालालालललीन्हीउरनाइकै ॥ ३२ ॥

उपमा अलंकार है अरु दैवयोगते कार्य ताते समाहित इष्ट सिद्धि भयो बिन यतन ताते प्रहर्षण भी है ॥ ३२ ॥

उत्सवको मिलन ॥ कवित्त ।

वलकीवरग्रुगांठताकीरातिजागिवेकोआईव्रजसुंदरीसँवारितनसोनोसो । केशवदासभीरभईनंदजूकेमंदिरनिआधोमध्यऊरधवचौनकाहूकोनोसो । गावतिवजावतिनचतनानारूपकरिजहाँतहाँउमँगतआनँदकोऔनोसो । साँवरेकिसूनिसेजसोवतहींराधिकाजूसोयेआनिसाँवरेऊमानिमनगोनोसो ॥ ३३ ॥

औनो तालते जहां होई पानी जात ताको कहतहैं यहां राधा सेज आपनी पाई यात प्रहर्षण अलंकार बिन श्रम कार्य सिद्ध भयो अरु पर्यायोक्ति भी है नायकने सखीसों यह कहि राख्यो कि जब निद्रा नायकाको आवै तब हमारी सेज बताइयो यह छलते इष्ट साध्यो ॥ ३३ ॥

व्याधिमिसको मिलन ॥ सवैया ।

शोधिनिदाननिदानदियेउपचारविचारकियेनधिरानी ।
वेदकिशासनव्याधिविनाशनहोमहुताशनहूनाहिरानी ॥
केशववेगिचलौवलिबोलतिदीनभईवृषभानुकिरानी ।
आयेहोमेटिमरूकरिकैबहुरेउनकोवहपीरपिरानी ॥ ३४ ॥

वक्ति सखीकी नायक प्रति ॥ कि शोधक निदान कारण बहुत दान कीन्हें अरु उपचार विचार बहुत करें न धीरी परी अरु वेदकी आज्ञाते अग्निमें होम भी करी ताते बलिजाउँ वेगि चलो तुमको बुलावतहै वृषभानुरानी दीनभई है मरु मुदिकलते जो मिटाय आयेरहे सोई पीर फेर भईहै अरु प्रथमही मिलन कह्यो केशवने दूसरो तो चाहतहै छलते ताते पर्यायोक्ति ॥ ३४ ॥

न्योतके मिसको मिलन ॥ कवित्त ।

न्योतैंकैबुलाइदुतीनिर्टवृपभानुजूकीजैंवेकोयशोदारानीआनंदि शृँगारिके । भोजनकेभवनविलोकिवेकोपानखातऊपरअकेली गईआनँदविचारिकै ॥ देखतिदेखतिहरिभावतेकोभागीदेखिदौरि हीव्यालऐसीवेनीडारडारिकै । भेंटिभरिअंकमनभायोकरिछांड्योमु खकेशरिसोंमाड़िलीनीवेशरिउतारिकै ॥ ३८ ॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति ॥ कि हे सखी ! आज यशोदाने राधा को बुलाय शृंगा करि भोजन कराइचुकी तब भवन देखिबे को राधा ऊपर गई सो तहां हरिको देखि भागी तिन दौरिके ताकी वेनी पकरिकै मनमानी कीन्हीं अरु वेशरि उतारि केशरिसे मुख मांज्यो अभिप्राय यह कि राधा को अंग केसरि सो है तामें रद छद नख छदन देखि परै अरु केसरि तौ अंगके रंग में मिलिगई याते मीलित अलंकार अरु बेसरि उतारिबेते सब गहना उतारे ताते लक्षित लक्षणा आपनो वेसर को अर्थ गहेरहो अरु आन को ग्रहण करो व्यंग यह कि आनन जानी अरु क्रम नाहीं ताते असंलक्ष्यक्रमध्व नि अरु पर्यायोक्तिभी है वेसर उतारलई की बहुत देरतक रहे यह छल ॥ ३५ ॥

वन विहारके मिसकोमिलन ॥ सवैया ।

दैदधिकालिहगईकहिदैनपसारहुओलिभरोपुनिफेटी ।
छाँड़ोनहींमगछाँड़ोजुपायेछुड़ावैनिलोकनिलाजलपेटी ॥
वातसम्हारिकहौसुनिहैकोउजानतहौयहकौनकिवेटी ।
जानतहैंवृपभानुकिहैपरतोहिंनजानतकौनकिचेटी ॥ ३६ ॥

वनमें चेटीशब्द व्यंग अर्थ है काहे चेटी घरमें चाहिये तहां हरि कही कि तोहीं ह नहीं जानत तू कौनकी चेटीहै ? अर्थ । तेरी मालिक तौ दधि देवो चाहत काहे जबा नहीं देत याते उत्तराअलङ्कार है पहिली तुकमें देहरीभी पाठ है ॥ २६ ॥

जलविहारको मिलन ॥ सवैया ।

हरिराधिकामानसरोवरकेतटठाढ़ेरीहाथसोंहाथछिये ।
प्रियकेशिरपागप्रियामुकताछरराजतमालदुहूनाहिये ॥
कटिकेशवकाछनीश्वेतकसेसवहीतनचंदनचित्रकिये ।
निकसेजनुक्षीरसमुद्रहीतेसँगश्रीपतिमानहुँश्रीहिलिये ॥ ३७ ॥

सुगम अलङ्कार उपमेसा ॥ ३७ ॥

अन्यच्च ॥ सवैया ।

ऋतुग्रीपमकीप्रतिवासरकेशवखेलतहैंयमुनाजलमें ।
इतगोपसुतावहिपारगुपालविराजतगोपनकेदलमें ।
अतिवूडतहैंगतिमीननकीमिलिजाइउठैंअपनेथलमें ।
इहिभाँतिमनोरथपूरिदुवोजनदूरिरहैंछविसोंछलमें ॥ ३८ ॥

सुगम पर्यायोक्ति अलङ्कार ॥ ३८ ॥

दोहा–यहिविधिराधारमणके, वरणेमिलनविशेप ।
केशवदासनिवासवहु, बुधिवल्लीजहुलेख ॥ ३९ ॥

सुगम इति परकीया ॥ ३९ ॥

दोहा–औरजुतरुणीतीसरी, क्योंवरणौंइहिठौर ।
रसमेंविरसनवरणिये, कहतरसिकशिरमौर ॥ ४० ॥

सुगम ॥ ४० ॥

दोहा–प्रथममिलनथलमेंकहे, अपनीमतिअनुसार ।
हावभाववर्णनकरौं, सुनिअववहुतप्रकार ॥ ४१ ॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइंद्रजीतविरचितायां रसिकप्रिया-यां नायकनायकाचेष्टादर्शनवर्णनं नाम पंचमः प्रकाशः ॥ ५ ॥

प्रथम मिलन थल पै कहे अब हाव भाव वर्णन करतहौं बहुत प्रकारते ॥ ४१ ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराज श्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहवहादुरस्याज्ञा भिगामीललितपुरनिवासीहरिजनकवीश्वरात्मजेनसरदाराख्यकवीश्वरेणविरचित रसिकप्रियार्याभूपणेसुखविलासिकानामटीकायांचेष्टादिमिलनस्थानवर्णनंनामपंचमःप्रकाशः ॥ ५ ॥

भावलक्षण ।

दोहा–आननलोचनवचनमग, प्रकटतमनकीवात ।
ताहीसोंसवकहतहैं, भावकविनकेतात ॥ १ ॥

आननते नेत्रनते वचनते मनवारी वात जो प्रकटै सो भाव कहावै शब्दको अर्थ तौ यह है अरु कोई कहै कि भाव तौ मन अनुकूल विकार कहावत यह तौ अनभाव है ॥ १ ॥
दो०–जो देखे सुविभाव है, आपरूप अनुभाव॥संचारी जो संचरै, थाई है थिरदाव॥ तहां

ऐसी जानिये।कि जो आनन लोचन बचनते अपने मनकी बात जनावतहै सोई भाव है वा मनकी बात भाव है अरु कोई कहै वचन काहे कहे तौ इहां विट्ठल वचन है॥रामायणे- "थके नयन रघुपति छबि देखे॥पलनकहूं परहरे निमेषे॥अधिक सनेह देह भइ भोरी"॥ अरु कोईकहै यामें तो चार चाहिये विभाव अनुभाव संचारी स्थायी यहां अनुभावमात्र काहे दिखायो तहां 'अनुभावो भावबोधकः' ऐसो अमरमें है ताते भावको बोध करता जतायो ॥ १ ॥

दोहा–भावसुपाँचप्रकारको, सुनुविभावअनुभाव ।
अस्थाईसात्विककहें, व्यभिचारीकविराव ॥ २ ॥

यामें कोई कहै कि पांच प्रकार कैसे तिलककार तौ चारही गनावत तहां सात्विक भाव अनुभावहीमें है भरतसूत्रमें चारही मानत विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगाद्रस- निष्पत्ति अरु जो कहत कि मनवारीरीति सबमें चाहियेसो "विभावैर्ललनोद्यानादिभिरा- लंबनोद्दीपनकारणैःस्थायी इत्यादिको भावोजनितः । अनुभावैः कटाक्षभुजोत्क्षेपप्रभृति- भिः कार्यैः प्रतीतियोग्यव्यभिचारभिर्निर्वेदादिभिः सहकारिभिरुपचितो मुख्यया वृत्त्या" ताते पिता पुत्रपौत्रपर पौत्रको भाव यामें जानिये ॥ २ ॥

विभाववर्णनम् ।

दोहा--जिनतेजगतअनेकरस, प्रकटहोतअनयास ।
तिनसोंविमतिविभावकहि, वर्णतकेशवदास ॥ ३ ॥

जिनते जगत् संसार में अनेकरस कहा नवरस कहिये प्रकट होत तिनको नाम विभा वरसको कारण रूपसो विभाव ॥ ३ ॥

अथविभावनामभेदवर्णनम् ।

दोहा--सोविभावदोभाँतिके, केशवरायबखान ।
आलंबनइकदूसरो, उद्दीपनमनआन ॥ ४ ॥

सोई विभाव दो रीतिके एक आलंबन दूसरो उद्दीपन ॥ ४ ॥

दोहा--जिन्हेंअतनअवलंबई, तेआलंबनजान ।
जिनतेंदीपतिहोतहै, तेउद्दीपबखान ॥ ५ ॥

यामें कोई कहै कि अतन शब्द शृंगार को कहत सो नहीं बनत काहे एक शृंगार मात्रहिजै है ताते ऐसे कहा कि जिन्हें पाइ अतन जो रस है सो अविलंब न करै कहां जहांजबतक आलंबन नहीं तबलों रस अतन है जैसे जीव देहको अविलंब पाय प्रकट- त तैसेही रस आलंबन पाइ प्रकट होत है अरु कोई कहै कि रस नियतामें है देखो रस तौ नायकमें है अरु आलंबन नायका है तौ नायकामें रहो चाही तहां यह है कि नायका नेत्र-

द्वार होइ हृदयमें बशकरै है तबतक रस है जब नायका नहीं उरमें तब रस नहीं रहत जैसे रात्रिमें सोवत एकांत स्थानमें अरु एकै सुन्दरी आई ताहि देख शृंगार उपजो अरु वही सुंदरी आवत काहू कही जागत रहियो यहां एक पिशाचिनी आवै है तब भयानक ह्वैगयो तो जबतक वा सुंदरी हृदय में रही तब तो शृंगार रहो अरु जब भ्रम न दूरि हो हृदय में पिशाचिनी आई तब भयानक ह्वै गयो अरु जो कहो कि उद्दीपनमें कहां सुंदरी है तो ताही आलंबनको दीपन करत है सो दो रीतिको है घनवन शरद बसंत एक यह तो दैवी कहावत अरु गेह वसनादिक मानुषी ऐसी रीति है ॥ ५ ॥

अथ आलंबनस्थानवर्णन ॥ छप्पै ।

दंपतिजोबनरूपजातिलक्षणयुतसखिजन ।
कोकिलकलितवसंतफूलिफलदलिअलिउपवन ।
जलयुतजलचरअमलकमलकमलाकमलाकर ।
चातकमोरसुशब्दतड़ितघनअंबुदअंबर ॥
शुभसेजदीपसौगंधगृहपानखानपरधानिमनि ।
नवनृत्यभेदवीणादिसवआलंबनकेशववरनि ॥ ६ ॥

परधान पिछौरा चादरदुलही एकहै सारी तामें कोई प्रश्न करै कि जे उद्दीपनहैं आलंबन काहे कहे तहां यह अर्थ करत कि आलंबन ऐसे वर्णोंका उद्दीपन सहित खाली आलंबन न चाहिये तो यामें नायक नायिकाके रूपकी अधिकाई ना रहैगी दोहा— गहनेसे गहने परे पिय पहिरन नहिं देइ दृगन अंतर डरनते, करसें गहिगहि लेइ॥ विहारे दीपउजेरीहू हरतहरत वसन रतिकाज रही लपटि छविकी छटन छनको छूटी न लाज अरु हमारो कियो चित्रचंद्रिका नाम विहारी सतसयीको तिलक है तामें अनेक अर्थ कियेहैं इन दोहनको तामें ऐसो अर्थहै कि यामें मिलायकै पहिली तुकमें तो अलंबन कहे अरु चारमें उद्दीपन अरु फेर कहिकै आलंबनके सब चरणहै का सब आलंबन सरसहै सो देव मानुषी दोईहै परंतु पराधीहै अब नायिक नायकाके आधीन जे उद्दीपन सो कहतहैं तीसरे चरणमें कमल मारुत कमलाकरभी पाठहै औ चौथे चरणमें तडितघनुभी पाठहै अरु पंचम चरण में पान गान भी पाठ है औ षष्ठ चरण में वीणादि रव भी पाठहै ॥ ६॥

उद्दीपनवर्णन ।

दोहा—अविलोकनआलापपरि, रंभननखरददान ।
चुंबनादिउद्दीपये, मर्द्दनपरसप्रवान ॥ ७ ॥

देखो यामें घनवन आदिक नहीं कहै प्रश्न उद्दीपन छप्पै में कहि आये तो दोहामें फेर काहेकहे यातें यह जानी जातकि वे आलंबन होहैं उद्दीपन एकहै छः उद्दीपन अनं-

तहँ याते दोठौर कहे जो उद्दीपन अनंतेहैं तो एकही दोहा कह्यो चाहिये नहीं तो अनेक दोहा कहते उत्तर उत्तर छप्पै में उद्दीपन औरतरहके और दोहा में औरतरह के कहा छप्पै में जे उद्दीपन कहे ते बाह्यरूप है बाहरेहैं चंद्र कोकिलादि अरु दोहामें जो कहे सो अंगही. मात्रके कहे अविलोकन परिरंभ नखरद ये नायकाके अंगते उपजतेहैं याते न्यारी रीति कहे अरु येऊ कहे जैसे वस्त्र दो प्रकार के रेशमी और सूत्रके पर दोऊ में भिन्नताहै तैसेही एक बाह्य और एक अंगीहैं याते अन्य दोहा में कहे यहभी कोई कहत ॥ ७ ॥

अथ अनुभाववर्णन ।

दोहा–आलंबनउद्दीपके, जेअनुकरणवखान ।
तेकहियेअनुभावसव, दंपतिप्रीतिविधान ॥ ८ ॥

आलंबन अरु उद्दीपन जे अनुकरणहैं ते अनुभाव कहावत कहा जब आलंबन नायक नायिका नायका उद्दीपन घनवनकोकिलादि जब देखै तब जे मुखपै आइजात ते अनुभाव कहावतेहैं ॥ ८ ॥

अथस्थाईभाववर्णन ।

दोहा–रतिहासीअरुशोकपुनि, क्रोधउछाहसुजान ।
भयनिंदाविस्मयसदा, स्थाईभावप्रमान ॥ ९ ॥

ये जो स्थाई आठ कहे नौ न कहे सो याते कि रसको न कहावै जौन काव्य में अरु नाट्यमें होई यह आठ होतेहैं सातको जो स्थायी निर्वेद सो नाट्य में नहीं होसक्त काहे नाट्य में बहुत विषयहैं अरु काव्य एक विषयी है याते विकार नहीं हो सक्त ताते आठ कहे सो कहियत है रति शृंगार रसको स्थायी है रति नाम प्रीति सोई जब खीरकी रीतिते होतहै तब दधिवत् रस होजातहै इष्टइच्छाते उपजै मन विकार सो रति तहां कोई कहैके इष्ट इच्छाते उपजी तो संलक्ष क्रमध्वनि काहेनहीं कहत असंलक्षक्रमकोहगनी ताको उत्तर यह कि यामें प्रथम विभावतव क्रमजाने अरु फेर अनुभाव पुनि संचारीपुनःस्थायी तक देहाध्यास रहत है जब रसको रूपभयो तब छूटिजात जैसे वीरमें रावणादिकतो छूटिगये रामायणे"गरजो मरत घोर रव भारी।कहाँ रामरणहतों प्रचारी"इत्यादि जानिये ताते असंलक्षक्रम व्यंग ध्वनिजानिये तामें जो दूध दधि को दृष्टांत दीन्हों सो नहीं बनत यामें जल धर्फवत् कहो चाहिये जामें एक स्वादु रहै अरु कोईकहै है प्रीति तो सबपै होति है सो नहीं मदन उत्साह संबंधी जो प्रीति है सो स्थायी है अरु तहां कोई कहै कि प्रीतिते मदन संबंधी सामान्य कि अनेकपै होत है तो आलंबन एक काहे अनेक आलंबन कहो चाहिये तहां रस नहीं होत यामें रसाभास हो जात यही रीतिते आलंबन आन जानलीजै ॥ ९ ॥

अथ सात्विकभाववर्णन।

दोहा–स्तंभस्वेदरोमांचसुर भंगकंपवैवर्ण।
अश्रुप्रलापवखानिये, आठोनामसुवर्ण ॥ १० ॥

स्तंभक्रिया न करिसकै वैवर्ण रूप बदलजाइ इत्यादि सुगमहैं इनको अनभावही में मानतेहैं ॥ १० ॥

अथ व्यभिचारीभाववर्णन।

दोहा–भावजुसबहीरसनमें, उपजतकेशोराय।
बिनानियमतिनशोकहैं, व्यभिचारीकविराय ॥ ११ ॥

सब रसन में नियमही नहीं उपजत है तहां कोई कहै कि हर्ष उद्वेग चपलत हास्यको नियम कीन्हों इत्यादि सो काहे तहां कालको नियम केशव कह्यो तहां कोई कहै कि कालको निमय तौ विभावादिकमें भी नहीं है तहां रहनेको नियम चाहिये तो रहने में रसकी पूरणता को समय जब होत तब सब क्रम छूटिजात याते संकल्प विकल्प नानारीतिके तेई संचारी जानिये तिनके नाम कहत ॥ ११ ॥

दोहा–निर्वेदग्लानिशंकातथा, आलसदैन्यऽरुमोह।
स्मृतिधृतिव्रीडाचपलता, श्रममदचिंताकोह ॥ १२ ॥

निर्वेद वासनारहित ग्लानि अचाही वस्तुदेखब शंका भावती वस्तु ज्ञान जानन आलस देह टूटब दैन्यता सुगम मोह सुमिरण सुधि आइबे धृतिसंतोष व्रीडा लज्जा चपलता श्रम चिंता प्रियवस्तु ध्यान कोह क्रोधमूल ॥ १२ ॥

दोहा–गर्वहर्षआवेगपुनि, निंदानींदविवाद।
जड़ताउत्कंठासहित, स्वप्नप्रबोधविपाद ॥ १३ ॥

गर्व सबते अधिक मानबो हर्ष अनहोनी देख चित्तभ्रम आवेगा निंदा नींद सोइबो विवाद आनते करिबो जडता सब कर्मते मुग्ध उत्कंठा आन वस्तु प्राप्त होत स्वप्न होत स्वप्न प्रबोध ज्ञान विपाद दुःख ते मनको घटिबो ॥ १३ ॥

दोहा–अपस्मारमतिउग्रता, आशतर्कअतिव्याध।
उन्मादमरणभयआदिदै, व्यभिचारीयुतआध ॥ १४ ॥

अपस्मार मिरगी रोगमति यथा ज्ञान उग्रता अपनेको उच्च जानब त्रास भय उन्माद बे विचार अधिमनकी व्यथा याही रीतिते सब सुगम है ये सब व्यभिचारी कहै तहां इनको विचार तहां स्थायी भाव तो बीज मात्र है रसको विभाव कारण है रसके अनुभाव कार्य व्यभिचारी सहाय जानिये अरु सात्विक को अनुभाव को इतनो भेद है सात्विक

रसको ज्ञापक नहीं जैसे कंप स्तंभ स्वेद भयो तो यानहीं जानीजात कि भयते कि क्रोधते भयोहै याते न्यारो है अरु अनुभाव ते जानपरत याते भयो है याते रसके सब पांच अंग कहे ॥ १४ ॥

अथ हावलक्षण।

दोहा–प्रेमराधिकाकृष्णको, हैताते शृङ्गार।
ताकेभावप्रभावते, उपजतहावविचार ॥ १५ ॥

राधाकृष्णको जो शृङ्गार है ताकी जो चेष्टा सोई हाव है ॥ १५ ॥

दोहा–हेलालीलाललितमद, विभ्रमविहितविलास।
किलकिंचितविक्षिप्तअरु, कहिबिब्बोकप्रकाश ॥१६॥

सुगम ॥ १६ ॥

दोहा–मोट्टाइतसुनकुट्टमित, बोधादिकबहुहाव।
अपनीअपनीबुद्धिबल, वर्णतकविकविराव ॥ १७॥

सुगम ॥ १७ ॥

अथ हेलाहाव लक्षण।

दोहा–पूरणप्रेमप्रतापते, भूलतलाजसमाज।
सोहेलाजिहिंहरतहिय, राधाश्रीव्रजराज ॥१८॥

पूर्णप्रेम ते लाज छूटिजाय हियको हरै सो हेला ॥ १८ ॥

अथ प्रियाजूको हेला हाव ॥ सवैया।

अवलोकनिअंकुशऐंचिअनूपमभ्रूयुगपासभलैगलमेली।
मृदुहाससुवासउठायमिलीबहुजोन्हकियामिनिमाँझअकेली ॥
अधररसप्यायकियेवशकेशवरायकरीरसरीतिनवेली।
वनमेंवृषभानुसुतासुखहीहरिकोहरिलैगईहेलहीहेली ॥ १९ ॥

उक्ति सखीकी सखीसों ॥ कि हेसखी! आजु राधाने यह चरित्र कीन्हों कि चितवन रूपी अंकुशते अपनी तरफ ऐंचिकै अरु भ्रूरूपी फांसी गरेमें डारिकरि कोमलहास केवल उठाइ सुसुन्दर बारमें छिपाइ जोन्हकी यामिनि मध्य अकेली अरु अधर को रस प्याइ वश कीन्हों नवेली रस रीतिते सो वनमें वृषभानुसुता हरिको हेलहेली लैगई यह अक्षरार्थ परन्तु तामें जो अधर रसते वश कीन्हें सो ताको आशय यह कि सुधा को नाम मधु है अरु मदिराको नाम मधु है सो अधररसरूपी मदते मतमारे जब भये तब अरु यामें यह प्रश्न करत कि लाज न छूटी अरु ताको उत्तर करत कि लाज भूली

का सखी भूलि गई सो लाज समाजमें छूट्यं अनउचित है आपते लैगई यही बेला- है यामें लोकोक्ति अलंकार हेलाहेली लोक कहनावति है ॥ रामायणे ॥ "जिहि छनाथ बँधायोहेला" ॥ तामें श्लेषते हेलाहाव निकसो ॥ १९ ॥

अथ नायकको हेलाहाव ॥ सवैया।

वैनसुनायबुलायलईबनभौनभुलाइकेभाँतिभलीको।
फूलगयोमनफूलेविलोकतकेशवकाननरासथलीको॥
अधरारसप्याइकियोपरिरंभनचुंबनकेमुखकामकलीको।
हेलहिंधीहरिनागरिआजुहरयोमनश्रीवृषभानुललीको ॥२०॥

उक्ति सखीकी सखीसों॥ कि, हेसखी! हरिने आजु बेणु बाँसुरी बजाय सुनाई भवन लाय भांति भलीते भव भवन भुलाय पाठहै, नहीं तो बन काननमें पुनरुक्ति होयगा रु ताको मन न भूलगयो फूलनको देखि कानन बनथली देखी तब अधर रस गाय परिरम्भन कीन्हें अरु कामकलीको मुख आप चूमो रूप महामधु पान करा- कियो, परिरम्भन कामकली की ऐसोभी पाठ है, हेलहिलाहीते हरि प्रवीणने राधाको न हरलयो अलंकार शंका समाधान पूर्ववत् ॥ २० ॥

अथ लीलाहाव लक्षण।

दोहा—करतजहाँलीलानको, प्रीतमप्रियावनाय।
उपजतलीलाहावतहँ, वर्णतकेशवराय ॥ २१ ॥

प्रिया पीय पीय प्रिया पद कहिये ऐसो रूप धारण करै तहां लीला कहिये करत हां ललितानको भी पाठ है ॥ २१ ॥

अथ प्रियाको लीलाहाव ॥ सवैया।

पायनकोपरिवोअपमानअनेकसोकेशवमानमनैबो।
सीसोतोमोरखवाइबोखैबोविशेषचहूँदिशिचौंकिचितैबो॥
चीलकुचीलनिऊपरपौढ़िबोपातनकेखरकेंभजएबो।
आँखिनमूँदिकेसीखतराधिकाकुंजनतेप्रतिकुंजनजैबो॥२२॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति ॥ राधा हरिरूपधर सकल लीला सीखत है पौंइ पर पर अपमान सहि मान छुटाइबो पान खाइबो खवाइबो सीठोभी पाठहै चितैबो चील कुचीलन- नि पैठबो पात खरकत भाजऐबो आंखिन मूंदि कुंजते कुंज जाइबो स्वभावोक्ति अलं- कार चौंक चितैबो आंखिन मूंदिबो लिखो सो नहीं यामें प्रथम समुच्चय जानिये बहुत भावते अरु जहां भाव सबलता होत तहां यही अलंकार होतहै ॥ २२ ॥

नायकको लीला हाव यथा ॥ सवैया ।

झाँकिझरोखनिमेंचढ़िऊंचेअवासिनऊपरदेखनधावै ।
निंदतिगोपचरित्रनकोकहिकेशवध्यानकिकैगुनगावै ॥
चित्रितचित्रमेंआपुनयोंअविलोकनआनँदसोंउरझावै ।
आँगनतेघरमेंघरतेफिरआँगनवासरकोविरमावै ॥ २३ ॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति ॥ कि हरि जो हैं सो नायकाको रूप होयकै सब ताहीकी कला करतेहैं झरोखन चढ़ि चढ़ि झांकत गोपनके चरित्र निन्दन इत्यादि सब पद सुगम हैं प्रश्न दिनको बिरमाइबो नाइबो नहीं संभवत दिन आप नहीं विरमत उत्तर वासरमें अपनेको बिरमावत स्वभावोक्ति अलङ्कार ॥ २३ ॥

ललित हाव लक्षण ।

दोहा—बोलनिहँसनिविलोकिबो, चलनिमनोहररूप ।
जैसेतैसेवरणिये, ललितहावअनुरूप ॥ २४ ॥

बोलतमें हँसनमें देखिबेमें अरु चाल मनोहर रूपमें जैसे होहिं तैसेही वर्णन में आवै अरु चातुर्यता जामें आवै सो क्रिया ललितहाव है ॥ २४ ॥

नायकाको ललितहाव यथा ॥ कवित्त ।

कोमलविमलमनविमलासीसखीसाथकमलाज्योंलीनेहाथकमलसनालके । नूपुरकीध्वनिसुनिभोरेकलहंसनकेचौंकिचौंकिपरैंचारुचेटुवामरालके । कचनकेभारकुचभारनिसकुचनभारलचकिलचकिजातकटितटवालके । हरैंहरैंबोलतविलोकतहेरईहरैंहरैंहरैंचलतहरतमनलालके ॥ २५ ॥

मरालके बच्चा चौंकत तातें भ्रामअलङ्कार अरु स्वभावोक्तिभी है या कवित्तको अर्थ नारायणकविने कविप्रियाके तिलक में लिखेहैं यातें इहां अर्थ सुगम करदयोहै ॥२५॥

नायकको ललितहाव यथा ॥ सवैया ।

चपलापटमोरकिरीटलसैमघवाधनुशोभबढ़ावतहैं ।
मृदुगावतआवतवेणुबजावतमित्रमयूरनचावतहैं ।
उठिदेखिभटूभरिलोचनचातकचित्तकीतापबुझावतहैं ।
घनश्यामघनेघनवेषधरेजुवनेवनतेव्रजआवतहैं ॥ २६ ॥

इहां सविषय सावयवरूपक अलंकार है जहां संपूर्ण अङ्ग वर्णनमें आवे सो
विषय सावयवरूपक कहिये, इहां चपला पट किरीट धनु वेणु बजावत मित्र मयूर
इवो घनश्याम घनते जानिये ॥ २६ ॥

अथ मदहाव लक्षण।

दोहा-पूरणप्रेमप्रभावते, गर्बबढ़ैबहुभाव।
तिनकेतरुणविकारते, उपजतहैमदहाव ॥ २७ ॥

पूर्ण प्रेम प्रतापभी पाठ है पूर्ण प्रेमके प्रतापते गर्भ बढ़ै अरु तरुणपनके विका-
मद उपजे और बहुभावभी होय ॥ २७ ॥

नायकाको मदहाव यथा ॥ कवित्त।

छविसोंछबीलीवृषभानुकीकुँवरिआजुरहीहुतीरूपमदमानमदछ
कें। मारहूतेसुकुमारनंदकेकुमारताहिआयेरीमनावनसयानसव
किके। हँसिहँसिसोंहेंकरिकरिपांयपरिपरिकेशोरायकोसोंजवरहे
यजकिके। ताहिसमयउठेघनघोरदामिनीसीधाइउरलागीश्याम
नसोलपकिके ॥ २८ ॥

आपनी छविसों जो छबीली राधा है सो रूपके मदते अरु मानमदते छकीरही
रसोंभी पाठ है अरु रहीगुतिरूप मदभी पाठहै ताको कामते सुकुमार हरि मनाइवेको
त बाण बनाय आये सो हंसके सो हैं करि पांय परके थकिरहे पांय परि कर जोर भी
है प्रश्न-मद कहां रह्यो जबमिली उ०-पांयपरिबो आदि उपाय नायकने कियो तबतक
पका गर्भमें रही न मानी जब घन उठी तब घनके उठत दामिनिसी उरमें लाग गई तो
में सामर्थ्य ता दुख छुटाइवेकी अरु डर सूचित करायो ताते समाधिअलंकार है हेतु
नते कारज भये घनश्याम तन तकिके अरु लौटि श्यामघन घनसों लपटिके भी
है अरु समाहित अलंकार केशव के मतते भी होतहै ॥ २८ ॥

नायकाको मदहाव यथा ॥ सवैया।

महिमोहिनिमोहिसकेनसखीचपलाचलचित्तवखानतहै।
रतिकीरतिक्योंहुंनकानकरैद्युतिचंदकलाघटिजानतहै।
कहिकेशवऔरकिवातकहारमणीयरमाहूनमानतहै।
वृषभानुसुताहितमत्तमनोहरऔरहिडीठनआनतहै ॥ २९ ॥

वक्ति सखीकी सखीप्रति कि हेसखी ! राधिकाको रूप निहार हरि औरको दृष्टि में
हीं आनत मोहनी महिमें मोहि नहीं सकत मनमोहनीभी पाठ है चपला चितकी चंचल

है अरु रतिकी प्रीति कोई कान नहीं करत काहे काम जरेपर आप जीवत रही चंद्र कला घटतेहै रमा अति रमनी नहीं ताते ऊरजस अलंकार यहां उग्रता भाव रावने निंदाभी आन में सोईहै अंग ॥ २९ ॥

अथ विभ्रमहाव लक्षण ।

दोहा–बाँकविभूषणप्रेमते, जहाँहोहिविपरीत ।
दर्शनरसतनमनरसत, गनिविभ्रमकेगीत ॥ ३० ॥

बांकादि भूषण जहां प्रेमवशते उलटो पहिरिये अरु देखिवेते रसमें तनमन रसिक तदाकार होई सो विभ्रम ॥ ३० ॥

नायकाको विभ्रम हाव यथा ॥ सवैया ।

कटिकेतटहारलपेटलियोकलकिङ्किणिलैउरमेंउरमाई ।
करनूपुरसोंपगपौंचिवनीअँगियासुधिअंचलकीविरमाई ।
करिअंजनअंजितचारुकपोलकरीयुतजावकनैननिकाई ।
सुनिआवतश्रीव्रजभूषणभूषणभूपितहीउठिदेखनधाई ॥ ३१ ॥

सुगम गरेको हार कटिमें लपेटो ताते असंगति अलंकार यह हावमें यही अलंकार होतहै और ठौर यह कीजिये और ठौर को काम सुनिआवत श्रीव्रजभूषण भूषित ही अतिआतुर देखनधाईभी पाठ है ॥ ३१ ॥

नायकको विभ्रमहाव यथा ॥ सवैया ।

नँदनंदनखेलतहैंवनगातवनीछविचंदनकेजलकी ।
वृषभानुसुताहिविलोकतहीरुचिचित्तमेंविभ्रमकीझलकी ॥
गिरिजातनजानतपाननखातविरीकरपंकजकेदलकी ।
बिहँसीसवगोपसुताहरिलोचनमूँदिसुरोचिदृगंचलकी ॥ ३२ ॥

उक्ति सखीकी सखी प्रती कि आज नंदनंदन खेल रहे चंदन चढ़ाये तवतक वृष भानुसुता देखी तब सुधि भूलिगई पान तो गिरि गये परंतु कमलके पत्रकी वीरी खान लगे सो देखि गोपसुता हँसी तब आप लज्जा ले नेत्रमूँद तहां हँससी का आछी दृगंच लकी रुचि भई अलंकार पूर्ववत् सरोजदृगंचल पाठ है ॥ ३२ ॥

अथ विहितहावलक्षण ।

दोहा–बोलनिकेसमयविषे, बोलनदेइनलाज ।
विहितहावतासोंकहें, केशवकविकविराज ॥ ३३ ॥

बोलिवेके समयमें लाजन बोलन देय ॥ ३३ ॥

नायकाको विहितहाव यथा ॥ सवैया ।

मेरेकहेदहियेजुतऊफिरश्रीपमज्योंहठकाठदहौगी ।
पैरवोप्रेमसमुद्रपरायेकरायेकियेकितक्योंनिवहौगी ॥
हौसमरैंसजनीसिगरीकवहूँहरिसोंहँसिवातकहौगी ।
पीचितकीचित्रसारिचढ़ीचित्रकीपुतरीभइकौलौंरहौगी ॥३४॥

उक्ति सखीकी नायका प्रति कि मेरे कहे आप दहीयत है फिर पीछे आप अग्नि ह्वैके रूपी काठको जराइ हौ पैरवो प्रेम समुद्रको परो सो पराय कहे कहांतक पैर निवहोगी री सजनी हौसन मरतीहैं कवहूँ हरिसों हँसिके बात कहौगी पीके चित्तकी चित्रसारी पै चढ़ि चित्रकी पूतरी भई कवलौं रहौगी यहां रूपक अलंकार है पीयके चित्तकी चित्र- ि में नायका ह्वैके रहो।प्रश्न-हठतो काठ भयो अग्निको ह्वै है उत्तर--अग्निरूप ह्वै नायका- पु जरावैगी॥ पुनः प्रश्न-चित्रकी पुतरीमें पुतरीपद उ०--यहां अंगुल्यानिर्देश जैसी चत्रकी पुतरी तैसी तुम कवलौं रहोगी ? अर्थ जड़ ह्वैके मति रहो ॥ ३४ ॥

नायकको विहितहाव यथा ॥ सवैया ।

केशवरायसोंआजुसखीवृषभानुकुमारिउराहनोदीनो ।
गारिदईअरुमारदईअरविंदनसोंमनुकैहितहीनो ॥
सीखदईसुखपाइलईउरलाइसुगंधचढ़ाइनवीनो ।
उत्तरदेइकोनंदकुमारकछूशिरनींचेतेऊंचोनकीनो ॥ ३५ ॥

ायका धीराधीर है सो नायका नायकको देख उराहनो दियो यह तो धीरा अरु गारिदई तुम अन्य संभोगी हौ अरु कमलके फूलकी मारदई मनहितते हीन कहे सीख जो दई सो सुख मानिकै लई उरमें लगाई सुगंध नवीन चढ़ायो परनंदकुमार ारते ऊंचो न कियो अरु कोई ऐसोभी अर्थ करत कि सखी सखीसों कहत कि ाने ये बातें करीहैं सो यालिये उराहनो दीनो कि ऐसी बातें निपट छिपी औरनके क्यों कहत ? नायकानके मानमें कहां कहां नहीं होत सो यहां सखीके आगे मुँह ः उराहनो दीनो हम कब ऐसो आचरण करोहै तो यामें बहुत क्लिष्ट कल्पना होतहै असंगतिअलंकार जानिये प्रीतमको प्यारी मारै है याते अरु काकोक्तिभी है॥३५॥

अथ विलासहाव लक्षण ।

ोहा-खेलतबोलतहँसतअरु, चितवतचलतप्रकाश ।
जलथलकेशवदासकहि, उपजतविविधविलास ॥ ३६ ॥

खेलतमें बोलतमें हँसतमें चितवनमें चालमें जहां प्रकाश जानो जाय अरु जल आदिमें बहुत तरहको विलास उपजै तहां विलासहाव कहिये ॥ ३६ ॥

नायकाका बिलासहाव यथा ॥ कवित्त।

किलकअलकयुतिलकचिलकनिमिसभौंहनमेंविभ्रमनिभौ
ददीनोंहै । लोचननिशोचनसकोचनिनचावतिहैदशनचमक
कितचिंतकीनोंहै। मंदहाससुखवासअनियासदासकरिलीनेकै
इजीययद्यपिप्रवीनोंहै । मोहनकेतनमनमोहिवेकोमेरीभट्टतेरो
सुखहीअनंतव्रतलीनोंहै ॥ ३७॥

उक्ति सखीकी नायका प्रति कि हेसखी! तेरे मुखने मोहिबेको बहुत व्रतलियोहै
कदमके है अलक समेत तिलक चिलकन मिस होइकर अलि कपाटमें .
लिये अरु भौंहनमें विभ्रम विलास जोहै ताने भवनघर बनायोहै भेद देकर अरु
नेत्र तिनको शोचडार संकोचयुत नचावत रहत हैं अरु दशनकी जो चमक है
चकित कीनोंहै अरु मंद हँसते मुखकी जो सुवास है ताने केशव जो हरि हैं ताको
करलीनो है मोहनके तनमन मोहिबे निमित्त हेसखी! तेरे मुखने बहुत व्रतलियोहै
सबक्रिया करत में आई ताते बिलासहाव अरु तिलक चिलक मिस बखानते
यहुनत अलंकार ॥ ३७ ॥

नायकको बिलासहाव यथा ॥ कवित्त।

जिननिहारेतेनिहारवेकोनिहोरतकाहूननिहारेजिनकैसेहू
रेहें । सुरनरनागनवकन्यनकेप्राणपतिपतिदेवतानिहूंकेहिया
हारेहैं । इहिविधिकेशोरायरावरेअशेषअंगउपमानउपजीविरं
चिहारेहैं। [illegible] चनमदनमदमोचनहैतो [illegible]
तिहारेहैं ॥ ३८॥

उक्ति सखीकी नायक प्रति कि, हे लाल!तिहारे लोचन जिन नहीं निहारे ते तौ
रवेके लिये निहोरत रहत हमकैसे निहारि हैं? अरु जिन काहूके नहीं निहारे अर्थ
छोड़दयो तिनकैसे हूं कबहूं निहार पायो अरु सुर देव नर मनुष्य तिनकी जे [illegible]
तारा मंदोदरी आदिक तिनके तौ प्राणनके पति हैं अरु पति देवता जे हैं तिनके
विहार करनहार हैं कदाइनहीके ध्यानते पतिव्रत निबह तथा लिखितै है [illegible]
अंगहैं जा विधि नेत्रहैं तिनकी उपमा नहीं है आन विरंचि पचिके हारि रहे कपा
मदहै ताके मोचनहारे अरु मदनके मदके मोचन हारे अरु तीयव्रत मोचनहारे
रे नेत्र हैं इहां जिन नहीं निहारे तिनको उलचावत एक क्रिया अरु जिन [illegible]
तिनसे दूसरी भी क्रिया पति देवतनके हीये विहार तीसरीक्रिया इत्यादिते [illegible]

तो विलास है तामें निपुण परन्तु तीय मदमोचन जो कहे सो प्रथम पतिव्रतन के पीछे तहां दोषकोई कहै सो नहीं काहेके इहाँ काकोक्ति अलंकार है का तुम्हारेसे नेत्र-नके मधु घटावनहार तेतियान को मद मोचन हैं अर्थ मान मतिराखौ सब तीय आप-हीते वश्यहैं अरु मोचन शब्द कैयो बारआयो ताते लाटानुप्रासभी है ॥ ३८ ॥

किलकिंचित् हाव लक्षण।

दोहा–श्रमअभिलापसगर्वस्मित, क्रोधहरपभयभाव।
उपजतएकहिवारजहँ, तहँकिलकिंचितहाव ॥ ३९ ॥

श्रम अभिलाप गर्व स्मित कहिये मंदहास अरु क्रोध हर्ष भय इत्यादिक भाव जहां एकवार उपजै तहां किलकिंचितहाव कहिये गर्वयुतभी पाठ है ॥ ३९ ॥

प्रियाजूको किलकिंचितहाव यथा ॥ सवैया।

कौनेरसैविहँसैलखिकौनहिकापरकोपिकेभौंहचढ़ावै।
भूलतिलाजभटूकबहूँकबहूँमुखअंचलमेलिदुरावै।
कौनकिलेतबलायबलायत्योतेरिदशायहमोहिनभावै।
ऐसितौतूकबहूँनभईअबतोहिदईजनिबाइलगावै ॥ ४० ॥

उक्ति सखीकी नायका प्रति कि, तेरी दशा कैसीहै आज कौने देख तेरे जे नेत्र ते नप होतेहैं अरु काको देखिकर बिहँसत है अरु कापै कोप कर कर भौंह चढ़ावतहैं हे बाल कौनकी बलाइ लेतहैं तेरी ये जो दशा है सो मोहिं नहिं भावती ऐसी तू कबहूँ नहीं भईहै दई तोहिं यह बाय नलगावै यामें क्रम लगाइबेको प्रयोजन परंतु श्रमआदि सतभाव होतेहैं कौने रसै यह अभिलाप १ विहँसै कौने लखिया स्मित मंदहास २ भौंहें चढ़ावै क्रोध ३ भूलति लाज यामें गर्वश्रम ५ काहे गर्व तौ ऐसो कौनहै जाको देख लजात अरु श्रम घूँघट न डारबो मुख दुराइबो भय बलालि पै ॥प्र०–अरु कोई कहै यामें एक नायका अनेक को देखत तौ रसाभास होत तहां र कि नायका अनेक नायकनके देख अनेक भाव करतहै अरु अनेक भावते समुच्च-अलंकार ताते नायकाको जो मान है ताको छुटावत यह वस्तु अरु किल निश्चय है में किंचित् थोरो तासों किलकिंचित् कहिये अरु येभी कहतेहैं ऐसो कौन है सों सकुचत है अरु श्रम आलस्य तो घूंघट न करिबो मुख दुरायबो यह भय ायलेतिमें हर्ष ॥ ४० ॥

नायकको किलकिंचितहाव यथा ॥ सवैया।

ऐसिहैगोकुलकोकुलकोजिनदक्षिणनयनकियेअनुकूले।
खंजनसेमनरंजनकेशवहासविलासलतालगिझूले।

नायकाका बिलासहाव यथा ॥ कवित्त।

किलकअलकयुतिलकचिलकनिमिसभौंहनमेंविभ्रमनिभौनभे
ददीनोहै । लोचनिशोचनसकोचनिनचावतिहैदशनचमकहीन
कितचितकीनोहै। मंदहासमुखवासअनियासदासकरिलीनेकेशो
इजीययद्यपिप्रवीनोहै । मोहनकेतनमनमोहिवेकोमेरीभट्टूतेरोमुख
मुखहीअनंतव्रतलीनोहै ॥ ३७॥

उक्ति सखीकी नायका प्रति कि हेसखी! तेरे मुखने मोहिवेको बहुत व्रतलियेहैं कि
कदमके है अलक समेत तिलक चिलकन मिस हांइकर आलि कपाटमें ललाट अ
निये अरु भौंहनमें विभ्रम विलास जोहै ताने भवनघर बनायोहै भेद देकर अरुलोच
नेत्र तिनको शोचडार संकोचयुत नचावत रहत हैं अरु दशनकी जो चमक है तानं
चकित कीनोहै अरु मंद हँसते मुखकी जो सुवास है ताने केशव जो हरि हैं तासो दा
करलीनो है मोहनके तनमन मोहिवे निमित्त हेसखी! तेरे मुखने बहुत व्रतलियोहै य
सबक्रिया करत में आई ताते बिलासहाव अरु तिलक चिलक मिस बखानते कैत
वहुनत अलंकार ॥ ३७ ॥

नायकको बिलासहाव यथा ॥ कवित्त।

जिननिहारेतेनिहारवेकोनिहोरतकाहूननिहारेजिनकैसेहूनिह
रेहैं । सुरनरनागनवकन्यनकेप्राणपतिपतिदेवतानिहूंकेहियनि
हारेहैं । इहिविधिकेशोरायरावरेअशेषअंगउपमानउपजीविरंचि
चिहारेहैं। रूपमदमोचनमदनमदमोचनहैंतीयव्रतमोचनविलो
तिहारेहैं ॥ ३८॥

उक्ति सखीकी नायक प्रति कि, हे लाल!तिहारे लोचन जिन नहीं निहारे ते तौ नि
रवेके लिये निहोरत रहत हम कैसे निहारि हैं? अरु जिन काहूके नहीं निहारे अर्थ सं
छोड़ दयो तिन कैसे हूं कबहूं निहार पाये।अरु सुर देव नर मनुष्य तिनकी जे नव क
तारा मंदोदरी आदिक तिनके तौ प्राणनके पति हैं अरु पति देवता जे हैं तिनके हि
विहार करनहार हैं कहाइनहीके ध्यानते पतिव्रत निबह तथा विधिते हे केशवराय!रावरे अ
अंगहैं जा विधि नेत्रहैं तिनकी उपमा नहीं है आन विरंचि पचिके हारि रहे रूपको
मदहै ताके मोचनहारे अरु मदनके मदके मोचन हारे अरु तीयव्रत मोचनहारे ति
रे नेत्र हैं इहां जिन नहीं निहारे तिनको ललचावत एक क्रिया अरु जिन काहु न नि
तिनको दूसरो भी क्रिया पति देवतनके हीये विहार तीसरीक्रिया इत्यादिते बिलास

ो विलास है तामें निपुण परन्तु तीय मदमोचन जो कहे सो प्रथम पतिव्रतन के
ोछे तहां दोषकोई कहै सो नहीं काहेके इहाँ काकोक्ति अलंकार है का तुम्हारेसे नेत्र-
नके मधु घटावनहार तेतियान को मद मोचन हैं अर्थ मान मतिराखौ सब तीय आप-
हिते वश्यहैं अरु मोचन शब्द कैयो बारआयो ताते लाटानुप्रासभी है ॥ ३८ ॥

किलकिंचित् हाव लक्षण।

दोहा–श्रमअभिलाषसगर्वस्मित, क्रोधहरषभयभाव।
उपजतएकहिबारजहँ, तहँकिलकिंचितहाव ॥ ३९ ॥

श्रम अभिलाष गर्व स्मित कहिये मंदहास अरु क्रोध हर्ष भय इत्यादिक भाव जहां
एकबार उपजै तहां किलकिंचितहाव कहिये गर्वयुतभी पाठ है ॥ ३९ ॥

प्रियाजूको किलकिंचितहाव यथा ॥ सवैया।

कौनेरसैविहँसैलखिकौनहिंकापरकोपिकैभौंहचढ़ावै।
भूलतिलाजभटूकबहूँकबहूँमुखअंचलमेलिदुरावै।
कौनकिलेतबलायबलायत्योतेरिदशायहमोंहिंनभावै।
ऐसितौतूकबहूँनभईअबतोहिंदईजनिबाइलगावै ॥ ४० ॥

उक्ति सखीकी नायका प्रति कि, तेरी दशा कैसीहै आज कौने देख तेरे जे नेत्र ते
समय होतहैं अरु काको देखिकर बिहँसत है अरु कापै कोप कर कर भौंह चढ़ावतहैं
अरु हे बाल कौनकी बलाइ लेतहैं तेरी ये जो दशा है सो मोहिं नाहिं भावती ऐसी
तौ तू कबहूँ नहीं भईहै दई तोहिं यह बाय नलगावै यामें क्रम लगाइबेको प्रयोजन
नहीं परंतु श्रमआदि सतभाव होतहैं कौने रसैं यह अभिलाष १ बिहँसै कौने लखिया
में स्मित मंदहास २ भौंहें चढ़ावै क्रोध ३ भूलति लाज यामें गर्वश्रम ५ काहे गर्व तौ
यह ऐसो कौनहै जाको देख लजात अरु श्रम घूँघट न डारबो मुख दुराइबो भय बलाले
सहर्ष ॥प्र०–अरु कोई कहै यामें एक नायका अनेक को देखत तौ रसाभास होत तहां
उत्तर कि नायका अनेक नायकनकै देख अनेक भाव करतहै अरु अनेक भावते समुच्च-
य अलंकार ताते नायकाको जो मान है ताको छुटावत यह वस्तु अरु किल निश्चय है
जामें किंचित् थोरो तासों किलकिंचित् कहिये अरु येभी कहतेहैं ऐसो कौन है
तासों सकुचत है अरु श्रम आलस्य तो घूँघट न करिबो मुख दुरायबो यह भय
बलायलेतिमें हर्ष ॥ ४० ॥

नायकको किलकिंचितहाव यथा ॥ सवैया।

ऐसिहैगोकुलकोकुलकीजिनदक्षिणनयनकियेअनुकूले।
संजनसेमनरंजनकेशवहासविलासलतालगिझूले।

बोलैझुकैउझकैअनबोलैफिरैंबिझुकेसेहियेमहँफूले।
रूपभयेसबकेबिसऐसेंह्वैकान्हकहौरसकौनकेभूले।

उक्ति सखीकी नायकप्रति कि, हे लाल! ऐसी याकोकुलमें कौन कुलवारीहैं जाने आपके नैन दक्षिणा आपने अनुकूल बनायेहैं खंजन से जो मनरंजन करनहार सो हासविलासरूप लतासों लगि झूल रहेहैं हारविहारभी पाठहै जो बोलत कोई तब तौ रोष करत अरु नहीं बोलत तौ उझकतहैं अरु फिरत हैं बिझुकेसे हृदयमें फूले रूप सबके बिसरनको ह्वै गये किंवारूसबके बिषई भये सो कान्ह कहौ तौ कौनके रसमें तिहारे नयन भूलेहैं आनवोर नहीं देखत याते श्रम अरु हासबिलास लताते झूले यामें स्मित॥ झुकत बोले ते यामें क्रोध उझके अभिलाष बिझुके में भय फूले में हर्षरूप सबके बिस भये ते गर्व अरु कोई कहै कि नायक सों ऐसी बात काहे कहत अप्रयोजन तौ यहां नायक मानी है ये बातें स्वतः संभवीमें नायक मनाइबो यस्तु ताते समुच्चय अलंकारहै॥४१॥

विब्बोक हाव लक्षण ॥

दोहा—रूपप्रेमकेगर्वते, कपटअनादरहोय।
तहँउपजतबिब्बोकरत, यहजानैसबकोय ॥ ४२ ॥

रूपते और प्रेमके गर्वते जहाँ कपटवारो अनादर होइ तहां बिब्बोहाव कहावै वाको रस उपजतहै ॥ ४२ ॥

नायकाको बिब्बोक हाव यथा ॥ सवैया।

आवतजानकैसोयरहीहरुयेहरिबैठिनजातजगाई।
साहसकेउरमध्यधरोकरजागतिरोमकिरोचिजनाई॥
नीबिबिमोचितचौंकिउठीपहिचानझुकीबतियांकहिबाई।
बासरगाइगँवारचरावतआवतहैंनिशिसेजपराई ॥ ४३ ॥

उक्ति सखी की सखीसों। कि आज नायका नायकको आवत जानिकै सोय रही हरि हरुये बैठे जानिकै न जगाई अरु साहस करिकै उरमें हाथ धरो तब नायकाके उठिआये सो सात्विक जानि नीबी खोलन लगे सो जान आप चौंकि कर उठी चान झुकी का जानिकै रिसकरी वे भूले नहीं बतियां बाई कैसी कही जैसे बोलत कि बासरमें तौ गँवार गाय चरावत निशि में पराई ॥ सेज आवत ५ जो कोई व्यर्थ दूषणवारो प्रश्न करै कि पहिले तौ जानके सोई पाछे ५[illegible] पूर्वापर विरोध है सो नहीं काहे जानकर झुकीझूमबो प्रेमके गर्वते अरु कपट के दिनमें गाय चरावत हृदयमें प्रीति यह कि दिन हमें न वियोग चाही गवाँर पद ग्राम कहत सो अर्थ नहीं पावै काहे नायका कहत बरसर में गँवार

रावतहै गायको नाम गो गोनाम इन्द्रियदिनमें गवांर सुख करत सो तुम आन स्त्रीपास मे अरु यहां कहो विब्बोक में तौ कपट अनादरहैं अपराध नहीं है तौ यहां झुकनो ायकाको बेकारण क्रोध कैसे होय तानिमित्त नायक झूँठ अपराध लगायो अनुमान लंकार रीस उठै सात्विक जानो ॥ ४३ ॥

नायकाको विब्बोक यथा ॥ सवैया ॥

एकसमैइकगोपिसोंकेशवकैसहुहांसिकिबातकहीं ।
याकहँतातदईतजिजाहिकहाहमसोंरसरीतिनहीं ॥
कोप्रतिउत्तरदेइसखीदृगअंशुनकीअवलीउमहीं ।
उरलायलईअकुलायतऊअधिरातकलौंहिलकीनरहीं ॥ ४४ ॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति । एक समय एक गोपीसों नायक ने हांसीकी बात कही कि जाको पिताने तजिदई तासों हम सों कौन रस रीति है ? ताको प्रति उत्तर देवेकी कौन कहे नेत्रमें बहुत आँशु आये तब अकुलाय नायक उरसों लगाई परंतु आधीरात तक हिलकी न रही अरु कोई ऐसे भी कहत जाको तात तुम्हारेने तुमको दई का जो साय विवाही ताको तुम तजौ तौ ऐसे वचन न कहो चाहीसो नायक ने कह्यो यामें रस-भंग होत है अरु कोई कहत कि जाको दई जो यह निर्गुणी है ताको तुहें विवाही यहां एक वचन है अनादर को अरु हमको नदई आपको उत्तम कहत तौ यहां कप-टयुत नायकाको अनादर न निकरि है यामें विशेषोक्ति अलंकारहै अंक लगायबो करण है हिलकी रुकबेको सो नहीं भयो अरु तात शब्द दई या शब्दके संबंधते अविधा मूल अविधा लक्षण ॥ बहुत अर्थ करनहार जो शब्द सो आन के योग ते एक अर्थका नियम करै सो अविधा सों कहूं संयोगते कहूं वियोगते कहूंसंगते कहूँविरोधते कहूं अर्थते कहूं प्रसंगते कहूं आनशब्द के सायते कहूं चिह्नते कहूं समयते कहूं देशते इत्यादि औरहू व्यंग प्रसंग पाय होतहै जैसे लक्षण मुख्य षट् रीतिको है अरु फेर अस्सीरीति को होतहै निरूढी ८ उपादान १ श्वेत धाजी धावत श्वेत तौ निरूढ अरु वाजि धावत यह उप दान, उपादान जो परायो गुण गहै तो इहां अश्वग्रहण कीन्हों निरूढीलक्षण लक्षणा २ कलिंगसाहसी कलिंग निरूढी साहसने जो आपनअर्थ सो पुरुषको दियो यह लक्षण लक्षणा अरु निरूढी सारोपाउपादान ३ अश्व श्वेत धावैहैं निरूढी सारोपा उपादान ४ कलिंग पुरुषयुद्ध करेंहैं निरूढी उपादान लक्षण लक्षणा सारोपागौनी ५ ये तैल हेमंतमें सुखदहैं निरूढी साध्य वसना गौनी ६ तैलान हेमंतसुखद निरूढी लक्षित लक्षणा सारो पा गौनी ७ राजा गौडेंद्र कंटक सोधैहै निरूढी लक्षण लक्षणा साध्य वसाना गौनी ८ राजा कंटक सोधैहै यह आठ भेद तो निरूढीके अरु प्रयोजनवतीके यह उपादान १ कंता प्रविसत

लक्षित लक्षणा २ नदीमें घर सारोपाउपादान ३ एते कुंत प्रवेसेहें सारोपा लक्षित लक्षणा ४ आवलंघृत उपादान लक्षित लक्षणा सारोपा प्रयोजनवती ५ एते राजकुमार गच्छतहें उपादान लक्षित लक्षणा साध्यवसाना ६ राजकुमार गच्छेहें लक्षित लक्षणा सारोपा ७ गौर्वाहीक लक्षण लक्षणा साध्य वसाना ८ गौर्जल्पाति ते जे फल लक्षणके गूढ़ अगूढ़ व्यङ्ग कर सोरह होतहें ते धर्मी धर्म गति हैके ३२ अरु आठ विवक्षित मिलत सब चालीस होतहें तेपद वाक्य कर ८० भेद होतहें जैसे ध्वनि के भेद अविविक्षित के २ ते पद वाक्यते चार होत ४ पदते अर्थातर १ वाक्यते अर्थान्तर पदते अत्यन्त तिरस्कृत १ वाक्यते अत्यन्त तिरस्कृत १ ऐसे ४ अरु विविक्षित ६ पदते विविक्षित १ अरु वाक्य ते विविक्षित १ पदेकते विविक्षित १ अरु वर्ण विविक्षित १ वरण ते विविक्षित १ प्रबंध ते विविक्षित १ ऐसे ६ अरु शब्द शक्ति के २ शब्दते अलंकार अरु शब्दते वस्तुवाक्यते अलंकार १ अरु वाक्य ते वस्तु अरु सब अर्थ शक्तिके बारह १२ ते पदवाक्यते अरु प्रबंधते ३६ अरु उभय शक्ति की १तो सब मिलकर५१ ते एकते एक मिलायेते दो हजार छः सै एक२६०१ होतहें अरु संकर ३ रीतिको होतहे एक संशय १ अंगांगी१व्यजक१ अरु असंसृष्ट चार गुण करनेते सब दश हजार चार सै बारह होतहें १०४१२ ऐसेही नायिका धीरादि भेद ते ३ ज्येष्ठा कनिष्ठा ते ६ ते मध्या अरु प्रौढ़ाकर सब बारह होते अरु स्वकीया ३ मुग्धा १ ते प्रोषित पतिकादि ते गुनौ तब १०२८ सो उत्तम मध्यम अमधते ३०३०८४ ते दिव्यअदिव्य दिव्यादिव्य कर ११०५२ होतहें ॥ ४४ ॥

अथ विच्छित्तहाव लक्षण ॥

दोहा–भूषणभूषबकोजहां, होहिअनादरआन।
सोविच्छित्तविचारिये, केशवरायसुजान ॥ ४५॥

भूषण भूषिवेको अर्थ अलंकार पहिरिवे को जहां अनादर कहिये आदर न होय सो विच्छित्त कहावे ॥ ४५ ॥

नायिकाको विच्छित्तहाव। यथा ॥ सवैया।

तनआपनेभायेशृँगारनहींयेशृँङ्गारशृँङ्गारशृँगारैवृथाहीं।
व्रजभूषणनैननिभूखहेंजाकिसुतोपैशृँगारउतारेनजाहीं॥
सबहोतसुगंधनहींतोसुगंधसुगंधमेंजातिसुगंधवृथाहीं।
सखितोहितेंहेंसबभूषणभूषितभूषणतोतुवभूषितनाहीं॥ ४६ ॥

उक्ति सखीकी नायका प्रति तनु आपने भाये शृंगारनिको शृंगार जे शृंगार भाये हैंअर्थ नायकाकी भावत है ते शृंगार तू शृंगार तू शृंगार तू शृंगार करेन है ये शृंगार

शृंगार नहींहैं जे तू शृंगारै है ये तीवृयाहैं प्रथम तुक में अक्षर अर्थ इतनो है तामें
: प्रश्न करतहै कि नायक तौ शृंगार करत सखी रोकत तौ उलटो अर्थ लक्षणते
ो नायका भूषणअनादर चाहिये सो तौ पहिरत अरु सखी रोकत अरु लक्षणमें
खीकि भूषण भूषबेको अनादर अरु दूसरो प्रश्न यह कि दूसरी तुकमें ऐसे सखी
त कि तोपै शृंगार उतारे न जाहिं कहा ये तौ उतारे जात भूषण पर जिनकी ब्रज
ण को चाहहै ते न उतारे जाहिंगे सो यामें भूषण उतारे से लोगेहं ॥ ऊपर पहिरत
कही यह पूर्वपर अनमिल दोष लाग्यो उत्तर तहां ऐसो अर्थ कीजै सखी कहतहै
आपने भा तन आपने के भेभा कहिये शोभा जो है ये शृंगार शृंगार कहावत है
शृंगार शृंगार हैं अबजे शृंगार उतार धरेहैं तिनकी ओर देखि कहतहै नहीं हैं ये शृंगारशृं
अर्थ कि इन भूषणनको शृंगारही पद नहीं ये गहने हैं ग्रहण करियें हैं ग्रहण करिबे लाय-
हैं लोक रीतिके बलसों जोई करै शोभा इनमें लक्षण नहीं और तनमें जो भा(शोभाहै)
केवल शृङ्गारही है अरु ये शृङ्गार शृङ्गारही नहीं कहा शृंगार पदहू है अरु ये
े पद हैं याते ये तू उतार धरेसो भली करी कि उतारे न जायँगे जिनके भूषण व
हा चाह ब्रजभूषण के हैं यह अर्थ और स्तुति करतहै सबस्तु होत सुगन्ध सुगन्ध
लाये सों वह सुगन्ध जो है तामें तेरी सुभाय की सुगन्ध जात है कहा सब सुगन्ध-
ो तेरी भाइकी सुगन्ध मिलिकै उनको सुगन्ध करैहै और तांते भूषण आछे लगेहैं
भूषण ते आछी नहीं लागत ॥ यह अर्थ तौ सबन कीनो परंतु इनते अक्षर को
र्थ न भयो अरु भूषण को पहिले अनादर करत फेर आदर देत ताते ऐसो कहिये
जिनके तनमें भा शोभा नहीं है ते ये शृङ्गार शृङ्गारतो वृथा कहावैं शोभावान्
शृङ्गार भी नहीं सोहत ॥ सूर। सरको कहा अरगजालेपन मर्कट भूषण अंग। अरु
कैसी है कि ब्रजभूषण है नयननके भूषण अथवा तेरे अंग। ब्रजभूषण हरि तिनके
षणहैं तौ तौ वै शृङ्गार करने लायक भी नहीं हैं अर्थ अति हीन है सब जगत् सुगन्ध
सुगन्धवत् होत है अरु तेरो जो सुगन्ध है तामें जितनी सुगंध की जात है सो
पाव्हैंजात तामें हेसखि तोहिमें है सबभूषणन ब्रजनाथ भूषित ताते भू पृथ्वी ताको
ातू खनत है अर्थ मानकरै है सो तू भूषितनाहीं होत अर्थ मान छोड़ि नायक संग
हार कर ॥ इहां सुगंधकी अधिकाई वस्तु ते पंचम प्रतीप अलंकार है जहां उपमान
यर्थ होइ सो पंचम प्रतीप इहां गहना सुगन्ध व्यर्थ कीनो अरु सहज शृंगार शृंगा-
बो कविनिबद्ध तामें सखीकी उक्ति ताते कवि निबद्ध बक्ताकी उक्तिमें वस्तुमें
लंकार अरु यामें जो हेतु अलंकार लिखो सो कारण कारज संगमें नहीं है काहे
ान नहीं छांड़ो ॥ ५६ ॥

नायकको विच्छिन्नहाव ॥ यथा–सवैया ।

पान न खायन पाग रची पलटैपटचित्तकहांधरिकै ।
कंठसिरीवनमालमनोहरहारउतारिधरेअरिकै ॥
चंदनचित्रनिलोपिसुलोचनलोकविलोकनिसोंलरिकै ।
अंगसुभाइसुवासप्रकाशितलोपिहौकेशवक्योंकरिकै ॥ ४७॥

उक्ति नायकाकी सापराध नायकप्रति कि तुम जो पान न खाये पाग न बांधी औ पलटौ कंठी बनमाल पुष्पहार उतारिधरे अरु चंदन चित्र लोप लोचन लीकसोंलरे इते अच्छी करी चंदनचित्र कपोलनि लोपि सुलोचन अंजनसोंभरिकै यहभी पाठहै सवभू षणनको निरादर कीन्हों पै गोजा आपके अंगकी स्वाभाविकसुवास है सो कैसे लोपी जायँगे व्यंगते यह जनावत यामें अनेकस्वेदकी वास है इहां स्वतः संभवै है नायक सुवासते नायक अपराधवस्तु ते परसंख्या अलंकार जानियें "परसंख्या इकथल बरजि दूजे थल ठहराइ" सो इहां सब बातमें नायक अपराध बरजि सुवासमें ठहराये अरु याको व्यर्थापत्ति कोई कहैहोत सो नहीं, काहे! यामें एकको जीतिं एकको जित चाहिये ॥ ४७ ॥

अथमोट्टायितहाव लक्षण ।

दोहा–हेलालीलाकरिजहां, प्रकटतसात्विकभाव ।
बुधिबलरोकतसोहिये, सोमोट्टायितहाव ॥ ४८॥

हेला कहिये लाजको बिसारिबो अरु लीला कहिये वेष बनायबो यह लीलहैल है जहां सात्विकभाव उपजै ताको बुद्धिबलते रोकै अर्थ काहू बहाने ते छिपावै ताको नाम मोट्टायित है रोकत सोभी यहभी पाठ है ॥ ४८ ॥

नायकाको मोट्टायितहाव ॥ यथा–सवैया ।

खेलतहैंहरिबागेबनेजहांवैठितियारतिते अतिलोनी ।
केशवकैसहुपीठिमेंदीठिपरीकुचकुंकुमकीरुचिरोनी ॥
मातुसमीपदुराइभलेजिनिसात्विकभावनकीगतिहोनी ।
धूरकपूरकिपूरिविलोचनसूंघिसरोरुहओढ़िउढ़ोनी ॥ ५० ॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति । किआज हे सखी हरिके बागे में राधाने आपने कुचके चिह्न देखे जो पूर्व आलिंगन कीन्हों रहे किंवा नायकाने पाछे ते नायककी पीठको आलिंगन कियोरहो केसरि अंगियाकी लगीही सो आपनो चिह्न देखि नायककी पीठमें नायकाको सात्विक उपजो ताको का नीकी रीतिते छिपायो कि कपूरतेतो नेत्र

नको आंशू सरोरुहने कंज अरु वैवर्ण ओढ़नी ते रोमांच छिपाये यामेंभी नायकाकी असक्तता स्वतः संभवीते वस्तु ताते युक्ति अलंकार यहहै युक्ति कीनों क्रियाकर्म छिपायो जाय सो यामें जो सात्विक भयो सो आनन क्रियाते छिपायो अरु या कवित्तको तिलक हमारे शिष्य नारायणदास कविने कविप्रिया के तिलक में पूर्व किरयोहै॥५०॥

नायकाको मोट्टायितहाव ॥ यथा-सवैया।

भोजनकेवृषभानुसभामहँवैठेहैंनंदसदासुखकारी।
गोपधनेवलवीरविराजतखातवनाइविरींगिरिधारी॥
राधिकाझांकिझरोखनह्वैकविकेशवरीझिगिरेसुविहारी।
शोरभयोसकुचेसमुझेहरवाहिकह्योहरिलागिसुपारी॥ ५१॥

उक्ति अलंकार वस्तु पूर्ववत् जो व्याजोक्ति छिप्यो सो नहीं हो काहे? यामें कहिकर दुराया ताते छेकापह्नुति जानियें "छेका पह्नुति युक्तिकर, परसों बात दुराइ" अरु तीसरी तुकको ऐसो भी पाठ है॥ राधिका झांकि झरोखेहै झापसी लागिगिरे सुरझा-यबिहारी॥ ५१॥

अथ कुट्टमितहाव लक्षण।

दोहा-केलिकलहमेंशोभियेकेलिकलहपटरूप।
उपजतहेतहँकुट्टमितहावकहतकविभूप॥ ५२॥

केलिरूपी कलहमें जहांकेलि कलह पटरूप रहै॥ अर्थयह कि प्रथम तौ केलि केलिवत् रहै॥ पुनि वही केलिशोभा देहि तौ जानो वह कलह झूंठो जहां केलिको कलह झूंठो लगे कहा वह नहिं करिबेकी वातझूठी कपट को वस्तु है जेबातें केलि अनकरबेकीहैं सो ऊपर कीहैं मनमें केलि भाव है नहीं नहीं कहि भाजिबो॥ ५२॥

प्रियाजूको कुट्टमितहाव॥ यथा-सवैया।

पहिलेहठिरूठिचलीउठिपीठिदैमैंचितईसखितैंनलखीरी।
पुनिधाइधरीहरिजूकिभुजानतैंछूटिबेकोवहुभांतिझखीरी॥
गहिकैकुचपीडनदंतनखक्षतवैरिनिकीमर्य्यादनखीरी।
पुनिताहिकोपानखवावतहैंउलटीकछुप्रीतिकिरीतिसखीरी५३।

उक्ति सखीकी सखी प्रति॥ कि हे सखि पहिले तौ हठरूठि चली में देखतरही तू नहीं यामें वाके भगवेकी नायक के पकरिबे की शीघ्रता सूचित करत कैसे तू एक स्थान ही देखत रही परंतु तू न देख्यो अरु जब धरीतब छूटिबेकी बहुभांति खिसानी ताहि पकरिकर कुच नखक्षतसों पीड़ अरु दंतनसों भी बहुत पीडादई यह कलह सो

फेर कीन्हों अब ताको पान खवावत हैं ताते प्रीति की रीति उलटीहै इहां स्वतः संभवीते नायका को डारिबो अरु नायका को केलतामें नायका कपट वस्तुते पंचम विभावना अलंकार जानियें काहे विरोधते कारज है किलक अलिक कवित्त औरको बनायोहै ताते नाहीं लिख्यो ॥ ५३ ॥

नायकको कुट्टमितहाव ॥ यथा–सवैया।

देखतहीजिहिंमौनगहीअरुमौनतजेकटुवोलउचारे।
सौंहैंकियेहुनसौंहैंकियोमतुहारकरेहुनसूधेनिहारे॥
हाहाकैहारिरहेमनमोहन पाँइपरेजिन्हलातनिमारे।
मण्डतुहैमुहताहिकोअंकलै हैकछुप्रेमकेपाठनिन्यारे ॥ ५४॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति ॥ आजु जब हरि आये तब प्रथमराधा मौनभई अरु जब बोली तौ कटु अरु उन शपथ दई तौभी मनु सौंहैं नहीं किया अरु मनुहार करेहूं सूधे न निहारी अरु हाहा करिके हारगये जब पांइपरे तब लातनिमारे ताके अंकमें मुँह धरि करि अब मुख मांड़े हैं ताते प्रेम के पाठ न्यारेहैं कहिबे योग नहीं यामें जो कोई प्रश्न करतहैं नायकको कुट्टमित हाव नहीं होत काहेनायकाकोमानकरो नायक कपट राखि अनचाहियो कह्यो देखतही कटु बोल कहे अरु मौन गही तौ नायकाका हाव है नायक को नहीं केलिकलह होत अरु अन चाहियो दिखवै रतिको तौर न समुझे तहां उत्तर करतहैं कि नायकको गुरुमान है नायका लोक लीक उल्लंघन कर नायकको अनादर कियो ताते यह गुरु मान उपजो सो आगे मान वर्णन में कहैंगे लोक लीक जहां कटु क्रिया कहे कटु बैन उपजत है गुरु मानतहैं प्रीतमके उर ऐन सो नायका नें मौन गही अरु कटु बचन कहे अरु नायका सौंहैं करी पर आप सौंहैं न भये मनुहार करे पर भी सूधे नहीं हेरे तब नायकाकी सखी उत्तर देत दोतुकमें नायककी सखीके बचन सुनिकै कहा पांइ परे मान नहीं रहत इन तौ निपट अतिकरी लातनमारे यही लोक लीक उल्लंघन तब प्रिय की सखी कही जो ऐसो जाप कियों होइ सो कबहूं न बोलै येतो मेरे नैहैं मुँह तो ताहीके अंकमें लेकै तब नायक की सखी कही प्रेमके पाठ न्यारेहैं रसाभास हो जात अरु महा कलंशते अर्थहीन ॥ यामें केशवको अभिप्राय यह केलिकीकलामें कटुरूप केलि मांहे तो नायकामें नख रद कर नायकपीड़ा दई अरु नायकमें नायका पीड़ा दई का लातनमारे नायका नहीं नहीं करत रहीनायक अन्यनायका चिह्न बनाइल्याये झूठे बरदपुत तब तौ नायका पाछे समझ मुँह अंकमें धरो इहां नायकको पांइपरबो नायकाके चरण प्रहार यह कवितिबद्ध है तामें वक्ता सखी होनिते वस्तु अलंकार पूर्वरूप अरु कहूं उत्तरालंकार भी वदत है ॥ ५५ ॥

अथ बोधहाव लक्षण।

दोहा—गूढ़भावकेबोधजहं, केशवसमुझतकोइ।
तासोंबोधकहावयों, कहतसयानेलोइ ॥ ५५ ॥

गूढ़भाव को बोध काहू और समुझै ॥ ५५ ॥

नायकाको बोधहाव ॥ यथा—सवैया।

बैठिहुतीवृपभानुकुमारिसखीनकिमण्डलिमण्डिप्रवीनी।
लैकुम्हिलानोसोकंज परीइकपाँयनआइगुवारिनवीनी ॥
चंदनसोंछिरकीवहवाकहँपानदयेकरुणारसभीनी।
चंदनचित्रकपोलनलोपिकै अंजनआंजिविदाकरिदीनी ॥ ५६ ॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति ॥ कि हेसखी! आजु राधा सखिन में बैठीरही तहां एकसखी कुम्हिलानो सो कमल लै पाईं न परी ताको चंदन ते छिरक करुणा तापै कर पान दये अरु चंदनको चित्र मिटाइ आंजनआंज बिदा करदई यामें कुम्हिलाने कंजते वाने नाइकको दशा सूचित करी कि तुम बिन मुरझातहें अरु याने चंदन छिरको हम शीतलकरिहैं अरु चंदनको चित्र कपोलको लोपो हम चंद अस्त भयेआइहें फेर चित्र नवीन बनाइदयो ब्रजचंद पै अंजन आंजत हमारे दगनमें हैं प्रश्न यामें कोई कहै फेर चित्र कहांते निकसे? तौ वाको चंदन लगायो अंजन आंज्यो तौ शृंगार कीन्हों तब का-चित्र मिटाइदयो सब सखीजानेंगी नहीं याते चित्रभी नवानकीनो अरुयहभी जताईकि तुम्हारे श्यामरूप हमरे नेत्रनमें बसतुहै। प्र०- इहांदोउनको बोधभयो प्रियाको बोध कैसे उत्तर—प्रथम प्रियाकोहै याते प्रियाको बोध जानियें ऐसो जो कोई कहै सो नहींहोत काहे तहां एक बात रहिगई कि सखीन काहे न जानी सखी तौ प्रवीनहैं जो जाने तौ मूर्खसखी चाहिये तहां कविको यह आशय कि वाने कमल दै पाइँपरे हम आप के पाईं पूजतहै तब राधा सब सिंगारकरे हमहू तिहारो पूजन करिहैं सखीनजानी यह नवीन मत है ताते प्रीति दोहुन ने बढाई इहां चंदनमें चंद अंजनमें तम कविनिबद्ध है तामें सूक्ष्मालंकार ते नायक सखीको बोध करबो यह वस्तुहै ॥ सूक्षमपर आशयलखे करै क्रिया कछुभाइ॥५६

नायकको बोधहाव ॥ यथा—सवैया।

सखिमोहनगोपसभामहँगोविंदबैठहुतेद्युतिकोधरिकै।
जनुकेशवपूरणचन्दलसैचितचोरचकोरनकोहरिकै ॥
तिनकोउलटोकरिआनदियोकिहुँनीरजनीरनयेभरिकै।
कहिकाहेतैनेकुनिहारमनोहरिफेरदियोकलिकाकरिकै ॥ ५७ ॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति॥ कि गोप सभामें जहां हरि रहे चंद्रवत् आप चकोरवत् सब चित्त करें तहां काहू सखाने नयो जल भरि कमल दयो सो उनने कली करिफेरि दयो यामें गोप गण यह जानी इन फूल नयो जलभरि दीन्हों बरषाऋतु सूचितकरी का है बरषामें गोप बहुत सुखी रहत अरु उन कली कर दई हम मुदित भये अरु बोधक यह कि तुम बिन यह रोवत तब इन कलिका करी हम रात्रिमें आइहैं नये जल को आशयपर अब पावस आई मुलाकात कम हुइहै यमुना बढ़ंजेहैं किंवा नम्रता सों कह्या ल्याई शिर नीचो करिकैं नेक निहारिकै कली करि दयो याको यह आशय नायकने आपनी प्रीति जनाई कमल देखिकै कि तुम्हारे नेत्र कमल हमारे नेत्रमें बसतेहैं अरु देख रहने ते आसक्तता सूचित करी बस्तु अलंकार सूक्ष्म पूर्ववत् "सखि सोहत गोप सभा मैं गोविंद" भी पाठ है॥ ५७॥

दोहा–राधाराधारमणके, कहेयथाविधिहाव।
ढिठईकेशवदासकी,क्षमियोकविकविराव॥ ५८॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायां
राधाकृष्णहावभाववर्णनंनामषष्ठः प्रभावः॥ ६॥

राधाके अरु राधारमण कहें श्रीकृष्ण चंद्रके कहे नाम वरणन करे यथा विधि हावको सो ढिठाई हमारीहै कविनके रावक्षमा करियो॥ ५८॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराज श्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञाभिगामि ललितपुरानिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण विरचिता यां रसिकप्रियायां भूषणेसुखविलासिकानामटीकायां राधाकृष्णहावभाव- वर्णनं नाम षष्ठः प्रभावः॥ ६॥

अथ अष्टनायका वर्णन।

दोहा–ये सबजितननीनायका,वरणीमतिअनुसार।
केशवराइबखानिये,तेसबआठप्रकार॥ १॥

ये सब नायका जोपूर्व वर्णन कर आये ते सब आठ प्रकारकी होतीहैं॥ १॥

दोहा–स्वाधिनपतिकाउत्कला,वासकशय्यानाम।
अभिसंधिताबखानिये,औरखंडितावाम॥ २॥

स्वाधीन पतिका १ उत्कला कहिये उत्कंठिता २ वासकशय्या नामा ३ अभिसंधिता नाम कलहांतरिता ४ और खंडिता ५ वाम कहिये नायका॥ २॥

।–केशवप्रोषितप्रेयसी,लब्धाविप्रसुजान।
अष्टनायकायेसबे,अभिसारिकाबखान॥ ३॥

प्रोषित प्रेयसी कहिये प्रोषित पतिका ६ औरविप्रलब्धा ७ येही अष्टनायका अभिसारिका सहित ८ होतीहैं और प्रवरयत्पति का अरु आगत पतिका ये दोई प्रोषितपतिका में अंतर भूत होतीहैं ॥ ३ ॥

स्वाधीनपतिका लक्षण।

दोहा-केशवजाकेगुणवँध्यो,सदारहैपतिसंग।
स्वाधिनपतिकातासुको,वरणतप्रेमप्रसंग ॥ ४ ॥

जाको कहिये जो नायकाके गुणमें बंधिकै कहिये वश होइकैं सदा सर्वकाल पति संगमें रहै सो स्वाधीनपतिका है तेहिके प्रेम प्रसंग को बरणतहों ॥ ४ ॥

प्रच्छन्नस्वाधीनपतिका ॥ यथा-सवैया।

केशवजीवनजोव्रजकोअरुजीवहुतेअतिवापहिभावै।
जापरदेवअदेवकुमारिनिवारतमाइनवारलगावै ॥
ताहिरिपैतूअहीरकिवेटीमहाउरपाइंझवाँइदिवावै।
मैंतोवचीअवहासिनहींअसऔरजुदेखैसोऊतरुआवै ॥ ५ ॥

उक्ति सखीकी नायकाप्रति ॥ कि ऐसे जो हरिहैं व्रजजीवन अरु जीवतें पिताको पियारो इहां कोई कहत कि पिताको पियारो पाछे कहो व्रज प्रथम दोष होइ है जो व्रजको प्रथमसों आपने बापके प्रीय तहां ऐसो अर्थ अति बाप सबको बाप ब्रह्मा ताको जो भावै है तातहिं भावै भी पाठहै अरु देव अदेव कुमारी जापै निवारत रति जो प्रीति ताको निवाह मा लक्ष्मी अरु सूर्यवार बहुलगावै है ऐसे हरिपै तू अहीरपुत्री होकै पांइ झवाँवत महाउर लगवावत है मैंतो भली बची हांसीतें परंतु आनदेखिहै अरु तुमते बूझिहैं तौ तुमको का उत्तर आइ है अर्थ न आइ है इहांका आइ है जहां काकोक्तिअलंकार- अरु कोई कहैकि प्रेम गर्वितासों स्वाधीनपतिकासों कहाभेद वौ सखी की उक्तितें स्वाधान पतिका नायकाकी उक्तिते प्रेमगर्विता अरु जबजब गर्वकी रीतितें कहैं तौ गर्विता अरु आधीन मात्रमें स्वाधीनपतिका "मैं तो चली अब हांसि नहीं सखी" यहभी पाठहै॥५॥

प्रकाश स्वाधीनपतिका ॥ यथा-कवित्त।

चोलिकेसोपानतोहिंकरतसमारवोईमुकरज्योंतोहिंमाहँमूरति समानीहै। तैंहि त्रियदेवतापैपायोपतिकेशोराइपतनीवहुतपतिदेवतावखानीहै॥ तेरेमनोरथरथभागीरथपाछैंपाछैंडोलतगुपालमेरोगंगकैसोपानीहै। ऐसीवातकौनजुनमानीसुनमेरीरानीउनकेतौतेरीबानीवेदकैसीवानी है ॥ ६ ॥

उक्ति बहिरंग सखी की नायका प्रति ॥ नायका आन सखीन की बात सुन सुन कि सखी सों कही कि नायकको तू मरजी ऐसे आधीन न रहें यामें हमारी हांसी है तिहे सो सुन सखी जवाब देतहै कि चोलीके सोपान तो सम्हारत अरु मुकुर सम तोमें बसत अरु आप त्रिय देवता हैं जैसे त्रियपति देवता बहुत बखानत कहे तेरो जो मनोरथ रूपी रथ है सोई भगीरथ रथ है ताके पथ पीछे गंगासी फिरत है परंतु ऐसी कौन बात है जो न मानि है परंतु जो बात न मानिहै उनके तेरी वाणी वेदवाणीसीहै अरु यामें कोई कहै कि पूर्वापर विरोधहोतहै कि वेदवाणीसी मान फेर न मानी है तहां कोई कहै कि वेद न मानो तो वेदइष्टीनाहीं मानत जो मैं कहोंगी न मानिहै यामें चोली के थानमें उपमा भगीरथ रथमें रूपक वेदवाणीमें लुप्ताको संकरहै ॥ ६ ॥

अथ उक्ता लक्षण ।

दोहा–कौनहुंहेतनआइयो, प्रीतमजाकेधाम।
ताकोशोचतिशोचहिय, केशवउक्तावाम ॥ ७ ॥

कोई कारण ते प्रीतम घरमें न आवे ताके शाचते जो शोचित होय सो उक्त नायका है ॥ ७ ॥

अथ उक्ती प्रच्छन्न ॥ यथा–कवित्त।

कैधोंगृहकाजकैनछूटतसखासमाजकैधोंकछुआजव्रतवासरविभातातैं। दीन्होंतैंनशोधकिधौंकाहूसोंभयोविरोधउपजोप्रबोधकिधौं उरअवदाततैं॥सुखमैंनदेहकिधौंमोहीसोंकपटनेहकैधोंदेखिमेहअति डरेअधराततैं । किधौंमेरीप्रीतिकीप्रतीतिलेतकेशवराइअजहूंनआयेमतसूधोकौनबाततैं ॥ ८ ॥

उक्ति नायका की सखीप्रति ॥ गृहकार्यते न आये कि सखा समाज नहीं छोड़ी गयो कि कोई व्रतको दिनहै कि काहूते विरोध भयो कि कोई ज्ञान बोध भयो उरमें कि देहसुखमें नहीं कि मोते कपट स्नेह करि पत्नी के गये कि वर्षाते डरे कि मेरी प्रीतिकी प्रतीतिलेत अबैलों न आये मन कौन बात में सूधो भयो जो मोहिं त्यागे मनसों कहत याते प्रच्छन्न दीन्हों तैं न शोध यातें अंतरंग सखी जानीजात अथवा दिनतें आज शोध नहीं संदेह अलंकार ॥ ८ ॥

प्रकाश उक्ता ॥ यथा–सवैया ।

सुधिभूलिगईभुलयेकिधौंकाहुकिभूलेइडोलतबाटनपाई ।
भीतभयेकिधौंकेशवकाहुसोंभेंटभईकोईभामिनिभाई ॥

आवतहैमगआइगयोकिधोंआवहिंगेसजनीसुखदाई।
आयेननन्दकुमारविचारिसुकौनविचारअबारलगाई ॥ ९ ॥

अर्थ सुगम। सजनी सो सुखदाई खुशामद करि ताते बहिरंग है सन्देहालंकार पूर्ववत् ॥ ९ ॥

वासकशय्या लक्षण ॥

दोहा—वासकशय्याहोइसो, कहिकेशवसविलास ॥
चितैरहैगृहद्वारत्यों, पियआवनकीआस ॥ १० ॥

सो वासकशय्याहोइहै कहिकेशव विलासविलासयुक्तहोयके गृहके द्वारते पिय आवन की आश लगाये चितवत रहै। "चितवै रतिगृह द्वार" भी पाठहै ॥ १० ॥

प्रच्छन्नवासकशय्या ॥ कवित्त।

चंदनविटपवपुकोमलअमलदलकलितललितलतालपटीलवंग की। केशोदासतामेंदुरीदीपकीशिखासीदौरिदुरावतनीलवासद्युति अंगअंगकी ॥ पौनपानपक्षीपशुशब्दजिततितहोततिततितचौंकि चौंकिचाहैचोपसंगकी। नंदलालआगमविलोकेकुंजजालबाललीन्हीं गतितेहांकालपंजरपतंगकी ॥ ११ ॥

उक्ति अन्तरंग सखीप्रति ॥ सखी कै आजु नायका कुंजमें यह रीतिते है चंदन के वृक्ष ताको वपुशरीर तामें जैहै कोमल अरु अमल दल पत्र तासों लिपटरही है लता लवंग की तामें दुरीहै दीपकी शिखासी दौर आसार सो नील वसन दुरावतहै द्युति दरशत नीलवास भी पाठहै कि पवनते अरु पक्षिनते पशु ते शब्द जित तित होतहै तित तित चाहभर देखत है काहे चोप लागीहै जाको प्रीतम संग की सो नंद-लाल को आगमन विलोकै है कुंजनके जालमें बाला तासमय पिंजरे के पक्षी की गति हैरही है का इतते उतजात उतते इत यहां दीपउपमान नायका उपमेयसी वाचक दुरत-नाहीं धरमते पूरण उपमाजानि ये कि वा चन्दनकी कुंजनील वासमें अंग दुरायबो जातिवर्णन है ताते जात्यलंकार भीहै ॥ ११ ॥

प्रकाश वासकशय्या सवैया।

भापतहैसुखबैनसखीसहुलासहियेअभिलाषनजोहै।
कोमलहासनिनैनविलासनिअंगसुवासनिकेमनमोहै ॥
मूरतिवंतकिधौंतुलसीतुलसीवनमेंरतिमूरतिकोहै।
कुंजविराजतिगोपवधूकमलाजनुकुंजकुटीमहँसोहै ॥ १२ ॥

देह जरतहै तौजो में उलटी न्याइकरी वे अपराध रिसाई मनावत न माने ताके निमित्तसबविधि उलटी ह्वैगई जातेसुखहोतरहोताहितेदुख होन लागो विरोध कारजते पांचयों विभावनालंकार ॥ १५ ॥

खण्डितालक्षण।

दोहा—आवनकहिआवैनहीं,आवैप्रीतमप्रात।
ताकेघरसोखंडिता,कहैसुवहुविधिवात ॥ १६ ॥

यामें प्रश्न प्रात आयेते यह तौ जानी रातऔर ठौर रहेहें परस्त्री पासरहे यह कैसे जानिये रहिवेकोठौर उत्सवादिअनेकहें और ग्रंथनहूं में कह्यो पर स्त्री चिह्नधर प्रातगेह आवैयह शंकाकारी कोई उत्तर कीन्ह्यो केआनको प्रीतम होइके आवे सो यामें प्रीतम आप न आनकोनहूं पदते नाहीं निकसत अरु दूसरे जो प्रात आवे तौ खंडिता होइ कदाचित् अर्द्ध रात मेंआवैतौ नहोइ ताते याकोउत्तर यहकि आवनकी बेराकेप्रातआवै का वह बेरामें न आवे अरु ताके घरकहेते आन घरते आवै अरुसो वहुविधि बातकहै नाना तरहके वचन सुनावै अरु कोईकहै कि बाततें नाहीं चिह्न सूचित तौ सुखवारी बात एक होतदुखवारीहूएकहोत यामें सबतरहकी कहै दुखवारी सुखमें दुखवारी आदर अनादरवारी"तासोंकहिये खंडिता कहै रोषसों बात" भी पाठहै ॥ १६ ॥

मच्छन्न खण्डिता ॥ यथा—कवित्त।

आंखिनजोसूझतनकाननतैंसुनियतकेशोराइजैसेतुमलोकनमेंगायेहौ। वंशकीविसारीसुधिकाकज्योंचुनतफिरैजूठेसींठेसीथशठइठढीठठायेहौ॥दूरिदूरिकरतहूंदौरिदौरिगहोपांइजानौनाकुठौरठौरजानिजियपायेहौ। काकोघरघालिवेकोवसेकहाँघनश्यामघूघूज्योंघुसनप्रातमेरेगृहआयेहौ ॥ १७ ॥

उक्ति नायकाकी नायकप्रति ॥ तौखंडिता तीनिप्रकारकी होतिहै उत्तमा मध्यमा अधमा तहां अधमा नायका कहत कि ऐसे आंखते सूझत तैसे कानमते भी नाहीं सुनिपरत जैसे तुम लोकनमें गायेहै अरु लोकलाज दुरैबेमें गायेहौ तुम आपनवंशकीसुधि विसारिकारि काककी रीतिते जूंठेसीय चुनत फिरतहौ शठकी ईठ चेष्टा ढीठ होइ करीहै हम दूरकरत तुम दौरि पांइ परत ठौर कुठौर नाहीं जानत कौनको घर घालिवेको रात बसे प्रात घूघू की रीतिते मेरे घरघुसन आये इहां उपमा अलंकार जानिये काक घूघूमें नायका एकांत ते प्रच्छन्न ॥ १७ ॥

प्रकाश खण्डिता ॥ यथा—सवैया।

आजुकछूअंखियाँहारैऔरसीमानोमहावरमाहँरँगीहैं।

मेरीसौंमोसहुँमानहुवेगिहियेरसरोपकीरीतिंजगींहैं ॥
मोहनमोहीसीलागतिमोहिइतेपरमोहनमोहिलगींहैं।
मेरेवियोगकेतेजतकिधौंकेशवकाहूकेप्रेमपगींहैं ॥ १८ ॥

उक्ति नायकाकी नायक प्रति ॥ केहेलाल आजु आपुकी आंखें औरसीभईहैं मानो महावर माहँ रँगीहैं हमारीसौं हमारी सों मानहुं वेगि शीघ्र हियेमें रस अरु रोपकी रीति में जगीहैं अरु मोहनी में मोहीसी मोहिं लागतीहैं तथापि मोहन हेमोहन मोकों लगै हैंसो ये मेरे वियोग के तेजमें तपरहीहैं कि आनके प्रेम में पग रहींहैं यामें कोई प्रश्न करै कि जानत तौ है कि पर घर जागे है फेर ऐसे वचन काहे कहत संदेह करिकै कि रसरोप की रीति रँगीहैं अरु मोहूं मोहन लगी है यह वचन खंडिता क्या कहै ताको काहूने उत्तर कीन्हों कि प्रकाश खंडिता है सयसखिन के सामुहें आपनो प्रेम न्यून नहीं करत अरु बहुरि दूसरी प्रश्नकरिकै असाधारण धर्म कहिते कह्यो तासें यहउत्तरकीन्हों कि अरुणाई नेत्रनकी देखि चंदन पंकज वंदन की जाहिरहै सो नाहिं कहीं महावर कहीं याते रति सूचित कराई तहां ऐसो न कहो चाही याको उत्तर यहै कि नायका प्रौढ़ाहै सो सर्व बात जुगति के साथ कहैहै कि हे हरि आजु आँखें औ हेनितकी नहीं का परासक्तिहें मानो महा श्रेष्ठ रंगते रँगीहैं अर्थ कुश्चित ते रंगी मोसे तौ मेरी सोंह करत अरु मानो तुम हृदय में रोषरस की रीति ते जगी हैं अर्थ मुमसे नेह हृदय कपट मोहन मोह नहीं है मो मेरेही ऐसी मोको लागती हैंजैसो मेरो दुखित हैसी ये दुखितहैं इतनेईपै मोहन मोकोननवेंके मारबे के मोह में लागी हैं अपराध भरीलामुहै होती हैंसो मेरे वियोग दीबे के तेज में तचीकि आनके प्रेममें पगी हैं यामें स्वतः संभवीमें संदेहालंकारतें नायक अपराध वस्तुताते संलक्ष क्रमधुनि जानिये ॥ १८ ॥

प्रोषितपतिका लक्षण।

दोहा–जाकोप्रीतमदेअवधि, गयोकौनहूंकाज।
ताकोप्रोपितप्रेयसी, कहिवर्णतकविराज ॥ १९ ॥

जाको प्रीतम अवध देकरिकै काहू कार्य निमित्त जाय ताको प्रोषितप्रेयसी कहिये ॥ १९ ॥

प्रच्छन्न प्रोषितपतिका ॥ यथा–सवैया।

केशवकेसहुँपूरवपुण्यमिल्योमनभावतोभागभरयोरी।
जानकोमाइकदाभयोकैसेहुँआविकोआविकयोसढरयोरी ॥

ताकहँतूनअज्योँहँसिबोलैजऊँमेरोमोहनपाइँपरचोरी ।
काठहुतेहठतेरोकठोरइतैंविरहानलहूनजरचोरी ॥ २० ॥

यामें कोई कहै कि पति विदेश में चाहिये अरु यहां सामुहे बतावत तो प्रोषित पतिका के लक्षण में नहीं मिलैहै तहां ऐसो अर्थ करत कि वह दिन जादिन पति आवन कहिगयो सो दिन आयो तब सखी कहति है कि कैसहूं कौनहूं पुण्य ते यह दिन भाग भरोपायो को जानै माईकहा कैसहूं अवधि को जो अधिक दूरि दिन रहो सो पायो अरु अधिक कछु लगि गयो तौ कहाभयो तेहि दिनको तू हँसिनाहीं बोलत है जऊँ मेरोमोहन पाइँपरोका मोहन मोसों कहिकर गये कि याको खुशी राखबी ताके निमित्त मेरे पाँयन परे सो काठ तें तेरो हठ कठिनहै कियेते विरहानल में न जरो वह दिन आयो आजु हँस्यो बोल्योचाहिये यह अर्थ जो कोई कहै तहां दूसरो कहत कि यह अर्थ अच्छो नहीं बनत काहे मोहन मेरे पाँइ परो यह वर्त्तमान है तब उनकही सखी-कहतहै मेरोमोह तेरे नाहिं जो तू मेरी बात नहीं मानत पाँइ परोरी तेरे पाईं परतहौं तहां और कोई कहै कि या अर्थ मेंतो तुकांत बिगरिगयो परोरी तबजरोरी चाहिये तुकांत परचोरी है तहां उन कही मोसों मोहन दिनको विशेषण है जो दिन कैसो है मेरो मोह तहै सो तेरे पाईं परचो है जैसे ऊपर दिनही के विशेषणहैं मन भावतो भाग भरचो तेरो मन भावतौ दिनतेरे भाग भरो दिन आयो है और यह अचरज है मोको यह दिन मोहतहै तेरे मनको नाहीं मोहत याते यह व्यंग्यकहो चाहिये कि तोको तो महा-मोहन है जाइ सो सखी कहत है जो दिन आइबोकठिन रहो सोदिन आयो जैसे कैसे पांइपरचो पाइलियो अथवा पाइ परचोरी परचो पायो जैसे कोई कहत हम यह वस्तुपरी पाई सखी अंतरंग है याने अपनो मोहन दिन बतायो याते प्रच्छन्न अरु यामें केशव को अभिप्राय यह कि कैसहूं पूरबको जो पुण्यहै सोमिलो कैसोहै वह पुण्यभाग भरोहै या नहीं जानीजात कि पुण्य तौ प्राप्तभयो परन्तु अवध को आधे दिन टरे ताकहँ तू नहीं अबतक हँसिके बोलत है जोई मेरो मोहनहार पुण्य तेरे पाईं परचो है काठते हठ तेरोबडो कठोर है जो विरहमें नजरो इहां कविनिबद्ध हठकाठ विरह अग्नि ते विरह कारण हठजरबो कारजनहीं सो विशेषोक्ति अलंकार ॥ २० ॥

प्रकाश प्रोषितपतिका ॥ यथा–सवैया।

औधिदैआयेउहांउनकोयहभोजनकेअबहींहमऐहैं ।
ताकहँतौअबलौंबहराइकैराखीवस्वाइमरूकरमैहें ॥
बैठकहाइनकेढिगकेशवजाउनहींकोऊजाउजुकैहें ।
जानतहौउनआंखिनतेअंशुवाउमहेवहुरचोपुनरैहें ॥ २१ ॥

सुगम अलंकार काकोक्तिका रहैं नरहैं ॥ २१ ॥

अथ विप्रलब्धा लक्षण।

दोहा—दूतीसोंसंकेतबदि, लैनपठाईआप।
लब्धविप्रसोंजानिये, अनआयेसंताप ॥ २२ ॥

नायकदूतीसों संकेत बदि आप लैन पठावै ताको जब संकेतमें आपनमिलै तब वाको संताप होइ सो विप्रलब्धा ॥ २२ ॥

प्रच्छन्न विप्रलब्धा ॥ यथा—सवैया।

शूलसेफूलसुवासकुवाससीभाकसीसेभयेभौनसुभागे।
केशवबागमहाबनसोजुरसीचढिजोन्हसबैअंगदागे ॥
नेहलगोउरनाहरसोनिशिनाहघरीककहूंअनुरागे।
गारीसेगीतबिरीविषुसीसिगरेईशृंगारअँगारसेलागे ॥ २३ ॥

उक्ति अंतरंग सखीकी सखीप्रति। कि हे सखीआजुनायक घरीक कहूं अनुरागे विलम्बे इतने में यह ह्वैगई कि फूल जेहैं ते शूल से लागन लगे इत्यादि सुगम है अरु विरहिनी होती तौ शृंगार न करती गीत न होते बीरी न खाती तो इहांहू कवि निबद्ध बक्ता की उक्ति में व्याघात अलंकार ते नायका अतिदुःखित यह वस्तु जहां सुखदाई दुख दाताहोहि तहां व्याघात अलंकार जानों ॥ २३ ॥

प्रकाश विप्रलब्धा ॥ यथा—कवित्त।

देखतउदधिजातदेखिदेखिनिजगातचंपककेपातकछूलिख्योहै बनाइकै।सकलसुगंधढारिफूलमालतोरिडारिदूतिकाकोमारिपुनिबीरीविगराइकै ॥ लैलैदीहसांसतजिविविधविलासहास केशोदासहै उदासचलीअकुलाइकै । सेइकैसंकेतसूनोकान्हजूसोंबोलऊनोमोसोंकरजोरदूनोंदूनोंदुखपाइकै ॥ २४ ॥

यह कवित्त बहुत फैलोहै अरु याके अर्थ कई तरहके कई कवि करतहैंते अक्षरार्थ में नीके नाहीं होत कोई तौ कहत शिव लिखेकि हे महाराज! कामभलेजरायो । अरु कोऊ कहत सर्प लिखो पवन को वैरीजान कोऊ राहु शशिहेत कोऊ कहत भ्रमर चंपक्के पातपै लिखो कोऊअग्निवन हेत इत्यादि बहुत कहतहैं तौ ये सब अर्थ अयुक्ति कहि ऊपर सों निकसे कोऊ कहत धृग धृग लिखो सोभी कवित्ततें नाहीं निकसत अरु कोऊ कहत यह एक श्लोक में ऐसो शब्दहै सो यह बात तौ निपट अयुक्त है क्योंकि जो श्लोक होत है ताकी उल्था कवित्त में बनत है सो यह शब्द तौ कवित्त

धरोनाहीं उहां के शब्द इहां मानलीजे यह कौन चतुराई है ऐसो कोऊ कहूं ग्रंथ को श्लोक पढै सो यह कहैगो श्लोकपै कवित्त है अरु श्लोकको कवित्त तब कहावै जब श्लोकको अर्थ सब बराबर राखै काहे चंद्रमुख नेत्र मीन आदिक शब्द सबही में आवत तो उल्था न होइगो याते यही युक्ति है अरु धृगधृग अर्थ झूठो लगावनो इष्ट देवता को यह महा दोषहै जो कविनै कवित्त में अनुचित शब्द धरो होइ तौ भी उचित अर्थ करिये तब बड़ाई है जैसे शिशुपाल ने शब्द अनुचित कहे तहां सरस्वती के वाक्यमें अर्थ उत्तमकरतहैं जैसे गुसाईं कही "भरत भुआल होहिं यह सांची" तहांकवि भूपृथ्वी में घर करिहैं यह सत्य है सरस्वतीकहत नाहीं कि बिगार कै अर्थ करो तहां और एक बड़ो दोषहै व श्लोकमें काहू साधारण नायका की वार्त्ता मनुष्य पै धृग धृग कह्यो तुककह्यो इहां तो कान्ह जूसो बोलि उनौ तौ श्रीकृष्ण कहै काहे केशव कवि प्रियामें कहा॥ दोहा–जगके देवी देवता, श्रीहरिदेव बखान॥ तिन हरिकी श्रीराधिका, इष्ट देवता जान। सो धिक कैसे कहैगी अरु कोई कहत कि कछू कछु वाको कहतहैं तहां कूर्म को अंग कठोर है मन नाहां इहां मन कठोरचाही अरु कोई कहतकानाम जलसोंछूके लिखो काजलतें तुम जैहै जैसे हमें जरावतवियोगतें अरु कोई कहत तुमजलस म नीचे चलतहौ अरु कोई कहत काजलतें है लिख्यो कहा तुम महापशुहौ तौ कोऊकाहू को पशु कहत घांड़ा नाहीं कहत तुम बड़े वृषभहौ कहैं हैं अरु कोई अर्थ करतहैं लिख्योहै कहैं अनुमान आये सोभी नहींबनत कहे है हांहां ये जब बनत तब नायक सामुद होइ इहां तौ लिख्योहै घोड़ा को अर्थ होजैहै कहै कछू वस्तु है यह अर्थ भासे याते यहू नहीं बनत ऐसे अनेक अर्थ करत विवादी बुद्धिहीन तहां कोई तौ यह कहत कि यह नायका जब अभिसार करआई तब कृष्ण अभिसारिका यहबात कहांते जानी सो देखत उदधि जात कहा प्रथम नहीं रहे जब संकेत थलमें आई तब चंद्रमा देख्यो अरु अपने गात को देख्यो तब दुःख पाये मैंतो अंधेरे को साज पहिर आई अरु अब यह चन्द्रमा निकस आयो तौ श्याम वस्त्र अंधेरे में मेरे मन भायो अब चन्द्रमा निकसोतौ सब देखिहैं याहीते दूनों दुखपायो चली दूनों दुखपाइ के यह बात सारथ भई एक नायक न पायो दूसर घर जैबो दुस्तर भयो सो यह नायकाने उदधि जात देखि अरु निज गात देखि दुख भयो सो तब चंपकके पातमेंकछू लिख्यो कछूयोरो लिख्यो कैसे लिख्यो बनाइकै कहा ज्यों नायक भली भांति बांचै सो कवि लिख्यो सकल सुगंध दार पहिले ये कारज करके फूलमालको तोरिडारो.अरु दूतिकाको मारि बीरी बगराइ फेर लैलैबहुतसांस ये सब बातें करिकै लिख्यो इहां सब तृतीया विभक्तिको अर्थ कीन्हों यों करिकै पै करिकै तृतीया विभक्ति की रीति होत है सो लैलै दीर्घ सांससांसनको लैलैकै कहा लिख्यो कहा कि तजि छांडदेइ ये भांति भांति के विलास

हास विलास हांसीके कहां किये हांसी छोडि देह कि वनमें बुलाइकै आपन आवते
हास रसकी बातें तजिदेहु एतौ उराहनों लिख्यो और या अर्थ को हास शब्द न
कियो नहीं तौ उहां वनमें हास विलास कब इन कियो जिनको छांडिकै चली यह
आवतही संकेत सून पायो पीय न पायो तवहीं खेद पावत भई याको हास विलास कहांतें
कहिके हास विलास तजि चली इहां शब्द मेंही पूर्व पक्षहो वहपूर्वपक्षहूमध्यो अर्थहूला
अरु कोईपाठ ऐसोकहत हैंतजि विविध विलासहास कहा आश छांडदई सो तौ यह
न बनै एकवेर नायक न मिले कहा फेर मिलि है आशतौबनी यहै आश छोड़ि
अमंगल है यातें आश पाठ अशुद्ध है अरु ताहीमें फेर प्रश्न करो कि चंपक पै लिखि
बेको प्रयोजन कहा तहां फेर उत्तर कीनौ चंपक पै लिखेतें विरह सूचित करत
चंपकसीदेह रही तापै श्यामताहोगई यातेंचंपकपै लिख्यो और वह जासों दोनों
जोरे सो उहां है वह कहिहै या चंपक पात पै लिखगई पत्र जा वनपै है इहां दिखा
देहैं इहां सखी अनेकहैं जासों करजोर कही तुम जहां होहु तहां ऐसो छल न
यह जो अर्थ है सो क्रम भंग है काहे प्रथम कवित्त में चंपक है पाछे सुगंध डारं
फूलन की माल तोरबो सो ये प्रथम सुगंध डारबो कहत पाछे कछूपाय थोरो लिखि
तामें थोरो कहा लिखो सो नहीं निकसो तातेअब सिद्धांत अर्थ लिखियत है कि देख
उदधिजात चंद्रमा यामें विरह बढ्यो सूचित कीन्हों अथवा निज गात चन्द्रमा
मिलाय कै चंद्रसरीसो प्रकाश मेरे गात में है तब चंपकके पातपै कछूलिखो ॥ दोहा
"कामी कुटिल कुमारगी कछु लंपट कछु धृष्ट" तो कछुनाम कुमारगीकोहै अर्थतुम कुमा
रगी हौ अरु चंपक को लिखिबेको प्रयोजन यह लोकोक्तिमें कहत फलानों चंपक
अर्थात् भागगये दूसरेतुम आन के पास चपेहौ अरु सुगंध डारदये फूल माला तोर दूती
मारकै पाननकी बीरी बगरायदई बहुतसांस लैलै विविधिरीतिके विलास हास तजि उदास
अकुलाइकै चली सुनों संकेत सेह कान्ह जू सों ऊनै पट वोलबोल में जो शिशा कर
तासोंदोई हाथ जोर दूनों दुगपाद चलीदूनों दुख काहेकिएकतौ संकेतमें न मिले दूसरे
यानपरी यामें व्याघात अलंकार जानियें जो सुख दाताओं दुख दातातें ॥ २४ ॥

अथ अभिसारिका लक्षण।

दोहा–हितर्तेकैमदमदनतें, पियसोंमिलैजुजाइ।
सोकहियेअभिसारिका,बरणेत्रिविधिबनाइ ॥ २५ ॥

अभिसारिका तीन रीतिकी एक हितेंमिलै सो प्रेमाअभिसारिका मदतें मिलै सो गर्वा
अभिसारिका मद मदनतें आइ मिलै सो कामा अभिसारिका ॥ २५ ॥

अथ स्वकीया अभिसारिका लक्षण।

दोहा–अतिलज्जापगदगपगैं, चलतवधुनकेसंग।
स्वकियाकोअभिसारयह, भूषण भूषितअंग ॥ २६ ॥

अतिलज्जाते पगडग कहिये राहमें धरै वधूइस्त्रीनके संग चलत में यह स्वकीयाको अभिसार भूषणते भूषित है जाके अंग अति स लज्ज भी पाठ है अर्थद वधुनके संगभीपाठहै ॥ २६ ॥

परकीया अभिसारिका लक्षण यथा ।

दोहा–जनीसहेलीशोभहीं, बंधुवधूसँगचार ।
मगमेंदेइवराइडग, लज्जाकोअभिसार ॥ २७ ॥

सुगम ॥ २७ ॥

सामान्याको अभिसार यथा ।

दोहा–चकितचित्तसाहससहित, नीलवसनयुतगात ।
कुलटासंध्याअभिसरै, उत्सवतम अधिरात ॥ २८ ॥

सुगम ॥ २८ ॥

दोहा–चहूँओरचितवैहँसै, चितचोरैसविलास ।
अंग रागरंजितनितहि, भूषणभूषितभास ॥ २९ ॥

सुगम ॥ २९ ॥

दोहा–कुसुमकंदुकरमंदगति, सखीसंगमगजार ।
सखी सहेलीसाथवह, वरणिनारिअभिसार॥ ३० ॥

सुगम येह च्यारों दोहे काहू अन्यके बनाये हैं ताते इनको तिलक नारायण कविरे शिष्यने नहीं लिखो ॥ ३० ॥

प्रच्छन्न प्रेमाभिसारिका ॥ यथा–कवित्त ।

लीनेहममोलअनबोलेंआइजान्योमोह, मोहिघनश्यामघनमाला लिल्याईहै । देखोहैहैदुखजहाँदेहऊनदेखीपरै, देखोकेसेवाटकेशो मिनिदिखाईहै ॥ ऊँचेनीचेवीचकीचकंटकनपीडेपग, साहसगयंद तिअतिसुखदाईहै ।भारीभयकारीनिशिनिपटअकेलीतुम, नाहींप्रा नाथसाथप्रेमजोसहाईहै ॥ ३१ ॥

यक नायकाको प्रतिउत्तर।नायक कहत तुम हमकोमोल लेलिये जो विनबुलायेआईयका। मोको है घनश्याम घनकी माला बुलाइ ल्याईहै प्र० यामें कोई काजोरुद घनमाला ते उद्दीपन भयो ताते काम सतावत है, । उत्तर । सो नहीं घनदेख तुम्हारे नकी सुधिआई।नायक। देखो हैहै तुमते दुःखहै जहां देहनहीं दिखात ऐसो अंधेरो गोहै अरु तुम राह कैसे देखी।नायका। दामिनीने दिखाई। नायक।ऊंचे नीचे बीच चिमें कंटकतें पाइनको पीड़ा भई है है–नायका। मोकों साहस रूपी जो गयंद मात

अति सुखदाता करी।नायक।महाभारी कारीरातमें निपटअकेली तुम आई। नायका। नहीं प्राणनाथ साथ तिहारो प्रेमरहो। प्रति उत्तर ते उत्तरालंकार ॥ ३१ ॥

प्रकाशप्रेमाभिसारिका ॥ यथा—कवित्त।

नैनन की अतुराई बैननिकी चतुराई, गातकी गुराई ना दुरति द्युतिचाल को। आपने चरित्रनके चित्रित विचित्र चित्र, चित्रिनी ज्यों सो हैं साथ पुत्रिका गुवाल की ॥ चंदके समान चारुचाय सों चढ़ी फिरति, क रिकै तिहारे मृगनैननिकी पालकी। कीजैपयपान अरु खैये पानप्राण प्यारे, आई है जू आई अलबेली ग्वालि कालिकी ॥ ३२ ॥

उक्तिसखीकी नायकप्रति। कि नैनकी आतुर बैन(बचन)की चातुर अरु गातकी कैसी गोरीहैकि जाकी द्युति(दीप्ति) नही दुरति अरु चालकी भी नहीं दुरति अरु आपने जो चरित्र हैं ताही के चित्रतें विचित्र चित्रितहै अरु चित्रनीसो सखी साथ सोहत है जाके यातें जनावत आपपद्मिनी है चंद केसर चारु सुंदर जाकी चाहसी. चढी फिरत तिहारे नेत्रनको पालकी करिकै अर्थतिहारे मृग नेत्रनिकों पालकी में आपनो जो चाउ है चंदरूपी सो जिनने चढायो है काहे मृगको असवारी चंद्रमाकी है इन तुमसों चाउ प्रेम कियो है याते तुम्हारे नैनको चाउ चढ़िरह्यो है याही प्रेमतें प्रेमाभिसारिका प्रकाश कही ताते आप पानीपीजे पानखाइये किया जाके लिये आप पान खात रहे सोई है मेलक्षणनितें पहिचानी यह सखी कही कि निश्चैजानो जोग्वालि काल्हिआपदेखी ही सोई आई इहां बेबुलाई आई प्रेमतें यातें प्रेमाभिसारिका है प्रेमकामा परकीयकामा होति है इहां प्रहर्षन अलंकार जानियें ताको लक्षणवांछित फलजहां पाइये तहां प्रहर्ष प्रमान जाको चित्त चाहतहो सो मिली आजसो आन अरु स्वभावोक्तिहू होतहै ॥ ३२॥

प्रच्छन्न गर्वाभिसारिका ॥ यथा—सवैया।

लाडिलीलीली कलोरी लुरी कहँलालकुके कहाँआंग लगाइके।
आजुतो केशवकेसहुँलेरुवे लागन देत न केस हूं आइके ॥
वेगिचलोचलिआइबुलावनदौरिअकेलियाँहाँअकुलाइके।
भूलहुगोकुलगांउमेंगोविंदकीजैगऊरनगाइचराइके ॥ ३३ ॥

उक्तिअंतरंग सखीकी नायकप्रति। कैसो हमारीगाइ है सो दोहियेकों चलो बेगीरे लाडिली है रंगकी छैलीहै कठोर परसी जनीहै छुरी यांरे दिनकी जनी ताकों आप अंग लगाइके कहां छुक रहेहो आज केसहूं लेपना चाहा ताकों लागन नाहीं देत तुम भर

देखो बलि जाऊँ बेगे चलो हौं बुलावन आईहौं अकेली दौरिकै यह गोकुल गांउ है हेगोविंद गरूर मति करौ गाइ चराइके यामें जो पंचम विभाविना कोई कहैकि होतका- हेकारज जो बुलावन आई ताकीहे यातें छलकरनौ पर जा उक्तिसों स्वतः संभवीमेंहै तातें नायकाको मिलाइबौ वस्तु जानियें गर्व वचन चरावन हार तुम चरवावन हार हम ॥ ३३ ॥

प्रकाश गर्वाभिसारिका ॥ यथा–कवित्त ।

चंदनचढाई चारुअंबरकें उरहारसुमनशृंगारसोंहैआनंदकेकंद ज्यों।वारौंकोररतिनाथबीनमैंबजावैगाथ मृगयमरालसाथबानीजग- बंद्ज्यों ॥ चौंकचौंकचकईसीसौतिनकीदूतीचलीसोतैंभईदीनअरि विंदगतिमंदज्यौं। तिमिरवियोग भूले लोचन चकोरफूलेआईब्रजचं द्रचंद्रावलिचलिचंदज्यों ॥ ३४॥

इहां चंद्राभिसारिकाको वर्णन करतेहें कविकि चंदन चारु सुंदर चढाये हैं अथवा अंबर वस्त्र पे चंदन चढायेहें अरु ताहीकोंहे उर विषे हार अरु सुमन फूल जो पहिरे शृंगारके हेत तासों आनंदकंदहो रहींहें जाके अंगपे करोर रति नाथ वारतहें अरु बीनमें कैसे गुनन के गाथ बजावत मृग अरु मराल जाके साथ मे फिरतहें बानी सरस्वती जगवंदसी मुनि जाके देखत हें वियोग रूपी तिमिरअंधकार भूलैतें लोचन रूपचकोर फूले खुशी भये अरुसौतिनक द्युति चकईसांतें कमलवत् ऐसे ब्रजचंद चंद्रावलि दोईचलेचंद्र से प्रश्नअरु यामें कोई कहै गर्वाभिसारिका कैसे इहाँतो गर्व की बात नहीं निकसत उ०॥तहांयहकहतकि अभिसारिका तीन भांतिकींहें प्रेमागर्वा कामा इहां कामाभिसारिकाकी रीतितो यह कि कामान्धसी चले ऐसेउदाहरणकहे हें यथा "उरझत उरग चपत चरणनि फणि औरभी कुंजअंधियारी नगधारीहै" रैन विहारी पैजात तृण शुद्ध मथी रही प्रेमाभिसारिका ताके- अंतर्भूत कहिये एकतो यह बात अरु आनकहत जहांप्रेमशब्दआवे तहाँ प्रेमाभिसारिका जैसे उहांदोऊ पर कवित्त कहि आये नहीं प्राणनाथ एक प्रेमजूसहाइ हें दूजे कवित्तमें चारुचावसोंचढ़ाये फेरयाहूप्रेमकढ़ी तहां फेर प्रश्न प्रेमविना अभिसारतौ करतनहींप्रेम तौ आवश्यकहे इहां गर्वकोभाव कछू चाही तहां फेर उत्तर कि "चौंकि चौंकि सौतिन की दूती चली" यामें यहबात निकसी कि याके समान आन नायका नहीं सब की दूती निराश तौ लक्षणा सों जानियें याहि गर्व है और यह जानके चलीकै मेरे गये काहूकीदूती न ठहरिहें यातें गर्वाभिसारिकादूतीनजानी यातें प्रकाश चंदसों रूपकसों सब याको आशय नहीं पायो केशव यह कहत कि आपु बीन बजावत जात यातें यहसूचि- तउरत अब हों जात सो छपिकेनाहीं गाय बजाइके जातहों जाको रूपकोमदहोहि सो

चलो यही गर्वजतायो आपुचंद समान आई का बहुत प्रकाश करत ॥ ३४ ॥

प्रच्छन्नकामाभिसारिका ॥ यथा—कवित्त ।

उरझत उरग चपतचरणनिफणि देखतविविधिनिशिचरदिशिचा
रिके।गनतनलागतमुसलधारबरषत झिल्लीगनघोषनिरघोष जलध
रिके ॥ जानतिनभूषणगिरनपटफाटतनकंटकअटकिउरउरजउज
रिके।प्रेतनकीपूछैंनारीकौनपैतैंसीख्यो यहयोगकैसोसारअभिसार
भिसारिके ॥ ३८ ॥

उक्तिअंतरंग की अंतरंगसों। कि आजु की बातऐसी है जब नायक के पास गई कि
उरझत फणिपाइ तें दबत निशाचर देखत चारों दिशन के मूसलधार वर्षा झिल्ली
समूह तिनके घोषशब्द निरघोष अधिकबड़ीगरज सों मेघनकी भूषण गिरत पट फा
कंटक लागत उरमें उजार को प्रेतन की नारी बूझतीहैं कि यह तैंने योग सों स
अभिसार है अभिसारिका योग उपमान अभिसार उपमेय सार धर्म्म सों वाचिक ता
पूर्ण उपमा सो कविनिबद्ध वक्ताकी उक्तितेंघोष निरघोष अभिसार अभिसारिका जम
तातें अलंकारतें अलंकार ॥ ३५ ॥

प्रकाशकामाभिसारिका ॥ सवैया ।

गोपबड़े बड़े बैठेअथाइनिकेशवकोटिसभाअवगाहीं ।
खेलतबालकजालगलीनमैंबालबिलोकिबिलोकिबिकाहीं ॥
आवतिजातिलुगाईचहूंदिशिघूंघुटमेंपहिचानतिछांहीं ।
चंदसोआननकाढ़िकहांचलिसूझतहैकछुतोहिंकिनाहीं ॥ ३६

उक्ति सखी की नायका प्रति। कि तू यह बेराँ कहांजात बड़े बड़े गोप अथाइन
बैठे जिन कोटिन राज सभा जानी अरु बालकन के जाल खेलतहैं कैसेहैं बाल
कि जिन्हें देखि बाला बिकाती हैं अरु लुगाई बहुतआवती कैसी हैं जे घूंघु
छांह पहिचानतीं ऐसे समय चंदसो आनन काढ़ि तू कहांचली कछू तोको सूझै
कि नहीं तो यामें कामाभिसारिका प्रकता यह कि कामांध तें काहू को नहीं देख
अरु कोई कहैकियहकाहे तें जानी कि अभिसार करे जात या औरही कार्य्य निमित्त ज
होहि तो मुखनिकासे तें याकी कामांधता सूचित होत है तौभी कोई कहै कि ग्राम
पुत्री है तहांजो पुत्रीहोती तौ मुखनिकासेई रहत तासों यह कैसे कहती कि मुख निक
कहे जात इहां कामांध वस्तु तें अर्थांतरन्यास अलंकार जानिये गोप सामान्य तें
जिन सभा देखी यह विशेष इमेही बालक सामान्यता बालक पे लुगाई विशेष

यह विशेष अरु यह सखी सिखावतिहै की लुगाई चारों ओर से देखतीहैं तातेप्रकाश-जानियें ॥ ३६ ॥

दोहा–केशवदाससुतीनविधि,वरणीसुकियानारि।
परकीयाद्वैभांतिपुनि,आठआठअनुहारि ॥ ३७ ॥

केशव दास ने तीन विधि की स्वकीया नायका वर्णी और परकीया दोभांति की वर्णी तिन सबकेआठ आठ भेद कहे सो सब देखावत हैं तिलक में ॥ ३७ ॥

दोहा–उत्तममध्यमअधमअरु, तीनतीनविधिजानि।
प्रकटतीनसैसाठत्रिय,केशवदासबखानि ॥ ३८ ॥

इहां तीनसैसाठको बेउरा ताकोविचार केशवदास तीनविधि बर्णी कहां सुकिया तीन विधि बर्णी तहां एक एक की चार चार अनुहार कही ऊपरतें सबबारहभई अरु परकीया दो भांति तो चौदह भई अरु पुनके कहिबे सोंव्यंग्य तेंसामान्यानिकसीनाम लियो सो ऊपरही कहि आये तहां हूं नामलीनो कहीं स्वकीया परकीया न यह कह्यो तीसरीनायका कैसी है स्वकीयाहै न परकीया है कहीं तैसेही परनाम न उच्चारचो तैसे इहां हूं पुनि शब्द तें वही जानियें यह सब पंद्रह भई फिर आठनायका सों जोरचो एक से बीस भई फेर उत्तम मध्यम अधमसों तीनसे साठजुरीं यह रसिकप्रिया को मत जानिये ॥ ३८ ॥

अथ उत्तमा।

दोहा–मानकरैअपमानतें, तजैमानतेंमान।
पियदेखेसुखपावई, ताहिउत्तमाजान ॥ ३९ ॥

मान करै अपमान तें नायक जो अपमानकरै तौ मान करै कहा नायक को आदर करै अथवा मान नहीं करै अपमान करत विषे अर्थअन्य स्त्री गमन न रोकै अरु तजिदेइ मानतें मानको अर्थनायक जब आदर करै तब आपु गर्व न करै अथवा तजै मा श्री अमर "मैं लोक माता मा" नामलिखो है अथवा तजै मान तो मानमनैकरिबो न तजै पिय देखं सुख पावै सो उत्तमा ॥ ३९ ॥

उत्तमा ॥ यथा–सवैया।

होहिकहाअबकेसमुझेसमुझेनतबैजबहीं समुझाये।
एकहीबंकविलोकनमांहअनेकअमोलविवेकविकाये ॥
जानिपरोनजनावहुजूजनमावधिलौंउहिजानिहौंपाये।
बातबनाइबनाइकहाकहौलेहुमनाइमनाइज्योंआये ॥ ४० ॥

सखी नायक सों कहत है किजैसेमनाइ आये तैसेही मनाइलेउ अरु कोई अर्थ याको

ऐसोलिखो है कि सखी कहतनायक सों तुम बिन पांयन परे मनायो है सोन मान्यो॥ अथ पांयन परि मनाइ लेहु सो इतनो बिचार न कीनो प्रथम तौ उत्तमा मान नाहिंकरत यापै इतनो मानजो पांय परे तें छूटै यह उत्तमा को अर्थ तें राख्योती ऐसेअर्थते उत्तमा मध्यमा व्है गई अरु कोऊ यह कहीकि नायक जासों बहुत प्रीति राखत रहीं तासों रुढ़ आयो है तब उत्तमाकहत है अबके समुझे कहा होत जबलोगन तुम को समुझायो तबतो न समझे ताते तुम जानपनो न जनावहु अरु "जान परचो" भी पाठ है एजू जनम अर्थात लौं इहि छहि कहा उहिको जानपनो कहा निर्भेद बैराग्य जिन जनायो काहे उहिंदेहरी दीपक कहिये उहि तुम्हें जान पाये हैं कि मो बिन एक घरी न रहिहैं तातें जैसे मनात तरहे तैसे मनाहि लेहु प्रश्न तहां काहू यहकही कि यामें जब वा बोली बातमेरे सामुहे न बनावहु तब उत्तमा कहां तहां उत्तर यह कहत कि वाके सामुहे बातें बनाइ बनाइ कहीजातें वहरूसीन रहै बातें बनाइ बनाइ कहाकहो याको अर्थ कि वाके बात बनाइ बनाइ कहा कहीं कहिबो करीं तहां यह प्रश्नकरत बातें कहा करों ऐसे कहतहैंबातें कहाकहें यह शब्द अप्रयुक्त है॥ ताकोउत्तरयातें बनाइकै कहौ अरुवाको कहा कहौं कहा जोवहकहैमुखतेंसोईतुमहूं कहौ॥ अर्थ॥ जो बात वह कहत सो टारिकै न कहौ अपनी चतुराई सों जोराति कहै तौराति जो दिन कहै तौ दिन ऐसे अनेक रीतितें कहत है अरु केशव को आशय तौ यह है कि वासों अब बात बनाइये कहा काहे कहत दोहा कहितौ आगे मनावतरहे अर्थ दोहा करि मनावहु इहांनायकको प्रात आइयो यह कविनिबद्धता में नायका वक्ता तातें नायका अपराधजान नहीं मानत यह वस्तुतें काव्यलिंगअलंकारजानियें काव्यलिंग सामर्थ्यता जहां दृढ़ करत बनाईसो-बानें जान पाये वाकोजान पाइबो एक बंक बिलोकनमें जतायो यह दृढ़ जानियें॥४०॥

मध्यमा लक्षण।

दोहा–मानकरैलघुदोपतैंछोड़ैबहुतप्रमाण॥
केशवदासबखानियेंताहिमध्यमाबाम॥४१॥

मान करै थोरे दोपतें ताही मान को बहुतप्रमाणतें छोड़ै ताको केशवदासमध्यम नायका कहतहैं॥ ४१॥

मध्यमा॥ यथा–सवैया।

भूलहूंसूधेनहींचितयोइहिकान्हकियोलचि लालचकेतौ।
हाहाकेहारिरहेमनमोहनपांयपरेत्योंपरेईरहेतौ॥
हौंतौयहैतवहींकिविलोकतिहोतोगुमानक्योंयाहिधौंकेतौ।
लांबीलटैंअरुपातरोदेहजुनेकवड़ीविधिआंखिनदेतौ॥४२॥

यामें यह प्रश्नकरतकि मान करैलघुदोपतें सोलघुदोपकवित्त में कहो चाहिये

अरु मान छाँड़े बहुतप्रमाण सों सो मानको छोड़बो कहाहै यह नायका तौ सूधेहू न चितई कान्हने लालचबहुतेरो कियो तहां उत्तरकहतकि याविधिकवित्तको अर्थ कीजै लघुदोषअन्य नायका देखेतें होतहै बातनतें मध्यदोषचिह्नतें गुरुदोष होतहै सो सखीनायक की कहत है नायकाकीसखीसों कि तेरी नायका जानतिहै ये और की देखतहैं सो ये काहूको मनसोंदेखत नहीं योंदृष्टि जाइ परो पर चाहसों नहीं देखत, सोकहतहैं कि वह जो कोऊ आन नायकहै उन इनकेउच लालचकेतौ पर भले हू॥सूधेन चितयो वहां कान्ह"करयो पाये" भी पाठ है अरु याही में प्रश्न है इनजु कह्यो नहीं चितयोतौ लघुदोषचितयेतें होतहै तातेलघुदोषकवित्ततें जातरह्यो तामें उत्तरकरत "भूलिहूसूधे नहीं चितयो" सूधी दृष्टि नहीं देख्यो चाहतें अर्थ दृष्टि जाइपरी यामें लघु दोष स्थापित भयो सो यह लघु दोष जानि कि नायका ने ऐतो कियो हाहा करि पांय परे त्यों परेई तब नायका की सखी बोली रहेतौ कहाकि पांयन परनादियेयामें मान छूटयो (हा करिबो यही प्रणति है छांड़े बहुत प्रमाण यह लक्षणसाध्यो अरु यामें कोई कहै कि कान्हकह्यो अरु मनमोहन कह्यो पुनरुक्तितो नहीं है परंतु नजीक न जीकहें तहां प्राचीन पुस्तकमें यह पाठ है "हाहाकै हारिरहे पुनिकेशव प्यारीकेपांयपरेईरहेतौ"फेरतीसरी तुक सीधी है नायकाके सखीवचन कियेतौ गुमान याहीक्यों होतौ जो या बात न होती लांबीलटें अरुपातरी देह केशव ऐसे काहूके नहीं अरु सुकुमारताको गर्व यह अरु यामें केशव को आशय यह कि कान्हतें भूलकर सूधेकाहूकी ओर नहीं चितयोहै करै कोई लचकर लालच कितनो सो। कान्ह हाहाकर हाररहे परंतु याके मन मोहन पांय परेतौ परेई रहे सोहीं तब की देखतको इतनो गुमान काहेको होतौ जो विधाता पातरी देह लांबीलट अरु बड़ीआंख न देतौ तौ देखो लघु दोषतें मान याही सो याहीमें निकस के सूधेमनतें लचके लालचतेंनहीं चितयेतौ चितैबोसाचितभयो जैसे कोई कहै हम आ पुतौ नहीं गये तौ जैबो जानो जाइ है अरुछूटबो भी याही अर्थ तें निकसो काहे कि फिरयो नहीं रूखे वचन नहीं यातें रहे अथवा हाहाकरकेतौ हारे परंतु जब पांय परे तब त्यों परेरहे जैसे सब दिन एक सेज पर रहत रहे अरु तीसरी तुकको ऐसो भी पाठ है "हां तौ यहै तबहींकी विचारति होतो गुमान क्यों खाहि सो एतो ताते हेत अलंकारहै जहां कारण अरु कार्य्य एक साथ कथन होहिं लांबी लटें पातरी देह बड़ीआंख कारण को कथन गुमान कार्य्यके साथ है ॥ ४२ ॥

अथ अधमा लक्षण।

दोहा-रूठैवारहिंबारजो, तूठैवैठहिकाज।
ताहीकोअधमावरण, कहैंमहाकविराज ॥ ४३ ॥

बारंबाररूठै अर्थ मानकरै अरु विना प्रयोजन तूठै गुस्साहोय तूठै विनही कार्य्य भी पाठ है ॥ ४३ ॥

अधमा ॥ यथा–सवैया।

काटौकपट्टजुकान्हसोंकोजैरीबांटौ वेबोलकुबोलकसाई।
फाटौजुघूँघुटओटअटैसोईदीठिफुरौअधिकौजुधँसाई॥
केशवऐसीसखीनकोमारौसिखैके करैहितहीजुहँसाई।
वारहिवारकोरूसिबोवारोवहाउजुबुद्धिवियोगवसाई ॥ ४४॥

नायकासों कि वह कपट काटि डारिये जोनायक सोंहोय वे कुबोल पीसि डारिये जो नायकको कसके वह घूँघुटफारियेजो नायक को देख कि मुसपै रहे दीठि फोरिये जो अधिकधँसे नायक को क्रूर जानः जाय ऐसी सखी न को मारिये जो हित की हँसाई करै वारंवारको रूसिबो जराय दीजिये वा बुद्धिबहाय दीजिये जो नायक सों वियोग करावै स्वभावोक्तिअलंकारहै ॥ ४४ ॥

दोहा–इहिविधिनायकनायका, वरणोंसहितविवेक।
देशकालवयभावते, केशवजानिअनेक ॥ ४५ ॥

देश–जैसे गुर्जरी मालवी बंगाली इत्यादि काल–पावसाभिसारिका वसंताभिसारिका वयभाव–अज्ञातादिक जातिकाल पाठ में पद्मिन्यादिक ॥ ४५ ॥

अथ अगम्या।

दोहा–तजितरुणीसंबंधकी, जानमित्रद्विजराज।
राखलेइदुखभूखते, ताकीतियतेंभाज ॥ ४६ ॥

जो तरुणीतें संबंध होय अर्थ भगिनी आदिक संबंधमें परत होय ताके साथ विहार न करिये अरु मित्र की तरुणी कोजान के तजिये कविप्रिया के तिलक में नारायण दास कवि पद्माताके प्रसंगमें लिखेहैं द्विजराज ब्राह्मण की स्त्रीजो राख लेय दुखित देहते भूखते अर्थ जो अपनो पालन करे ताकी तियातें भाजिये अर्थ गमन न करिये॥ ४६॥

दोहा–अधिकवरणअरुअंगघटि, अंत्यजजनकीनारि।
तजिविधवाअरुपूजितारमियहु, रसिकविचारि ॥ ४७॥

अपने ते जो उत्तम जाति होय अरु अंगघट होय अर्थ न्यून जाति होय अथवा जनकी नारिभी पाठ है अंत्यज चांडालादिक की स्त्री जनदास की तरुणी विधवा अरु पूजिता जो पूजनीय होय इन सबको त्याग करके रमण करियो विचार पूर्वक हे रसिक यह अगम्यागमन है ॥ ४७ ॥

दोहा–यहसंयोगशृंगारकी, केशववरणीरीति।
विप्रलंभशृंगारकी, रीतिकहौंकरिप्रीति ॥ ४८ ॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायांरसिकप्रियाया मष्टनायिकासंभोगशृंगारवर्णननामसप्तमःप्रकाशः ७

यह संयोगशृंगार की रीति केशवदास ने वर्णी अब विप्रलंभा कहिये वियोग शृंगार की रीति कहत हों प्रीति करके ॥ ४८ ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज–काशिराज–श्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्या-ज्ञाभिगामि–ललितपुरनिवासि–हरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्य कवीश्वरेण विरचिते रसिकप्रियाभूषणे सुखविलासिकानामटीकाया मष्टनायकानायकसंभोगशृंगारवर्णनं नाम सप्तमः प्रकाशः॥७॥

अथविप्रलंभशृङ्गारलक्षण।

दोहा–बिछुरतप्रीतमप्रीतमा, होतजुरसतिहिठौर।
विप्रलंभतासोंकहैं,केशवकविशिरमौर ॥ १ ॥

जहां नायकनायकाको मिलन न होइ सो विप्रलंभनामवियोग ॥ १ ॥

अथ विप्रलंभशृङ्गारकेभेद।

दोहा–विप्रलंभशृङ्गारको,चारिप्रकारप्रकाश।
प्रथमपूर्वअनुरागपुनि,करुणामानप्रवाश ॥ २ ॥

विप्रलंभशृंगारके चारि प्रकारके प्रकाश (भेद) हैं पूर्वानुराग एक द्वितीय करुणा तृतीय मान चतुर्थ प्रवास (विदेश बसिबो) ॥ २ ॥

अथ पूर्वानुरागलक्षण।

दोहा--देखतिहींद्युतिदंपतिहि, उपजपरतअनुराग।
विनदेखेदुखदेखिये, सोपूरवअनुराग ॥ ३ ॥

प्रश्न इहां देखतकहो तौ सुनने ते न होहिगो रुक्मिणी को दमयंती को सुनकर भयो है और ग्रंथन में एकश्रुति अनुराग एकदृष्टानुराग तहां यह उत्तर है कि दर्शन श्रवण कहावत तो का श्रवण सों देखतहैं तहां फेर प्रश्न कि स्वप्न चाही दर्शन में तौ न हृदय के नेत्र न बाह्य के देखतहें तौ स्वप्नानुराग कहोचाही अरु चित्रानुराग चाही अनुराग दो न चाही चार चाही तहां उत्तर कि चित्रसाक्षात् एतौ देखवे में है अरु स्वप्नभी देखिवे में है काहे स्वप्नौ देख्यो कहत याते तीन दृष्टानुराग श्रवण श्रुतानुरागहै विनदेखे दुखहोत सो है भी पाठहै ॥ ३ ॥

नायकाकोप्रच्छन्नपूर्वानुराग॥ यथा–कवित्त।

फूलनदिखाउशूलफूलतहैहरिविन,दूरि करि माला बाला व्यालसी लगतिहै।चँवरचलाउजिनवीजनहलाउमति, केशवसुगंधवायुवाइसी

लगतिहै॥ चंदनचढ़ाउजिनतापसीचढ़तितन,कुंकुम न लाउ अंगआ
गसी लगतिहै। वारवारवरजतिवावरीहैवारी आन बीरीनासवाउरी
रविपसीलगतिहै ॥ ४ ॥

उक्तिनायका की सखी अंतरंग प्रति। कि हेसखी फूलमति लियावहु मोको शूल फूलत है इत्यादि पदार्थ तो सब सुगमहैं परंतु प्रवास विरह सों जानोजात ताते कुंकुम अरु बीरीजे तबहिं जो नायक विदेश होय तो सखी सीरे उपचार लियावतिअथवा हरिको जब देखत रही तब सब सामान नीके लागतरहे अब हरि नाहींहैं ताते पंचम विभावनारूप व्हैगये कारणतें कार्य्यविरोधभयो तापसीं तवसि भी पाठहै ॥ ४ ॥

नायकाकोप्रकाश पूर्वानुराग॥ यथा—सवैया।

केशवकैसहुँईठनदीठ व्हैदीठपरेरतिईठकहाई।
तादिनतेमनमेरेकोआनि भईसोभईकहिक्योंहुँनजाई॥
होहिगीहांसिजोआवैकहूं कहिजानिहितूहितवूझनआई।
कैसेमिलौंरीमिलेबिनक्योंरहौंनैननिहेतहियेडरुमाई ॥ ५ ॥

उक्तिनायकाकी बहिरंगसखीसों कि हेसखी जो तू मेरीदशा बूझति है ताकी बात यह है सब जो हरिसों ईठन चेष्टा ते मेरी दीठमें आये तबते रसप्रीतिकी चेष्टा कहाई। कन्हाईभीपाठहै तादिनते जो मेरे मनकी दशा भई सो कैसेकहौं सो याबात कहे मेरी हांसीहै है तू मेरी हितू है ताते हितकी बूझबेको आईहो ताते मैं कैसे मिलौं अरुमिले बिन कैसे रहौं नैन हेतुहै अरु हृदयमें डरहै यह दो भावकी संधमें हों परीहौं इहां प्रेमालंकर है लक्ष कपट निपटि जाइ जहां सो प्रेमालंकार ॥ ५ ॥

नायकाको प्रच्छन्नपूर्वानुराग॥ यथा—सवैया।

एकसमैवृपभानुसुता सजनीगनमेंजननीसँगवैसी।
जातउहैंचितयोजिहिरीति सुप्रीतिहियेकहिजाइनतैसी॥
तादिनतेजगकीयुवतीनिलगावतकेशवबातअनैसी।
चाहिफिर्योचितचक्रचहूंनकहूंद्युतिदेखियेवामुखकैसी ॥ ६ ॥

उक्ति नायका की अंतरंग सखी प्रति। याते प्रच्छन्न अर्थ यह कि एकदिन वृ भानु कुमारी माताके ढिग बैठीरही॥ ताही समय में जात रही तहां जैसे चितई सो कहे नहीं जात अर्थ अतिरसीली तादिनते जग की रसीली जे युवती हैं नीकी ते अनीं लागतीं चाहि करिके सिगरेब्रजमंडलमें चित्त करो पै वाके मुखकीसी द्युति न देखी अल कार पूर्ववत् ॥ ६ ॥

नायककोप्रकाशपूर्वानुराग ॥ यथा-सवैया।

भांतिभलीवृषभानुललीजबतेअँखियांअँखियानसोंजोरी।
भौंहचढ़ाइकछूडरपाइबुलाइलईहँसिकैवशभोरी॥
केशवकाहुसोंतादिन ते रुचिकैनविलोकतिकेत्योंनिहोरी।
लीलतिहैसबहीकेशृंगारअँगारिन ज्योंविनचंदचकोरी ॥ ७ ॥

तहांप्राचीन ऐसीकहत कि सबके शृंगार लीलतहैं हरिजैसेचंद विनचकोरी अंगार लीलत तहां स्त्री काहे कही चकोर काहे न कही इहां नायक को बिरह है अरु रुचि-कर काहूकी ओर नाहीं देखत नायक के तौ निहोरे कहोही निहोरी नचाहिये अरु बुला इलई हँसिकै यह शब्द अलग्न है तहां फेर आन यह कहत कि हरिके बचन सखी सों अपनी अँखियानि की बात कहत कि राधाने जब ते अँखियान सों अँखियां जोरी कैसे भौंह चढ़ाई भृकुटी बिलाससों कछू डरपाईकै बुलाइलई अपनी ओर को कैसे हँसिकै बुलाइलई और अपने वश भोरी करिकै ता दिनते जे आंखें काहूसों रुचिनहीं करतीं हमकेती निहोरैंहैं काहू त्यों भी पाठ है सबके शृंगार लीलती हैं जैसे चकोरी अंगार बिन चंद लीलती तहां यह प्रश्न है कि शृंगारकैसे लीलबो बनै आनके अरु कहोकै उनकी स्तुति लीलतींहैं तौ उनको तो भावहू नाहीं भास है कैसे तहां उत्तर है कही के हृदय के शृंगार आंखें लीलतींहैं श्यामअरुण श्वेत नेत्र वर्णत सो आपु अरु णमात्र बनी रहती हैं जैसे चकोरी अंगार लीलती तैसो आपुनै शृंगार लीलतिहैं विलो-कनमें सबलखत याते प्रकाश इहां अलंकार पूर्ववत् ॥ ७ ॥

दोहा-अविलोकनआलापते, मिलिवेकोअकुलाहिं।
होत दशादश बिनमिले, केशवक्योंकहिजाहिं ॥ ८ ॥

देखिबेते आलाप स्वरतेअर्थ टेरिबेतें मिलापके हेत व्याकुल होय तहां दश दशा होतहैं केशव कहत विगर मिलक्यों दशा कही जाय ॥ ८ ॥

अथ दशदशानामकथन।

दोहा-अभिलापसुचिंतागुणकथन, स्मृतिउद्वेगप्रलाप।
उन्मादव्याधिजड़ताभये, होतमरणपुनिआप ॥ ९ ॥

अभिलाप १ चिंता २ गुणकथन ३ स्मृति ४ उद्वेग ५ प्रलाप ६ उन्माद ७ व्याधि८ जड़ता ९ मरण १० ॥ यहदशदशा हैं ॥ ९ ॥

अथअभिलाषलक्षण।

दोहा-नैनबैनमनमिलिरहे, चाहेमिलन शरीर।

कहिकेशवअभिलापयह, वर्णतहैंमतिधीर ॥ १० ॥

नैन वैन मन मिलिवेको अर्थ एतो मिलिरहे शरीर मिलो चाहत तहां कोई प्रश्न ॥ करतकि शरीरमिलो चाहे ताकोअभिलाप कहें तो यह बात नहीं संभवत काहे देखिवे को भी अभिलाष होतहै । रामायणे । सिय हिय अति उतकंठाजानी । इहां देखवेकोभी अभिलाप है अरु बोलिवेको भी अभिलाप होतहै अरु मन मिलाइवेको भी होतहै अभिलाष जैसे रामायणमें । सुनाचहें प्रभु मुखकी बानी । ऐसे काहू को बात करि- वेको जानियें तहां ऐसो अर्थ चाहिये नैन वैन मन मिलरहे चाहेहैं अरु मिलोशरीर चाहे हैसो सबभांतिको अभिलाप चाहिये सो दशा कहावत सो ऐसो अर्थ नहीं बनत काहे पूर्वानुरागविनदेखे सुने नाहीं होत तौ जब देखै तबतो नयननिमें नयन वैननमें वैन मनमें मन अंतःकरण मानस तै मिलिगयो अरु बाह्य शरीरमिलो चाहत ॥ १० ॥

नायककोप्रच्छन्नाभिलाष ॥ यथा--सवैया ।

सुधिबुद्धिपटीद्युतिदेहमिटीदिनहींदिनचाहियेबाढ़तिसी ।
कछुकेशवआपनेपेटकीपीरदुरावतपैमुखकाढ़तिसी ॥
बिसर्योसुखभूंखसखी निशिनींदपरीचितचाहतआढ़तिसी ।
गिरिगोकछुगाँठिते छूटछबीलीसुकाहेतेंडोलतडाढ़तिसी ॥ ११ ॥

सखी चितचाहनाको जानति नाहीं ॥ कि याकी दशा विरहकी है नायका सों पूछ तिहै ताते प्रच्छन्न तीसरे चरणमें आढ़तिसीहै तहां आढ़तिमें चित्त बहुत लगो रहत या वयक्रममें बढ़ो चाहिये सो घटत जात याहीते कारणते कार्य्य विरोध सो पंचम विभ वनालंकार को रूप है ॥ ११ ॥

नायकाकोप्रकाशअभिलाष ॥ यथा--सवैया ।

जोकहौंदेखेलगेदिखसाध दिखावतहींदिनहीदुखपैहौं ।
याहीमेंकेशवदेखियेबोलन देखिहौं देखिसखी अबकैहौं ॥
जोउनकी दुरिदेखि हौंदेहज्योंआपनीदेहनदेखनदैहौं ।
देखिवेकोवहरावति मोहिंसुहौंवकहाकछुदेखहीलैहौं ॥ १२ ॥

नायका वचन सखीसों । जोहौंकहौंके देखेतोलगी है देखिये की साध अरु जो दिखावै तो दिनहींदिन ज्यादा दुःख पाइहों या हियेमें केशवका बोलन देखिये सो ॥ देख सखी अबकैसे देखिहौं अर्थ है सखी अंतर में रहत बाहिर नहीं काहे दिखात यों ऐसे उनकी दुरिके देह देखिहौं ज्यों आपजैसेआपन देह जो प्रत्यक्ष है सो न देखनदैहौं देख ...ी पाठ है देखिवेको जो मोहि बहरावत सोहौं है सखी सोहौं वकहाकछूदेखहीलैहुं

थवा सखीसों कहतहै कि तूजो मोको बहरावतहै सो तोहिं देखे दिखिबेकी साध लगीहै
रदेखिबोई सुहाइगो अरु तूमों कहं दिखावत में दिन दिन दूनो दुःखपाइहै तौमेरो
तोलदेख लीजे अबको देखि फेरन देखि हौं जो सखी बहरावत सो बहिरंग यातें प्रकाश
रंतु या अर्थ में रचना नाहीं है प्रेमालंकार जानियो ॥ १२ ॥

नायककोप्रच्छन्नअभिष ॥ यथा-सवैया ।

पाइँपरौंबलिजाउँमनोहरि आपुनसीनकरौअवताहू ।
देखेअघातनहींतिनकेफिरिवारिकधौंअनदेखहीजाहू ॥
मोसोंकहीसुकहीअबकेशव कैसहुँकान्हपत्याउतकाहू ।
डाठहुगेजुकहूंकइतीरुचतातोहौंनिकसिराइधौंखाहू ॥ १३ ॥

उक्ति नायकसों सखीकी। नायक कही तूजायकै मोहिं दिखायदे सोसुन सखीकहति
के तिहारे में पाँइ परतु तुम घरजाहु हे मनहरण आपुनीसी ताको न करो अर्थ जैसे
ोग तुम्हें कुचाली कहत तैसे वाकोमति कहवावो आपुसमान भी पाठ है दिनभर देख
अघाने नाहीं फिरकईवार अनदेखे जैहौ मोसों कही सो कही आनको कौनहूं ठौरमति
पतियावहु जो ऐसी तिहारीरुचि है तौका जरिजैहौ ताते सिराइखाउ बढ़ती रुचिभीपाठहै
अलंकार प्रेमा ॥ १३ ॥

नायककोप्रकाशअभिलाष ॥ यथा-सवैया ।

हैकोउमाईहितू इनको यहजाइकहैकिहिंवायुवहैहैं ।
न्यारहीकेशवगोकुलकीकुलटाकुलनारिननाउलहैहैं ॥
देखिरीदेखिलगाइटकीइत सोनोसोघालिजुचाहिरहैहैं ।
कोहैरीकोजैसेजानतनाहिं नकाल्हिहीवाकेसंदेशकहेहैं ॥ १४ ॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति । नायक को सुनाय दोईसखी बहिरंग आपसु में कहतिहैं
किइनको कोऊ हित करताहै यहबातकहैएकौन वायुमें बहैहें देखि न्यारि ही गोकुलकीकुलटा
अरु कुलनारिन इन के नामलयेहें न्यायहोंभी पाठहै तहां नीतिते नामपायो है देखिर
तूसोनोसोवालिकेचाहियेरहे हैं सोनो सोघालि ज्योंडारिरहैहं इस पाठमें जैसे सुवर्ण
डार कोई देखत रहें याको यह अभिप्राय है एक तो सुनारसोनेकोतपाय देखिरहत है
अर्थ अग्नि में डारके भले बुरेको पहिचान करतअरुठग मार्ग में सोनो डारिकै टक
लगाए रहत जो याको उठावै ताको मैं पकरौं यह बचन सखी सों सुन नायक कही कि
कैहै री कौहै तबसखी कही तुम नहीं जानत किकौन कीबातहै ऐसे अजान ह्वैगयेहो
कालिहही काके तुम संदेशोकहे सो में सुनत रही उत्तरालंकार ॥ १४ ॥

पुनः सवैया।

केशवनैननिलागिहैज्योंवहमूरुहैप्रेमअदृष्टबढ़ावै।
क्योंवहकामकलामिलैमोहिंसुतौमनमूढ़उपाउनपावै॥
कीजैकृपाबुधिदीजैबुधीशजूराधिकाके उरमें यहआवै।
लागतिज्योंकबहूंकबहूं मुखचारकज्योंमुखसों मुखलावै॥ १५॥

यह कवित्त केशवकौ बनायौ नहीं है काहूऊपरतेलिखिदियो याते हमारेशिष्य नारायणदासकविनेयाकोअर्थनहीं लिखो॥ १५॥

अथचिन्तालक्षण।

दोहा–कैसेमिलियेमिलेहरि, कैसेधौंवशहोइ।
यहचिंताचितचेतकै, वर्णतहैंसबकोइ॥ १६॥

कौनभाँति सों मिलियेजामें हरिमिलें अरु कैसे कि वश होइ यह चिंता को जोचित चेते चितवन करे ताको चिंतादशा सब कोई वर्णन करतहें प्रश्न नायका नायक दोनों की चिन्ताचाही यामें प्रश्ननायका मात्रकी होतहे तहां उत्तरसब कोई वर्णनकरत चिन्ता चित्तमें चेतके या ते दोहु न की आई॥ १६॥

नायककोप्रच्छन्नचिंता॥

दोहा–आपुनहींतूआपनो, होतनदेखेजाहि।
आपुनहोतेआपुनो, क्योंमनकरिहैताहि॥ १७॥

नायका मनसों कहति याते प्रच्छन्न जानियें हेमन तू आपु नहीं है कहा आपन नहीं है काहे देखत तू जातरहत है सो मैं बुलाये तौ पराये को कैसे वश करिहै अथवा मनको व्याकरण में नपुंसक लिखोहै सो तू मन नपुंसकनहीं है काहे देखतपरसंग जातहै इहां आपु नहीं ते यह शब्द अधिक है ताको अभिप्राय यह कि बली होय सो वश करै तू ही आपुन पै समुझिकि में अबल हों काहेते अबलाकोमनहै याते नायका की चिन्ता इहां आपु आपु पद एक अर्थ भिन्न ताते लाटानुप्रास है॥ १७॥

नायकाकोप्रकाशचिंता। कवित्त।

प्रेमभयभूपरूपसचिवसकोचशोचविरहविनोदपीलपेलियतप-
निके। तरलतुरंगअविलोकनिअनंतगतिरथमनोरथरहेप्यादेगुनग-
निके॥ दुहूं आरपरीजोरघोरघनीकेशौदासहोइजीतकौनकोकोहारै
जियलचिकै। देखततुम्हें गुपालतिहिकालउहि बाल उर सतरंजके-
सीबाजीरासीरचिके॥ १८॥

प्रेम अरु भय एतौ भूप कहे सो होतहींहैं अरु शोच संकोच मंत्री सोभीहोतेहैं अरु विरह विनोद फीलकहे सो चार चाही एक प्रश्न यह है अरु विलोकन में चारि प्रकार कहाँ यह प्रश्न दूजी है रथ मनोरथ चारि कहां यह तीसरी प्रश्न है अरु गुण प्यादा सोरह कहां यह चौथो प्रश्न है तहां ऐसो उत्तर वारो अर्थ करत प्रेम भय ये दोऊ राजा हैं प्रेम भय भूप ये तौ पाठमें रूप सचिवहै प्रेमकी आकृति ये दोऊ सचिवहैं मंत्रीहैं अरु संकोच शोच अरु विरह विनोद ये चारयौ पीलहैं अरु तरल तुरंग कहा घोरे कौनहैं अविलोकनि किन की शोचकी संकोचकी विरहकी विनोद की ये चारो जो ऊपर कहे ये जब नेत्रन में आवें तब इनकी अवलोकन चार भांतिकी ह्वैजाइ तेई तुरंगहैं कैसेहैं तुरंग अनंतहैं गति जिनकी यह तुरंगन को विशेषण है फेर इनचारों अवलोकननायकाकी मन की बात जानी परति है कि मनमें यह मनोरथ है सो बेचारो मनोरथ रथभये रथ मनोरथ या पाठ में रहे प्यादे गुण गनिकै अब प्यादा सोरह चाही सो यह बातें सबतें ऊपर कहो ते सोरहहैं द्वै भूप द्वै सचिव चार फील चार तुरंग चार रथ येजोहैं सबसोरह तिनके गुण जब विचारियत हैं प्रेममें गुण कहा प्रेमवती नाम पायो १ भय में गुण ण कहाहैं शीलवतीनाम पायो २ सो शील गुणहै गुण चौबीसहैं सो हमारो कियो न्याय क्तावली की भाषा न्यायप्रकाशिका मेंहैं ताकी व्याख्या कविप्रिया के तिलक में ारायण कवि लिख चुके प्रेमकी आकृति ते गुण कहाहै प्रेमकी प्रतीति सबनको ावै ३ भयकी आकृति में गुण कहाहै शील की प्रतीति और निको आवै ४ संको-में गुण कहा तिय को संकोच भूषण है ५ शोच में गुण कहा तियमें धर्मरीति जानी ाइ ६ विरह गुण कहाहै सुतती दर्शन देय ७ विनोदमें गुण कहाहै मीतवेग भेंटै ८ ारहा विलोकन में गुणकहाहै सखी मित्रको दिखाये ९ अरु विनोदविलोकनमें गुण कहाहै कि सखी मित्र मिलावै १० संकोचअविलोकन में गुरु जन सराहैं यह गुणहै ११ ोचअविलोकनमेंशीलवतीसराहैंसोई गुणहै १२ दर्शनविलोकन में यह गुणहै कि न व्यथा नाशै १३ निजप्रतिष्ठामें लोकमें कहागुणहै लोक में स्तुति १४ भेटन के मनोरथमें मव्यथा नाशै यही गुणहै १५ कुलप्रतिष्ठामें परलोक सुधरै यहगुण कहे ऐसे सतरंजके ाउलिखे प्रकाश कैसे दुहूं ओर परी घोरानगर में घोरारा परीहै याते प्रकाशसो यामें संदेह हत बहुत बात परकीयाकी बहुत स्वकीया की यहतौपूरब अनुराग राख्यो चाही ऐसोप्रेम अरु भय २ भूप, संकोच शोच मंत्री, अरु विरहको विनोद पांचतरहको, तामें शाप ोनुरागमें नाहीं होत येचार पीत अरु तरल चंचल तुरंग यह अविलोकन श्रवण स्वप्नदो २ श्रवण तीन ३ प्रत्यक्ष ४ अरु रथ मनोरथ मनोरथके जे चारउपाय सामामित्रमिलन १ दामआनंदहै २ भेदलगाइ आपकी सखीको मिलाइ ३ दंडकुल कानि नाश करियो ४ अरु प्यादा १६ सोरह शृंगारयुत जाहिदेख आपु रीझो दुहूओर परी है ओर तुम्हारी ओर वाकी ओर घोरअतिशयघनीहै केशव राइ सोनाहीं जानतको बाजी जीतत को हारत तुमतौ नाहीं

मिलबो चाहत अरु यह चाहत सांदेसी तुमजीतत कै यह ऐसी बाजीको रूपकहै सवि- षय सायवव यातें सर्वांगवर्णन १७ ऐछी जिनकही तिनसे यह प्रश्न कि प्रेम अरु भय दो राजाहिं तौ दोहुन के सचिव केशवने वर्णनकै संकोचकुलकी अरु शोच मिलवकी तौ देईभांतिकी बाजी चाही तहां यह अर्थ कि विरह दोरीतिको एक प्रच्छन्न एक प्रकाश साई विनोद येई हैं अरु अविलोकन देसन कुललाज अरु लगनकी सोभी प्रच्छन्नप्रका- शतें ४ रीतिहिं ते घोरे अरु मनोरथ भी दोई एकहांसीतें डारियो दूसरे आपको देस्वे सोभी प्रच्छन्न प्रकाशतें ४ भये सोई रथहिं अपइनके जे गुणहैं ते प्यादेहैं प्रेमको गुण स्वरूपदर्शन एकभयको गुण एक नरहै याही रीतितें सब जान लीजै ॥ १८ ॥

नायककाकीप्रच्छन्नचिंता ॥ यथा-कवित्त ।

केशोदाससकलसुवासको निवासतनकहिकविभृकुटीविलासत्रा सछोलिहै । कसो हैसुदिनवड़भागीअनुरागीजिहिंइंगवाकेसंगसंगला गीलागीडोलिहै ॥ ऐसीहूहैईशपुनिआपनैकटाक्षमृगमदघनसारस ममेरेउरओलिहै । दीपके समीपपुनिदीपतिविलोकवहचित्रकैसीपु तरीसुक्योंहूहँसिबोलिहै ॥ १९ ॥

नायक हमसों कहत किंवा विचार करत ऐसोदिन है विधाता कौन हूहै केवा जो चित्र कैसी पुतरी है सोहँसिके मोसोंबोलैगी तोहँस बोलन के सब येअंग कहत कि अपनेरूप केगर्भतें सुगंधला उससमै कहैगी मेरीतन सकल सुवास को निवास है अन्यसुगंध काहेको लगावत वाकहत समय को जो भृकुटिनको विलासहै तासों मेरे तन में जो त्रास है ताको छोलडारैगी अर्थ जुदाकरि डारैगी अरु कौन दिन वह अनुरागी बड़भागी है है जा दिन मेरे इंग चेष्टा के संग चेष्टा करैगा अरु प्राचीन पुस्तकन में मेरे इगवाके संग लागि लागि डोलिहै यह पाठ है मृगमें कस्तूरी घनसार कपूर ऐसो श्यामसेत कटाक्ष नयननेश्यामता श्वेतताहै सोमेरे उरमें ओलि है डारी है यह कब है है प्रश्न अरु अभि- लाष को क्योंन कहियो उत्तर जहां विचारसों करे तहां चिंता जानिये मनसों बचन है याते प्रच्छन्न इहां पर्यायाअलंकार एक विषे जु अनेक को वास बहूपराजय सकल सुवास एक तन में जाके बसत है अरु कहूं मेरे अंग थाकेसंग लागिलागि डोलिहैं ऐसो भी पाठ है अरु मृगमद घनसार समतातें धर्मलुप्तालंकार ॥ १९ ॥

नायकाकोप्रकाशचिंता॥ यथा-सवैया।

राधिकाकीजननीकोजनीकोऊक्योंहूस्वयंवर वातजनावै। देवकुमारसेगोपकुमारनिमानदेदै वृषभानबुलावै ॥

केशवकेसहुँबालभलीबहुमालसुमेरेहियेपहिरावे।
तोहिसखीसमदेसँगवाकेसुक्यों यहवातसबैचनिआवै ॥ २० ॥
नायक वचन बहिरंग सखी सोंकि राधिकाकी माताकी सखी स्वयं वर बनावै अरु वृषभानु गोपन को आदरसों बुलावै अरु राधा मेरे गरमें जयमाल डारै अरु तोहि सखी समदै विवाद की निदाको कहत संगवाके वा राधा के संग ऐसी बात क्यों बनि आवत सखी अंतरंग होती तो यान कहते कि तोको संगदेहैं याते प्रकाश देव कुमारसेमें धर्मलुप्ता अलंकार अरु प्रेमीहै ॥ २० ॥

अथगुणकथनलक्षण।

दोहा–जहँगुणगणमणिदेहिंद्युति, वरणतवचनविशेप।
ताकहँजानहुँगुणकथन,मनमथमथनसुलेप ॥ २० ॥
जहां गुणगण मनमें राखे अरु द्युतिको वरण विशेष करिकै मन्मय का मलैसं करिकै ॥ २० ॥

नायकाकोप्रच्छन्नगुणकथन ॥ यथा–कवित्त।

कीरतिसहितनितकेशव कुँवरकान्हकेवलअकीरतिनृपतिसोम मानिये। छुवतचंपकपातकुम्हिलातजाततनअतिहरपितगातहरिजू को जानिये ॥ कोमलसुवासयुतप्यारेकेपरमपानिकंटककलितनालनलिनबखानिये। लोचनविशालचारुमदनगुपालजूकेमदनसरन दरशनरसहानिये ॥ २१ ॥
वक्ति नायकाकी मनसों। कि कुँवर कान्ह कीर्त्ति सहितहैं व्रजराजसदा द्युतिवान अरु सोम जो शशि है सो केवल अकीरत है एकतो ऋक्षराज सदाछीन कलंक युत दिन मलीन अरु चंपक पात छूवेतें कुंभिलातहै अरु हरिको गात अति हर्षित होतहै अरु प्यारेके पानकोमलहैं औसुवास युतहैं अरु नलिन कमल कंटक युतहैं अरु मदनगुपालके नेत्र विशालहैं मदन शरद रसतें हीन अर्थ मदन सरन में दर्शन रसनाहीं एकतो उनमें दृष्टि नहीं दूजे वे दीसत नहीं इहाँ नायकके गुण वस्तुते उपमानके दूषण ताते दूषणोपमा मनसों कहत याते प्रच्छन्न जानिये ॥ २१ ॥

नायकाको प्रकाशगुणकथन ॥ यथा–सवैया।

खंजनहैमनरंजनकेशव रंजननैनकिधौंमतिजीकी।
मीठीसुधारसकीसुधाकीद्युतिदंतनकीकिधौंदाड़िमहीकी ॥
चंदभलोमुखचंदसखीलखि सूरतिकामकी कान्हकीनीकी।
कोमलपंकजकेपदपंकज प्राणपियारेकीमूरतिपीकी ॥ २२

उक्तिनायकाकी बहिरंग सखीसों कि खंजन मनरंजनहैं कि नायक के नेत्रहैं मनरं
तूं जीकी मतिमोसों कहु मीठी सुधाकीहै कि सुधाधर अधरकीहै द्युति दंतनकी नीकी
कितौ दाड़िमहीकी है चंद भलोहै कि मुखचंदमूरति कामकी आछीहै कि कान्हकी कोम
कमलहैं किपदहैं तब सखीकहत कि प्राणपियारे की मूरति पीकी है जैसेकोई कहै यहदूध
पीको भये यामेंनाहीं बहिरंग सखीसों कहत ताते प्रकाश सखीके उत्तरतें उत्तरालंकार
मान उपमेयकी बराबरी के संबंधतें सारोपालक्षणा गुण कथनतें गौनी अरु सुधाधर
अधरको नाम नाहीं ताते रूपकातिशय उक्तिको संकरहै ॥ २२ ॥

नायककोप्रच्छन्नगुणकथन ॥ यथा-सवैया।

जोकहौंकेशवसोमसरोजसुधासुरभृंगनिदेहदहेहैं।
दाडिमकेफलश्रीफलविद्रुमहाटककोटिककष्टसहेहैं॥
कोककपोतकरीअहिकेसरि कोकिलकीरकुचीलकहेहैं।
अंगअनूपमवात्रियकेउनकी उपमाकहँ वेइरहेहैं॥ २३॥

उक्तिनायककी मनसों कहतहैं जोमुख चंदकी उपमा कहियेतो सोमके अंग सु
सुरति नदहहैं एककलानितलेतहैं सरोजकहो नेत्रनकी उपमाको तौ सरोजनकी भृं
दह्योहै अरु दाड़िम तौ वनमें शीत उष्ण वर्षा सहतहैं अरु कोकं आदि कुचीलहैं
ते उन अंगनकी उपमाको ये सब नाहीं इहां दूषणोपमा अरु अनन्वय को संकर है मन
कहत यातें प्रच्छन्न ॥ २३ ॥

नायकको प्रकाशगुणकथन॥ यथा-सवैया।

लोचनबीचचुभीरुचिराधेकीकेशवकेसहूंजातिनकाढ़ी।
मानहुमेरेगहीअनुरागिनिकुंकुमपंकअलंकितगाढ़ी॥
मेरीयोलागिरहीतनुताजनुयोद्युतिनीलनिचोलकीबाढ़ी।
मेरहीमानौंहिये कहुँसूंघतियोंअरविंदादियेमुखठाढ़ी॥ २४॥

नायक वचन सखीसों-कि लोचन के बीच में राधाकी रुचि मोहि चुभी है सो कढ़
नहीं कुंकुम पंकजो लगी है सो मानों मेरे अनुरागिन गहीहै कलंकित भी पाठ है अ
नील वसन नहीं जानो मेरी तनुता लगी है अर्थ अंगके रंगसों है मानों अरु जो य
कमल सूंघत सो मेरे हृदय कमल मानों हाथके लिये हैं ऐसे गुण देहद्युति वर्णतहैं सं
अरविंद लिये ठाढ़ीदेखी है यातें प्रकाश इहां वस्तुउत्प्रेक्षालंकार जानिये मानों दयाते२४॥

अथ स्मृतिलक्षण।

दोहा-औरकछूनसुहायजहँ, भूलिजाहि सबकाम।
मनमिलिबेकीकामना,ताहिस्मृतिहैनाम॥ २५॥

मनमें कामना और सब भूलि जाहि ध्यान सो लग्यो रहै सो स्मृति है ॥ २५ ॥

नायकाका प्रच्छन्नस्मृति ॥ यथा-सवैया ।

बोल्योसुहाइनखेल्यो हँस्योअरुदेख्योसुहाइनदुःखबढ़चोसो ।
नीकीयोंबातसुनै समुझैनमनोमनकाहूकेमोदमढ़चोसो ॥
केशवढूंढतयोंउरमेंमनमूढ़भयोगुणगूढ़पढ़चोसो ।
कोकरैसाजबजावैको बीनहिवाकोकछूचितचाकचढ़चोसो ॥२६

उक्ति अंतरंग सखी प्रति अंतरंगकी किवा नायकाकों बोल्योनही सुहात नखेलिबो
हँसबो न देखबो सुहाइ बढ्यो सो दुःख भयो है यह नीकी बात कोई कहैतो न सुनै
समुझै मनो काहूके मोदमें मन मढ्यो है मनमें कैसे ढूंढति है जैसे पढ़िके गूढ़ गुण मूढ
जाइ फेर ढूँढ़न लगे हमारो कहा पढ़ेहै को साज करै को बीन बजावै वाको मनतो
कसो चढ़ोहै इहां नायका को विरह वस्तुते व्याघात अलंकार सुखद दुःखदह
। चित्तको चाकचढ्यो सो बतायो स्मृतिदशा सखीने नहीं जानी याते प्रच्छन्न॥ २६॥

नायकको प्रकाश स्मृति ॥ यथा-सवैया ।

मेरेमिलायेहीयेमिलिहैंमनमोहनसोंमनमींहिनदीजै ।
मौनहिमौनवनैनकछू अवक्यों मनमानदकेरसभीजै ॥
ऐसहीकेशवकैसेजियौअहोपाननखाउतौपान्यौनपीजै ।
जानिहैकोऊकहाकरिहौ तवसोचिनएकतौसकोचतौकीजै ॥२७

सखी बचन नायका सोंजानजैहै कोऊ तब कहा करिहौ तब नायका कही यह शोच-
हीं काहे सब जानतिहैं तब सखी कही संकोच तो राखिये पान नाहीं खातीतो पानी
पीयो यामें लोग हंसिहै ऐसी निपटलीन रहतिहै पियसोंनायकाने कहोसब जानतिहीं
ही प्रकाश इहां उपादान लक्षणजहां आनकोगुण गहै तो पानीतें भोजन पान आयगये
मा उत्तराको संकरहै ॥ २७ ॥

नायककोमच्छन्नस्मृति ॥ यथा--सवैया ।

घोरिघनोघनसारघस्यो घनश्यामसुचंदनछै तन तूल्यो ।
केशवकुंजको कूल चितैप्रतिकूलभयेशुभफूलनफूल्यो ॥
भूलेसेडोलतवोलत हूं उतजात कितैमन संभ्रमभूल्यो ।
जानतिहौं यह काहुको आजुमनोहरिहारहिंडोरनझूल्यो ॥२८॥

सखी बचन नायक सों कि घोरके घने घनसारकपूर घस्योसो है घनश्याम सुगंधन
ल्प तुम्हारे चित्ततें तनकी तूल ह्वैगयो कहा श्याम ही ह्वैगयो अर्थ जरकर उठगयोअंग

कुंजको कूलभी तुम्हारे चित्ततें प्रतिकूल ह्वैगयो कैसोहै कुंज जो शुभ फूलनिफूल्यो तामें मन तुम्हारो संभ्रम भूल्योहै किंवा सब फूलनफूल्योभी पाठ है तहां प्रतिकूल व्हैगयो कहे सब फूलन फूल्यौ तिहारे विरह की तापते भूले से डोलतहो अरु बोलत हो उत कित जात हो मन भ्रमसहित करिकैसी मैं जानतहों तिहारो मन काहूके मनोहरहिारकें झूलमें झूलोहै इहां सखी अनुमान कर कहत ताते प्रच्छन्न अनुमानालंकार अरु कोई यह प्रश्न करत जौ नायकको मन संभ्रम भूल्यौ कहिये तौ हारहिंडोरा निर्धार सखी ने जान्यो तो प्रकाशही ह्वैगई जो कहै मेरो मन संभ्रम भूल्यौ तौ प्रच्छन्न है तहां मन शब्द एक ओर चाही हार हिंडोर कौन झूल्यो है। उत्तर–चित्तेको अर्थ चितही तुम्हारो प्रतिकूलभयो है कुंजके कूलते अरु चित्त हीं उहां लग्यो हार हिंडोरा झूल्योहै कै यह मेरे मनसंभ्रम है सखी स्मृतिदशा निर्धार नाहीं जानति यातें प्रच्छन्न अलंकारव्याघात ॥ २८ ॥

कृष्णको प्रकाशस्मृति ॥ यथा–सवैया ।

वासनवासभयोविसकेशव डासनडासनकीगतिलीने ।
चंदनचांदनीज्यों चितचाहेन चंद्रकवंदचितारसभीने ॥
पाननखातन पानकरैकछुहांसविलासविदाकरदीने ।
ऐसीहैगोकुलकोकुलकी जिनिगोकुलनाथकेजेढंगकीने ॥ २९॥

घोंसनंवस्त्रवास सुगंधडांसनविछौना डांसडांससखी यदिरंगहै सोजानति नायकतो नहीं जानत यत प्रकाश इत्यादि चिता समानते चंद्रकपूर व्याघाताऽलंकारजानिये॥२९

अथ उद्वेगलक्षण ।

दोहा–दुखदायकव्हैजातजहँ, सुखदायकअनयास ।
सोउद्वेगदशादुसह, जानहुकेशवदास ॥ ३० ॥

सुखदायक अनयास दुःखदायक होजाय सो उद्वेग की दुसह दशा है ॥ ३० ॥

प्रियाकोप्रच्छन्नउद्वेग ॥ यथा–सवैया ।

चंदनहीविषकंद हैकेशवराहुयहीगुणलीलिनलीनों ।
कुंभजपावनजानिअपावनयोसेपियोपचिजानिनदीनों ॥
यासोंसुधाधरशपविषाधरनामधरोविधिहेविधिहीनों ।
सूरसोमाइकदाकहियेजिनपापलैआपमराचरिकीनों ॥ ३१ ॥

इतिनायककीमनशो । कहत कि चंदनहीहै विषकी मरहै राहु यह गुणते लील नहीं सकहूमेंहु कुंभज वहै पवित्र तिनपान कियो तातें अपवित्रके धोखे ते पियो पचि नजान दियो सा मों तौ सुधा अमृतधर कहत अरु मैं विषधर याहि शेष हजार मुख

ी क्षमा धारण करें यह एक मुखते लाख वियोगिनी को नाश करतहै सो विधि सिख
विधि हीन है बुद्धिहीन पाठ में बुद्धि ते हीनहै परंतु सूर्य सों काकहिये ऐसे पापीको
आप बराबर करो यामें कोई यह प्रश्नकरै कि चंदसों दुःख पायो अरु शेषसों कहासुख
पायो जो कहति याको विषधर क्यों कह्यो अरु सूर्यने बराबरि कहाकियो सूर्यलोक
उष्णहै चंद्रलोक शीतल है अथवा सूर्यदिनकर चंद्रनिशिकर यह विरुद्धहैं ताको उत्तर
यहहै कि शेषके मुख हजारहें तो मुखते महादुःख देनहार जो पवन है ताको भक्षण
करत याते हितकारी कह्यो अरु सूर्य चंद्रमाकी कला मिलाइलेत अमावसको आपुने
बराबर धारण करतहैं याते चंद्रमा सूर्यके बराबरि भयो पापीको बराबर आपक्यों कियो
यहाँई व्याघात प्रतिषेधालंकार पूर्ववत् है ॥ ३१ ॥

नायकाको प्रकाशउद्वेग ॥ यथा-सवैया।

केशवकालिहविलोकिभजीवहआजुविलोकेविनासौमरैजू।
वासरवीसविसेविषमींडियेरातिजुन्हाईकीज्योतिजरैजू ॥
पालिकतैंभुवभूमितैंपालिकआलिकरोरिकलापकरैजू।
भूषणदेहिकछूव्रजभूषणदूषणदेहिकोहेरिहरैजू ॥ ३२ ॥

सुगम। सखी नायकसों कहतहै कि काल विलोके आजु विन विलोकें मरतिहैं बासर
(दिन) में विष में मीजी रहत अरु रातितौ जुन्हाई की ज्योतिते जरीजात जे पालिकहैं
तिनते भुव भूमि ते पलिक हो रही है आलीकरोर कलापकरतिहै वहिरंग सखी ते प्रका
शकाहे नायकाके समाधान हेतु भूषण मांगत वाके मनकी बात नाहीं जानति अंतरंग
सखी होती तो नायकको लिवाय जाती ताते तुम हे व्रजभूषण वाकेनिमित्त भूषण देहु जा-
में वाकी देहको दूषणनाश होहि पालिकतेभुव भूमितेपालिक आली करोरि कलालि
करैजू या पाठ में अत्यंतउद्वेग है अलंकार व्याघात ॥ ३२ ॥

नायकको प्रच्छन्नउद्वेग ॥ यथा-सवैया।

मेघनज्योंहँसिहंसनहेरतहंसनज्योंघनरूपनपावैं।
कंजनज्योंचितचंदनचाहतचंदनज्योंकंजनिक्योंहुँछ्वैं ॥
तालतैंबागनिबागतैंतालनितालतमालकोजातनिसावैं।
कैसीहैंकेशववेयुवतीसुनिऐसीदशापियकीपलजीवैं ॥ ३३ ॥

नायका सखिन में बैठी है तहां अंतरंग सखी प्रस्ताव ते पियकी बात नायकाको
सुनाइकै कहत है किवे युवती कैसी हैं जे ऐसी दशा सुनिकै नायक की पल आर जीवती
हैं अर्थ नायक कीदशा ऐसी है तू जायकै मिल नायक की दशा भेष हंसको परस्पर
वैर है तैसे मेघन की रीति ते हंस हंसनकी रीति ते मेघन देखत है कंजन की रीति ते

चंदनहीं हेरत अरु चंदनकी रीतितें कंज नाहीं परसत तालके बागनमें आवन अरु बागते तालन में अरु जहां ताल तमाल दोई हैं ॥ तहां नाहीं जात याते संकेत सूचित प्रस्तावते करो ताते प्रच्छन्न है जो सखी अंतरंगते अलंकार व्याघात पूर्ववत् ॥ ३३ ॥

नायकको प्रकाश उद्वेग॥यथा-सवैया ।

शोचिसखीभरिलेतिविलोचनकांपतदेखतफूलेतमालहि ।
भूलेसेडोलतबोलत नाहिंनबागगएकिधौंतेरेईतालहि ॥
देख्योजुचाहतिदेखे नआवतिऐसेंमेंहोंनदिखावरीलालहि ।
आजुकहादेखेसाधिलगोजबदेख्योसुहाइकछूनगुपालहि ॥३४॥

उक्ति बहिरंग सखी की नायका प्रति।शोच ते नेत्र भरि२लेत अरु फूले तमाल कों देखिके कंपत भ्रमेसे डोलत कबहूं तेरे बागमें कबहूं तेरे तालपै और देखे चाहत सो नाहीं देखिपरत ऐसी में हों न दिखाऊंगी लालको आजु तुम्हें कहादेखिबेकी इच्छा लगी है जब गोपालको कछू नाहीं सुहात इहां सखी बहिरंग है देख्यो जु चाहत याते प्रकाश ते अलंकार पूर्ववत् ॥ ३४ ॥

अथ प्रलापलक्षण ।

दोहा-भ्रमतरहैमनभौंरज्यों,हेतनमनपर ताप ।
वचनकहैप्रियपक्षसों,तासोंकहतप्रलाप ॥ ३५ ॥

मनतौ भ्रमत रहै अर्थ एकजगह थिर न रहै अरु वचनकहै सो वचन व्यर्थ कहै ॥ प्रश्न अमर कोशमें यह कह्यो है "कि प्रलापोनर्थकंवचः" । तो प्रलाप कहिये वृथा बचनको नाम भयो सोया लक्षण में नाहीं निकसतउत्तर-प्रियपक्ष वचन कहै अथवा प्रियपक्ष को ऐसो अर्थ कीजिये कि जैसो जाको व्यसन होइ सोई बकिबे में आवत है "भावत है मनमें सदा" ॥ हेतनमन परिताप ऐसो भी पाठ है ॥ ३५ ॥

नायकाको प्रच्छन्नप्रलाप ॥ यथा-सवैया ।

खेलनहाँसिनखोरिअटाउनहेतुनबैरहियौकँपैहोसों ।
लेनोनदेनो हलाउभलाउरनातोनगोतोकहाकहौंतोसों ॥
आनिदियौसुखमेंदुखकेशवकैसेहँसोरीकहाकहिकोसों ।
नैननिनीरभरेकहैग्वालिनिदेख्योतैंकान्ह कहाकह्योमोसों॥३६॥

सखी बहिरंग आन सखी सों कही इन ग्वारिन कहा कह्यो मोसों सो मैं न जानी जो नायकाने प्रलाप के वचन कहेहैं आइके सखी सों सो ऊपर ते बचन नायकाके हैं पर वृथावाकेहैं खेलन हांसी यह ऊपर कह्यो है "बैरु न हेत दियो का परसा" भी पाठ

रु "कहति कैसे हँसोरी कैसे सहोरी" भी पाठ है॥ अरु कहा कहि कोसों देखो तो कान्ह सब पद अलग्रहैं ताते प्रलाप अरु इन सखी कछू न समझेउ याते प्रच्छन्न परंतु में प्रलाप मात्र निकसत वचन नाहीं है तहां नायका कहति देखतो कान्ह मोसोंकहा द्यो मिलनो कि नाहीं "नैनभरी भरी ग्वालि कहै अलि" यह भी पाठ है अलंकार पूर्व- ॥ ३६ ॥

नायकाको प्रकाशप्रलाप॥यथा–सवैया।

आलिनमांझमिलीहुतिखेलति जानैकोकान्हधौंआयेकहातें।
डीठिहिडीठिपरचोन कछूमुढिठाइगहीहठिपीठकीघातें॥
गइगडिलाजनहींहियहौंतोउठीजरिकोसवकाँपनीयातें।
इतीरिसमैंनसहीकवहूँपैरहीवचिहौंअंखियानकेनातें॥ ३७॥

सब वचन नायका के बहिरंग सखी न पति॥ नायकाको देखि जो सात्विक कंप सो ताको छपावत कि आजु में आलिन में खेलत रही तबलौं कोजानै कान्ह कहां ते ए सो जब सों डीठ डीठ सामुहे भई तब ढिठाई वाने गही हठ पीठ कीघातते तब लाज में गडि गई अरु जरि उठी ताहीते कांपति हों अरु इतनी रिसमें नहीं सही कवहूं पै बचिगई केवल आंखिन के नाते ते इहां प्रीति दुरावति है अरु सबसों कहति है ते प्रलाप में प्रकाश विरोधाभास अलंकार बरि उठी गडिगई यहविरोध सो लगत प्रला- अविरोध है॥ ३७॥

नायकको प्रच्छन्नप्रलाप॥ यथा–सवैया।

नीलनिचोलदुराइकपोलविलोकतिहौंकियेओलिकतोही।
जानिपरीहंसि वोलतिभीतरभाजिगई अविलोकतिमोही॥
वूझिवेकी जकलागीहैकान्हहिकेशवकेरुचिरूपलिलोही।
गोरसकी सों ववाकीसों तोहिकिवारलगीकहिमेरीसोंकोही॥३८॥

उक्ति अंतरंग सखी की कि आजु मोहिदेख नील निचोल वस्त्र ते कपोल दुराइ हिदेखि भाजगई अरुमोकों यह जानिपरी हँसि कि भीतर बोलति है कान्ह को जक वेकी लगी है कि रुचिरूपलिलोही लालची होइके मिलोहों भी पाठहै सो तोकोंसप- है कि धारलगी सो कहकोरही ऐसे मोसोंकहत रहै. यहां जान परी अरुकोही दोऊशब्द विरुद्धहैं याही ते प्रलाप सखी अंतरंग ते प्रच्छन्न स्वभावोक्ति अलं- र॥ ३८॥

नायकको प्रकाशप्रलाप॥ यथा–कवित्त।

मोहनमरीचिकासोहांसघनसारकेसो वास मुख रूपकेसोरेखाअ दातहैं। केशोदासवेणी तोत्रिवेणीसीवनाइगुहीजामेंमेरे मनोरथभु

निसेअन्हातेहें ॥ नेहउरझेसेंनैनदेखिबेकोबिरुझेसेबिझुकीसीभौंहेउ-झकेसेउरजातेहें । देवीसीबनाईविधिकौनकीहैजाइयहतेरेघरजाईआ ज्ञुकहिकैसीबातहै ॥ ३९ ॥

यहांजो बातें कहत है सो सब अभिलाषेहें ताते प्रलाप के नेहुमें उरझेसे नयन यामें नायका नेहवती जाके वै नउरझे प्रेममें अरु उरझे से उरजातेहें यामें मुग्धा वय संधिमें प्रलाप अरु तेरे घर आई जोसो कहत है सो बहिरंग याते प्रकाश मोहनमरीचिका सो हास यामें पूर्ण उपमा हाँसि उपमेय मोहन धर्म सो वाचक मरीचिका उपमान घन-सार कैसी वास में लुप्तावात सुपरूपकी भी पाठहै ॥ ३९ ॥

अथ उन्मादलक्षण।

दोहा–तरकिउठैपुनिउठिचलै, चितैरहैसुखदेखि ॥
सो उन्मादगनावही, रोवैहँसैविशेखि ॥ ४० ॥

तर्कना करै उठिचलै चितैरहै सुख देखिके अर्थ सुख न मानै ॥ ४० ॥

नायकाको उन्माद ॥ यथा–सवैया।

केशवसुबुद्धि सिद्धहरि तुम बिनवृथा अगाधराधिहिवाढ़ी।
छूटीलटलटकति काटि तटचितवतिनीठनीठकरठाढ़ी ॥
तरकितोरतितनुतलफतिअतिअपारउपचारनिडाढी।
सकसकांतिलैश्वास अचेतसुचेतहुप्रेमप्रेतगहिगाढ़ी ॥ ४१ ॥

सुबुद्धि सिद्धि हरि ए तीन शब्दसंबोधन के काहूको कहे ऐसी कोई कहै तहां सखी अंतरंग है सब नायक नायका के भेद जानतिहै कि तुमकहो वाको कछू व्याधि भो-हूहै सो सखी कहति तुमको सब सुधि बुद्धिहूहै अथवा तुम सुसुंदर विधिबुद्धिवारे हो जोरोग है सो जानत हो कदाचित्कहो हम कैसे जाहिं आन के घरमेंतो तुम सिद्धहो सिद्धजहां चाहै तहां जाय कहो पीर कैसे हरेंतो तिहारो नाम हरिहै हरणकरताहो अंतरंग सखीने प्रच्छन्न प्रेम प्रेतको रूपक अरु सुबुद्धि विशेषण हरि साभिप्राय है ताते परि-करांकुर अलंकार " केशव सुधि बुद्धि रहे तुम्हें बिनु विथा अगाध राधिकहिवाढ़ी" भी पाठ है ॥ ४१ ॥

नायकाको प्रकाशउन्माद ॥ यथा–सवैया।

केशवचौंकतिसीचितवैछितिपांधरकैतरकैतकिछाँहीं।
बूझियेऔरकहैमुखऔरसुऔरकीऔरभईछणमाहीं ॥

डीठिलगीकिधौंबाइलगीमनभूलिपरयोकैकरयौकछुकाहीं।
घूँघुटकीघटकीपटकीहरिआजुकछूसुधिराधिकैनाही ॥ ४२ ॥

सुगम। सखी बहिरंग ताते प्रकाश संदेहालंकार ॥ ४२ ॥

नायकको प्रच्छन्नउन्माद ॥ यथा–सवैया।

गूढअगूढप्रकाशितवात निलोकअकोलककीवातसरीसी।
रोवतहैकवहूंहंसिगावतनाचतलाजकीछाँहछरीसी ॥
काहूकोशोचुसकोचुनकेशवदेखतिआवतिदेहमरीसी।
वामकिवाइकिकामकिवाइकिहैहरिकीमतिकाहूहरीसी ॥ ४३ ॥

यामें सखी निश्चय नाहीं करी कि कहाभयो ताते प्रच्छन्नसंशयालंकार ॥ ४३ ॥

नायकको प्रकाशउन्माद ॥ यथा–कवित्त।

सजलचकितचितवतचितचहूंदिशि,चाइचाइरहैंमुखचपलचलत-धाइ। शोचतसेमनमनकंपततपततन केशोदासरोवतहँसतउठै-गाइगाइ ॥ चलहिदिखाऊंतोहिदेखतहीभयोमोहिं भयोसुकहनआई ऐसोंकलिअकुलाइ। जैसेकछुअकवाकुबकतहैंआजु हरितैसेजिन-विमुखकाहूकोनिकसजाइ ॥ ४४ ॥

सखी बहिरंग है कहति कि चलि तोकों दिखाऊं ताते प्रकाश जात्यलंकार ल० जैसो को रूपगुण कहिए तैसा साज ॥ यहां सजल चकित ए भाव कहे ताते भाव सब ॥ ४४ ॥

अथ व्याधिलक्षण।

दोहा–अंगवरणविवरणजहां, अतिऊंचोउश्वास ॥
नैननीरपरतापबहु, व्याधिसुकेशवदास ॥ ४५ ॥

सुगम ॥ ४५ ॥

नायकाको प्रच्छन्नव्याधि ॥ यथा–सवैया।

वैनतज्योउनवीनतैंवोल्यौनवोलिविलोकतिवुद्धिभगीहै।
वैनसुनैसखुझैनलुवातहिप्रेतलग्योकिधौंप्रीतिजगीहै ॥
केशववेतुहितोहिरटैंरटतोहिइतैउनहींकीलगीहै।
वेभपैपाननपानीनतूसुतौकान्हठगीकितूकान्हठगीहै ॥ ४६ ॥

सखीसंशय करतिहै कि तोकों कान्हनेठगेहैं कितुं कान्हकोठगे यह संदेहते प्रकाश संदेहा को संकर अर्थ सुगम ॥ ५६ ॥

नायकाको प्रकाशव्याधि ॥ यथा–सवैया।

उनकेतनतापतेंतापियेह्यांइनकेतनतोअंशुवानअन्हैयें।
व्हाँउनकेउड़जैयेउसासनिह्यांइनकेउपचारउडैयें॥
केशववृषभानलड़ीनँदलालनएपैनिदाननपैयें।
एकहींबेरदुहूंनिकहाभयो माईयहैचलिदेखिडरैयें॥ ४७॥

आंशू स्वास ते व्याधि दोउन को ताते न्यारो न जानिये प्रेमालंकार॥ ४७

अथ जडतालक्षण।

दोहा–भूलिजायसुधिबुधिजहां, सुखदुख होयसमान।
तासोंजडताकहतहैं, केशवरायसुजान॥ ४८॥

सुधि बुधि भूलजाइ सुख दुःख समान होय सो जड़ता॥ ४८॥

प्रियाको प्रच्छन्न जडताज॥ यथा–सवैया।

खरेउपचारखरीसियरीसियरेतैंखरोईखरोतनछीजें।
ऐसेमेंऔरकिएतंकछूउपजैतैंसकेलकहाहमलीजें॥
देखतहींयहकामलताकुम्हिलानियेजातिकहाअवकीजें।
कौनपैजाउँकहाकरौंकेशवकैसेजियेवहक्योंहमजीजें॥ ४९

सखी अंतरंग है ताते प्रच्छन्न जड़ता कहतहैं खरे उपचारते शीतल ताते एते खरी ऐसे में आन करें तो आन होजाइ इत्यादि पद सब सुगम पंचम विभावना कारण कार्य्यविरुद्धते॥ ४९॥

प्रियाको प्रकाशजड़ता॥ यथा–सवैया।

अंसियानिमिलींसखियांनिमिलीपतियानमिलीनतियांतामें
ध्यानविधानमिलीमनहींमनज्योंमिले एकमनोमिलसोने॥
केशवकैसहुंवेगिमिलौतनव्हैहैवहैहरिजोकछुहोने।
प्राणप्रेमसमाधिमिलैं मिलिजैहै तुम्हैं मिलहोतनकोने॥ ५

मनोरथ मो मैं मनोमयदै कि सोनेसो मिलेज्यों एकमे मती देरी पर तुम मिलै तुम्हैं मिलवैहैं तन कोनको मिलिहै अर्थ कि समाधिसी भई है प्राण तुम्हें ध्यान करि संनिपात के संगमिली यामें प्रकाश प्रेमालंकार॥ ५०॥

नायकको प्रच्छन्नजड़ता ॥ यथा-सवैया।

पलही पलशीतलहोतशरीरविचारेसबैउपचारनिदानें।
जोकरियेतनखंडनमंडनचित्तकछूसुखदुःखनआनें॥
केशवकानसुनैसमुझैनहिंबूझियकौनहिंकोयहमानें।
योगलियोकैवियोगहैकाहुकोलोगकहाइन रोगनिजानें॥ ५१॥

सुख दुःख चित्त नहीं समुझै है यह जड़ता जोगहै कि वियोगहै यातें प्रच्छन्न संदेहालंकार॥ ५१॥

नायकको प्रकाशजड़ता॥ यथा-सवैया।

कान्हकेआसन वासन हीन हुताशनमीतकोप्रासनकीजे।
केशव इंद्रिय सोधिसबैमन साधिसमाधिनकेरसभीजै॥
जौलोंभये हरिसिद्धप्रसिद्धनतौलों विलोकिअलोकनलीजे।
देवीकरैतपितोलगिवैवरदाननजोजियदानतोदीजे॥ ५२॥

हुताशन मीत पवन को प्रासन भोजन करत है और समाधिके सरसभीजेहैं इहां जड़ता कहीतो लगि तप करें हैं यामें अपन जानि वो जतायो सो बहिरंग है संभावनालंकार जो वरदान नहीं तौ जियदानहूँ दीजै जो तौ ए शब्द पूरे॥ ५२॥

अथ मरणलक्षण।

दोहा-बनेनकेहूंमिलनजहँ,छलबलकेशवदास।
पूरण प्रेमप्रतापतें,मरनहोहि अनियास॥ ५३॥

सुगम॥ ५३॥

दोहा-मरणसुकेशवदासपै,वरणोंजाइनिमित्त।
अजरअमरतासोंकहैं,कैसेप्रेतचरित्त॥ ५४॥

'अजर अमर जस करि कहौं' भी पाठ है सुगम॥ ५४॥

दोहा-रतिउपजैरमनीनके,पहिलेकेशवदास।
तिनकी इंगितजानसखि,करतसुप्रेम प्रकाश॥ ५५॥

सुगम॥ ५५॥

दोहा-अति आदरअतिलोभतें,अतिसंगतितेंमित्त।
साधुनिहूंकोहोतिहै,केशवचंचलचित्त॥ ५६॥

सुगम॥ ५६॥

दोहा–सुभगदशादशमेंकही, उपजेपूरनराग ।
जिहिंविधि उपजेमानमन, बरनहुं सुनहुं सुभाग ॥ ८७॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइंद्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां विप्रलंभशृंगारपूर्वानुरागवर्णनं नामाष्टमःप्रकाशः ॥ ८ ॥

सुभग दशा दशमें कही हैं कि पूरनराग कहिये प्रीति उपजे है अब जिहिं विधि तै मनमें मान उपजे सो बरणत हौं हेभाग्यमानपुरुष सुनो ॥ ५७ ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञाभिगामिललितपुरानिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण विरचितायां रसिकप्रियायां भूषणे सुखविलासिकानामटीकायां दशदशावर्णनं नामाष्टमःप्रकाशः ॥ ८ ॥

अथ नाम लक्षण ।

दोहा–पूरणप्रेमप्रतापते, उपजपरतअभिमान ।
ताकीछबिकेछोभसों, केशवकहियतमान ॥ १ ॥

सुगम ॥ १ ॥

दोहा–मानभेदप्रकटहिंप्रिया, गुरुलघुमध्यममान ।
प्रकटहिंप्रीयप्रियानप्रति, केशवदाससुजान ॥ २ ॥

सुगम ॥ २ ॥

गुरुमान ।

दोहा–आनिनारिकेचिन्हलखि, कैसुनिश्रवननिनाउ ।
उपजतहैगुरुमानतहँ, केशवदाससुभाउ ॥ ३ ॥

सगम ॥ ३ ॥

नायकाको चिह्नदर्शन प्रच्छन्नगुरुमान ॥ यथा–सवैया ।

आजुमिलेवृपभानकुमारिहिनंदकुमारवियोगवितैके ।
रूपकीरासरस्योरसकेशवहांसबिलासनिरोसरितैके ॥
बागकेभीतरदेखिहियेनखनैननवाइरहीसुइतैके ।
फूलहिमेंभ्रमभूलिमनोसकुचेसरसीरुहचंदचितैके ॥ ४ ॥

वृपभानु सुताको नन्दकुमार वियोग बिताइ मिले रूपकी राशि सों नायकासों रस्यो बहुत अर्थ रस लियो अरु हास बिलास रोस रीतिके फेर बागमें आन तियाकी देखी तब नयन कैसे नवाये जैसे कमल चन्दको देख संकोचि जाय हां

रीस रीतैंकै कहा लघुमान छुटाइ अंतरंग अंतरसों कहत याते प्रच्छन्न उत्प्रेक्षा अलंकार "बागेके भीतर देखिहियेनखरेख बनाइ रही" भी पाठ है ॥ ४ ॥

नायकाको प्रकाशगुरुमानश्रवणते ॥ यथा-सवैया ।

बूझतहीवहगोपीगुपालहि आजुकछूहँसिकैगुणगाथहिं ।
ऐसेमेंकाहूकोनामसखीकहिकैसेधौंआइगयोव्रजनाथहिं ॥
खातिखवावतिहीजुबिरीमुरहीमुखकीमुखहाथकीहाथहिं ।
आतुरव्हैउनआंखिनतेअँशुआनिकसेअखरानिकेसाथहिं ॥ ५ ॥

गोपकुमारी बूझत बतरात रही नन्दनन्दनके साथ ता समय हरिके मुखते आन गोपी को नाम निकसो सो सुनि जो बीरी खात खवावत रही सो जहां की तहां रहिगई अरु उन अखरान के साथ अँशुआ निकसे तौ सहोक्ति अलंकार कह्यो चाहिये परंतु इहां अपर कारण अँशुवा कारजकी चपलता है ताते चपलातिशयोक्ति जानिये ॥ ५ ॥

नायकाको प्रच्छन्नगुरुमान ।

दोहा-लोकलीकउल्लंघिकछु,प्रियाकहैजयबैन ।
उपजतहैगुरुमानतहँ,प्रीतमकेउरऐन ॥ ६ ॥

लोक की मर्याद उल्लंघके नायका कुछ बात कहै तहां गुरुमान प्रीतमके उररूपी घरमें उपजै ॥ ६ ॥

कृष्णको प्रच्छन्नगुरुमान ॥ यथा-कवित्त ।

ऐसीऐसीरीतिराचेसोहनकेसांचेश्यामदेखौंआनिबांचिकिधौंकौन कियेचीठीहै । सुनहुसभागपाईरावरीयेपागमहँकागदकेरूपहूमुआग कीअँगीठीहै ॥जानतिहौंएहीमगपायोहैजनमजगओहूअविलोकनकी वीथीतुमदीठीहै । काहेकोकहावतकटुककालकूटसीएकह्योहरिहँ हँसिहमकोतौमीठीहै ॥ ७ ॥

नायका नायक सों कहत याते प्रच्छन्न चीठी पागमें ताको आगि कहनो यह लोकली कउलंघनी याते गुरुमान भयो इहां कारणते कारजको ज्ञान जैसे रजवर्षातेकीच ताते अनुमान ॥ ७ ॥

नायकको प्रकाशगुरुमान ॥ यथा-कवित्त ।

आपनेसोआपनेहींआगेकहियतकिधोंखोरकेखजानेखोरहींमेंसो लियतहै। डीठहूतौरोकियतजोरकहूं जाइकेशोऔरकहूंनैनलैछरीसों

छोलियतहै ॥ वेईघनश्यामजिनविनघनीघरनीनिघरीहूमेंघनेघन सारघोलियतहै । बोलतहौकैसेऐसेबोलौजैसेबोलियतमोलहूलियेसे ऐसे बोलबोलियतहे ॥ ८ ॥

उक्ति नायका सों सखीकी। कि आपनेसो आपनेई आगेबातें कहने परतीहैं कहूं वाकी जो खोरहै ताके खोरन में गलीन में सजाने खोलियत है दीठ तो रोकत है जोरकर कहूं जाइ तो जात नहीं देत अरुका नैन छुरीते छोलेजातहै जे वेई घन श्यामहैं जिन बिन बहुत घरनी बिछुरे घनसार घोरतीहैं बोलती कैसेहौ ऐसे बोलो जैसे सब बोलतहैं मोलहूके लयेते ऐसे बोल नहीं बोलियतु जैसे तुम बोलती तहां कोई कहै सखीकोअपराध दुरायो चाहीये तो जाहिर करति कि जिन बिन घनी घरनी घनसार घोरती तहां तिहारे हेत उपचार करती यह उत्तर कीजे अरु कोई ऐसो भी कहत नायका कही वे जेई घनश्यामहैं जिन बिन घनी घरनी बिरहिन होती अरु कोई ऐसोभी अर्थ करत नायका कही कि अपनो जोहै तासों आपने आगे बोलियत जे खोरके सजाने खोरमें खोलत सो या अर्थ ते कवित्त अलग्न होजात है इहां जो सखीने कही कि तुम खोरमें नायकको त्रास दिखावती सो लोकलीक लांघी अरु गलामें खोरके सजाने खोले सोई प्रकाश अरु कोई सखाकि हाँकसे बोलत तब नायका जैसे बोलत अरु खोर खोर बोल बोल एक शब्द बहुवार ताते लाटानुप्रास है अरु कोई अनुमान और उत्तरालंकार भी सखीको प्रति उत्तरते कहत ॥ ८ ॥

अथ लघुमानलक्षण ।

दोहा—देखतकाहूनारित्योंदेखैअपनेनैन ।
तहँउपजैलघुमानकै, सुनैसखीकेबैन ॥ ९ ॥

नायक को अन्य स्त्री देखत नायका अपने नैनसों देखै किवा सखी से सुनै तहांलघुमान उपजतहै ॥ ९ ॥

प्रियाको लघुमानप्रच्छन्न ॥ यथा—सवैया ।

कान्हतिहारेवेप्रानप्रियाकेअयानसयानसबैमनमाहीं ।
मानकिधौंअपमानअबैयहमानलखौअनमानेनजाहीं ॥
सुखदुःखनकेशवजानिपरैसमुझैरिसहांसीनहींअरुनाहीं ।
यौंसियरीखिनहूंखिनतातीहैज्यौंबदलैबदरानकीछाहीं ॥ १० ॥

सखी नायक सों कहतिहै हेकान्ह तिहारी जो प्राण प्रियाहै ताके अयान अरु सयान सब मनमें है यह मान है कि अपमान है यह तुम मानी अनुमान मति करौ" मान किधौं

अपमान सबै यह मानुपपै अनुमानि न जाहीं" इस पाठ में मनुष्य पै अनुमान नहीं करयो- जात सुख दुःख नहीं जान्यों जात समुझत रिस होंथी नहीं और नहीं ए दोई नहीं समुझत छाँहीं अबै क्षण क्षण सियरी ताती होति जैसे बादर कीछाँह तो यामें मान कीनो सो अनुमान तें नायक जानों ताको सखी छपावत हे यातें प्रच्छन्न उपमा अलंकार ॥ १० ॥

नायकाको प्रकाशलघुमान ॥ कवित्त ।

झूंठेहूनरूठियेरीईठसोईतौकहावनेकपीठदेइईठकौनकेभएअली। काल्हकेतोनंदलालमोसोंघालिलालिकरैकाल्हहीनआईग्वारिजोपै तूहुतीभली॥ आजुहीजुबीचपरीबीचबरिबेकोमाईआनरंगआनजिय ज्योंकनेरकीकली। तेरेहीकहेकीकोऊसाखहैजूबूझियेरीदेखियेजुआं सिताहिसाखकीकहाचली ॥ ११॥

सखी वचन नायका सों। कि झूंठेहू न रूठिये तब नायका कही मैं नेकपीठ देत तब सखी कही कालिह की घाल उताइल लाल करिरहे हैं नायका कालिह क्यों न आई सखी अजहूं बीचपरी तीय तिय कही बीच परिबेको वासों जो आनरंग है कनेर की कली ज्यों ऊपर लाल भीतर सेत बिनुरंग सखी कही अंतरंग क्योंकरि जान्यों ऊपर लाल भीतर सेत बिन रंग सखी कही नायका तेरेही कहें तब नायकाने कही आंखही देखिये ताको साखी कहा तौ इहां नायकाने अन्य तियाको देखत देख्यो है जो बातें करत लख्यो तो कहती मैं अपने कान सुनी देखिये आंखिया में देखतेही देखौ आजुही बीच परी याते बहिरंग प्रकाश भयो उत्तरालंकार पूर्ववत् ॥ ११ ॥

प्रियाको प्रच्छन्नलघुमान ।

दोहा–प्रियकोकह्योकरयोनहीं, प्रियकोनाहींलाज।
उपजतहैलघुमानतहँ, वरनतहैंकविराज ॥ १२ ॥

प्रिय नायक की कह्यो नायका न करै तियको कह्यो करै नहीं पिया यह पाठ में नायक लाज ते कह्यो न करै नायकाकी ॥ १२ ॥

प्रियप्रच्छन्नलघुमान ॥ सवैया ।

आगेकहाहरिहौअबहींतौइतौदुखदीनोकह्योबिनकीने।
केशवकौनहुँलाजकीलाउतैभूलिगईतौभईहितहीने ॥
भेटतहींभरिअंकललाभरिजीवनबोलीजुबोलनबीने।
देखेनहींकबहूंभरिआंखिनिआजुहीकैसेचलौचितुलीने ॥ १३ ॥

नायक गेह में आयो सो नायका नायकको अपराध जान नाकय की कही बात करत परंतु कपट साथ करत ताते प्रच्छन्न तब सखी कहति है आगे तुम कहा हीरहे

छोलियतहै ॥ वेईघनश्यामजिनविनघनीघरनीनिघरीहूमेंघनेघन सारघोलियतहै । बोलतहौकैसेऐसेबोलौजैसेबोलियतमोलहूलियेसौं ऐसे बोलबोलियतहै ॥ ८॥

उक्ति नायका सों सखीकी। कि आपनेसो आपनेई आगेबातें कहने परतीहैं कहूं बारी जो खोरहै ताके खोरन में गलीन में खजाने खोलियत है दीठ तौ रोकत है जोरकर कहूं जाइ तौ जात नहीं देत अरुका नैन छुरीते छोलेजातहै जे वेई घन श्यामहैं जिन बिन बहुत घरनी बिछुरे घनसार घोरतीहैं बोलती कैसेहौ ऐसे बोलौ जैसे सब बोलतहैं मोलहूके लयेते ऐसे बोल नहीं बोलियतु जैसे तुम बोलती तहां कोई कहै सखीकोअप-राध दुरायो चाहीये तौ जाहिर करति कि जिन बिन घनी घरनी घनसार घोरती तहां तिहारे हेत उपचार करती यह उत्तर कीजै अरु कोई ऐसो भी कहत नायका कही वे जेई घनश्यामहैं जिन बिन घनी घरनी विरहिन होती अरु कोई ऐसोभी अर्थ करत नायका कही कि अपनो जोंहै तासों आपनै आगे बोलियत जे खोरके खजाने खोरमें खोलत सो या अर्थ ते कवित्त अलग्न होजात है इहां जो सखीनि कही कि तुम खोरमें नायकको त्रास दिखावती सो लोकलीक छांधी अरु गलामें खोरके खजाने खोले सोई प्रकाश अरु कोई ससाके ढांकसे बोलत तब नायका जैसे बोलत अरु खोर खोर बोल बोल एक शब्द बहुवार ताते लाटानुप्रास है अरु कोई अनुमान और उत्तरालं-कार भी सखीको प्रति उत्तरते कहत ॥ ८ ॥

अथ लघुमानलक्षण।

दोहा–देखतकाहूनारित्योंदेखेअपनेनैन।
तहँउपजैलघुमानके,सुनैसखीकेबैन ॥ ९ ॥

नायक को अन्य स्त्री देखत नायकाअपने नैनसों देखै किवा सखी से सुनै तहां लघु-मान उपजतहै ॥ ९ ॥

प्रियाको लघुमानप्रच्छन्न ॥ यथा–सवैया।

कान्हतिहारेबिप्रानप्रियाकेअयानसयानसबैमनमाहीं।
मानकियौंअपमानअबैयहमानलखोअनमानेनजाहीं ॥
सुखदुःखनकेउठवनानिपैसमुझैरिसहांसीनहींअरुमाहीं।
योंसियरातिसनहूंसिनतातहिंज्योंबदलेबदरानकीछाहीं ॥ १० ॥

सुनी नायक सों कहतिहैं हे कान्ह तिहारी जो प्राण प्रियाहै ताके अयान और सयान हुद मनमें है यह मान है कि अपमान है यह तुम मानौ अनुमान मनि करौ" [illegible]

रची है रंचक अथवा वंचककी रीति यह रंचक नायका रची तब हँसि नायक उरसों लगाई अरु यामें जो कोई प्रश्न करत रेख चिन्ह है सो गुरु मान कहैं वाही ताको उत्तर करत कि झट कही काहे वंचकता सों सो नाहीं नायका सनेहकी रेख कहति जब तुम वासों सनेह की रेख रची अरु दूसरो प्रश्न कि उरलगाने ते मान मोचन होंजात ताको उत्तर कि जब नायक कहीकि वंचकता करती हौ तब नायका बोली तबहीं उरमें न लाइ लई अरु बात करत कहा हौ अन्यनायकासों यह तीसरो प्रश्न तहां उत्तर कि बात करत देख धोखो भयो यह रीतते मध्यममान जानोजात अरु नायक नायका के वचनतें प्रच्छन्न उत्तरालंकार प्रतिउत्तरते ॥ १६ ॥

प्रियाकोप्रकाशमध्यममान॥ यथा-सवैया ।

ज्योंउनकोतूबकावतमोहिंसोंआईवकावनव्हैगरई ।
अबयाहीतेतोसहुवातकछूकहिवेकिहुतीनकहींथरई ॥
कहिकेशवआपनीजांघउघारिकैआपहीलाजनकोमरई ।
इकतोसबतेहरएहरिहैंअबहौंहुँकहाहरितेहरई ॥ १७ ॥

जासों हरिबात करत रहे सो मनावन आई तासों नायका कहति है कि जैसे तू उनको बकावत है तैसे मोकों बकावन आई गरू होके याहीते कछु तू मान छुटावन आई जोबात कहते रहीसो थरयल यह न कहोगी काहे अपनी जांघ उघार आप तोको लाजन मरै जैसे हरि सबते हरुऐ हैं तैसेहीं कहांहरुई होंहुं यामें आन सखी सों कहत ताते प्रकाश जांघ उघार कहनेतें लोकोक्ति अलंकार है ॥ १७ ॥

प्रियको मध्यममानलक्षण ।

दोहा-जहांनमानैमानिनी,हारैपियजुमनाइ ।
उपजतमध्यममानतहँ,प्रीतमकेउरआइ ॥ १८ ॥

जहां मानिनी न मानै प्रीतम मनावत में हार जाय तहां प्रीतमके उरमें जो मान उपजै ताको मध्यममान कहिये ॥ १८ ॥

प्रियको प्रच्छन्नमध्यममान ॥ यथा-कवित्त ।

बारबारबरजीमैंसारससरसमुखीआरसीलैदेखमुखआरसमेंबोरिहै।
शोभाकेनिहारेतेनिहारतननेकहूतूंहारीहैनिहोरसबकहाकाहूसो
रिहै ॥ सुखकोनिहोरोजोनमानोसोभलीकरीतेकेशोराइकीसोंअब
जोतूंमुखमोरिहै । नाहकेनिहोरेकिनिमानतिनिहोरतिहैनेहकेनिहा
रेफिरमोहिंजूनिहोरिहै ॥ १९ ॥

प्रश्न यामें नायका मानसों भापत प्रत्यक्षमें सो नाहीं।उ०—नायक मान कीनों तब नायक
कहे ता नायका के वचन सखीसों कि तू नायकको मनाइ ल्याउ तब सखी पूर्ववारी बात
करात है कि तब मैं कही सो तू न मानी कि नायकके मनाये ते नहीं मानति आस-
रमें मोको निहोरैगी या रीत तें पद सुगम है अरु नारायण कवि कविप्रिया केतिलक
पाको अर्थ लिखचुके याते इहाँ नहीं लिख्यो अरु निहोरे पद बहुवार आये ताते लाटा-
प्रास जानने और प्राभाविक भी पछिलीवातते ॥ १९ ॥

प्रियकोप्रकाशमध्यममान ॥ यथा—सवैया ।

मानहिंमानतेमानिनकेशवमानसतेकछुमानटरैगो ।
मानहेरीसुजुमानेनहींपरिमाननखेअभिमानभरैगो ॥
व्हैहैसहेलीसमानतबैजबसौतिनमेंअपमानकरैगो ।
आपुमनावतमानहिरीबहुरयोजुमनावनतोहिंपरैगो ॥ २० ॥

यामें कोई कहतहैं जे मानिनेहैं ते मान आदरही तेमानतीं अरु नहीं तौ कछु मानस
नुष्यते काहूको मान टरत है अरु मानैं नहीं तौ रूठियोई हाय रहत परमान इहनसे
अतिकरै ते देखि वह नायक अभिमान के भरे कहिये भारसों नैगयो उठि के ताते
सहेली मान व्हैहै तब जब अपमानकरैगो अबहूं मैं जो कहति हों सो आपहीको मना
ती जान नाहीं तौ फेर तोहिं मनाइबो परि है सहेली ऐसे सामान कहत ताते बहिरंगसे
में भी नायका मानहेति ताते पूर्व वृत्तांत याही में भी जानने अलंकार पूर्ववत्॥२०॥

दोहा—राधाराधारमनके, वरनेमानसमान ।
तिनकोमानमनाइबो, कहियतसुनहुसुजान ॥ २१ ॥

इति श्रीमन्महाराजकुमार—इन्द्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायां-
विप्रलंभशृंगारमानवर्णनं नाम नवमः प्रकाशः ॥ ९ ॥

राधाको अरु ताके रमन नायक ताको मान वरने सामान्य करके अब तिनके मान
मनाइबो कहत हों अर्थ मानमोचन कहोंगो ॥ २१ ॥

इति श्रीमन्महाराधिराज काशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्या
ज्ञाभिगामि ललितपुरनिवासि हरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्व
रेण विरचिते रसिकप्रियाभूषणेसुखविलासिकानामटीकायां मानव
र्णनंनाम नवमः प्रकाशः ॥ ९ ॥

अथ मानमोचनलक्षण।

दोहा—मानतजहिंप्रीतमप्रिया, कहिकेशवकरिप्रीत ।
वरनिसुनाऊँसोसवै, मंजुमुनीपटरीत ॥ १ ॥

मानतजि देहिं प्रीतम अरु प्रिया प्रीति करके सो षट रीति ते वर्णत हौं अरु प्रसंग विध्वंस पुनि जियमें सुनि षटरीत यह भी पाठ है ॥ १ ॥

दोहा–सामदामअरुभेदपुनि, प्रणतिउपेक्षामानि।
अरुप्रसंगविध्वंसपुनि, दंडहोहिरसहानि ॥ २ ॥

साम १ दाम २ अरु दान भी पाठ है। भेद ३ प्रणति ४ उपेक्षा ५ प्रसंग विध्वंस ६ अरु दंड कहेते रस हानि होहिगी याते षट कह्यो ॥ २ ॥

अथ सामउपायलक्षण।

दोहा–ज्योंकेहूमनमोहिये, छूटिजायजहँमान।
सोईसामउपायकहि, केशवदासबखान ॥ ३ ॥

कोई रीतिते मनमोहिके मान छुड़ाइये ताको साम उपाय कहतहैं ॥ ३ ॥

प्रियाको सामउपाय ॥ यथा–सवैया।

केशवदाससदाकियेआशरहैसुखकीदुखताहिनदीजै।
ताहुसोंरोपनमानियेमानिनिभूलिहूआपनोमानिजुलीजै ॥
हौतुमहींतुमहौसुनिसुंदरिमूरतिद्वैजियएकहीजीजै।
मानहैभेदकोमूलमहाअपनेसहुसोसपनेनाहिंकीजै ॥ ४ ॥

प्रथम वचन नायक के जो सदा सुखकी आशकरे रहै ताहि दुःखनहीं दीजे अरु ताहूसों मान न करिये जो आप न भूल मानें में तुमहीं तुमहोहीं वे तुमहीं तुम वे सुनि सुंदरि इस पाठमें सखी की उक्ति करनी परैमी मूरति दोन जिय एक मान भेद को मूलहै यहांतक नायक तब नायका कही जो अपनो सो होहि तोन कीजै तुमतो पराये सों हौ जैसे लोग कहत फलानी सों फलानेहैं बिहारी अहे कहे न कहा कहो तोसों नंद किशोरबढबोली कति होतिहै बैडे दृगनिकेजोर १ कहत काहि माहीं कहाहै जो तू मान कीनों तब नायका कही तोसों नंद किशोरहैं नायका बोली ताते मान मोचन प्रति उत्तर ते उत्तरालंकार अरु दो देह एक जीय आन सो तुमहो यह लोकोक्तिसंकर है "अपनेहुनते सपनेहुन कीजै" यहभी पाठ है ॥ ४ ॥

प्रियको सामउपाय ॥ यथा–सवैया।

कहिआवतिहैजुकहावतहौतुमनाहींतौताकिसकेहमसोहीं।
तिहिपैंड़ेकहाचलियेकवहूंजिहिकांटोलगेपगपीरदुखोहीं ॥
प्रीतकुम्हेड़ेकोजैहैंजईसमहोतितुम्हैंअँगुरीपसगोहीं।
कीजैकछूयहजानिकेकेशवहौतुमहींतुमतौहरिहोहीं ॥ ५ ॥

नायका वचन नायक सों जो तुम कहावत तौ कहिआवत तुम हमारे सोंहे न ताक-
तापेड़े न चालिये जामें पायँमें कंटकलगें हमारी तिहारी प्रीतिमें जब अँगुरी पसारी
कुम्हेंड़े की जई जैसे अँगुरीपसारत कुम्हिलात तैसे कुम्हिलाय जैहें जई कोहड़ेके ब-
ाकोनाम है तब नायक कही कीजै कछू जानकेहम तुमहैं तुम हमही यामें नायक
ै ते मान छूटो प्रत्युत्तर ते उत्तरालंकार ॥ ५ ॥

अथ दानउपायलक्षण।

ोहा—केशवकौनिहुँव्याजकछु, दैजुछुड़ावैमान।
वचनरचनमोहैमननहिं, ताकोकहियेदान ॥ ६ ॥

कोई छलते अथवा कछू देइ के मान छुड़ाइये अरु वचन की रचनासों मन मोहि
ाको दान उपाय कहतहैं। प्रश्न—यामें कछू देवेते गणिका काहे न होइ। उ०—गणिकामें
देनो चाहिये यहां कछु कह्यो है ॥ ६ ॥

ोहा—जहांलोभतेदानते,छांड़ै मानिनि मान।
वारवधूकेलक्षणहिं, पावैतवहिंप्रमान ॥ ७ ॥

जहां लोभते अरु दान ते मानिनी जोमान छोंडे ताको गणिका मानवती कहिये "जहां
भते दानले" भी पाठहै ॥ ७ ॥

नायकाको दानउपाय ॥ यथा—कवित्त।

ामलअमलदलदीन्हेंजुकमलभवअरुणअरुणप्रभुजूकोसुखदाइये।
ोदासशोभाधरअधरसुधाकेधरमधुरअधरउपमातोइनपाइये॥उ-
ामलयशैलशीलसमसुनिदेखिअलकचलितव्यालआशाउरआइये।
ापटनिगंधियहहारबंधुजीवकोसुचाहतसुगंधभयेनिकग्रीवनाइये ८

वोक्ति सखी की नायकासों।नायक ने बंधुजीव (दुपहरिया) के फूलको हार सखी के हाथ
पायोहै सो सखी कहत यह कैसो है कोमल अरु अमल याको दल कमलभ-
ाने दये अरु अरुण है अरुन प्रभु सूर्यके मन भायोहै शोभा धारण करैहै और सुख-
। हारहै अरु अधर सुधाके धरनहार मधुर अधर शोभाको पावत है अधरन की
मा इनके इनकी उपमा उनको सो यह उरज निहारे मलयगिरि जानके याहि अलक
लिरहे देखि सुगन्ध आनके उरते चाहतहै अथवा मलयाचल शैलपै जो वस्तु जाय
सुगन्धमयी होजातीहै इनमें सुगन्ध नाहीं है याते तेरे उरज मलय शैलसम सुने सो यह
तेरे आयेहैं अरु अलक रूपी सर्प जानेहैं याते आशा भई कि हम सुगन्ध होंहैं ताते
· निगन्ध हारहै बंधुजीवको सो चाहत सुगंधमयो भैकग्रो सुन नायका कही मैक

ग्रीवामें नाइदे याही ते मान छूटो। प्रत्युत्तरते उत्तरालंकार मलय उरजका रूपक-दोईको संकरहै ॥ ८ ॥

अन्यच्च-सवैया।

मत्तगयंदनसाथसदाइहिथावरजंगमजंतुविदारचो।
तादिनतेकहिकेशवबेधनबंधनकैबहुधाविधिमारचो॥
सोअपराधसुधारनसोधिइहैइनिसाधनसाधुविचारचो।
पावनपुंजतिहारेहियेयहचाहतहैअवहारविहारचो॥ ९॥

उक्ति नायका सों सखीकी। नायक ने गज मोतिनको हार पठायो है ताहि देखि युक्तिसों सखी कहत कि यह जो गजमोतिनको हारहै ताने मतवारे जे हाथी तिनके साथ सदा रहिके थावर जंगम जंतु जीव बिदारे अथवा गज जीवविदार नहार है ताके ये साथीहैं तादिनते याको निबंध कर विधिने बंधनमें डार दियो अर्थ छेद डारे सो अपराध सुधारिबेको सोधिके साधन इन साध्य एहू विचारयोहै कि पावन ताको पुंज जो तिहारो हियोहै काहे यामें शंभु कुच युगुल रोमावली यमुना त्रिबला त्रिवेणी उदरसिन्धु इत्यादि अनेक तीर्थहैं सो चाहतहैं तब नायका कही विहारी विहारकरचो याही तें मान छूटो हेतोत्प्रेक्षालंकार है अहेत को हेतथाप्यो ताते ॥ ९ ॥

प्रियाको दानउपाय ॥ यथा-कवित्त।

हँसतहँसतआईआईइकगाथगाईकहहुकन्हाईयाकोभाउसमुझाय के। पीवैक्योंअधरमधुदंपतिएकहीबाररदनकरजथलदीजैहिवताय के ॥ यहपरिरंभनकहावैकौनकेशोराइमेरीसोंजोमोसोंतुमराखहुदुरा यके। राधिकाकीअधिकाईकहाकहोंतीनौआजुआपनोपियारोपिउ आपुहीमनायके ॥ १० ॥

नायका नायक की कथा। सखी सखी सों कहतिकि आजु नायक मानजान हँसत हँसत आई राधा एक गाथा कही याको भाव हमको समुझावहु कि एकबार दंपति जो अधर पान करो चाहै तौ कैसे करै रदन करन थल बतादीजे अरु उरज करज भी पाठहै अरु यह परिरंभन कौन कहावतहै तुम्हें हमारी सपथ जो दुरावहु सो राधाकी अधिकाई कहा आजु अपनो पिय आपहू मनाइ लये यामें प्र० कोई कहै कि दान कहां पायो उ० तौ परिरंभन कर कहो कियह कौन कहावत सोई दानभयो परजा यक्तिं अलंकार छल करिके इष्ट साधो ॥ १० ॥

अथ भेदलक्षण।

दोहा-सुखदैकैसबसखिनकहँ, आपलेइअपनाइ।
तबसुछुडावैमानको, वरणोभेदबनाइ ॥ ११ ॥

सब सखीको सुख देकै अपनाय लेय तब मान छुड़ावे ताकी भेदोपाय कहिये॥११॥

नायकाको भेदउपाय ॥ यथा-सवैया।

केशवधाइखवासिनतोहिसखीसकुचैसबआपनिघातें।
मोहितौमाइककहेइबनेअबबांधिदईविधितोकहँतातें॥
नेकहरेहरेबोलिबलाइलौंहौंडरिपौंगडिजाइनयातें।
माखनसोमेरेमोहनकोमनकाठसीतेरीकठेठीयेबातें॥१२॥

नायका सों जनी वचन नायकने वाको आपनी ओर करलई सो उनहींकी ओर होके कहैहै जनी जो दहेजमें संग आवत पूरव में वाको लोकनी कहतहें बुन्देलखण्ड में खवासिन नायकाको समुझायो सो कठोर बोली तब वा कहत मोको तिहारे संगबांध दई तातें मोंपे नहीं सुनीजाति माखन सो धर्मलुप्ता काठसी कठेठी बातें पूर्णोपमा अलंकार नायक भेद करिकै खवासिन फोर लई ताते भेद नायका कठोर बोली यातें मानमोचन॥ १२॥

नायकाको भेदउपाय ॥ यथा-सवैया।

काहूकह्योहरिरूठिरहेतबतेबहुबुद्धिवितर्कबढ़ावे।
सोधिसबैअपनोसोरहीधनमीतरहैसुउपायनपावे॥
ह्वैवहरीतिइहांइहिकेशवज्योंदुहुँओरजरैक्योंजुडावे।
बूझतिहौंपियप्यारीतिहारीसुमानकरैकिमनावनआवै॥१३॥

सखी नायककी नायकाने मिलाई मनावन हेत पठाई सो कहतहै कि काहूने नायकासों कही कि हरि तोते रूठेहें तबते अपनी बुद्धिमें भी विशेष तर्क बढ़ावतीहै अरु अपनेतें सोधि रहीहै कि धन भी रहै अरु मित्रता न छूटे यह लोकोक्तिहै सो उपाय नहीं पावत अर्थात्सपत्नीनमें अपमान न होय ईंधे नहीं अरु नायक अपनो होइजाय इहां यह रीतिहै कि दोईओर तो आगि लगीहै सो आगि कैसे बुझाइये ध्वन्यार्थ यह कि सपत्नी अभिमान कररहीं अरु आप रूठिरहे हो तामें बूझति हौं हे पीय तिहारी प्यारी मानकरै कि मनावन आवै ताहीमें प्रश्नोत्तर अलंकारतें नायक कही मनावन आवै याहीतें मान मोचन भयो॥१३॥

अथ प्रणतिलक्षण।

दोहा-अतिहितते अतिकामते, अतिअपराधहिजान।
पाँयपरेप्रीतमप्रिया, ताकोप्रणतिबखान॥१४॥

अति हितते कहिये अति प्रेमते और अति कामते और अति अपराधजानकै प्रीतम वा प्रिया पाईं परे ताको प्रणति कहिये॥ १४॥

नायकाको प्रेमते प्रणाति ॥ यथा-सवैया।

तैंचितयोजुनसूधेतऊतऊप्रेमकैकैपियपांयगह्योहै।
मोहिंविलोकिविलोकिअलीनिअलीकअलीकप्रवाहवह्योहै ॥
बूझतिहौंसखीशीशदियेतिनऔरसबैहियहेतुरह्योहै ।
कान्हजुआयेमनावनतोसोंमैंमानकिधौंअपमानकह्योहै ॥ १५॥

प्र० या कवित्त में मान छोड़ब नाहीं जानोजात पाँय गह्यो तऊ न मानरह्यो ताते
सकी हानभासतहै उ० ता निमित्त ऐसो अर्थ चाही कि नायका पूर्व वृत्तांत सखीसों
कहति है कि हे सखी ! देखिये सखी मोसों कहतीहैं कि जब नायक आयो तब तैं सीधी
हीं चितई अरु नायक ने प्रेम करकर तेरो पांइँ गह्यो सो मोको देखि अरु इन सखिनको
खि जिन अलीकमें मर्याद कहिये मिथ्या अलोक कलंककोप्रवाह बहायो है ताते हेसखी!
तोसों बूझति हौं शीशदै मेरोशीश छुइकै कहु तिनओर सबने तो हीयको हेतु गहि
रुयो है अर्थ मन मानी कहती कान्हति आये मनावन जब तोसों तब मैं मान कह्यो
क अपमान इहां पूर्व वृत्तांततै भाविक अलंकार जानोजात अरु लोकोक्ति भी है॥१५॥

नायकाको अतिक्रामते प्रणाति ॥ यथा-सवैया।

नबोलतिआपुबुलायेहीबोलकहालगीमोहिंबकायेहीमारन ।
सोपरोपाँयनिबूझिसखीसबदेतिहैंजीयुवतीजिहिकारन ॥
हठछाँडिकैकंठउठाइलगाइकहांलगिऐंठिअकाशनिहारन ।
कानोंभयेनटद्वैदिनयेतिनतेहींलगीकछूऊलटपारन ॥ १६ ॥

प्रथम सखी वचन नायका सों अरी नहीं बोलति बोलायेते तब नायका कही मोहिं
हा वकावति है तब सखी कही अरी सो तेरे पाँय परोहै जाके हेतु युवती जी देतीहैं
ति हठि को छोड़ कण्ठ लगाय लै ऐंठके आकाश न निहार कानौं तू नहीं करिहै ये
न ये दीन भये कामासक्ति भये सो सुन नायका कही तैहीं कछू उलट पार न लगी
यामें दीनते काम सखी नायकासों कहतनायका सखीसों याते उत्तरालंकार बोले-
मान छूटो अरु विशेषोक्ति भी कोई कहत सो नाहीं कोनोभये नटि है दिन ये दिन
भी पाठ है ॥ १६ ॥

नायकाको अति अपराधते प्रणत ॥ यथा-सवैया।

केशवदासउदासभईदरसाइदशादुखद्योसभरचोरी ।
रातिभयेअधिरातकहूंलोंविनैबहुबंधुवधूनकरचोरी ॥
धाइरहीसमुझाइकछूनसखीनहुंकोसिखयेतेसरचोरी ।
काहेतमान्योनमानिनितौलगिजौलगिपाइनपीउपरचोरी॥१७॥

नायक राति मनावत रह्यो सो न मान्यो जब नायक जात रह्यो तब सखी सों कहै अब तू मनाय ल्याउ सो सुन सखी कहति है कि अब उदास भई है दुःखदशा व धोस भरयो राति जब आधी राति लौं उनकी बंधु बंधून देवरानिन जिठानिनने वि बहुत करी अरु फेर धाई सिखायो अरु सखीनपर कछू कार्य न सरयो तब का मानों जब प्रीतम पाँयन परो तो अपराध बकसायो याते अपराध बोलिउठी मानत्रो न पाछिल बात कहेते भाविक अलंकार किंया हेतु कारण कारज सहित परियो कारण मानिबो कारज ते ॥ १७ ॥

दोहा–पियहिमनावैपाँयपरि, प्रियापरमहितमान।
ना अपराधनकामते, वरणतहींरसहान ॥ १८ ॥

प्रिय पाँय परिके मनावे अरु प्रिया परम हित मानि न अपराध होय न काम है ऐसो वर्णन करेते रसकी हानिहोय ॥ १८॥

प्रियाको प्रणति अतिहितते ॥ यथा--सवैया।

नीरहितेंविनमीनसरैवरुमानतौनीरहिकेजियजीजे।
जाविनऔरसुहाइनकेशवताहिसुहाइसुनौसवकीजे ॥
जालगिमोपगलागतहैसुलगीपगअंकलगायनलीजे।
हौंसिखवौंअपनेसपनेहुँतो आवतलक्षकिँवारनदीजे ॥ १९ ॥

उक्ति सखी की नायकसों ॥ कि नीरहीते विना मीनसरै वरु मानों तौ नीरही बल जीजेहूँ अप्रिया मीन तुम नीर हौ जा बिना आन नहीं सुहात ताको जो सुहा सोई करो चाही जाके लिये मेरे पग लागतरहे सो पगलगी है ताको अंक काहे न लगावतहौ हौं अपने जान सिखावत हौं कि घर सपनेहू लक्ष्मी आवत किँवार न दीजतु है हौं सिखवौं अपने सपने घर ये भी पाठ है यामें मीन नीर को दृष्टांत क एक शब्द दोवार आयो याते जमक अरु ऐसो भी कोई अर्थ करत कि प्रिया पग ल यह बात सखी कही तब नायक कह्यो अंकसों लगायलेहु तब सखी वचन कह्यो आपु उठाय लगाय लेहु यामें उत्तरालंकार ॥ १९ ॥

अथ उपेक्षालक्षण।

दोहा–मानमुचावनवाततजि, कहियेऔर प्रसंग।
छूटिजाइजहँमानतहँ, कहतउपेक्षाअंग ॥ २० ॥

मान मोचनवारी बात तजिके और कछू प्रसंग कहिये तहां मान छूटिजाय ताके उपेक्षा कहिये ॥ २० ॥

प्रियाकी उपेक्षा ॥ यथा-कवित्त।

पलानचमकतिचमकहथ्यारनकीबोलतनमोरवंदीसयनसमाजके। हाँतहाँगाजत नवाजतदमामेदीह देत न दिखाईदिनमणिलीने जके॥चलिचलिचंद्रमुखीसाँवरेसखापैवेगिसोखकञ्जुकेशोदासआरि लसाजके । चढ़िचढ़िपवनतुरंगनगगनघनचाहतफिरतचंदयोधा मराजके ॥ २१ ॥

प्रश्न-यहाँ जो डरदैकै मान छुड़ायो सो प्रसंग विध्वंस को लक्षण है यामें उपेक्षा कहा यह कोई कहै उ०तहां ऐसो कहो चाहिये यहां सखीने उक्ति करिकै मघवाको कोप चित कीन्हों जब मघवा ब्रजपै चढ़ो तब जिन रक्षाकरी तिनहीं के पास चलिवे रक्षा- रहें सो सुनि नायका कही चलि काहे सखीके कहेते यह सूचित भई तू चन्द्रमुखी है वे द्रही को ढूंढ़त फिरत सो सुन नायका कही चलि तो यहां मान छूटो सविषय सावयव क अलंकार है ॥ २१ ॥

प्रियको उपेक्षा ॥ यथा-कवित्त।

केशोदासदिनरातिकेतकीकीभावैभांतिजियमेंबसतिजातिनैन नलिनी। माधवीकोपियेमधुसूझतनअंधकहूंसेवतीसेवनकहींसे धफलिनी॥औरहौंकहतिबातकान्हकाहेकोलजातऐसेतौखिस्या जुहोइमनमलिनी। देखहुधौंप्राणपतिनिलजअलीकीगतिमालती मिल्योचाहैलीनेसाथअलिनी ॥ २२ ॥

सखी कहैहै कि हां तो भ्रमर की बात कहत तुमकाहे लाज लेतहौ याही में मान को छूटो ताते उपेक्षा का कहीं दिन रात तौ केतकी की भांति भावत है केतकी के अर्थ एक केतकी फूल एक आपनी जाति वारी नलिनी कुमोदिन एक कुमुदिन जो का आनन्दको नहीं जानति माधवी फूल को मधु सुगन्ध पियत दूसर जो वे सासि सूझत नहीं सेवती फूल अरु स्वकीया गन्धफलिनी चम्पकली एक गन्धहीहै जामें रस नहीं देखो तौ हे प्राणपति निलज अली भ्रमर की गति भ्रमरी संगलैकै ती के फूलसों मिलौ चाहत है दूसरो अर्थ सखीसंगलै मालती वेश्या अथवा तमाल निपाकी मालसों यामें विवक्षितवाच्य ध्वनिहै काहे सखीकी इच्छा ते अरु अर्थ- भी है अर्थ के अन्तरते अश्लेष अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार है ॥ २२ ॥

अथ प्रसंग विध्वंसलक्षण।

दोहा-उपजपरैभयचित्तभ्रम, छूटजायजहँमान।
सोप्रसंगविध्वंसकवि, केशवदासबखान ॥ २३ ॥

भयते चित्तमें भ्रम उपजै ताते मान छूटै सो प्रसंग विध्वंसहै ॥ २३ ॥

प्रियाको प्रसंगविध्वंस ॥ यथा–सवैया।

केकिनकेशवकामकेकिंकरबोलतडोलतदेतदुहाई।
कामनिशायहकामिनकोऊरिसाइगीताकहुहैहैरिसाई ॥
गाजतिनाहिंनेमेघघटायहबाजतडोंडीसखीसुखदाई।
भोरभयेफिरकीबौअबोलौसुबोलौअबै बलीबोलकन्हाई ॥ २४

उक्ति सखी की नायका सों ॥ कि ये केकी मयूर न जानो कामके किंकरहैं सो डोल
फिरत दुहाई देत फिरतेहैं सोकहैहैं कि कामराति में कोऊ कामिनी जो रिस करिहै त
महाराज रिसायगे। जे मेघकी घटा नहीं गर्जती है डोंडी बाजति है भोर होत फेर अबो
करबो अरु अबै बोलौ हेबलि बोलत है कान्ह इहां कवि प्रौढोक्ति में रूपकालंक
ताते बल बोलिकै कन्हाई ताहीमें नायका उत्तर दीनो है बलि कन्हाई बुलात त
मानछूटो अरु कामकी भय दिखाय मान छुड़ायो याते प्रसंगविध्वंस है ॥ २४ ॥

प्रिया को प्रसंगविध्वंस ॥ यथा–कवित्त।

कोकनकोकारिकाकहतकाहूशारिकासोंदूरिदूरिहितचितचौगुनो
ढ़ायोहै । सूकिरहीसकुचनिवापुरीसुकीतौकहिकाहूसोंनसकैदे
दुखनउठायोहै ॥उठिचलोन्यायकीजेअबकैमनायदीजैनेकहमिंकै
राइकलहबढ़ायोहै । मानतनएतेपरउलटोमनावैबरुऐसोइसया
श्यामसुकहिपढ़ायोहै ॥ २५ ॥

उक्ति सखी की नायक सों कि देखो कि कोककी जो कारिका है सो शुक व
शारिका सों कहतहै देखो शुकीने दूरदूरभयेते हितचितमें चारगुण बढ़ायराखोहै शुका
सकुचमें बापुरीशुकी जोहै सो काहूसों नहीं सकत कहि देह दुःख न उठायोहै देख
जो तुमहै सो उठाय दयो। सोचलो उठके न्याय करिये अबके मनायदीजै नेकहमिं हमक
बढ़ाय राखो है देखोहम एतेपर नहीं मानत या उलटी मनावत है ऐसो जो सयानो है
श्याम! तुम शुकको पढ़ायोहै यामें प्राचीन तीन प्रश्न करतहै एकतो अन्योक्ति ही म
है दूजे उपेक्षा काहे न होइ और डर नहीं तो प्रसंग विध्वंस कैसे तीजे मान नहीं छू
तामें उत्तर करत शुकी की देह सूक्षतमें नायकको भयभई तो भय आई या प्रकार
नहीं आय याते उपेक्षा नहीं हेगई अरु मान छूटियो यह दिखायो कि जब सखी
उठ चलो तब नायक कही अबके मनाय दीजै हम नीकेहीमें कलह बढ़ायो है सो ह
परंतु आप ही तो अन्योक्ति की शंका करी अरु आपही फिर अन्योक्ति छिपावै अ
कैसे मानिहै तामें ऐसी जानिये कि इहां शुकको प्रसंग सूचनके निमित्तहै याहे कि दृ

शुकमें कोककी कारिका कही याते यह सूचित कराई कोककी कारिका शुकको तौ
ाई अरु आपुन भूलिगेये द्वितीय तिहारीनायका प्राण ताजिदेहै याते कवि निबद्धवक्ताकी
केमें मुद्रालंकारते उत्तरालंकारजनायो ॥ २५ ॥

दोहा-देशकालबुधिवचनते, कलध्वनिकोमलगान।
शोभाशुभसौगंधते, सुखहीछूटतमान ॥ २६ ॥

ये सब उद्दीपनहैं इनते सहजही मान छूटत यह सहज उपाय है मानछूटन को ॥२६॥

कवित्त।

घननकीघोरसुनमोरनिकोशोरसुनिसुनिसुनि केशवअलापअली
नको । दामिनीदमकिदेखिदीपकीदीपतिदेखिसुखसेजदेखिदेखि
न्दरसुवनको ॥ कुंकुमकीवासघनसारकीसुवासभयोफूलनकीवास
नफूलिकै मलन को । हँसिहँसिबोलेदोऊअनहीमनायेमानछूटिग
एकवारराधिकारमनको ॥ २७ ॥

देशकाल आदि जो सब कहि आये ते यहां सब उद्दीपनहैं कवित्त में घनकी घोरते वर्षा
मय अरु काल मोर वाणी कल ध्वनि २ अली जनके अलाप में कोमलगान ३
मिनीके दमक में बुद्धि वचन ४ शुभाशुभ सदन सुवनको नीकी बन संकेत या में
न ५ सौगंध कुंकुमादिकी बास ६ ऐसो अर्थ भी कोई करत सो सहजही मान
यो याते समाधि अलंकार आनि हेतु ते मान छूटेते ॥ २७ ॥

दोहा-इहिविधिमानछुड़ावहीं, आपुसमेंनरनारि।
पल पलप्रीतिबढावहीं, केशवदासविचारि ॥ २८ ॥

यहि विधिते सखी मान छुड़ावति है आपुसमें जो नरनारी में मान भयो है तिनको
ल पलमें प्रीति बढावति है बातें विचारि विचारिके ॥ २८ ॥

दोहा-प्रियानप्रीतमसोंकरै, अतिहठकेशवदास।
बहुरचोहाथनआवई, जोह्वैजायउदास ॥ २९ ॥

हे प्रिया न प्रीतम सों अति हठ कर फेर हाथ न आवैगो जो उदास ह्वै जायगो ॥२९॥

दोहा-वारहिवारनकीजिये, वारककीजैमान।
काहि केशवज्योंआपमें, सदावढ़ैसनमान ॥ ३० ॥

वारंवार न कीजिये वारक छांडि दीजिये मानके छांडे ते सदा सन्मान आदर
ैगो ॥ ३० ॥

दोहा–प्रीतिविनाभयहोयनहिं, भयविनहोहिनप्रीति ।
प्रीतिरहैजहँभयरहै, यहैमानकीरीति ॥ ३१ ॥

प्रीति विना भय नहीं होत अरु भय विना प्रीति नहीं होत जहां प्रीति है तहां है यही मानकी रीति है ॥ ३१ ॥

दोहा–गर्वव्यसनधनत्यागते, निष्ठुरवचनप्रवास ।
लालचविप्रियकरनते, तियपियहोइउदास ॥ ३२ ॥

गर्वते व्यसनते किम्वा व्यसनके गर्वते अथवा गर्व के व्यसनते धनते अरु त्य निठुरवचनते अरुप्रवासते लालचते अप्रिय वचनते तिया प्रियाको जीय उदास होय तहां मान होयहै तहां । प्रश्न॰ धन अरु लालच क्यों कहो उ॰ गणिका को धनहीते छूटैहै प्रमाण–"पावन पुंज तिहारे हिये अब चाहतहै यह हार विहारो" ला विप्रिय करन त्रय प्रियते होइ उदास यहभी पाठहै ॥ ३२ ॥

दोहा–मानविरहवरणोविविध, जहाँविविधबुधवास ॥
केशवकरुणाकहिकछू, कीजतविरहप्रकाश ॥ ३३ ॥

इतिश्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायांवि प्रलंभशृंगारमानमोचननामदशमःप्रकाशः ।

बहुत भाँतिते मान विरह वर्णन करचुक्यो अब यह प्रकाश में करुणा वि वर्णन करिहैं ॥ ३३ ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराज काशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञाभि गामी ललितपुरनिवासीहरिजनकवीश्वरात्मजेनसरदाराख्यकवीश्वरेणविर- चितायांरसिकप्रियायांभूषणेसुखविलासिका नाम टीकायां विप्रलंभ शृंगार मानमोचनं नाम दशमः प्रकाशः ॥ १० ॥

अथ करुणाविरहलक्षण ।

दोहा–छूटिजातकेशवजहां, सुखकेसबैउपाय ।
करुणारसउपजततहां, आपुनतेअकुलाय ॥ १ ॥

ग्रन्थन में यहभेद लिखोहै करुणा विरहके जहांलौं आश मिलनकी तहांलौं विरह जहां आश छूटि जाय तहां करुणा अरु जहां मरणमें फेर मिलन आश तहां करुणाविरह वाहे शोकअस्थाई नहीं है रतिस्थाई बना रहत अरु भास साक को होत है ताते विरह करु णात्मकहै यहीते लक्षण में कहीहै छूटिजात उपाय सुखके सुखके उपाय जीवत में होत फेर

निबाई लीबो नहीं होति पर आशा रहैहै कि मिलैगो याते रतिस्थाई रहो उपाय नहीं हैं ताते करुणा विरहको लक्षण राख्यो प्रसंग पाइ कवि इतनी कह्यो ॥ १ ॥

दोहा–सुखमेंदुखक्योंवरणिये,यहवरणतव्योहार।
तदपिप्रसंगहिपायकछु, वर्णतमतिअनुसार ॥ २ ॥

सुखमें दुखको वर्णन करो तदपि प्रसंगते बुद्धि अनुसार कह्यो कविनकी बुद्धि उक्ति लिये होतिहै याते कछू उक्ति ते बरणकीजत तौ यहां करुणा विरह के कवित्त में अरु प्रवास विरह के कवित्त में यह भिन्नता राखी जहां प्राण तजिवेसी बात औरै रुदनादिक बलिष्ठ होहिं जा कवित्त में तहां करुणा विरह जानिये अरु देखो रामलक्ष्मण के विरह में दशरथ को तौ साफ विरह नहीं भयो केवल करुणा अरु कौशल्या सुमित्रादिकानको करुणा विरह इत्यादि जानिये ॥ २ ॥

नायकाकोप्रच्छन्न करुणा विरह ॥ यथा–सवैया।

मैंपठईमतिलैनसखीसुरहीमिलिकोमिलिबेकहँआने।
जायमिलेदिनहींदृग दूतदयालसोदेहदशानबखाने ॥
प्रेरतपैजकियेतनप्राण नियोगकेऔरप्रयोगनिधाने।
लाजतेबोलनपाऊंनकेशव ऐसेहीकोऊकहादुखजाने ॥ ३ ॥

उक्ति नायका की अपने मन ते निवारति कि मैं मतिरूपी सखी पठवाई सो आप के रहिगई को मिलायबे की आने दृग रूपी जो दूतेहैं सो भीजाइ मिले दिनहीं दयाल सों सो देहदशा नहीं बखानत इतने पर प्रेरतहैं पैजकर कि प्राणन की तन प्राणको पठावतहैं योग संयोग ताके प्रयोग उपचार निधाने निधन भये निधाने पाठ में है यह अर्थ अरु लाजते बोलनो भी नहीं होत सो दुख कैसे कहिये अरु ऐसे कोई कैसे जाने यहां मतिकी गति गई नेत्र मिल ताते दिखियो गयो तन प्राणन को प्रेरत याते करुणा है मनते कहत याते प्रच्छन्न अरु प्रेमते मिलन चाहत लाजते नहीं बोलत ए दो भाव चपलता व्रीड़ा ताकी संधिहै अरु सखी जो लैन पठाई न ल्याइसकी याते कारण कार्य न भयो तासों विशेषोक्ति अरु मति सुख दाता दुखदाता ह्वैगई ताते व्याघात संकरहै ॥ ३ ॥

प्रियाको प्रकाश करुणाविरह ॥ यथा–कवित्त।

हीरतहरितहारहेरतहियोहरतहारोहोंहरननैनीहारिनकहूंलहों।
वनमालीव्रजपरबरपतवनमालीवनमालीदूरदुख केशवकैसेसहों ॥
हृदयकमलनैनदेखिकेकमलनैनहोहूंगीकमलनैनिऔरहोकहाकहों।

आपघनेघनश्यामघनहींसेहोतघनश्यामकेदिवसघनश्यामबिन
रहों ॥ ४ ॥

हरे हरे हार दैवतवनमाली जो वनकी पंक्ति जहां वर्षत वनमाली मेघ अरु वन
कृष्ण हृदयको कमल जो है सोई नयन उनको देखिके कमल नयन कृष्णकी
कमल नैयनकमल पानी है नयननमें जाके ऐसी होहुँगी कहा रुदन करोंगी व
घनश्यामनके घौस कहा बादरनके दिन कैसेहैं बादर अपघने जलहैं घनेजामें
सघनहैं अरु श्यामहैं घनहीं से होतवन नाम लोह ताडन करन हार यहां रुदन
दूना नहीं भयो याते करुणा विरह हरिणनयनी सखी कोई परोसिन बहिरंग है
प्रकाशजमकालंकार अरु याको तिलक कविप्रियाके टीकामें नारायणकवि लिखि
याते इहां नहीं लिख्यो संक्षेपकरादियो है ॥ ४ ॥

प्रिय को प्रच्छन्नकरुणा विरह ॥ यथा-कवित्त।

ऐसेमिल्योप्रथमश्रवणमगजाइमनरवनभवनकीनेअलिकअल
में। मनमिले मिले नैनकेशोदास साविलासछविआशभूलि
कपोल फलकमें ॥ नैनमिलेमिल्योज्ञानसकलसयानसाजितजि
भिमानभूल्योतनकीझलकमें। तैसेछलवलसाधिराधिके मिलनव
चाहत कियोपयानप्राणहूपलकमें ॥ ५ ॥

नायक मनसों कहत हैं प्रथम तो ऐसे मिले श्रवणकी राह जायकै सोरवन सुं
भवन तुमकीनों अलिकमायो अरु अलकावली में फेर मन मिले जोतिहारे नय
तासों मिले तहां विलास सहित रहे फेर छवि की आसते कपोल रूपी फलक आका
अथवा फल में फेर तिहारे संग जो नयनहैं सोभी ज्ञान सों भी सब सयान सज
अभिमान आपन तजकै तनकी झलक में भूले तोसोंछल बल कहां है साधतै राधि
को मिलवे को प्राण भी पलक में मिलतहैं प्राण तजन सो करुणा विरह मना
कहत याते प्रच्छन्न जैसे मन मिल्यो तैसही प्राण मिलन चाहत यह दृष्टांत अलं
कार ॥ ५ ॥

प्रियाको प्रकाश करुणाविरह ॥ यथा-सवैया।

हेतरुणाईतरंगिनपूर अपूरवपूरवरागरँगेपय।
केशवदासजहाजमनोरथसंभ्रमविभ्रमभूरभरेंभय।
तर्कतरंगतरंगिततुंगतिमिंगिलशूलविशालनिकेजय।
कान्हकछूकरुणामयहेसखितेंहोंकियेकरुणावरुणासय ॥ ६ ॥

उक्ति बहिरंग सखीकी नायकासों। कि कान्ह कछू करुणामय रहे अबतें वरुणालय समुद्र बनाये ताहीको रूपक करति है जो तरुणाई है सोई तौ तरंगिणी नदी है सो अपूर्व है ऐसी आन नाहीं अरु पूर्व राग राग पूर्वक है दाग सहित है अर्थ तेरे प्रेमते तरुणाई उमगी व्यंग्यते तरुणाई की उमंग दिखावत हैं रँगे पय पय जो जल है सो रँगेरँग है अरु जहाज मनोरथ है ते संभ्रम होरहेहैं अरु विभ्रम भूरमय है अर्थ जो मनोरथ में भय है सोई भँवर है कहा मनकी विकलताते जहाज भरे है अरु तर्क रूपी जो तरंग लहर है तरंगत है भयदा है तुंग ऊँची है अरु तिमिङ्गिल बड़े बड़े जीव सो विरह के शूलहैं चय समूह ते तामें उठतेहैं यामें सखी बहिरंग ते प्रकाश अरु पूर्ववत् करुणा विरह रूपक समुद्रको ॥ ६ ॥

अथ प्रवासविरहलक्षण।

दोहा–केशवकौनहुकाजते, पियपरदेशहिजाय।
तासोंकहतप्रवाससब, कविकेविदसमुझाय ॥ ७ ॥

कौनों कार्यते पिया परदेश जाय ताको प्रवासविरह कहिये ॥ ७ ॥

प्रियाको प्रच्छन्नप्रवासविरह ॥ यथा–सवैया।

तूकरिहैकविधौंकहिगौनहिंनंदकुमारतौगौनकियोई।
मोहिंमहाडरुतोउरकोनरहैलटिलेजिनकेधौंलियोई॥
ऐसीनबूझियेकेशवतोहिंविचारैंजुबीचविचारवियोई।
तेरहीजीयजियेजिनकोजियरेजियताविननूबजियोई॥ ८ ॥

नायका जीवसों कहत है कि तू कबतक गमन करहै नन्दकुमार तो गमन कीनो मोको यह तेरे उरको डर लागतहै कि तू लटी कमीकी बात लेके न रहे लटी निषिद्ध जिन कि धौं लियोई है होतिहै जातहै रहत है ऐसी तोहिं न चाहिये जो दूसरी विचारै तेरे जीव सों जिनको जिय जिये रे जिय ता बिन तू जियो यहां कोई प्रश्न करै कि जाके जियसों जियत ताको छोड़ि कैसे जैहैं ताको उत्तर करत कि जीय को लक्षणा प्रेममें है लोकमें कहत हम तिहारो जीव पाय यह कही तहां जिय प्रेमहीसों जियो तो भी जायबो नहीं बनत कहा प्रवास में जो प्रेमछूटत तो विहारी आदिक कवि यह वरणी दोहा ॥ मिलि बिछुरत फिर फिर मिलत, आंगन अथयो भानु। भयो मुहूरत भोरको, पौरहि प्रथम मिलानु ॥ ताते इहां नायका को विरहताप ते सुधि भूलि जो जिय आवत सोई कहति है मन सों कहत याते प्रच्छन्नका जियत है याते काकोक्ति अरु दृष्टांत अलंकार ॥ ८ ॥

प्रियाकोप्रकाश प्रवासविरह ॥ यथा–कवित्त।

कौनकेनप्रीतिकौनप्रीतमहिंबिछुरततेरेहीअनोखेपतिव्रतगाइ

यतुहे । यतन करेहींभलेआवैहाथकेशोदासऔरकहोपक्षिनकेपाछे-
धाइयतुहै ॥ उठिचलोजोनमानैकाहूकीबलाइजानैमानसोजोपहिचा-
नैताकेआइयतुहे । याकेतोहैआजुहीमिलोकिमारिजाउँमाईआगि-
लगेमेरीआलीमेहपाइयतुहे ॥ ९ ॥

उक्ति बहिरंग सखीकी नायक विदेश गयो तासमय नायका अति व्याकुल भई तहां कहति कि कौनके अपने नायकमें प्रीति नहीं है अरु कौन नायक नायकाते बिछोह नहीं होत तेरोही अनोखो पतिव्रतहै कि प्रीतम गमन सुनि भोजनादि त्यागकीनो देख यत्न करेते पक्षी हाथ आवतहै कोऊ पक्षीके पाछे धावत नाहीं उठि चल यह द्वितीय सखी ते कही जो नहीं मानत तो नायका को काहूकी बलाय जानै जो मानै मनको पहिचानै ताके घर आइयेहै यह या चाहत कि नायक मिलै नहीं तो मैं प्राण छोड़ देउँ सो आगि लगै कहूं पानीबरसो है चलो कहेते बहिरंग आग लगे मेह नहीं मिलत यहते लोकोक्ति अलंकार९

विरहभयविभ्रम ॥ यथा–सवैया ।

कोकिलकेकीकुलाहलहूलउठीउरमेंमतिकीगतिलूली ।
केशवशीतसुगंधसमीरगयोउड़िधीरजज्योंतनतूली ॥
जैमुनिजैमुनिकैवचिजोन्हकी यामिनीपैनअजोंसुधिभूली ।
क्योंजियेकैसीकरैविसुसी बहुरचोविनसीविसवासिनफूली॥१०॥

कोकिल अरु मयूर इनके कोलाहलते उरमें हूल उठी तासों मतिकी गति लूली लँगरी ह्वैगई अरु शीत सुगन्ध जो समीर है तासों धीरज तूल रुई की भांति उड़िगयो जैमुनि अगस्त्य कहि कहि जोन्हकी यामिनमें बची अगस्त्य समुद्र शोषणकरत अरु चन्द्रमा समुद्रको पुत्र सो मुनि मंद ह्वैगयो अरु कोई कहत कि चांदनीमें जो न्हाई को भ्रम ह्वैगयो कि बिजुरी न परै ताते अगस्त्य कहो अब क्यों जियो बिससी फेर बिनसी विष-वासिन बिसनाम जल ताकी बासिन पुरइनि फूलीहै यामें विरहते भय भई अरु सुखद दुःखद ह्वैगये यह व्याघात अलंकार तेन जी है यह वस्तु व्यंग ॥ १० ॥

प्रियाको प्रच्छन्न प्रवासविरह ॥ यथा–सवैया ।

जिनचोलिसुबोल अमोलसबै अँगकेलिकलोलनिमोललिये ।
जिनकोचित लालचोलोचनरूपअनूपपियूपसुपीयजिये ॥
जिनकेपद केशवपानिहियेसुखमानिसबैदुखदूरकिये ।
तिनकोसँग फूटतहोफिटिरफटिकोटिकटूकभयोनहिये ॥११॥

ायक चित्तते कहत है जा प्रियाने केलि कलोलनि में सुबोल बोलिके जिनको मोल नहीं ते अंग मोल लेलये जिन लोचन निको चित्त लालची ते वाको अनूपरूप सुधा पीके जिये जिन के पदको परसके हाथ जोहे सो हियमें सुखमानिके सब दुःख दूर करदिये पान छिंये भी पाठ है ताको संग फूटतमें फिटिरे धिकरे हे हिये सौ टूक काहे नहीं भयो ॥ तिनको संग छूटतही फटुरे फटि कोटिक टूक यह भी पाठ है । चित्तते प्रच्छन्न बोल अमोल इत्यादि ते वृत्त्यनुप्रास ॥ ११ ॥

प्रियाको विरहप्रकाशप्रवास ॥ यथा-सवैया ।

केशवक्योंहूंचलैंचलिकोरिसदेशकहैंफिरिपैंडकदूपर ।
आगेधरेअपनोसुकैसाहसपाछहिंपैलपरैंपगभूपर ॥
होतजहींतहिंठाढ़ेठगेसे चलोनकह्योपरैकान्हहितूपर ।
लोककिलाजफिरयोनपरैपैमिलानकरेदशकोशकऊपर॥ १२ ॥

वक्ति सखीकी सखी सों ॥ कैसेहूं चले फेर दो पेंड़ पे कोरन संदेशे कह अरु अपनो साहस करके आगेको पाउँ धरै पर पीछे को परजाय जहां तहां ठाढ़े ठगेसे होजात चलो नहीं कहत बनत हितू सों अरु लोक की लाज ते फिरतन हीं बनत परंतु दश रोज में एक कोश गये यहां सब जानत ताते प्रकाश अरु लोककी लाज कारण फिरचो न बनै कार्य एकसंगते हेतु अलंकार अरु नूपुर पाठ में जब प्यारीसों कान्ह कहे चलो न तब नूपुर गिरि परे ॥ १२ ॥

कृष्णको विरह भयविभ्रम ॥ यथा-सवैया ।

प्रेतकोनारिज्योंतारेअनेकचढ़ायचलैचितवैचहूंघातो ।
कोढ़िनिसीकुकरेकरकंजनिकेशवश्वेतसवैतनतातो ॥
भेंटतहीवरहीअवहींतौ वरचाइगईहीसुखैमुखसातो ।
कैसीकरौंकहिकैसेवचौं वहुरोनिशिआइकियेमुखरातो ॥ १३ ॥

यहां रात्री चुरैलको रूपकहै प्रेतकी नारी की ज्यों जैसेतारे नेत्रन के होतहैं तैसेही तो तारागण रात्रीमें अनेकहैं सो चढ़ाई कर चलत चारओर चितवत है अरु इतने पर कोढ़िनसी है काहे करकपी कंज सिकोरेहैं अर्थ रात्रीमें कमल सिकुर जात अरु कोढ़िनके करभी सिकुरे होतहैं अरु सब अंग श्वेत करहैं चांदनी ते भेटत ही बरत है दीप अब हौंतो सातों सुख बराय गई नाश करगई वा जराय गई सुखैमुखिमातोंभी पाठ है कैसी करों तू कहु कैसे बचे फेर राती मुख करके आई है निशिमुख संध्या वाको रंग लाल होतही है अरु सातसुखको नाम दोहा ॥ खान पान परधान पुन ज्ञान गान शुचि अंग । शुभ संयोग वियोग विन, सातोंसुख तियसंग ॥ अरु कोई यह मानत ॥ नींदसेजसु

मनोसमा संगति साल सुगंध । सात वियोगिनकोकरत महा विरह ते अंध ॥ आशय यह कि रात्री विरहनी को दुःखदेनहार आई ताको वर्णन कियो है रूपकालंकार ॥ १३ ॥

प्रियाको निद्रा ॥ यथा–सवैया ।

आयेतेआवैगीआंखिनआगेहींडोलिहैमानहूमोललईहै ।
सोवैनसोवनदेयनयोंतवसोइनमेंउनसाथदईहै ॥
मेरियेभूलिकहाकहोकेशवसोतिकहूंतेसहेलीभईहै ।
स्वारथहीहितुहैसवकेपरदेशगयेहरिनींदगईहै ॥ १४ ॥

नायका कहति है कि हे सखी या नींद मेरी सौति है काहे जब पीव आवेंगे तब आंखिन आगे आवेगी अरु डोलेगी मानो मोलकी लीनि है सोवैहै आपुन ॥ सोवन देति पीय पास का पीय आपनो करलेत सोवनमें नाम जानी बेरउन मेरे साथ दई है कि यह नीके राख है सो भूल मेरी है जो मेमानी कहूंसौति सहेली भई है स्वार्थ के लिये सब हि तु है परदेशगये हरि नींद संग लई है रूपकालंकार ॥ १४ ॥

प्रियको निद्रा ॥ यथा–सवैया ।

केशवकेसहुँकोरिउपायनिआनसुतोउरलागतिहै ।
चकचौंधतिसीचितवैचितमेंचितसोवतहूंमहँजागतिहै ॥
परदेशप्रियापलमोंहिपत्यातिनजानेकोयाकीकहागतिहै ।
तजिनैननर्नीदनवोढ़वधूलहुआधिकरातितेभागतिहै ॥ १५ ॥

यहां नवोढ़ाको अरु निद्राको एकसी कहें नींद अनेक उपायन ते आवत माद वस्तु ते अथवा किस्सा कहानीते तैसही नवोढ़ा सखिन के छल बल ते आवति है नीं चकचौंधति सी चितवे अधखुलीआंखिनमें नवोढ़ाभी तैसही अधखुली आंखिन ते चित वतिहै कब जब में जागत तब चकचौंधतसी चितवत आपन नींदसी जतावै अरु नींदहू जागि यह अधखुली आंखिन रहै नींद उमच उमच जात नवोढ़ा भी उचकि उचकि पर नींद परदेश प्रिया जान मोको नहीं पत्यात नवोढ़ा परदेश परदासे रहित मोहिनहीं पत्यात को जाने याकी कहा गति है ऐसी तज नैनन नींद नवोढा वधू आधीरात ते भागति तहां नवोढ़ा पत्याति नहीं प्रश्न ॥ नींद काहे ॥ नहीं पत्याति यह कोई कहै उत्तर वो नींद विरहाग्नि की भय मानति प्रश्न अरु कोई कहे नेत्र तो देहिं पीय एकहै तहां उत्तर यहां नींद नवोढ़ा सो-सविषयमें सावयव रूपक भयोहै वहां एकदेशवर्ती भी सावयव होतुहै एकवस्तु ऊपरते कहे विन कहे जैसे विधुमुख मृगमद बिंदु अंक लसत सुपिय गहिटेक इहां मुखचंद मृगमद अंकअरु चकोरत्व बिन कहे लसे तैसे यहां नेत्रनको नींद छोड़ि जातिहै नवोढ़ा पियको अंक छुटाय भागिजातिहै सो अंग ऊपर ते लगाय लीजे

क देश विवर्ती सावयव रूपक भयो ऐसीतो प्राचीन कहत तहां यह प्रश्न है कि रूपक नेहूं होहि विषे विषयीको संबंध नहीं छूटन चाही प्रथम वर्ण पुन अवर्ण कोई कहत प्रम अवर्ण पाछे वर्ण सो यामें वर्ण अवर्ण एकही अर्थते पुष्ट कीने ताते यहां वाच्य द्धांग व्यंग होत है वस्तु उत्प्रेक्षा अनुक्त विषया जानियें काहे सब पद क्रियाके हिले कहि पाछे वाचिक दीनो है जैसे बिहारी ऐंचतसी चितवन चितै भई ॥ १५ ॥

मियाकी विरहनिवेदन ॥ यथा—कवित्त।

केशवकुँवरवृषभानुकीकुँवरिवनदेवताज्योंवनउपवनविहरतिहै।कम लाज्योंथिरनरहतिकहूंएकठौरकमलानुजाज्योंकमलनितेडरतिहै ॥ कालीज्योंनकेतकीकेफलसूंघैसीताजूज्योंनिशिचरसुखचंददेखिही रतिहै । वदनउघारतहींमदनसुयोधनहीद्रौपदीज्योंनाउँमुखतेरो ररतिहै ॥ १६ ॥

विरह में राधिका की सखीकी पत्री कृष्णको हे केशव कुँवर वृषभानुकी कुँवरि राधा- न कहिये बनाय देवताज्यों वन देवीसी वनके उपवन में फिरति है किंवा देवीसी वनके न जंगल उपवन बगीचामें फिरति है कमलासी चंचल चंचलताई में लगति है कमल डरति है याते मानो कमला है कमल ते डरतहै किंवा कमलासी चंचल है मलानुजादरिदासी कमलते डरत कालीसमान 'केतकी सूंघत काली ज्यों केतकी कफूल रुचै' या पाठमें जैसे कालीको केतकीको फूल नहीं रुचत तैसे याको भी तासमान निशाचरीचंदते जरत निशिचर राक्षस अरु चंद्रमा मदनरूपी दुर्योधन जब दन उघारत तब द्रौपदीकी रीतिते तिहारो नाम लेति है यहां उल्लेख अलंकार बहुविध र्णन ते ॥ १६ ॥

पुनः कवित्त।

भौंरिनिज्योंभावतरहतवनवीथिकानहंसिनिज्योंमृदुलमृणालिका चहतिहै । पीउपीउरटतरहतचितचातकीज्योंचन्दचितैचकईज्योंचु प्व्हैरहतिहै। हिरनीज्योंहेरतिनकेशरिकेकाननको केकासुनिव्याली ज्योंबिलानहींकहतिहै । केशवकुँवरकान्हविरहतिहारेऐसीसुरतिनरा धेकाकीमूरतिगहति है ॥ १७ ॥

सखी वचन नायक सों राधे तिहारे विरह ते भौंरीसी भँवत रहत वनवीथिन में अरु 'भौंरी ज्यों भँवति है भवन वनवीथिकान' भी पाठ है। अरु हंसिनीसी कोमल मृणालिका चाहति यं तोरि डारति अरु पीउ पीउ पपीहा की तरह रटत रहति अरु चंद्रमा को देखि चक्रवाकिन

सी रहिजात अरु हिरनी केशरी सिंहके कानन ते भागै तैसे केसरी के वन ते भागति है सर्पिणी जैसे मयूरके वचन सुनिके बिलमें घुसति तैसे यहभी उद्दीपन जानके बहति है 'चहतिहै' यहभी पाठहै। अरु वाकी मूरति सूरति को नहीं गहति अति बेहोश है इहां भी उल्लेख अलंकार पूर्ववत् जानिये ॥ १७ ॥

प्रियको विरह निवेदन कवित्त।

दीरघदरीनवसैकेशोदासकेशरीज्योंकेशरीकोदेखवनकरीज्योंकँपतहै। वासरकीसंपदाचकोरज्योंनचितवतचकवाज्योंचंदहीतेचौगुनोचँपतहै॥केकासुनिव्यालज्योंबिलातजातघनश्याम घननिकीघोर निजवासेत्योंतपतहै। भौंरज्योंभँवतवनयोगीज्योंजगतनिशिचातकज्योंश्यामनामतेरोईजपतहै॥ १८ ॥

उक्ति कृष्णकी सखीकी राधिकाप्रति दीरघजे पहार की दरीहैं तिनमें बसत केशरी सिंहकी रीतिते याके दोइ अभिप्राय एक गेह में नहीं रहत दूजे अकेले केशरी आदिक सुगन्धित वन देखि हाथीकी रीतिते कँपत अर्थात् प्राणहानिको डर मानिके वासर दिन जो संपदा है भोजनादिक ताको चकोरकी तरह नहीं चितवत अर्थ खान पान छोड्यो 'वासरकी संपत्ति ज्यों पूप ज्यों न चितवत' यहभी पाठ है। चक्रवाककी रीतिते चंद्र को देखिके चौगुनो चँप जात चौगुन में यह अभिप्राय है चांदनी ते विरह तपन १ उद्दीपन चंदते २ मुख को स्मरणही ते चंदकी आकार देख ३ अरु चौथे प्रकाश ते सबै स्थल देखि परत चकवा में भी चार अभिप्रायहैं एक बिछुरन दूजे रात्रि तपन किंवा रात्रि दिनसी भासत तीजे चकई दृष्टि आवत चौथे शीतलता किम्वा चाँदनी उद्दीपन जरावत है विरही 'को चकवा ज्यों चंद चितै' यहभी पाठहै केका मयूरकी वाणी सुन सर्पकी तरह विलात जात घनश्याम कृष्णचंद्र और घनमेघकी घोर सुन जवासकी नाई तपत 'जिय जवास ज्यों तपतहै' यहभी पाठ है। भौंर की रीतिते वनमें भँवत योगी की रीति ते रात्रिमें जागत चातक की रीतिते श्याम नायक तेरो नाम जपत 'चातक ज्यों श्याम नाम तेरोई जपत है' यहभी पाठ है प्रश्न ॥ इहां कार्यविरोध हेत उत्तर वर्षको वर्णन है अरु कृष्णकी सखीकी पत्री राधिका प्रति है यापरभी अर्थ इसी है अलंकार पूर्ववत् ॥ १८ ॥

दोहा—केशवदासप्रवासको, कह्योयथामतिसाज।
राधाहरिबाधाहरण, वरणोंसर्वसमाज ॥ १९ ॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायां संभोगशृङ्गारप्रवासवर्णनं नाम एकादश प्रकाशः ११

प्रवासको यथा मतिते वर्णन कर्यो अब बारहवें प्रकाश में राधा की अरु हरिकी बाधा हरनिहार सखी वर्णन करिहैं ॥ १९ ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेनसरदाराख्यकवीश्वरेण विरचितायांरसिकप्रियायांभूषणे सुखविलासकानामटीकायांकरुणादिविरहप्रवासवर्णनं नाम एकादशःप्रकाशः ॥ ११ ॥

अथ सखीवर्णनम्।

दोहा–धाइजनीनायननटी, प्रकटपरोसिननारि।
मालिनबरइनशिलिपनी, चुरहेरनीसुनारि ॥ १ ॥

धाइ जनी जो दुरागमनमें साथ आवत, नायन नटी परोसिन मालिन तमोलिन शिलिपनी नाम चितेरिन चुरिहेरिनी सुनारिन ॥ १ ॥

दोहा–रामजनीसंन्यासिनी, पटुपटवाकीबाल
केशवनायकनायका, सखीकरहिंसबकाल ॥ २ ॥

रामजनी गोसांइन पटु प्रवीण पटवा की स्त्री नायक अरु नायका इनको सबकाल में सखी करतेहैं यह केशव कहत ॥ २ ॥

प्रियासों धाइको वचन ॥ यथा–सवैया।

मोहनसाथकहानिशिद्योसरहैसतरंजहिकेमिसिबैठी।
केशवक्योंहुंसुनैमहतारितोराखहिरीघरहीमहँपैठी।
होंसिखवोंसिखदैरुखितोहितेभौंहचढ़ायकेदीठउमैठी ॥
कौनलड़ैतीसुरूपनकाहितुहींकछुजातिअकाशहिऐंठी ॥ ३ ॥

पद सुगम अरु कोई कहै यामें धाइ कहां है तो लड़ैति शब्द पोषण करत लाड़ धाइ करतेहैं पिहित अलंकार जो नायकाकी हियेकीबात सो सतरंजके मिसते कही अरु पर्यायोक्तिभीहै ॥ ३ ॥

प्रियप्रतिधाइकोबचन ॥ कवित्त।

थोरीसीसुदेशवैपदीरघनयनकेशगोरीजूसीगोरीभोरीभवजूकीसारीसी। सांचेकीसीढारीअतिसूक्षमसुधारिकढ़ीकेशोदासअंगअंगभाइकैउतारीसी॥शोधेकैसीशोधीदेहसुधासोंसुधारीपांउधारीदेवलोकतेंकिसिंधुतेउधारीसी। आजुयासोंबोलिचालिहँसिखेलिलेहुलालकाल्हिएसीम्वारिलाउँकामकीकुमारीसी ॥ ४ ॥

नायका यह आपनी ससुरारि जाति है ताको नायक बहुत चाहत रहो तानिमित्त धाइ समाधान करति है भवकी सारी पार्वती की बहिन सोहै प्रश्न ॥ जाको लाइ है ताकी हीनता क्यों करै यासों आज कार्य साधिलेहु उत्तर ॥ कालिहू ऐसी ल्याइहों यह तौ जाति है यह तौ तुमको नीकी लगीहै याते ऐसीही कालिह और ल्याइहों कुमारी शब्दते धाइ जानियें इहां जाति अरु संशय है दीरघनयनके समय जाति सिंधुते उधारी-सीहै यामें संदेह भवजूकी सारीसी में उपजा अरु याको अर्थ कविप्रिया के तिलक में नारायण कवि लिखिचुकेहैं याते इहां नहीं लिखो उपमा लुप्तालंकारको संकर है ॥४॥

प्रियासों जनीको वचन ॥ यथा–कवित्त।

शोभाकोसघनननमेरोघनश्यामनितनईनईरुचितनहेरतहिराइये । केशोदाससकलसुवासकोनिवासकरिविविधविलासहासत्रासविसर ये ॥ ऊपरसकेतकुमयूपरसमीठोहैपियूपहूकोपैलीघाहेजाक यराइये । चोरीचोरानैननिचुरायेसुखकोनेजौलोंपियमनमाहीं मेळनाचराइये ॥ ५ ॥

शोभाको जाकी घन नहीं है कहं नवीन २ शोभा धारत सुवास को निवास विलास हास त्रास विसारे अरु ऊप कितनो मयूप मधु पियूप अमी के पारहै नियरें ताते चोरी काहे चुरावत नयनन को कौन सुखहै जौलों मन मेलि न चरावैगी इतनी बातें मेघमें नहीं हैं याते उपमान ते उपमेय अधिक है ताते 'व्यतिरेक शोभ सघन घन ' या पाठमें उपमा विलास इत्यादि में वृत्तानुप्रास ऊप मयूप कहा है उपमानकी निंदा ते प्रतीप अलंकारादिको संकरहै जनीको अर्थ जन चाकर की द अरु मइकेके घरते आवै ॥ ५ ॥

जनीकोवचन प्रियसों ॥ यथा–कवित्त।

ऐसीबातेंऐसेहीधोंकैसेकहापरतनजाकीगतिमतिलाजपटसोंलपेटं मेरेहीनआवेमेरीवीरएतीयारवेतोजातधाइहींकैवरसाथलोटिलेटेहे ऐसीतोहैचेरिनकीचेरीवाकोकेशोदासजैसीतुमहाहाकर पांइपरमेटं है । जानतिहोंनंदजूकेढोटाहोजूजानोवोनवेऊतोउतहिवृपभान कीवेटीहैं ॥ ६ ॥

नायकको अपराध जान जनी कहति है कि ये बातें हम कैसे कहें तासों जैसी करत हो काहे तासों जाकी गति अरु मति अति लज्जा ते लपेटी मेरे नहीं आ घरके घर जाति है अरु जैसी तुम आतु वशकरी तैसी वाकी चेरी की चेरी नहीं है

जानत हम नंदनलालहैं या नहीं जानत वे वृषभानु सुताहैं चेरीके नामते चेरी वचन लाज पट ते रूपक ॥ ६ ॥

नाइनको वचन प्रियाप्रति ॥ सवैया ।

अहोतोगयेंपुनिपौरहिलौंसुतोवोलनजाहितूपाछहिलागे।
करैतवकैसेपरायेजुढोटहिंहैहैकछूनिशियोसकेजागे ॥
जोनरह्योपरैकेशवकैसहुँदेखतहीसुखश्यामसभागे ।
देतिहौंजानक्योंराखतिकाहेनआरसीयोंकरिआंखिनआगे ॥ ७॥

आरसी याते उपमा अलंकार आरसी शब्दते नाइनअहोतो गये पुन पौरहि लौं सुतो बोलन जाहिरी पाछहि लागे करैहै तब कैसी परायेहि ढोटहि यह भी पाठहै ॥ ७ ॥

नाइनवचन प्रिय प्रति ॥ सवैया ।

वड़ीवड़ीआंखवड़ी छविसों चितवैवड़ीवेरवड़ोसुखदीने।
वड़ीहीविचारवड़ीरुचिकेशवक्योंहूंमिलोसुवड़ीहमहीने ॥
वड़ीजियलाजवड़ोडरआलीवड़ीलहरीयोंचलैंचितलीने।
वड़ीनिहूंसोंतोवड़ेदुखवोलैइतोवड़ेमानवड़ोमनकीने ॥ ८ ॥

नाइन कहतिहै एकतो क्योंहूं मिलो तौ मिलें हमहीने हमहीं को मिलै केश सँवारिवेके संबन्ध दूजे नायका न्हातिहै तब नाइन सों लाज नहीं करति यह नाइनहूं सों लजाति है सो नाइन कहतिहै याके बड़ी लाजहै याते नाइन लाटानुप्रास बड़े बड़े शब्दते ॥ ८ ॥

नटीवचन नायकासों ॥ सवैया ।

ज्योंहोंदिसावनतोहिंगईरीतैंमारियेग्रीवगहीफिरिमाई।
आजुकहादिखसाधलगी हैदिखाऊंगीजाइतेवेईकन्हाई ॥
देखेतेशीरीहैजातिभटूअनदेखेजरैतुवहैअधिकाई।
रातिकीवागतियोसकेएपुनहौंतेरीवालनिवाजनआई ॥ ९ ॥

अति प्रेमते प्रेमालंकार गतिते नटी ॥ ९ ॥

नायकप्रति नटीवचन ॥ कवित्त ।

जहाँ जहाँ दुरे तहाँजोन्हऐसीजगमगैकेसहूंजुकेशवदुराइल्याउँरंगकी । पवनको पंथ अलिअलिनकेपीछेआलीअलिनिन्ज्योंलागीरहैं जिन्हें साधसंगकी॥ निपटअमिलवहतुम्हें मिलिवेकोजक कैसेकैमि-

गाऊंगतिमोपैनविहंगकी। इकतोदुसहदुखदेतिहुती दुतिहूंजे बीस॰
बेस्वेविसवासभईवाकेअंगकी॥ १०॥

सुगम विपरीति अलंकार ता को लक्षण॥ सावक बाधक सिद्धको जो वास सुग॰
न को पिय को॰ मिलावत है पीय वश होइ जात है सोई बाधक भयो मिलन में
धकता करत है कि जोवाको लिवाइ कुंजमें दुराऊं तो द्युति चांदनी दिखात अरु
नके पंयते भ्रमर संग लगेरहत अरु अलिन के पीछे आली सखी भ्रमरी समान
हतीं सो एक तो दुःखदा द्युति रही अरु ताहूपै विपसी सुवास भई है तहां प्रश्न है; कि
ली भ्रमर के पीछे रहनेको कहाआशय नायका के पाछे काहे नहीं रहती ताको उत्तर;
क वह चांदनी में जब चलत तब मिलजात देख नहीं परत तब सखी जा ओर भ्रमर
हुत जात ताही ओर जातीहैं अर्थ कुंजकी राहे लाऊँ तो प्रकाश नहीं छिपत चांदनी
तो भ्रमर दिक करत अरु वास उपमेय विप उपमान फैलन धरम ताते वाचक लुप्ता
होत है॥ १०॥

परोसिन वचन नायकाप्रति।सवैया।

पांइपरेपलिकापरस्योसुलगीरतितोलनमेलिरतीहो।
सोंहकियेमुहसोंहेंकियो अबलोंतुमपैगतिऐसीनतीहो॥
केशवकेसहुंदेखनकोजिन्हेंभोरहिभोरीह्वै आनँदतीहो।
पानखवावतहीजिनसोंतुमरातिकहांसतरातहतीहो॥ ११॥

इहां रातिको सतरैबो अपने भवनते जानों याते परोसिनके पांइपरे तुम पलँग पर॰
न दीनो अरु अपनी रति मेल मिलाई अथवा डारको उनकी रति प्रीति तौलत रही
नके देखवेकी भोरते भोरी ह्वै है मोषों दती रही तिनसों पान खवावत राति कहा
तरात रही प्रश्न॥इहां पान खवावत सतरानी सो काहे उत्तर॥आनकी पान खवावत रहे
सुधि आई याते स्मृति अलंकार अरु दूसरी प्रश्न कि जो परोसिन जानी तो गेहक
ान न जानेंहैं तहां जाने ते निरलज्जता सूचित होति उत्तर॥ नायक प्रात आइ सब
या कहिगयो रहो प्रश्न तहां अन्द घाइ नहीं सो काहेन कही उत्तर॥ परोसिन को सुनबो
न्स होति है॥ ११॥

परोसिनवचन नायकप्रति॥ सवैया।

हांसमेंबातकबासोंकही हँसिवाहूकहीसुहितैकरिलेख्यो।
आंखमिलीनमिलीसखियाँ मिलवोईसुकेशवक्योंअवरेख्यो॥
चिच्याइमरोचुपसाधकिबातकस्वातिसमेहांसखेसुविशेख्यो।
आजहीक्योंवह आवतह्यांजिनिआगिलगेहूंनआंगनदेख्यो॥१२

उक्ति परोसिन की नायक प्रति कि जा सखीसों तुम कही रही वासों मिलावहु ताकी बात में सुनत रही परोसिन हो ताते वाने हांसी करि नायका सों कही अरु हँसि वै कैसी बात याहू कही हम मिलिहैं सो तुम हित जानोअबै तुमसों नहीं याक्षण सखी मिलि है मिलबो कहा अबरेखति है सो चिच्याइ काहेको मरत हो चुप साधिरहो स्वाती समय पाइ श्रवत है आजहीं वह क्यों ह्यां आवत है ताते तुम आगि लगो आंगनमें मति देखो भाविक अलंकार पाछिली बातें भी कहेते अरु आगिलगैहूं आंगन न आई यामें कोई विशेषोक्ति भी कहत अरु परोसिन भी याही में ॥ १२ ॥

मालिनिवचन नायकासों ॥ कवित्त।

दुरिहैक्योंभूषणवसन दुतियौवनकीदेहहीकीजोतिहोतिद्योसऐसी रातिहै । नाहकोसुवासलागेव्हैहैकैसीकेशवसुवासहीकीवासभौंरभी रफारेखातिहै ॥ देखितेरीसुरतिकीमूरतिबिसूरतिहौंलालनकेदृगदे सिवेकोललचातिहै। चलिहैक्योंचंदमुखीकुचनकेभारभयेकंचनके भारतोलचकलंकचातिहै ॥ १३ ॥

जो सखी है सो नायकाके रूपकी अधिकाई नायकको जतावत नायका प्रति कहिके अरु 'सुवास भ्रमर ते मालिन सुभावही' भी पाठ है। अरु अभूत उपमा अलंकार के उदाहरण में यही कवित्त कविप्रिया में है याते नारायण कवि याको तिलक नहीं लिख्यो है ॥ १३ ॥

मालिनिवचन नायकप्रति ॥ कवित्त।

घेरोजनिमोहिंघरजान देहुघनश्यामघरिकमेंलागीउरदेखिवीज्यों दामिनी। होई कोऊऐसीवैसीआविइतउतव्हैकैवेऊवृषभानुजूकीचेटी गज गामिनी ॥ आदितकोआयोअंतआवोवनिचलिजाऊंआवतहैवे ऊवनीआईअरुयामिनी । कामकेडरनतुमकुंजगह्योकेशोदासभौर नकेभयनभवनगह्योभामिनी ॥ १४ ॥

उक्ति मालिनि की नायक सों तहां प्राचीन प्रश्न करत कि कुंजमें जो नायकको पठावत कामके डरते सो तौ कुंजउद्दीपन है उहां ज्यादा विरह हूहै कोइ काम अत्यंत सतावत है तब कंज गह्यो क्यों कह्यो तहां उत्तर यह कीन्हों कि कुंजकामको पर है परमें आये तौन मारि है तहां कुंजमें क्या न्यून चाही सो अधिक है घनवनशरदवसंत उद्दीपनस्थलहैं ते सब काम के भवनहैं तहांहूं गये काम बढ़त है तहां कुंज दो प्रकारकी है एक संभोग कुंज १ दूसरो तपकुंज २ सोतुम तप कुंजमें जाहु याते काम न सताइ

है सो इहां लक्षणा ते जान्यो कि तुम काम छोडरिके तप कुंज गयो जहां निर्वेद वैराग्य उपजै तहां सखी कोहेकी रही जो शृंगार विरोध भई तौ कवित्तको अर्थ कि करो जिन मोको है घनश्याम परजान देहु जावरमें नायका है एक परीमें दामिनि वत अंगसों लगी देखि धीज्यो साधारन होहितो आनरीति ते आइसकै यह एकवड़े बापकी बेटी दूजे गजगामिनी सो सूर्य्य कोअंतआयो सो अब बलिजाउं वन जलभी आवत है अरु वेभी बनको आवती हैं अरु यामिनी भी आई भ्रमर जिनके डर भवन में बैठी हैं ते कमल में बंद व्हैजैहें अबे घरमें बैठी हैं तुम कुंज में बैठो इहां कोई कहै वन जल कहेते पाव सूचित होत तहां कमल कहां जो वन आवत अब तिहारी वनी आवत है तुम घनश्याम हो सो रस बरसिबो करिहो ताते साभिप्राय पदते परिकरांकुर अलंकार अरु सुवास पदते मालिन जानियें ॥ १४ ॥

बरइनवचन नायका सों ॥ कवित्त ।

मैनएैसोमनतनमृदुलमृणालिकाकेसूतएैसोसुरधुनिमनहिहरति है। दारोंकैसीबीज दंतपांतिसेअरुणओंठकेशोदासदेखेदृग आनँदभरतिहै ॥एरीमेरीतेरीमोहिंभावतभलाईताते बूझतहौंतोहिंउरबूझतडरतिहै। माखनसीजीभमुखकंजसोकुवंरिकहुँकाठसी कठेठीबातकैसे निकरतिहै ॥ १५ ॥

पात पान अरुणाई तें बरइन 'मृदुमृदुलमृणालिकाके' भीपाठ है। अरु 'बिंब से अरुण ओंठ' यह भी पाठहै। याको अर्थ कविप्रिया के तिलकमें नारायण कवि लिखिचुके याते इहां नहीं लिख्यो यामें उपमालंकार है ॥ १५ ॥

बरइनबचननायकासों कवित्त ।

नैननिनवावेनेकअतिहीअनीतकरेजानतहौतुमजैसेजगजानियतुहै। चंचलचरित्रचितचेटिकीचेटकागायोचोरीकैचितनअभिसारोपियतुहै॥एकनिकेपैठेउरउररीउरोजनमेंउरझेतेकेशोराइकैसेवेजियतुहै। ऐसीकहुँहोतिहैजोबालनिकीचोरीचोरीचितमतिमनमथहाथवेचियतुहै ॥ १६ ॥

बरइनकी उक्ति कि हे प्राणप्यारे नयन न नवावनेकहूं अरु अति अनीत करतहैं तुम जानत हो जैसे जाग के जानियें है अरु चंचल जो तिहारो चरित्र सोई चेटका है ताने चेटक गायोहै सो चोरी करि चित्तकी ताको अभिसार करावत हो 'चेटक चटक लायो' यह भी पाठहै ॥ एकन के उरमें पैठे अरु उरोजन में उरझे फिर कैसे तजत हो अर्थ उजेते वह कैसे जीवेगी 'उरउरन उरोजन में' यह भी पाठहै। ऐसी नाहीं होति कि ब्रज

बालनकी चोरी चोरीउनको मनकाम हायबेचत हीं 'मन मनमयही के हाय' भी पाठहैचंचल चरित्र ते नायक के नयननिमें थापें लेत चित्त को अभिसार कहा सारपीलेत है पानानि कोऊसार पीजियतु है इहां चेटक करकतुहै पानबेचिवेमें ताते बरइन चोरको रूपक अरु नयन को भी ॥ १६ ॥

शिलिपनिवचनमियासों॥सवैया।

अवहींपुनबेोलिरीबोलिलगीपौरहूंलौंउठिजाननदीने।
मेरेहीजानभईउलटीवशकेशवहैंकहिबेकहँकीने॥
जोपैइतौदुखपावतिहैतलफैदृगमीनमनोजलहीने।
तौकितछांड़तिहैछिनएकरहैकिनचित्रज्योंहाथहिलीने॥ १७॥

उक्ति सखीकी नायकासों अबहीं ते बुलायबेकी जक लगिरही है तोको नायक दरवाजे तक नहीं पहुंचो'अवहीं पुनिबोलरीबोललगी जक'यहभी पाठहै।यामें कलहांतरितासूचित होत याते मेरे जान तुही वशहै उनके जो पै ऐसो दुख पावत मीन जलकीरीति नेत्रकरिकै तौ चित्रकी नाईं हाय में काहे नहीं लियेरहति इहां चित्रते शिल्पिनी तलफै दृग मानो जलते हीन मीन यह उत्प्रेक्षा ॥ १७ ॥

शिलिपनिवचनप्रियप्रति॥सवैया।

खोटतुरीजिमिखुटिरहोगहिठौरकुठौरनिजानिनजाहू।
लालनआवतमारेसमाजनलागेअलोककेताजनताहू॥
कोरिविचारविचारहुकेशवदेखहुबूझहितेसबकाहू।
नेहहिकेफिरलागहुसंगननैननिकेसँगऔरनिबाहू॥ १८॥

शिल्पिनि वचन है कितुम पोट अड़ैल घोड़ाकीरीति खूट किनारो गहिकर रहेहो ठौर कुठौर नहीं जानत जहां मनमानो तहींरहे किंवाठौर कुठौर कहा जाने न जात हौ' पैटतुरी जिमि' भीपाठ है। लालन कोई करे तौ समाज में न आवो अरु ताजन चाबुक मारे तो आवो'लाजन आवत मारे समाजन'इस पाठमें अलोक के ताजने चाबुक लागे सभामें तौभी लाज नहीं आवत या जो में कहति हों कोरिभांति सों सो विचारो पुनि हितसों बूझो नेहही के फिरफिर संग लगतहो सो नयननिके संग और निबाहत हो इहां नेह के संग लगो नयनके न लगो नेहपद श्लेष है सचिक्कनरंग बतावत ताते शिल्पिनि किंवा खोटातुरी ते चित्रको घोड़ा याते शिल्पिनी जानिये घोटतुरीकी उपमाते उपमालंकार अरु अड़ीयल घोड़ा को दृष्टांत है ताते दृष्टांत अलंकार है ॥ १८ ॥

चुरिहेरिनिवचनप्रियाप्रति॥ कवित्त।

मनमनमिलेकहामिलिहैमिलेकोसुखमिलहुधौंदेखहुबोलाहिकाहू बालसों। भूलिपरेभौंहनिधौंबांधिहौंकितेकदिनबांधौवलिजाउँवनमालीवनमालसों॥मुहुमेरेमारे नामरतिरिसकेशोदासमारहुधौंमेरेकहेकमलसनालसों। नैननिहीविहँसिविहँसिकौलोंबोलिहौजूपचहूतोबोलियेविहँसिमुखलालसों॥ १९॥

उक्ति सखीकी नायका प्रति परस्पर तुम जो मनं मनमिले हो तामें मिलेको कौन सुख तुम्हें मिलिहै मिलिकै देखो अरु काहू बाल सों मिलेको सुख बूझो भूल परे पै भौंहनि सों कितेकदिन बांधिहौ याते वनमाली को वनमाल सों बांधो अरु मुखमो रति हो याते रिस नहीं मरत याते मेरे कहे सनाल कमलसों मारो अर्थ वनमालते कुंज सनाल कमल ते बांहः साध्य वसाना लक्षणा कर नैनन नैनी तिनहीहैं विहँसिविहँसि के बोलो याते मुख विहँसिके लालसों बोलो चुरीपहिरत मुँह मोरत सोई बात कहत ताते चुरिहेरिनि है रूपकातिशयोक्ति अलंकार अरु स्वभावोक्तिभी है॥ १९॥

चुरिहेरिनवचननायकसों॥ सवैया।

आपुनहूजैदुखीदुखजाकेहोताहिकहाकबहूंदुखदीजे।
जाबिनऔरसुहाइनकेशवताहिसुहाइसुतोसबकीजे॥
भागबड़ोजुरचीतुमसोंवहतोनिझकाइकहोकहँलीजे।
जोरिसियाइतोजैयेमनावनतातोहैदूधसिराइनपीजे॥ २०॥

जाके दुखते आपु दुखी होत ताको दुख का कबहूं दीजे जा बिन तुमको और नहीं सुहात ताको जो सुहाय सो करोचाही तिहारे बड़े भाग हैं जो वा रचीहै तुमसों ताको बेझकायेते कहा पावोगे 'बिरचाये औबिछाये' भी पाठहै। जो रिस करै तो मनाइये चुरी पहरातमें सुहात चुरी पहिरावत ताते चुरिहेरिन अन्योक्ति अलंकार दूधसिराके पीजै अबै तिहारे लायक नहीहै का सिराइन पीजे याते काकोक्ति॥ २०॥

सुनारिनवचननायकासों॥ सवैया।

लोलअमोलकटाक्षकलोलअलोलिकसोपटओलिकेफेरे।
पानिपसोंअतिपैनेरसालविशालबनेमनभावतमेरे॥
केशवचोकनेचोगुनेचोखचितेकेकियेहरित्याइनचेरे।
शोचसँकोचनऔरतिरोचनधीरजमोचनलोचनतेरे॥ २१॥

उक्ति नायका सों सुनारिनकी। कि लोल चंचल अमोलहैं तेरे कटाक्षन की कलोल

कहैं अलौलिक तासों धीरज सों पट ओलि के ओट दैके फेरे अर्थ नेत्रपट काढ़िकै फेरतहै पानिप करन अति तीक्ष्ण रसाल रसको घर बहुत विशालबनो है ताको देख मेरो मन भावतहै यह सब नेत्रके विशेषणहैं॥ 'पानिप सो अति नैन विशाल' भी पाठ है। केशव चीकने सचिक्कन चतुर चोगुने चोखेहैं ते चोखे जो चतुरकेगुणहैं ते चोखेहैं सो इनको चितैकि हरि चेरे भये सान्याय है अन्याइ नहीं शोच संकोच श्रीरति की रोचन अरु धीरज इनको मोचन तेरे लोचनको स्वभाव है 'धीरज मोहन' भी पाठ है। इहां अमोल पानिप पैने चौगुने चोप न्याइ ये वचन मध सुनारिनिकेहैं अमोल आभूषण संज्ञाहै याते वृत्यानुप्रास अलंकार॥ २१॥

सुनारिनवचन नायकसों। कवित्त।

हांसीमेंहँसेतेहरिहरेकेझुकतमनहरिकेहँसतहेरहियेअनुरागीहै। प्रेमकीपहेलीगूढ़जानतिजनावतिहौंआजुअधरातकलौंमेरेसँगजागी है॥ अबलौंज्योंधीरधरचौतैसेदिनद्वैकऔरधरोगिरिधरतुमतेकोबड़ भागीहै। भावतीतिहारीवहकाल्हहीतेकेशोरायकामकीकथानिक छूकानदेनलागीहै॥ २२॥

उक्ति सुनारिन की नायक सों हांसी में हँसेते हरि हरे धीरे झुकति है॥ मन हरिके हँसेहै हेरिके उरको अनुरागी है। प्रेम पहेलिका जो गूढ़ जाने जनावै अरु आज आधी-रात लौं मेरेसाथ जागी है॥ अब दोदिन धीर राखो जैसे धीरज धरे रहेहो हे गिरिधर तुमते को बड़भागी है तिहारी जो भावती भामिन है सो काल्ह ते कामकथा सुनतमें कान देन लगी है इहां गूढ़बात सुनार की है वृत्तानुप्रास हास हँस हँस ताते॥ २२॥

रामजनीवचन नायकासों॥ कवित्त।

कोमलअमलवैतोअमलएतोछैचलमलिननलिननवनीलकेसेपा तेहैं। सूधेसाधु शुद्धवैतोकुटिलकरमएतोकेशवमरमचोरपरमकि रातेहैं॥ पाइहैंपकरितवपाइहनकैसेहूतूधोरेइठलातएतोअतिइठला तेहैं। बरजतक्योंनतूहीकविकीकहतमेरेमोहनकोमनतेरेननछूछू जातेहैं॥ २३॥

वे जो नायक हैं सो कोमल अमल हैं एहू अमल हैं परन्तु लीखेहैं चल चंचल मलीनेहैं नव नवीन नीलकमल पत्रवत् फेर मोहन कैसेहैं॥ सीधे साधु साधु में भी शुद्ध सीधे अरु ये कोल विरात में भी कुटिल अरु 'मरमके चोर चितचोर' भी पाठ है। जब पकरि पाइहैं तब तू कैसेहू न पाइ है तू थोरी इठलात ये बहुत इठलातहैं तू घर-

जाति काहे नहीं है में कबकी कहति हो। मेरे मोहनको जो मन है सो तेरे नयन छुये जातहै इहां रामजनी सामान्या न जानियें काहे अमीरकेघर कैसें जैहे यामें वैरागिनि है सो साधु पदते जानीजात अरु कुटिल चोर इत्यादिकको निन्दा करत याते रामजनी॥पाइहे पाइहे ते जमक अरु जैसे उहां कोमल अमल पै कहे तैसेतीक्ष्ण कुटिल रे याते क्रमा भी है॥ २३॥

रामजनीवचन नायकासों सवैया।

कौनहूंतोपकहाभयोकेशवकामिनकोटिकसोहितठाटे।
रंचनसाधसुधैसुखकीविन राधिकेंआधिकलोचनडाटे॥
क्योंसरशीतलवासकरैसुख ज्योंभपियेघनसारकेसाटे।
लालचहाथरहैब्रजनाथपैप्यासबुझायनओसकेचाटे॥ २४॥

रामजनी कहैहै कि कौनहूँ तोप तुमको अर्थ काहूसों सनेह करो कोटि कामनी सों हित ठटिके तौ कहा भयो पै तिहारी साध रंच न सधैगी सुखकी बचलौं राधाके अधिखुले नेत्र न देखि हौ डांटे डॅटके जैसें सरी माटी सपेद होत परंतु शीतल सुवास ता बिन घनसार नहीं होति कपूर के सांट बराबरी वा कपूर के सांट बदले भक्षण करे का होत तिहारे साथ लालच मात्र रहैगो कहूं ओस चाटे प्यास बुझती है इहां साधुपद तोप पद याते रामजनी वैरागिन है दृष्टांतालंकार है अरु ओस के चाटे यह अन्योक्ति है॥ २४॥

संन्यासिनिवचन नायकासों कवित्त।

छूटिहैछुटायेजवकरिहौधौंकैसीतवकेशोदासअनियासप्यासभूं खभागिहै। खेलभूलिजाइगोजुड़ाइगोनचित्तचेतकछूनासुहाइगोरी रैनदिनजागिहै॥ तातेतेतपतिदूनीसीरेतेसहसगुनीउपजिपरेगीउ रएसीएकआगिहै। ऍड़सोऍड़ाईजिनअंचलउड़ातओलीओढ़तहौं काहूकीजुडीठउड़िलागिहै॥ २५॥

उक्ति संन्यासिनि की नायका सों॥ कि अंचल उठाय ऍड सों मति ऍड़ाय मैं ओली ओढ़के मांगति हौं काहूकी डीठि लगिजायगी सो छुड़ाये ते न छूटिहै॥ तब तू का करैगी॥ भूंख प्यास जात रहैगी अरु खेल भूलि जैहे॥ अंग तपि है तपाये तें दूनो अरु हिमते हजारगुनी शीतल व्हैजैहै एसी व्याध उपजैगी रात दिन जगनेते संन्यासिन शुभोक्ति अलंकार॥ २५॥

संन्यासिनिवचन नायकसों॥ कवित्त।

शीतलहूहीतलतिहारेनबसतवहतुमनतजततिलताकोउरताप-गेहु। आपनेजोहीराकोपरायेहाथब्रजनाथदैकेतौअकाथहाथमेंनऐ-

ामनलेहु । एतेपरकेशोरायतुम्हैंनाप्रवाहवाहिवेहैजकलागीभा
ाभूँखसुखभूल्योदेहु । मांजोमुखछाजोछिनछलनछवीलेलालऐसी-
ागवांरिनसोंतुमहूंनिवाहोनेहु ॥ २६ ॥

इहां व्याज स्तुति अलंकारते नायका की निंदा नायक की स्तुति है वह तिहारे ातिल हृदय में नहीं बसत है ऐसी खोटी अरु तुम कैसे भल हौ ताको पत हियों तिलभरभी नहीं तजत हौ अरु तुम कैसे आपन मन हीराको पराये हाथ दियो अमोल अरु वाको मन में न नाम मोमसों लैलियो एसे उदार हौ तुम यह काम ह काम अकाय अकथ कियो इतनेपर तुम्हें अपने हीराकी कछू चिन्ता हीं ॥ अरु वाको वही अपने मोम मन की जक लगी है मेरो मन गयो है सी तुच्छ है वाकी भूंख भागि गई सुख सब भूलि गये शरीरते फेर तुम केश- सों वाको मुख मांडत हौ अरु वह छल छिनभरभी नहीं छांड़तहै ऐसी गवांर सो तुमहूं ह निवाहो मांड्यो मुँह छांड्यो छिन यह पाठ है दूसरो अर्थ व्यङ्ग सो वाही में नायका ो स्तुति करिकै वह तिहारे शीतल उरमें नहीं वसति है कहा तुमको वाको वाकी ाह नहीं है अरु वहको जो तिहारे तापते तपत हृदय होरहा है तामें तुमहूं वसत अर्थ ह तुम्हें चाहत तुम नहीं चाहत अरु तुम अपनो हीरा सो कठोर मन आन नायकाके ाय दीनो वाको मोम ऐसो मन लैकि अर्थ वाको मन कोमल सो तिहारे पास तिहारो ो कठोरमन सो आन के पास एतेई पै तुम्हें वाकी परवाह चाह नहीं अरु वाको तिहा जक लागी है भूंख प्यास घर भूलन की कहा देहाध्यासभी नहीं है मांडो मुख मुख ामुहे छल न छांडो ऐसी जैसिनके पास रहत तैसिनसों नेह निवाहत वह सों न निवाहत हां भूंख प्यास सुख दुःख भागी या शब्द सो संन्यासिन है ॥ २६ ॥

पटइन वचन नायका सों सवैया।

याहीकोमेरीगुसाइनमें पहिलेमिलईवतियांछलिछैलो ।
वातेमिलेअँखियांमिलईसखियानकीआंखिनपारकेऐलो ।
आंखिमिलेमुहुँलागिरहैमनलेहुमिलैवगहैहमगैलो ।
माइमिलेमनकाकरिहौमुहँहीकेमिलेतेकियोमनमैलो ॥ २७ ॥

नायका मान कीन्हें तब सखी कहति है मेरी गुसाइन इन बातन निमित्त में तुम्हैं ाहिलेही छल करिकै छैल नायक सों मिलाई किंवा नायक को बातन में छलि के ानि बात फेरिकै आंखि मिलाई सब सखिन की आंखिन में ऐल पार के ऐलो ओट ाारिबो अरु बँटिबेको नामहै आंखि मिलेते मुँह भी लागो अब मन तुम मिलावहु यह ाहि हम गैल गही सो माई जो मन मिलिहै तो का करोगी मुखके मिले जो मन को मैलो।

कियो अब हम जानी कि मोसों प्रीति करिहै सो उलटो मन मैलो कियो ॥ इहां हारे। बहन ते पटइन अरु इष्टके उद्यम ते अनिष्ट भई ताते विषम ॥ २७॥

पुनः सवैया।

गेहकीनेहकीदेहकीदीखेकीभूपणकीजिन भूसभराई ॥
मोहिंहँसीदुखदोऊदईतिनहूंसोंजनावतहैचतुराई ॥
केशवराइबड़ाईदईसोकहाभयोजानसुभावनजाई ।
सोनेसिंगारहीसोंधेचढ़ाइहौंपीतरकी पितराईनजाई ॥ २८ ॥

याही पैंचते केशव सामान्य कहिचुके अर्थसुगम ॥ लोकोक्ति अलंकार हमारे शिष्य नारायण कवि को भ्रम भयो कि यह कवित्त औरको है ताते अर्थ याको नहीं लिख्यो ॥ २८ ॥

पटइन वचन नायकासों सवैया।

वामृगनैनीज्योंऔरनहींज़ुलगावतहौमुँहऐसेनहूजे।
सोनेसीजोकहूंपीतरहोहितेकेशवकैसहूंहाथनछूजे ॥
आपुगिरागुनजोसिखवैतऊकाकनकोकिलज्योंकलकूजे।
सुंदरश्यामविरामकरोकछुआमकिसाधनआमिलीपूजे ॥ २९ ॥

उक्ति पटइनकी नायक सों कि वा मृगनयनी अन्य नायका बराबर नहीं ॥ जो मुख लगावत हो ऐसो मति कीजे सोनेसे जो पीतर होहि तो भी हाथ से न छूजे जो काक को सरस्वती आपु सिखावे तोभी कोकिल समान न बोलै हे श्याम विचार करो आमकी साध अमली नहीं करत अन्य पीतर वह सोना है इत्यादि सब पद में जानिये इहां मुख मुखमिलाइब धरमपट वाको वितरेक अलंकार जो कहत सो भी है परन्तु लोकोक्ति बहुत मिली सोने सी पीतर सोनईसी सोन पीतर यहभी पाठहै आम अमलीते अरु गुन नाम डोरा ते पटइन ॥ २९ ॥

दोहा–वैनऐनसुखमैनकरि, कहेसखिनकेधर्म।
केशवकहोंकछूकअब, तिनकेकोविदकर्म ॥ ३० ॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीत विरचितायांरसिकप्रियायां सखीजनवर्णनंनाम द्वादशःप्रभावः ॥ १२ ॥

सखीके कर्म यावत रहे सो वचनादि ते कहे अब तिनको धर्म कहत हैं नयन बैन
त मयन करि कहे सखिन के मर्म यह भी पाठहै ॥ ३० ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञा
भिगामीललितपुरनिवासीहरिजनकवीश्वरात्मजेनसरदाराख्यकवीश्वरेणवि
रचितायांरसिकप्रियायांभूषणेसुखविलासेकानामटीकायांसखीजन
वर्णनोनामद्वादशमः प्रकाशः ॥ १२ ॥

सखीजनकर्मवर्णन।

दोहा–शिक्षाविनयमनाइबो, मिलैवैकरहिसिंगार।
झुकिअरुदेइउराहनो, यहतिनकोव्यवहार॥ १ ॥

शिक्षा आदिक सखीजनको व्यवहार कहत हैं ॥ १ ॥

नायका सों शिक्षा सखीको सवैया।

नाहलगेमुखसौतिदहेदुखनाहिंलगेदुखदेहदहैगो।
नाहिंअबैसुखदेतहैकेशवनाहसदासुखदेतरहैगो ॥
नाहितेनाहिरीनाहींभलाईभलोसबनाहहितेपैकहैगो।
नाहसोंनेहनिवाहिवलाइल्योंनाहींसोनेहकहानिवहैगो ॥ २ ॥

शिक्षाकार के वचन नायक सों नहीं लगेहैं मुख सौति के अरु वाके जो दुःख सो
ं जरायेहैं अरु लगेहैं वाको अबै दुःख तासों वाको देह दहीहै अरु जो तुमको अबै-
ं सुख देतहैं अरु नाह सदा नहीं यह सदा सुख देहैं अर्थ पाछे ताप देहैं सो मैं पुका-
ि कहत कि नहीं ते भलाई नहीं है भलो सब कोई नहीं हित पै कहिहै ताते तू नाह-
नेह निवाहु मैं बलाइ लेतहौं नाहीं सो नेह न निवहै यामें उपदेश व्यंग्यहै लाट
ास अरु कोई व्यतिरेक भी कहत ॥ २ ॥

शिक्षा नायकसों सखीकी कवित्त।

कुंकुमउवटिकुंकुमानअन्हवाइजलशोधोसिरलाइयाहिलायेकहा-
समें।चंदनचढ़ाइपुनिफूलपहिराइभूलिवेहीकाजमांजिआंजिकीनो-
प्रकासमें ॥ केशवकपूरपूरकाहेकोखवावोपानमनजोमगनहैजूऐसे-
वेलासमें। चाहिनामनावोहरिहाहाकरपांइपरसवहीसुवासवसेजाके-
खवासमें ॥ ३ ॥

नायक आन नायका को शृंगार करावत सो सुन शिक्षादेत कि वाको मनावो जाके
खवास में सबै सुवास भरी है जाको शृंगार करावत तामें विशेषोक्ति सुवास कारण
कार्य्य नाहीं है अरु जाकीबात कहत तामें दूसरो विशेष काहे योरही आरंभ ते सब

सुवास प्राप्त है है कुमकुम जवादि मेद भी पाठ है अरु जोपै मनमंगन है यह भी पाठ है॥३॥

राधाकी विनय सवैया।

ऐसेहिक्योंचुपव्हैरहिहौंसखिहौंसहिहौंसतराहटसौलों।
क्योंसरिहैमिलिवेविनतोहितऊमिलिहैमिलियेदिनजौलों॥
केशवकोरिकरोउपचारमिलेकोकहामिलिहैसुखतौलों।
देखियेअंगनआरसीलैमिलिहोपियसोंमनहीमनकौलों॥ ४॥

उक्ति सखीकी नायक सों ऐसे कबलों बुरी होगी हों तिहारो सतराहट सहिहौं उनके वेना मिले कार्य्य कैसे है है वे तऊ मिलिहैं जौलों दिन मिलिहै कोर उपाय करो जौलों । मिलि ही तौलों मिलेको सुख नाहीं अंगआरसी लेदेखो मन कबलों मिलोगी पियसों हां पियासों मिलाइबेकी विनय अरु अलंकार काकोक्ति॥ ४॥

कृष्णसों विनय कवित्त।

कंजकेसेफूलनैनदारोसेदशनऐनबिंबसेअधरहाससुधासोंसुधा-
रयोहैवेनीपिकवैनीकीत्रिवेनीसीवनाइगुहीवारसी वारीककरिहांके
करिहारचोहै॥ कैनिकुचअमलकलपतरुकैसेफलकेशोदासयातेवि
धिमुगुधविचारचोहै। देख्योनागुपालसखीमेरीकोशरीरसबसोनेसों
सवांरिसबसोंधेसोंसुधारचोहै॥ ५॥

उक्ति सखीकी नायक सों कंज से नयन दारचोसे दशन माणिक से अधर सुधासे हास त्रिवेनी सी वेनी कचसों कटि धार ज्यों सिवार भी पाठहै कल्पतरुफलसे कुच अरु कहूं अमलका फल भी पाठहै तुम अब देख्योहै की नाहीं जहां सोनो तहां सुगंध नाहीं यामें दोई हैं याते व्यतिरेक अरु व्यंग्य ते स्तुति है याते व्याज स्तुति भी॥ ५॥

राधाको मनाइबो सवैया।

नाहसिखावतनाहिंभलीसखिपावकलौंतिनकोमुहँडाढ़ो।
भौंहनकोभुलयेभटभावननैननकोमतसोहितुबाढ़ो॥
कालिहकेकालकेदीनदईहँसिपाइ परोतनप्योमुहुँकाढ़ो।
राजकरोजहँराजसदारहेकेशवचित्रज्योंआगहीडाढ़ो॥ ६॥

यह कवित्त प्राचीन पुस्तकन में नहीं मिलत ताते नारायण कवि नहीं लिख्यो॥ ६॥

पुनः सवैया।

रीझिरिझाइझरोखनिझांकिरहीमुखदेखिदिखाइसुभादों।
बोलनआयेअबोलभईअबकेशवऐसीदमेनसुदाहीं।

मैंबहुतैबहराईहैतोसीरीतूबहरावतमोहिंवृथाहीं ।
याहीसयानसदाचलिहैहौहरिसोंहँसिहांकरैमोहिंसीनाहीं ॥ ७ ॥

उक्ति सखीकी नायका प्रति ॥ कि हरि सों तो हां करत अरु मोसों नाहीं करत झरोखन झांकि रीझि रिझाय मुख देखि दिखावत जब बुलाउन आवत तब अनखौली होइ रहत ॥ ऐसी मोहिं नहीं सुहात मैं तोसी कितनी भुराई तू मोको का भुरावत मोहिंसों नहीं करत यही मनावन विभावनालंकार ॥ ७ ॥

कृष्णको मनाइबो ॥ सवैया ।

भूषणभेदबनाइकैकेशवफूल बनाइबनाइकैबागे ।
भागवढ़ाइसुहागवढ़ाइकैरागवढ़ाय हियेअनुरागे ।
पांइनिलागनसोंधोलगावतपानखवावतहीनिशिजागे ।
कान्हचलोउठबैठेकहामनमूसिपरायोसुरूसनलागे ॥ ८ ॥

उक्ति सखीकी नायकसों ॥ भूषण फूल वसन बहुत प्रकार के बनाय पहिर भाग अपनो बढ़ाय वाको सुहाग चढ़ाय प्रीति बढ़ाय आप अनुरागे पांयन परि सुगंध लगाय पान खवावत जागतरहे अब चलो मिलो परायोमन मूसिके अब का रूसत इहां चित्रालंकार सोंधो चढाइबो तहां इच्छा रूसन की ॥ ८ ॥

राधाको मिलैबो ॥ सवैया ।

दुर्लभदेवनहूंकोसुतोहरिकोमन हांसिनहूंहठिलीनो ।
टारहुजोहियतेकबहूंअबज्योंगुरको दियोमंत्रप्रबीनो ।
लेतिलियोतौनदेतदियोअबमानहुता दिन दुःखनवीनो ।
मांगनआवैतौदीजेभटूअपनोमन ज्यों बहजाइनदीनो ॥ ९ ॥

यह सवैया केशव को नहीं ताते नारायण कवि तिलक नहीं लिख्यो ॥ ९ ॥

सवैया ।

आजुदेवारिकिरातजोकीजैतौआजुकेद्योसलौं हूहैसभागी ।
बातसुनीजननीपैजबैतबहींमतिमानकी नींदतेजागी ।
अंगशृंगारनिहारनिशातिनचित्तविहारन सों अनुरागी ।
दीपदैदेवनजाइजुवामिलकेशवराइसों खेलनलागी ॥ १० ॥

पूर्ववत् यह भी अन्यको बनायोहै ताते नारायण कवि तिलक नहीं लिख्यो ॥ १० ॥

कवित्त।

जोहौंगनोऔगुणतौतूगुनैगुननगनजोहौंगुनो गुणतौतूअगुनैगुन-
में किशोदासऐसीप्रीतिछिपावतछलनमेंजैसेछिनछविछूटिछिपैजा-
घनमें॥ भारीहैनिठुरनिशिभादोंकीभयावनीमेंसोक्योंनसैपरजाको
पिय वसै वनमें । बैठेतेउठावैउठिचलेतेमचलिरहैसोईक्योंनकहै
रिजोईतेरेमनमें ॥ ११ ॥

उक्त सखी की नायका सों॥ जो मैं गुन कहों तौ तू औगुन गनत ऐसी प्रीति छपा-
त जैसे घनमें बिजुरी छपिजात यह भादोंकी भारी निशि भयावनी में पिय वनमेंहैं तू
रमें कैसे रहैगी बैठेते उठावत चलेते मचलत सो क्यों नहीं कहत जो तेरे मनमें है इहां
ष्टांत अलंकार जैसे छिन छवि ॥ ११ ॥

कृष्णको मिलैबो कवित्त।

सिखैहारीसखीडरपाइहारीकादंविनीदामिनीदिखाइहारीदिशिअ
धिरातकी । झुकिझुकि हारीरतिमारि मारिहारचोमारहारीझकझो
रतित्रिविधगतिवातकी॥ दईनिरदईवाहिऐसीकाहेमतिदईजारतजुरे
नऐनदाहऐसीगातकी । कैसेहूंनमानेहीमनाइहारीकेशोराइबोलि
हारीकोकिलाबुलाइहारीचातकी ॥ १२ ॥

उक्ति सखी की नायक सों ॥ कि वाकी सखी सिखाय घटा डरपाय दामिनी दिखाय
कोप करि करि रतिमार दे दे काम झकझोर पवन ये सब हारे दई ने वाको ऐसी मति
काहे दई है कि जारौ अपने अंगको जरावत कोकिला बोल हारिये में यह व्यंग्य
कि रिझियाये कि बोलउठैगी सब उपाइ करि हारी वा नहीं मानत ताते तुम चलो
सब उद्दीपन कारण है कार्य्य नहीं होत ताते विशेषोक्ति ॥ १२ ॥

राधिकाकोशृङ्गार सवैया।

दीनोमेंपांइझँवाइमहावरआंजमें आंजनआंखसुहाई।
भूषणभूपितकीनेमेंकेशवमालमनोहरहूपहिराई॥
दर्पणलैअबदीपतदेखिससीसबअंगशृंगारसिधाई।
वंकविलोकनअंकलैपानखवावैकोकान्हकुमारकीनाई॥ १३ ॥

अर्थ सुगम ॥ उक्ति सखीकी सखी सों। पावक अंजन भूषणादि सब मैं ने किये
पर नायककी रीतिते पान को खवावै व्यंग्य ते तू नायक पास चल यह मंडन सखी है
सम अलंकार ॥ १३ ॥

कृष्णकोशृंगार सवैया ।

पागवनीअरुबागोवन्योपटुआपटुकाकटिराजतनीको ।
सोंधोवन्योअतिचारचढ़ावतहार वन्योउरभावतजीको ॥
बीरीबन्योमुखखातमनोहर मोहिं शृँगारलग्योसवफीको ।
भालभलीविधिजौलौंगुपाल कियोवहवालवनाइनटीको ॥१४॥

अर्थ सुगम उक्ति नायक सों सकीकी पाग बागो पटुका सुगंध तांबूल ये सब यद्यपि बनेहैं तथापि जौलों राधिका के हाथ को तिलक नहीं लगो रहै तौलों सब फीको है इहां पहिली विनोक्तिअलंकार अरु मिलाईवो व्यंग्य ॥ १४ ॥

राधाको झुकियो कवित्त ।

फिरिफिरिफेरफेरफेरचोमैंहरीको मनमनफेरैफिरीपुनिभागकीभ लीघरी । पलपलपायनपरतिहुतीजिनकेसुपरचोपीयतेरेपांइपींके पांइहौंपरी ॥ वड़ी वड़ीवधुनकीवड़ीयेवड़ाईमेटिकेशौदासवडेनमें जोतुमैंवड़ी करी । हौंतौजान्योमनमेंतूमेरेगुणमानिहैहौंताहिक्यों मनायहौंजोमोहूसौंभलीकरी ॥ १५ ॥

उक्ति सखी की नायका प्रति ॥ फिर फिरके मैं उनको मन फेरचो फिर आई जाके तू पांवन परत रही सो तेरे पांयन पै परचो मैं पायन परिके जे उत्तम उत्तम रहीं तिनकी उत्तमता मेटि तिनमें उत्तम तोहिं करी मैं तो अपने मन जानी कि मेरो गुण मानि है तू मोहूंसों भली करी अर्थ रिसानी मनी धरी भी पाठ है पायन परत हीं तू याहि झुकियो विषमालंकार ॥ १५ ॥

पुनः सवैया ।

केशवराइबुलावतहैंचितचारुविलोचननीचेकरोजू ।
कालकेलावरवीसविसोंपरोवीसविसव्रततेनटरोजू ॥
आगिलगैतेरेकालकेशीशपरोहरजायवजागि परोजू ।
आजुमिलौतोमिलौव्रजराजहिनाहितोनीकेव्हैराजकरोजू ॥१६॥

यह कवित्त भी प्राचीन पुस्तकन में नहीं मिलत ताते नारायण कवि अर्थ याको नहीं लिख्यो ॥ १६ ॥

नायकको झुकियो यथा-सवैया ।

तासोंवसाइकहाकहिकेशव कामलतातरुतेदुरई ।
विधिकीगतिलोपिनजाइअलोपितप्रेमपिशीशभुजंगदई ॥

अपनोमुहुँ देखहुआरसीलै पुनि बातकहौपरमानलई।
वृपभानसुतापरऔरसुहागिन वारोंजहांलगिजीभगई ॥ १७ ॥

जासों का बसाइ तानें कामलता वृक्ष सों लपेटि नागके शिर मणिदई है कान्ह आर-
सी लै मुख तौ देखौ फिर प्रमाणवारी बात कहौ यही झुकियो किंवा तेंदू वृक्ष सो काम-
लता रई मिलाई यही झुकियो वा हाउँवाते राधापर जहां लग जीव जासों सब वारों
यह सखी नायक सों कही लोकोक्ति अलंकार ॥ १७ ॥

प्रियासों उराहनो ॥ यथा-कवित्त

केशोदासकौनबड़ीरूपकुलकानपैअनोखेएकतेरहीअनखउर
मोलिये। आपनेसमानकाहूमानसैनमानैतूगुमानकेविमानचढ़ीव्यो
व्योम डोलिये ॥ ऐंड़सोंऐंड़ाइअतिअंचलउड़ाइऐसीछांड़िऐंड़वेंड़
चितवननिरमोलिये । दीनोमनहाथजिनहीरासोंहरपिऐसेहरिसोंह
नैननीहरेहूंतौबोलिये ॥ १८ ॥

उक्ति सखीकी नायकासों तेरो कुल औ रूप बड़ो है पै एक कनख तेरी आंचर
तारि के मांगिये है अपने समान आन को नहीं मानत या गुमान के विमानपै चढ़िकै
आकाशमें फिरति जो अंचल उठाय ऐंड़ सों ऐड़ातहै सो ऐड़ छांड़ि जिन अपनो मन हीरा
रै हाथ दियोहै तिनसों धरि बोल सुभावोक्ति अलंकार १८ ॥

कृष्णको उराहनि कवित्त।

सौंहनकोशोचनसकोचकाहूवीचकीकोपोंछोप्यारेपीकलीकलोच
किनारेकी । माखनकीचोरीकीहैथोरीथोरीमोहूंसुधिजानतकहाकि
रीमोरीहैजुवारेकी ॥ मेरीयेकुमतिऔरकहाकहौंकेशोराइलागतन
लललाजइहांपगधारेकी। एतीहैझुँठाईवाहिअवहींरुठाईयंहछारहूतौ
टीनाहींपाँइनकेपारेकी ॥ १९॥

उक्ति नायकाकी नायक प्रति किंवा सखीकी उक्ति शपथ को शोच तुम्है नहीं न
को बीच में डारी ताको संकोच लोचन की पीकतो पोंछो अरु माखन जो तुम
ायो ताकी सुधि मोको है तुम किशोरी बालापन की जानत हौ मैं अपनी कुमति
कहौं तिहारे गेह में पांव धरेकी लज्जा नहीं छूटत इतनी झुँठाई अबलों नहीं
हत जो पांयन परेकी धूर वदन में ते नहीं छूटी सुभावोक्ति औ अनुमाना
कार ॥ १९ ॥

राधावचन सखीसों अपरंच सवैया।

आंधीसीधाइहैदाइदवारसीदासिनकीदुखदेहदहीहै।
तापकेतूलतमोलिनमालिननाइननाहकेनेहनहीहै॥
तेरीसोंतेरिसोंमेरीसखीसुनतेरीअकेलिकीआशरहीहैं।
कान्हमिलाउकिमोहिनपैहैमेंआपनजीयकोतोहिकहीहै॥२०॥

उक्तिनायकाकी सखीसों कि धाई आंधी सी दाई दवारिसी दासिन की देह जरत
सी तमोलि औ मालिन और नाइन तो नाह के नेहई में नहीं है कान्ह को
उ नहीं तो में मरिजाउँगी प्रश्न॥ इहांकोई कहै कि सखी कौन है ताको उत्तर॥ यह हैकी
तो नाइन नाहके तो नेह नहीं है हियमें नेह नहीं ठौर ठौर फिरतहैं फेर प्र०तहां नाह
ने नहीं तो नायका की प्रीति आगे काहे करी उ०ताते संन्यासिन जानिये का आन
के वश भई तू न है है आंधी उपमान सी वाचक धाई उपमेय धर्म नहीं ताते
ोप मालंकार॥ २०॥

दोहा–इहिविधिश्यामशृँगाररस, बहुविधिवरणोलोइ।
चारवर्णचहुँआश्रमन, कहतसुनतसुखहोइ॥ २१॥

यामें च्यार आश्रम कहेते संन्यासिनभी भई तो संन्यासिनि काम कथा कैसें सुनिहैं
को उत्तर॥कि जिनको मोक्षकी आकांक्षा है तेई रसानंदन को जानिहैं विषई पुरुष
जानिहैं जैसे शुकदेव सुतो अरु व्यास कहो फेर परीक्षित को सुनायो॥ २१॥

दोहा–राधाराधारमणके, करचोशृँगारसुवेश।
रसआदिकआगेकहौं, औररसनिकोभेप॥ २२॥

इतिश्रीमन्माहाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायांरसिकप्रि
यायांसखीजनकर्मवर्णनंनामत्रयोदशः प्रकाशः॥ १३॥

राधाको अरु राधारमण कृष्णको शृंगार वर्णन करचो अब और रसादि औ रसको
कहिहौं यह चौदहवें प्रकाश में॥ २२॥

[illegible]
गामीललितपुर [illegible]
रसिकप्रियाभूषणे [illegible]
मत्रयोदशमः प्रकाशः॥

अथहास्यरसलक्षण ।

दोहा—नयनवयनकछुकरतजहँ, जनकोमोदउदोत ।
चतुरचित्तपहिँचानिये, तहांहास्यरससहोत ॥ १ ॥

नयनमें वा वचन में जहां चेष्टा कछू आन बनावै अर्थ वाचा कर्मना ते कछु आकृति आनकी न बनावै तहां हास्यरस जानिये यह याके विभावहैं नयन वयन जब करत कछु मन मोद उदोत चतुर चित्त पहिँचानियो यहभी पाठ है ॥ १ ॥

अथ हास्यरसको भेद ।

दोहा—मंदहासकलहासपुनि, कहिकेशवअतिहास ।
कोविदकविवर्णतसबै, अरुचौथोपरिहास ॥ २ ॥

हास्य रसके यह चारि भेद हैं मंदहास १ कलहास २ अतिहास अरु चौथो परिहा नियै ॥ २ ॥

अथ मंदहास लक्षण ।

दोहा—विकसहिनयनकपोलकछु, दशनदशनकेवास ।
मन्दहासताकोकहै, कोविदकेशवदास ॥ ३ ॥

नेत्र कपोल दांत अरु दशनके वसन ओष्ठ थोरे विकसैं ताको मंदहास कहिये ॥ ३ ॥

दोहा—वर्णतबाढ़ैग्रन्थबहु, कहेनकेशवदास ।
औरौंरसयोंजानियो, सबप्रच्छन्नप्रकास ॥ ४ ॥

ग्रंथ वृद्ध भये ते नहीं वर्ण्यो सर्वस प्रच्छन्नप्रकाश होतहै ॥ ४ ॥

राधाको मंदहास यथा सवैया ।

भेदकीबातसुनेतेकछूवहमासिकतेमुसुकानीलगीहै ।
बैठतिहैतिनमेंहठिकैजिनकोतुमसोंमतिप्रेमपगीहै ॥
जानतिहौंनलराजदमंतीकीदूतकथारसरंगरँगीहै ।
पूजैगीसाधसबैसुखकीबड़भागकीकेशवज्योतिजगीहै ॥ ५ ॥

याको तिलक कविप्रियाके तिलक में हमारे शिष्य नारायण दास कवि हमसों पूंछके रखुके याते इहां नहीं लिख्यो ॥ ५ ॥

अपरंच सवैया ।

जानेकोपानसबावतक्योंहूंगईलगिअंगुलीओठनवांने ।
तौंचितयोतबहींतिहिभांतिजुलालकेलोचनलोलिसलोने ।

बातकहीहरयेहँसिकेसुनिमैंसमुझी वै महारसभीने।
जानतिहौंपियकेजियकेअभिलापसवैपरिपूरणकीने ॥ ६ ॥

उक्ति सखी की नायकासों कि न जाने आजु पान हीर सदावत रहे तहां अँगुरी नवीन ओठनमें कोई प्रकारते किंवा नवीन अँगुरी ओठमें लागि गईते चितयो सो हे सखी तू हँसी तबहीं ताही भांति ते जो लालके नयन लीलि से लिये अरु सनेहरे अर्थ धीरे हँसिके बातकही सो सुनिहैं समुझी अरु वै बहुत रसमें भीजे सो जानतिहौं कि पीयके जीयके अभिलाष सब पूरण करे तहां बात कौन कही यह प्रश्न है॥ ताको उत्तर॥ कि यामें सखी नायकासों कहत महारसभीने ते कही तुम महारसभीने हौ तो इहां राधा लायक नाहींहैं शृङ्गारके यह अयोग्य बातहै सो कहत तुम महारसभीने हौ तो पान नायक के हाथते काहे खाये जो इहां नायकाने जो कही रसभीने सोई मोद उदोत करनहार है अरु यह सब रस जो केशव कीने सो ताको समाधान केशव सो बनिहै आन सब के मतते विरोध है जैसे वीभत्स शृंगारमें उन कीनों तथापि बुद्धि अनुसार समाधान लिखो है अरु जो वस्तु जन्म की बिगरी सो नहीं सुधरत फेर प्रश्न ॥ ओठ नवीने कहा; ताको उत्तर ॥ एक तो यह कि जिन ओठन में कबहूं अँगुरी नहीं लगी याते नवीन अरु नवीने पान हर ए हँसि कि याही पदते मंद हासभी अरु सुभावोक्ति अलंकार स्वभाव वर्णन और रस-भाव भी है ॥ ६ ॥

श्रीकृष्णको मंदहास ॥ यथा–कवित्त।

दशनवसनमाहँदरशैदशनद्युतिवरपिमदनरसकरतअचेतहौ।
झांईझलकतिलोल लोचनकपोलनमेंमोललेतमनक्रमवचनसमे-
तहौ। मो हैं कहेदेतभाउ कहोमेरीभावतीकेभावते छबीलेलाल
मौन कौनहेतहौ केशवप्रकाशहासहँसिकहालेहुगेजूऐसही हँसेत-
तौहियेकोहरिलेतहौ ॥ ७ ॥

उक्ति सखी की नायक प्रति ॥ दशन वसन जो ओठहैं तिनमें द्युति दशनकी दर्शत मदन कामके रस पर्याय अचेत करत हौ चंचल लोचन की कपोलन में झांई झलकत अरु मोल लेतहौ मन कर्म वचन करके अरु भ्रुकुटीभाव भापतीं मेरो भावतीको है भावते छबीले लाल चुप कौन हेतु साधेहौ अरु प्रकाश हास हँसके कहा लेहुगे मन्द हास ते तो मन को हरलेत हौ अरु जो स्वभावोक्ति अलंकार प्राचीन कहत तामें चमत्कार नहीं द्वितीय विभावना होतहै हेतु अपूर्णप्रकाशहास नहीं दियो हरिलेत है ॥ ७ ॥

अथ कलहास लक्षण।

दोहा–जहँसुनियेकलध्वनिकछू, कोमलविमलविलास।
केशवतनमनमोहिये, वर्णहुकवि कलहास ॥ ८ ॥

जहँ कलध्वनि सुनिये कोमल निर्मल विलास देखि के तन मन मोहै सो कल-
ह है ॥ ८ ॥

राधाको कलहास ॥ यथा–सवैया।

काछेसितासितकाछनीकेशवपातुरज्योंपुतरीनविचारो।
कोटिकटाक्षनचैगतिभेदनचावतनायकनेहनिहारो।
बाजतहैमृदुहासमृदंगसोदीपतिदीपनिकोउजियारो।
देखतहौहरिदेखितुम्हैंयहहोतुहै आंखिनबीचअखारो ॥ ९ ॥

नाचको रूपक है जो सित असित है नेत्र सोई काछनी है पातुररूपी पुतरी कोअरु
टाक्ष सोई नृत नायकको नेह सोई नायक है नचावन हार अरु निनारो पाठ में निनारे
कहा व नायक न्यारोनचावति ही हो अरुमृदु कोमल हास जो है सोई मृदंगहै
त नेत्र पलकन को दीपत सोई दीप ॥ प्रश्न। मृदु हास नयननको हास बाजत कहाउत्तर।
ाँ पलक सों पलक लगति यही ॥ मानों मृदंगहै जो स्पर्श है तहां सूक्ष्म स्थूलशब्द
तहीं है सो हों देखत तुम्हें हरिको कि आज आंखिनमें अखारो यह भी पाठ है ॥
कवित्त मंदहास में जहां वातकहो हरये हँसि सो कलहास सोहै परंतु बहुत पुस्त-
 में यही लिखोहै ताते हम हूं लिख दीनो ॥ ९ ॥

अपर सवैया।

प्रेमघनेरसवेनसनेगतिनैननकीरसमें न भईहै।
बालवयक्रमदीपतिदेहत्रिविक्रमकीगतिलीलिलई है।
भौंहचढ़ाइसखीनदुराइइतैंमुसुकाइउतैचितईहै।
केशवपाइहौं आजुभलेचितचोरजुकालगुवारिगईहै ॥ १० ॥

सुगम यह कवित्त प्राचीन पुस्तकनमें नहीं मिलत याते नारायण कवि याको अर्थ
ीं लिख्यो ॥ १० ॥

कृष्णको कलहास सवैया।

आजुसखीहरितोसोंकछूवड़ी वारलोंबातकहीरसभीनी।
मेलिगरेपटुकापुनिकेशवहाराहियेमनुहारसोंकीनी ॥
मोहिंअचंभोमहासुहहाकहिचाइकहावहुबारनलीनी।
तैंशिरहाथदियोउनकेउनिगांठिकहाहंसिआचरदीनी ॥ ११ ॥

उक्ति-सखीकी नायका प्रति ॥ हे सखी आजु तोसों हरि बड़ी बारलों कहा बात
भरी कहत रहे अरु गरे पटुका डारो हियमें कहा हारमनिहारसी कहा करी मनुहा-

रिसि कीनी भी पाठ है यह मोको अचंभव लागत हाहा काहुकी चाह बहुबार लई बांह कहा बड़ी बारलौं अरु बांह कहा बहु बारनि लीनी यह दोनो पाठ है ॥ तैं कहा उनके शिर हाथदयो उनते आंचर में कहा गांठि दई पटुका में लेते बिनै इहां हरिजूने बातें कही सो सखीने ध्वनिसी सुनी याते पूंछाति है ॥ औ हँसि गांठदीनी यामें हँसिबो अरु बात कहिबो यही ध्वनिसी भासत है ॥ श्रीकृष्णको कह्यो याते कलहास भयो बांह गहाई की चाह गह्यो शिर हाथ देनेते मान छोडब औ शपथ कराइब पुनि शिरहाथ ते संकेत बतायो कि हम संकेत में मिलैंगी उन गांठ दई न भूलिहैं ॥ अर्थ हमैं तिहारी सुधि रहैगी सूक्ष्म अलंकार औ जाति अलंकार भी कोई कहत लक्षण पूर्ववत्॥११॥

अथ अतिहास लक्षण ।

दोहा—जहाहँसैनिरशंकहै, प्रकटैसुखमुसवास ।
आधेआधेवरणपद, उपजपरतअतिहास ॥ १२ ॥

जहां निःशंकप्रकट होइ हँसै आधो वचन कहि फिर हँसि उठे सो अतिहासहै ॥१२॥

राधिकाको अतिहास ॥ यथा—कवित्त ।

तैसीयेजगतज्योतिशीशशीशफूलनिकीचिलकततिलकतरुणि तेरेभालको । तैसीयेदशनद्युतिदमकतिकेशोदासतैसीयेलसत लालकंठकंठमालको ॥ तैसीयेचमकचारुचिबुककपोलनिकीतैसो चमकतनाकमोतीचलचालको । हरेंहरेंहँसिनेकचतुरचपलनैनींचित्तचकचौंधेमेरेमदनगुपालको ॥ १३ ॥

हरे हरे हँसि हँसि कहिबेते अतिहास लेश अलंकार हँसन गुणते चकचौंधी दोष भयो अरु अनुगुण भी है ॥ १३ ॥

कृष्णको अतिहास ॥ यथा—कवित्त ।

गिरिगिरिउठिउठिरीझरीझलगेकंठ बीच बीच न्यारेहोतछवि न्यारीन्यारीसों । आपुसमेंअकुलाइआधेआधेआखरनि आछीआछी बातेंकहै आछीएकह्यारीसों ॥ सुनतसुहाइसबसमुझिपरैनकछू केशो राइकीसोंदुरैदेखोमैंहुस्यारीसों । तरणितनूजातीरतरुवरतरठाढ़ेता रौदैदैहँसतकुमारकान्हप्यारीसों ॥ १४ ॥

उक्ति सखीकी सखी प्रति ॥ गिरि गिरि उठि उठिबेमें अति विह्वल ॥ कंठ लगिबेमें प्यार जुदे होत में हास्य ॥ आधे आध आखर में कष्ट गद्गद ॥ तरणि सूर्य तनुजा पुत्री यमुना तीर के तरे के वृक्ष यहां समुच्चय अलंकार बहुभावते ॥ १४ ॥

अथ परिहासलक्षण।

दोहा—जहँपरिजनसबहँसिउठैं, तजिदम्पतिकीकान।
केशवकौनहुंबुद्धिबल, सोपरिहासबखान ॥ १५ ॥

परिजन नायक नायकाको मर्याद छोड़ि हँसि उठैं सो बुद्धि बलते परिहास जानो १५॥

राधाको परिहास ॥ यथा—सवैया।

आईहैएकमहावनतेतियगावतमानोंगिरापगुधारी।
सुंदरताजनुकामकीकामिनिबोलिकह्योवृषभानुदुलारी ॥
गोपिकैल्याइगुपालहिवैअकुलाईमिलींउठिसादरभारी।
केशवभेंटतहीभरिअंकहँसीसबकीकदेगोपकुमारी ॥ १६ ॥

गोपिन कही एक गोप कुमारी आईहै सो सुनि राधा बुलाई वह वेष बनाये गोपाल रहे तिनसों जब राधा मिलीं तब सब सखी हँसीं विशेष अलंकार राधा को मान यौंरे उपायते छूटो ॥ १६ ॥

कृष्णको परिहास ॥ यथा—सवैया।

सखिबातसुनोइकमोहनकीनिकसीमटुकीशिररीहलकै।
पुनिबाँधिलई सुनियेनतनारुकहूंकहुँकुंदकरीछलकै ॥
निकसीउहिगैलहुतेजहँमोहनलीनीउतारिजबैचलकै।
पतुकीधरीश्यामखिसाइरहेउतग्वारहँसीमुखआंचलकै ॥ १७ ॥

इहां कृष्णको हास गोपिन को करनो ताके निमित्त खाली ढांककर मटुकी छींटा डार लै आई सो जब हरिलीन्हीं तब सब हँसीं यह छलकर साथ भयो याते हासपर उत्कर्ष पर जो उक्ति अलंकार अरु कृष्ण को अभिलाष दूध लूटनो गोपिन की हँसी करनो सो अपनी भई याते विषम अरु जोकोई विषाद लिखो सो नाहीं काहे विषाद में चित्तचाहमात्ररहै विषममें क्रिया करनो यह विषाद विषम को भेद शिररी तिय लैके यह भी पाठ है ॥ १७ ॥

अथ करुणा लक्षण।

दोहा—प्रियकेविप्रियकरणते; आनकरुणरसहोत।
ऐसेवरनवखानिये, जैसेतरुणकपोत ॥ १८ ॥

नायकाको विप्रिय नाम ॥ वियोग ते जहां करुणाको रंग उपजै कपोतवत औ करुणारस को रङ्ग कपोत की नाईं भी वर्णन करत करुणारस तहँ होत यह भी पाठ है ॥ १८ ॥

प्रियाजू को करुणारस ॥ यथा—कवित्त।

तेजशूरसेअपारचन्द्रमासेसुकुमारशंभुसेउदारअतिउरधीरियत
है। इंद्रजूसेप्रभुपूरेरामजूसेरणशूरेकामजूसेरूपरूरेहियहरियतहै।
सागरसेधीरगणपतिसेचतुरअतिऐसेअविवेकीकैसेदिनभरियतहै।
नंदमतिमंदमहायशुदासोंकहौंकहाऐसेपूतपाइपशुपालकरियतहै

प्र०। इहां जे कोईकहै कि करुणामें मिलन आश नाहीं अरु वियोगमें आश रहत यह भेद
चाही सो तौ केशव न राख्यो यामें वियोगहू कहो चाही। उत्तर। तौ इहां उन्माद दशा
राधाकी ह्वैगई ताते इहां उनको यह खबर न रही कि फेर मिलन ह्वै विहारी दौरत है
समुहै शशी सरसिज सुरभि समीर अरु कहोखबर नाहीं तौ कामसे रामसे कैसे कहे
तौ वहांतक नायकके रूपको विचारहै पशुपाल की जाति होइ ताहीकी निन्दा करी याही ते
खबर जानी इहां रसवत् अलंकारहै जहां रस अँगिआन अंगसों रसवद् इहां वियोग
अङ्गी करुणा अङ्गहै किंवा शृङ्गार रसमें करुणा रस याही भांति वरण्यो चाही पशुवार
वियोग है अरु ऐसनिको ऐसो न चाहिये यामें विमिय करन है पूर्णोपमा अलंकारभी कोई
कहतेहैं पहिले चरण में उर उर भी पाठहै ॥ १९ ॥

कृष्णको करुणारस ॥ यथा—कवित्त।

चंपेकेसीकलीअलीकेशवसुवासभलीरूपकेसीमंजरीमधुपमनभा
ये। देवकैसीबानीअतिबानीतिसयानीदेवराजकैसीरानीजानीजगसु
दाइये॥कामकीकलासीचपलासीकामअविलासीकमलासीधरेदेहपू
पुण्यपाइये। कौनकीनेनिपटकुजातिजातिग्वारऐसीराधिकाकुँवरि
रगोरसनिचाइये ॥ २० ॥ ॥

चम्पकली रूपमंजरी आदि अर्थ सुगमहै अलंकार पूर्ववद् ॥ २० ॥

अथ रौद्ररस लक्षण।

दोहा—होहिरौद्ररसक्रोधमें, विग्रह उग्र शरीर।
अरुणवर्णवर्णतसवै, कहिकेशवमतिधीर ॥ २१ ॥

क्रोध होनेते रौद्ररस प्रगटत ताते व्यंग्य चित्त होंक उग्रता को प्राप्त होतहै शरीर
वा रौद्ररस होनेते क्रोधमय विग्रह उग्रशरीर होतहै तौ रौद्ररसको रंग अरुण है॥२१॥

प्रियाजू को रौद्ररस ॥ यथा—कवित्त।

केहरीकीहरीकटिकरीमृगमीननफणिशुकपिककंजखंजरीटवनली
है। मृदुल मृणालविम्बचंपकमरालवेलकुंकुमरुदाड़िमकोदूनो

दुख दीनोंहै ॥ जारतकनकतनतनकतनकशशिघटतबढ़तबंधु
जीवगंधहीनोंहै। केशोदासदासभयोकोविदकुँवरकान्ह राधिकाकुँव
रिकोपकौनपरकीनोंहै ॥ २२ ॥

उक्ति सखीकी उक्ति करिके नायका को कोप मिटावत कि तेरो अंगके जे उपमा-
नेहें ते सब आप भाग गये केहरी सिंहके कटिकी शोभा हरी चालकरी को मृगके नयन
अरु मीनकी चंचलता तेरे नेत्र हारि लिये इत्यादि जानिये इहां केहरी कपोतकर भी
पाठ है अरु इतने सब वनवास लियो सो वनवास की तर्क किंवा मृगवन उद्यान में
गयो अरु वनको नाम जल भी है याते मीनवन जलमें अब कौन पै कोपकीनो है इहां
सपत्नी पर कोप जानिये ॥ उत्प्रेक्षालंकार केशव औरै वस्तु में औरै कीजै तर्क
उत्प्रेक्षा अरु मृणाल आदि लैके कुम कुम पर्य्यंत एऊ बन बसे दाड़िमको दूनों दुःख
काहे फाटजात याको उदर अरु कनक तन को जरावत शशि घटि बढ़ि होत बन्धुजीव
सुगन्ध हीन ह्वै गयो ए सब तर्कहैं ॥ २२ ॥

कृष्णको रौद्ररस ॥ यथा–कवित्त।

मीड़िमारयोकलहवियोगमारयोबोरिकैमरोरिमारयोअभिमानभ
रयोभयभान्योहै। सबकोसुहागअनुरागलूटिलीनोदीनोराधिकाकुँ
वरि कहँ सबसुखसान्योहै ॥ कपटकपटडारयोनिपटकैऔरनसोंमें
टीपहिंचानिमनमेंहूंपहिचान्योहै। जीत्योरतिरणमथ्योमनमथहूको
मनकेशोराइकौनहूंपैरोपउरआन्यो है ॥ २३ ॥

सखी नायक सों कहत तुम कलह आदिक तो मीडि माड यो अब कोप कौनपर
करतहो इहां नायकको अति अपमान भयो सो सखी छुड़ायो चाहत रचना करके
याते पर्य्या उक्ति अलंकार अरु तीसरे तुकमें कपट झटकि डारयो निपटकै औरनिसों
पहिंचान मानि मनमें भी पाठ है जीत्यो रति मति मन यह चौथे तुकको पाठ है ॥ २३॥

अथ वीररसलक्षण।

दोहा–होहिवीरउत्साहमय, गौरवर्णद्युतिअंग।
अतिउदारगंभीरकहि, केशवपाइप्रसंग ॥ २४ ॥

उत्साहते वीर रस होत है उत्साह बर्द्धनो वीर इत्यमरः औ वीर रसको वर्ण गौर
है ॥ २४ ॥

मियाजीकोवीररस ॥ यथा–कवित्त।

गतिगजराजसाजिदेहकी दिपतिवाजिहावरथभावपतिराजिचल
चालसों। लाजसाजकुलकानिशोचपोचभवभानिभौंहैंधनुतानिवान

लोचन विशालसों ॥ केशोदासमंदहासअसिकुचभटभिरेभेंटभये प्रतिभटभालेनखजालसों । प्रेमकोकवचकसिसाहससहायकलै जी तिरतिरणआजुमदनगुपालसों ॥ २५ ॥

सेनाको निबाहहै तामें गति हाथी देह दीपति बाजी हाव रथ भाव पतिराज प्यादेकी पंगति है लाजकीसाज अरु कुलकीकान अरु शोच पोच झूंठ इनकी भय भानि नाश-कर भृकुटी धनु तान कर लोचनके बाण विशालसों मन्दहास खड्ग कुच भट भेंट भई है प्रतिभट नख सो नख लालसो भी पाठ है प्रेमको कवच बख्तर पहिर साहस सहाय पाइ रतिरूपी रण जीती मदनगुपाल सों इहां सेनाको रूपक है ॥ २५ ॥

कृष्णको वीररस ॥ यथा–कवित्त ।

अघज्योंउदारिहौकिबकज्योंविदारिहौजू केसज्योंकिकेशीरायके शीज्योंपछारिहौ । हरिहौकिप्राणनाथपूतनाकेप्राणनिज्यों वनतेकि वनमालीकालीज्योंनिकारिहौ ॥ करिहौविमदघनवाहनज्योंघन श्याम काहूसोंनहारेहरियाहीसोंक्योंहारिहौ । वेहीकामकामवरव्रज कीकुमारिकानि मारतुहौनंदकेकुमारकवमारिहौ ॥ २६ ॥

उक्ति सखीकी नायक सों। प्रश्न। कंसमारि फेर नंदघर नहीं आये तब कंसादिक को कहिबो अयोग उत्तर ॥ मथुरा में दूतकी उक्ति है विरह निवेदन करत अरु जे जे मारेहैं सो सब उत्साह सों मारेहैं सो सुन वीर होतही है यहां उपमाअलंकार ॥ २६ ॥

अथ भयानकरस लक्षण ।

दोहा–होहिभयानकरससदा, केशवश्यामशरीर ।
जाकोदेखतसुनतही, उपजिपरेभयभीर ॥ २७ ॥

जाको देखे ते औ सुनेते भय उपजै सो भयानक रस है ताको रंग श्याम है ॥२७॥

राधिकाको भयानकरस ॥ यथा–सवैया ।

भुवमंडलमंडितकैघनघोरउठेदिवमंडलमंडिघटी ।
घहरातिघटावनवातकेसंघटघोपघटैनघटीहूंघटी ॥
दशहूंदिशिकेशवदामिनिदेखलगीपियकामिनकंठतटी ।
जनुपारथपाइपुरंदरकेवनपावककीलपटैंझपटी ॥ २८ ॥

उक्ति कविकी पृथ्वी पै मेघ छाइ रहेहैं अरु घोर करतेहैं आकाश मंडल में जुर

जुरके अरु घन पवन के संयोग ते घरी घरी घोरतहैं दामिनि चमकत देखि कामिनि कंठसों लगिगई ताकी उत्प्रेक्षा की अर्जुन की सहाय पाय इंद्रके वनमें अग्नि की लपट लपटी है यहां गटी समूह कामिनी आलंबन घोषशब्द दामिनि आदि उद्दीपन भयवारी चेष्टा अनुभाव शंका त्रास संचारी कंप सात्विक भय थाई ताते भयानक सो शृंगार के अंगहै ताते रसवद् जनु पावक की लपटते उत्प्रेक्षा जनु पंथहि पाइ पुरंदर यह भी पाठ है ॥ २८ ॥

कृष्णको भयानकरस ॥ यथा–कवित्त ।

रिसमेंविरसबोलविपतेसरसहोत जानेसोप्रबलपित्तदाखैजिनचाखी है । केशोराइदुखदीबेलायकभयेवतुम आजुलहुजीमेंजाकीआंखिंअभिलाषीहै ॥ सूधेहोसुधारिबेकोआयेसिखवनमोहिं सूधेहूमेंसूधीबातें मोसोंउनभाखीहै । ऐसेमेंहौंकैसेजाउँदुरिहूधौंदेखीजाइ कामकीकमानसीचढ़ाइभौंहराखीहै ॥ २९ ॥

नायक अपराध करि आपुही पुनः सखीसों कही तू मान छुड़ाउ तब सखी कहत रसमें रसके बोल यह भी पाठ है रिस में जो विरस के बोलहैं सो विष ते बड़े होतहैं सो जाने जिन या पित्तकी दाखें जिन खाई हैं ताको तुम दुःख दीबे लायक भये जाकी आजुलों आंखिन की जीमें अभिलाषि है तुम बड़े सूधे हौ अब मोहिं सुधारन आये हौ का कबहूं सूधे में मोसों उन सूधी बातें कहीहैं न कहीहैं ऐसे समय में कैसे जाहुँ तुम दूरते दुर देखो तौ काम कैसी कमानै भौंहें चढीहैं प्रबल पित्तमें दाख दृष्टांत का मोसों भाषी है यामें काकोक्ति भौंहें उपमेय कमान उपमान चढ़ी धरम सी वाचक ते पूर्ण उपमा शृंगार को अंग भय ताते रसवद् याते संकर जानिये ॥ २९ ॥

अथ बीभत्सरस लक्षण ।

दोहा–निंदामयबीभत्सरस, नीलबरणवपुतासु ।
केशवदेखतसुनतही, तनमनहोइउदासु ॥ ३० ॥

जाके देखे ते अरु सुनेते तन मन उदास होइ घृणामय होइ ऐसो निन्दा मय बीभत्सरस जानिये ताको रंग नील है अरु निंदा भय भी पाठ है ॥ ३० ॥

राधाको बीभत्सरस यथा–कवित्त ।

मातादीकोमासतोहिलागतु है मीठोमुख पियतपिताकोलोहूनेक नअघातिहै । भैयनके कंटनिकोकाटतनकसकति तरोदियो केसोहि- सिहातिहै ॥ जबजबहोतिभेंटमेरीभट्टतबतब ऐसीसोहै दिन

उठिखातिनअघातिहै । प्रेतिनीपिशाचिनीनिशाचरीकी जाईहैतू के-शोराइकीसोंकहुतेरीकौनजातिहै ॥ ३१ ॥

उक्ति सखी की नायकाप्रति यहां जो शपथ करति सो झूंठी करति कि माताको मास खाउँ जो न चलौं ऐसेही पिताआदि को शपथ करति इत्यादि जानिये इन्हींसे बीभत्स जानो जाते परनिष्ठ बीभत्स है जिनसों बीभत्स उपजै सो परनिष्ठ अरु स्वनिष्ठ में वैराग्य प्रकटत है रसवत अलंकार ॥ ३१ ॥

कृष्णको बीभत्सरस ॥ यथा–कवित्त ।

टूटेटाटिघुनघनेधूमधूमसेनसने झींगुरछगोड़ीसांपविच्छिनकी-घातजू । कंटककलितत्रिनवलितविगंधजल तिनकेतलपतलताको-ललचातजू ॥ कुलटाकुचीलगातअंधतमअधरात कहिनसकतबात-अतिअकुलातजू । छेड़ीमेंघुसेकिघरईधनकेघनश्याम घरघरनी नियहजातनघिनातजू ॥ ३२ ॥

उक्ति नायकाकी नायकसों यहां अपवित्र नायकानके अपवित्र स्थान को वर्णन टाटी टूटी घुन सहित धूमरे जालासे धुँवांसों हो रहे ॥ अर्यन से नाश भये झींगुर छगोड़ी मकरी लगी है तल्प सेज छेड़ी छोटी गली ऐसे ठौर जात घिनात नाहीं इहांभी परनिष्ठ बीभत्स कुचीलस्थल को वर्णन है जाति अलंकार जानिये ॥ ३२ ॥

अथ अद्भुतरस लक्षण ।

दोहा–होहिअचंभौदेखिसुनि, सोअद्भुत रसजान ।
केशवदासविलासनिधि, पीतवर्णवपुमान ॥ ३३ ॥

जहां अचंभव देखिके वा सुनके होय तहां अद्भुत रस होत है ताको रंग पीत है॥ ३३॥

प्रियाको अद्भुतरस यथा–कवित्त ।

केशोदासवालवैसदीपततरुण तेरी वाणीलघुवरणतबुद्धिपरमा-नकी । कोमलअमलउर उरजकठोरजाति अवलापैवलवीरबन्धनवि धानकी ॥ चंचलचितौनचितअचलस्वभावसाधु सकलअसाधभा-वकामको कथानकी खिंचतफिरतदधिलेततिन्हेंमोललेत अद्भुतर-सभरीबेटीवृषभानकी ॥ ३४ ॥

हे सखी और अद्भुत करत तूतो अद्भुत रससों भरी है वैस वाल दीप्ति तरुण वाणी लघु बुद्धि परमानकी परमान याते बड़ी आल नहीं डर कोमल अमल निर्मल है

उरज कुच कठोर जात की अबला बंधन बलवीर की अर्थ वशकर निहार है चितवन चंचल चित्त अंचल स्वभाव साधु भावादिक असाध कामकी कथनको कहत दही बेचब फिरति है जो लेत सोई चिकत ये सब बातें आश्चर्य की हैं ताते अद्भुत रस भयो अलंकार रसवत्है ॥ ३४ ॥

पुनः अन्यच्च ॥ यथा-कवित्त ।

व्रजकीकुमारिका वै लीने शुक शारिका पढ़ावैंकोककारिकानकेशवसबैनिवाहि॥गोरीगोरी भोरीभोरीथोरीथोरीवैसाफिरैं देवतासीदौरीदौरीआईचोराचोरीचाहि॥बिनगुणतेरीआनिभ्रुकुटीकमानतानिकुटिलकटाक्षबाणयहैअचरजआहि। एतेमानडीठईठतेरेकोअदीठमनपीठदैदैमारतीपैचूकतीनकोऊताहि ॥ ३५ ॥

कुमारिका कोक शारिका पढ़ावती भोरी चोरी जानती बिन गुणकी कमान बाण मारने टेढ़े मनते अदृष्ट वेझो पीठ दे मारत चूकती नहीं यहो अद्भुतता अलंकार वीप्सा जानिये अरु याको तिलक कविप्रियाके टीकामें नारायन कवि लिखचुके याते विस्तार इहां नहीं लिख्यो ॥ ३५ ॥

कृष्णको अद्भुतरस ॥ यथा-कवित्त ।

माखनकेचोरमधुचोरदधिदूधचोर देखतहींदेखतहींहियोहरिलेतहैं । पुरुषपुराणअरु पूरणपुराणइन्हें पुरुषपुराणसुकहतकिहितहैं ॥ केशोदासदेखिदेखिसुरनकीसुंदरि वे करतीं विचार सबसुमतिसमेतहैं। देखिगतिगोपिकाकीभूलिजातनिजगति अगतिन कैसेधौंपरमगतिदेतहैं॥ ३६ ॥

पुरुष पुराण लोमशादिकऋषि पूरण पुराण भारतादिक इन्हें पूरण ब्रह्म जो कहत सो काहे यंती माखन की चोरी करत यही अद्भुतता अरु अहीरिनीनि की गति देखि आपनि गति भूलि जात तो अगतिनको सुगति कैसे देहैं यही अद्भुतता अलंकार विभावना विरुद्ध ते कार्य की उत्पत्ति जो गति भूलि जैयो ऐसो दाय सो गति देय ॥ ३६ ॥

पुनः यथा-सवैया ।

वनमोंहिमिलेहुतेकेशवराइकहावरणौं गुणगूढ़ढघारे।
यशुदापैगईतबरोहिणिपैचुटिआहिगुहावतजाइनिहारे॥
घरजाउँतुसोवतहींफिरजाउँतौनंदपैसातवरादधिपारे।
सपनेअनसत्तकिधौंसजनीघरबाहिरहोतबड़ेपरवारे॥ ३७॥

या कवित्त बहुत प्राचीन पुस्तकन में नहीं मिलत ताते नारायण कवि याको तिलक कछू नहीं लिख्यो विशेष अलंकार ॥ ३७ ॥

अथ समरस लक्षणं ।

दोहा-सबतेहोइउदासमन, बसैएकहीठौर ।
ताहीसोंसमरसकहैं, केशवकविशिरमौर ॥ ३८ ॥

सबते मन उदास होके एकठौर रहै सो समरस है ॥ ३८ ॥

श्रीप्रियाजूकोसमरस यथा-सवैया ।

देखैनहींअरविंदनित्योंचितचंदकीआनँदकंदनिकाई ।
कामिनिकामकथाकरै कानन ताकेत्रिधामकीसुंदरताई ॥
देखिगईजबतेतुमकोतबतेकछुवाहिनदेख्योसुहाई ।
छोड़ैगीदेहजोदेखेबिनाअहोदेहुनकान्हकहूंहैदिखाई ॥ ३९ ॥

उक्ति सखीकी नायक प्रति चित देके कमल नहीं देखत अरु चंदको भी नहीं देखत अरु कामिनी है कामकी कथा करति है कान मर्याद नहीं मानत ताको तीन धामकी सुंदर ता ताके है कहा अति सुंदरी है जबते तुम्हें देखिगई तबते वाको आन देख्यो नहीं सुहात सो देह छांड़े है ताते तुम दिखाइ देहु इहां सबते निर्वेद है गयो तिहरिपर आशा-क्तिता है यह समरस रचना ते बात है याते पर्यायोक्ति अरु रसवत् तौ चलोई आवत अरु पर्यायालंकार भी कोई कहत कि एक तुमहीं में चित्त बसत ॥ ३९ ॥

कृष्णको समरस यथा-सवैया ।

खारिकखातनदारौ उदाखन माखनहूंसहमेटिइठाई ।
केशवऊखमयूषहिदूखतआईहौं तोपहँछांड़िजिठाई ॥
तोरदनच्छदकोरसरंचकचाखिगयेकरिकेहूंढिठाई ।
तादिनतेउनराखीउठायसमेतसुधावसुधाकी मिठाई ॥ ४० ॥

सब मिठाईते निर्वेद एकतेरे ओष्ठकी मिष्ठता पर आशक्तिता है अर्थ अधरवारी जो मिठाई है तो मिठाई के जो अन्य मिष्ठता उपमानेहं तिन सबको तिरस्कार निंदा है याते प्रतीप अरु याको अर्थ कविप्रिया के तिलक में नारायण कवि लिखचुके याते इहां नहीं लिख्यो और अलंकार पूर्ववत् ॥ ४० ॥

अपरंच कवित्त ।

दनुजमनुजजीवजलथलजननिको परयोईरहतजहांकालसोंसम-रुहै । अनंतअनंतअजअमरमरतपर केशवनिकसजानेसोईतोअम-

रुहै ॥ वाजतुश्रवणसुनिसमुझिशवदकरि वेदनिकोवादनाहींशिवको-डमरुहै। भागहुरेभागेभैयाभागनिज्योंभाग्योपरे भवकेभवनमांझ भयकाभँवरुहै ॥ ४१ ॥

इहां केशव शुद्ध शांत दिखावत तहां शांतता को रूप ऐसो है कि सिद्ध तपवन पुराण कथा श्मशान ये विभाव चाही सबमें समता ज्ञान की सो अनुभाव चाही धीर्य-इर्ष संचारी निर्वेद स्थायी सो कहतहैं दानव मानुष जे जलथल वासीहैं जीव दानव आदि जलके मनुष्यादि थल के तिनसों कालसों संग्राम परो रहत है अर्थ ये सब नाश को प्राप्त होत अरु अनंत अनंत ब्रह्मा अमर देव ते मर कर परतेंहैं ताते यह संसार ते निकस जानत सोई अमर होत अनन्त अजर अज अरोऊ मरत यह भी पाठहै तें यो-वन युत है मेरे श्रवण कानन विषे ताको सुनिकर समुझिवहवेदकी कानको शब्द नाहीं है जो त्रिकुटी विषे शिवहैं ताकी डमरू है जब तू श्रवण सुनि समुझि सबैशब्द यह भी पाठ है ताते भागोरे जो भागते भागत बने याभवके भवन में भयको भँवर मोरहै अरु कोई कहै कि अमर कैसे जानों तहां शिवको डमरू मति मानो यह वेद शब्द श्लेष है कि वेदको शब्द है कान को नाहीं वेद कहत भागहु रे जो भागते भागत बने अरु यह वेद श्रवण को वाद नाहीं शिवही को डमरूहै ऐसो भी बनत है डमरू बजाइ शिव कहतुहैं कि देव दनुज मनुजअज सबसों कालको समर है रहो है तो इहां निर्वेद सबते-उदास भये यह कहां ते आई सो उदास होनो भगवेते अरु वेदशब्द ते विभाव अरु सब मरत तो सब एक समहैं यह अनुभाव अरु धीर्य देयके भाग है सो बचिहै अरु कंप रहोहै सोई सात्विक ताते शांत रस पूर्ण भयो तहां कोई प्रश्न करै कि सबरस रसिक प्रियामें शृंगार में अंग अंगीभावते जनाये यह जुदो काहे करचो ॥ ताको उत्तर ॥ कि खारक खात तौ शृंगार में उदाहरण करचुके अब दनुज मनुज ते शृंगार आगे नाहीं है अब आन प्रसंग चलावने है कवित्तनकी रीतिवारो याते यही कवित्त ते चलायो प्रश्न ॥ तहां केशव विलास पूरणकाहे न कीनो, उत्तर ॥ तौ खारक खात में करचुके अब आन हेतु मंगल करतहैं तहां मंगल विलासके आदि अंत में कीनो आदिमेंएकरदनअंतमें दनुज मनुज प्रश्न ॥ तो मंगल में दनुजको नाम आदि में काहे धरो ॥ तौ इहां शांत रसहै सबमें समता चाही ॥ ४१ ॥

दोहा—इहिविधिवरणोंवर्णबहु, नवरसरसिकविचारि।
वांधहुँवृत्तिकवित्तकी, कहिकेशवविधिचारि ॥ ४२ ॥

इतिश्रीमन्महाराजकुमारइंद्रजीतविरचितायांरसिकप्रिया-यांनवरसवर्णनंनामचतुर्दशः प्रकाशः ॥ १४ ॥

यहिप्रकार ते हमने नव रस को वर्णन कियो अब च्यार तरह की वृत्ति कवित्तकी बांधत हौं ॥ ४२ ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्या ज्ञाभिगामीललितपुरनिवासीहरिजनकवीश्वरात्मजेनसरदाराख्यकवी- श्वरेणविरचितेरसिकप्रियाभूषणेसुखविलासिकानामटीकायां नवरसवर्णनोनामचतुर्दशः प्रकाशः ॥ १४ ॥

अथ वृत्तिवर्णन।

दोहा—प्रथमकौशिकीभारती, आरभटीभनिभांति।
कहिकेशवशुभसात्विकी, चतुरचतुरविधिजाति ॥ १ ॥

कौशिकी १ भारती २ आरभटी ३ अरु सात्विकी ४ ये चार वृत्तिहैं ॥ १ ॥

अथ कौशिकी लक्षण।

दोहा—कहियेकेशवदासजहँ, करुणाहासशृंगार।
सरलवर्णशुभभावजहँ, सोकौशिकीविचार ॥ २ ॥

जहां करुणा रस हास्यरस औ शृंगाररस कहिये औ सीधे अक्षर होहिं औ शुभ व सुन्दर भावभी होहिं सो कौशिकी जानिये ॥ २ ॥

यथा—कवित्त।

मिलिवेकोएकमिलीमिलीफिरैंदूतिकानि मिलिमनमनहिविलास विलसतिहैं। बोलिवेकोएकबालबोलसुनिवेको और बोलिबोलितीर थनिव्रतनिवसतिहैं। देखिवेकोएकेफिरैदेवतासीदौरीदौरी देवताग नायदिनदानमनसतिहैं। कौजैकहाकरमकोइहिरूपमेरीमाई यतेमेर कान्हजूकेनामहिंहँसतिहैं ॥ ३ ॥

उक्ति धाय की सखिन प्रति कि देखौ हमारे कान्हके नाम ते हँसती कान्ह काहे नहीं सुन्दर चक्षुहैं यह तौ हास्यरस ॥ किंवा ऐसे जिनको सबरी चाहत तिनको नाम लिये ये हँसतिहैं ॥ या बातको कहिके कि उनको रूप श्याम है ॥ अरु कहा करौं यह कर्मको जाने यह नाम राख्यो ॥ सोई करुणा अरु मिलिवो को एकै फिरैं मिल मिलके दूतिकानि सों एकै मनसों मिलतीं एकै मिलिबेके विलास ते विलसती हैं एकै बोलिबे को एकै बोल सुनिबेको एकै बोलिमा बोलि बोलि तीर्थव्रत करतीं एकै देखिबेको देवीसी दौरी दौरी फिरतीं ॥ एकै देवी मनाइ दान करतीं इत्यादि पदन ते शृङ्गार। किंवा विलास विलसतिहैं येभी शृङ्गार जानिये यांते कौशिकी वृत्ति रसको अंगरस याते रसवतालंकार ॥ मिलि मिलि बोलि बोलि शब्दते लाटानुप्रास भी होत है ॥ ३ ॥

अथ भारती लक्षण।

दोहा—बरणेजामेंवीररस, अरुअद्भुतरसहास।
कहिकेशवशुभअर्थजहँ, सोभारतीप्रकाश ॥ ४ ॥

जामें वीर अद्भुत औ हास्य रस वरणिये ॥ अरु सुन्दर अर्थभी जहां कहिये सो भारती है ॥ वरणहिं जामहँ वीर रस मिलि शृंगार रस यह भी पाठ है ॥ ४ ॥

उदाहरण कवित्त।

काननिकनिकपत्रचक्रचमकतचारु ध्वजाझुलमुलीझलकतिअतिसुखदाइ। केशवछबीलीछत्रशशिफूलसारथीसोंकेसरकीआडअधिराधिकारचीवनाइ॥ नीकेहीनकीवशमनीकोनकमोती नाक एकहीविलोकनगुपालतौगयेबिकाइ। लोचनविशालभालजरितजराऊलाल मानोंचढ्योमीननकेरथमनमथराइ ॥ ५ ॥

इहां सवारीको वर्णन है ॥ कि तरवन चक्र झलि मलि छवि की झूल ध्वज शीशफूल सारथी केशरकी आड अधिराधिका जाके आसरे पर सब रहत नकीब नाक मोतीमें उत्साह ते वीररस बेंदा काम लोचन मीन एक विलोकन मंदहास वारीते हास बेंदारक्त सों काम थाप्यो ताको रंग श्याम ताते अद्भुत अथवा मीन के रथ पै चढ्यो यह अद्भुत ताते भारती रसवत् अलंकार अथवा सवारी को रूपक है बेंदा में मन्मथकी तर्कनाते उत्प्रेक्षा लक्षणके दूसरे पाठमें शृंगार कह्यो तो यहां बिकाय जैवो शृंगार क्यों कि जब हँसि चितवै है ॥ तब नायक बेग वश होजात है ॥ ५ ॥

अथ आरभटी लक्षण।

दोहा—केशवजामेंरुद्ररस, भयवीभत्सकजान।
आरभटीआरंभयह, पदपदजमकवखान ॥ ६ ॥

जामें रौद्र भयानक वीभत्स रस अरु पद पदमें जमक भी होय सो आरभटी वृत्ति कहावै ॥ ६ ॥

उदाहरण सवैया।

घोरघनेघनघोरतसज्जलउज्जलकज्जलकीरुचिराचैं।
फूलेफिरैंइभसेंनभपाइकसावनकीपहिलीतिथिपाचैं ॥
चौहूंकुघातड़ितातडपैंडरपैंवनिताकहिकेशवसाचैं ॥
जानिमनोव्रजराजविनाव्रजऊपरकालकुटुम्बिननाचैं ॥ ७ ॥

तड़पै है तड़िता अरु घोरहिं घन यामें या जान्योजात कि मारिवेके हेतु क्रोध करति है ताते रौद्ररस। चौहूंदिशा तड़पै तड़िता यह भी पाठ है अरु देखिदेखि वनिता

डरपती सोई भयानक है अरु काल कुटुम्ब नाचै यामें वीभत्सरस॥ अरु हृदयमें मारिबेकी रुचि है याते आरभटी अरु पूर्ववत् अलंकार रसवत्। मानों काल कुटुम्ब ते उत्प्रेक्षा ॥ ७ ॥

अथ सात्विकी लक्षण।

दोहा–अद्भुतवीरशृँगाररस, समरसवरणिसमान।
सुनतहिसमुझतभावजिहिं, सोसात्विकीसुजान ॥ ८ ॥

अद्भुत वीर औ शृंगार रस या समरस समान कहिये॥ अद्भुत रुद्रौ वीर रस, समरस बरणि समान। सुनतहि समुझत भावमन सो सात्विकी प्रमान॥ यह भी पाठ है ॥ ८ ॥

उदाहरण कवित्त।

केशोदासलाखलाखभांतिनकेअभिलाप बारिदैरीबावरीनबारि हियेहोरीसी। राधाहरिकेरीप्रीतिसवतेअधिकजानि रतिरतिनाथहू मेंदेखोरतिथोरीसी ॥ तिनहूंमेंभेदनभवानिहूंपैपारचोजाइ भारती कीभारतीहे कहिबेकोभोरीसी॥ एकैगतिएकैमतिएकैप्राणएकैमन देखिबेकोदेहद्वैहैनैननकीजोरीसी ॥ ९ ॥

उक्ति सखीकी अन्य नायका सों। कि तू कहति है कि मोहिं श्यामसों मिलाउ सो ये अभिलाप बारि दे हे बावरि हृदय में होरी मति बारे राधा हरिकी प्रीति सबते अधिक जान रति में अरु काममें रति थोरी है इनमें भेद भवानीभी नहीं पार सकति भारती की भारतीभर शोभा है कहतमें भोरीसी जानी जात भारत में भारतकी भारती कभोरी सी यह भी पाठ है ॥ गति मति प्राण इनके एकैहैं। देखिबे में देह दोहें नयनन कैसे जोरी ॥ इहां दोहुनको उत्साह वीर जब सखी कही ये अभिलाप बारि दे हृदयमें होरीसि कहा जराइ रही यह क्रोध ते रौद्र राधा हरिकी प्रीति ते शृंगार अरु देह द्वै जीव एक इहां अद्भुत अरु भेद नहीं॥ अभेद वर्णन ते सम रस। किंवा अभिलापन को वारिदैबो विषय वासना छुड़ाइबो यह भी समरस अरु द्वै देहमें एक जीवको वर्णन तौ एक अनेक ठौर कहो याते दूजोपर जाइ अलंकार अरु एकै एकै बहुबार आयो याते लाटानुप्रास भी है ॥ ९ ॥

दोहा–इहिविधिकेशवदासकवि, नवरसवरणिकवित्त।
पांचभांतिअनरससुनो, ताहिनदीजैचित्त ॥ १० ॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायांरसिकप्रियायां चतुर्विधिकवित्तवृत्तिवर्णननाम पंचदशः प्रकाशः ॥ १५ ॥

इहि प्रकारके केशवदास ने नवरस अरु वृत्ति वर्णन कियो। अब पांचभांति ते अनरस वर्णत तापै कोई चित्त न दीजियो ॥ १० ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज काशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायण सिंहबहादुरस्याज्ञाभिग.मीललितपुरनिवासीहरिजनकवीश्वरात्मजेनसरदाराख्यकवीश्वरेण विरचितेरसिकप्रियाभूषणे सुखविलासिकानाम टीकायां चतुर्विधवृत्तिरस वर्णनोनामपंचदशमःप्रकाशः ॥ १५ ॥

अथ अनरस वर्णन।

दोहा–प्रत्यनीकनीरसविरस, केशव दुःसंधान ॥
पत्रादुष्टकवित्तबहु, करहिंनसुकविबखान ॥ १ ॥

प्रत्यनीकरस १ नीरस २ विरस ३ दुःसंधान ४ अरु पात्रा दुष्ट ५ कवित्त को कविलोग नहीं कहत हैं अनरस जानिके ॥ १ ॥

अथ प्रत्यनीक लक्षण।

दोहा–जहँशृंगारबभित्सभय, विरसहिवरणेकोइ ॥
रौद्रसुकरुणामिलतहीं, प्रत्यनीकरसहोइ ॥ २ ॥

जहां शृङ्गार अरु करुणा और रसके जे विरोधी रसहं तिनके मिले प्रत्यनीकरस होतुहै ॥ जहँ शृङ्गार बीभत्सभय, विरहीवरणे कोइ ॥ अरु बीरहि बरणे यह भी पाठ है ॥ २ ॥

उदाहरण सवैया ॥

हँसिबोलतहीसुहँसैसबकेशवलाजभगावतलोकभगे।
कछुबातचलावतवैरचलैमनआनतहीं मनमत्थजगे।
सखितूजुकहीसुहुतीमनमेरेहीजानियेनेह हियेउमगे।
हरित्योंनेकुदृष्टिपसारतहीअँगुरीनिपसारन लोगलगे ॥ २ ॥

इहां नायका सों सखीने परिहास कीनो सो सुनकर नायका कहति है ॥ कि हँसि बोलत न सब कोई हँसन लागउ हँसिबोलिबो शृङ्गार ॥ लाज भगावत शृङ्गार लोक भगयो बीभत्स ॥ बात चलाईबो शृङ्गार बैर चलयो बीभत्स मन आनत मन्मथ जगे शृङ्गार हियो न उमगै यह बीभत्स याते हंसमी यह बात जो तूने कही सोमेरे मनमें भी रही॥जानि यही नहीं ज्यों उमगै अरु जानिये है न हियो उमगै यह दोनों पाठहैं अरु हरिको चोरी भी दृष्टि पसारके मैं देखों तो लोग अंगुरी पसारन लगत दृष्टि पसारिबेते शृङ्गार अरु लोग अंगुरी पसारत याते बीभत्स कह्यो तहां प्रत्यनीक रसभयो यह परिवृत कहावै ॥ कविप्रिय में यह कवित्त परिवृत्तके उदाहरण में है ताते इहां नारायन कवि विस्तार पूर्वक अर्थ नहीं लिख्यो औ भय वीर रौद्र करुणा जहां एकही मिलै तहां भी प्रत्यनीक रस जानिये ॥ ३ ॥

अथ नीरस लक्षण।

दोहा—जहांदम्पतीमुँहमिलै, सदारहैयहरीति।
कपटरहैलपटायमन, नीरसरसकीप्रीति॥ ४॥

जहां नायक अरु नायका मुँहसों मिलै हृदय सों न मिलै यही रीति सों सदा रहैं। अरु लपटाय पर मनमें कपट रहै यही नीरस रसकी प्रीति है॥ ४॥

उदाहरण सवैया।

गाहतसिंधुसयाननिकेजिनकीमतिकीमतिदेहदहेली।
मोहिंहँसीदुखदेऊदईतिनहूंसोजनावतिप्रेमपहेली॥
आजुलौंकाननहूंनसुनीसुतौदेखिचलीहमसौतिसहेली।
जानीहैजानीमिलीमुहहींहियनाहिये भावति गर्वगहेली॥ ५॥

सखी अपनी बात कहति है कि हम ऐसी हैं सयाननी के सिंधु गाहत गाहत मतिकी दहेली ह्वै गई हैं पानीमें बड़ी बार भींजते देह दहेली जाति है सो हम ऐसीही तिनके आगे प्रेम पहेली जनावति है सो मोहिं हँसीहू आवति है और दुःखहू है तेरे छलको याते जानिहौं तुमहू मिलैंहि हियमें तेरे नाहँ नहीं भावति है हैगर्व गहेली सी नहीं तैंने अपने आंगी करि राखी है सो वह नहीं तौ है तौ सौति जो पियको मिलन नहीं देति पर तैंने सहेली करि राखीहै बारबार वहीहै तेरे पास सहेलीहू पास हीरहति है यह अर्थ तहां प्रश्न॥इहां तौ नायकाको कपट कह्यो लक्षण में तौ कह्योहै दंपति मुहँमिलैं कपट लहैं लपटाइ सो नायकको कपट या कवित्तमें कैसे जानिये इहां तौ मुहँ मिली यह पाठ है मिलेपाठ होतौ तौ दोऊ जाने जातेअरु गर्व गहेलीपद बनै दोऊ में अरु नायकमें सौति सहेली पद बनै या कवित्त में बड़ोप्रश्न है तहां उत्तर॥सखी दोउन सों कहति दोऊ बैठेहैं अरु मनमें तौ कपट है क्योंकि नायक शठ है अन्याशक्त है नायका कुलटाहै यह अन्यसों आशक्त है सो झूंठी बातें बनाइ बनाइ सखी के आगे कहत वे तहां सखी कहति है कि हमें तुम ठगत हो हम कैसीहैं जिन माते देह सयाननके सिंधुमें परति है परत परत देह दहेली ह्वैगई ताते मोहिं हँसी दुःख मोको हँसीहू है अरु दुःखहू है मोहिं ठगत हो यही तौ हँसी और तुम्हारे कपटको दुःख है क्योंकि दोऊ दई तुम दोऊ दई तुम दोऊप्रेमकी पहेली हमें सुनावत हौ पहेलीसोहै फेरि हमारे आगे कहत हौ चतुराई जनावत हो तौ जानी हौ जानी मिली मुहँ मिली वह प्रेम पहेली तुम्हारी मुहँही मिलैहि और हियमें तुम्हें नहीं ये भावति है दोऊ बात नहीं कौन मिलाप कीजै तौ भलोहै जो मिलाप न होइ तौ और ठौर पहुँचिये कैसी है वह नहीं गर्व गहेलीअपनी चतुराई को गर्वता-करि बावरी ह्वै रहीहै और की चतुराईकी सयरिही सूझति है नहीं याते वा तब कही तब सखीनें एक औरत देखी सो कहति है एक यहां सहेली है सो वह सौतिहू है अरु सहेलीहू है सहेली सौति को कोऊ करत नहीं पर या नायका के तौ मनमें ईर्षा नहीं

जो पिय सों अनुरक्त होइ तो अन्य स्त्री की ईर्षा आवै यह तो औरही ठौर लगी है याते या नाइका को इन सहेली करि राख्यांहै सो इन सखीने कही आजुलों यह बात काननिहूं नहीं सुनी सोयह आंखिन देखी चलो सौति सहेली या भांति अर्थ इहां दंपतीन को कपट वर्ण्यो याते नीरस कवित्त जानिये इहां पांचमी विभावना कारज होइ विरुद्ध ते यह विभावना महिं सौति ते सहेली के कर्म उपजे यही विरुद्ध ते कार्य यह जो प्राचीन ने लिख्यो सोईअर्थहै ॥ ५ ॥

अथ विरस लक्षण।

दोहा—जहांशोकमहिंभोगको, वरणिकहेकविकोइ।
केशवदासहुलाससों, तहँहविरसहोइ ॥ ६ ॥

जहां शोक में भोगको वर्णन होइ तहां विरस जानिये ॥ ६ ॥

उदाहरण कवित्त।

केशोदासन्हानदानखानपानभूल्योगान गयोज्ञानभयोप्राणपीठि कीसीपीठिहै । छांड़हुरसिकलालयहजकवहवाल देखतहींसवसुख तुमहिंउवीठिहै ॥ऐसीशोचसीठीसीठी चीठीअतिदीठीसुनेमीठीमीठी वातनिज्ञुनीकेहूमेंनीठिहै । इठनिसोंतूटीईठीताकेशोककीअँगीठी उठीजाकेउरमेंसुकैसेहँसिडीठिहै ॥ ७ ॥

सखी वचन नाइकासों कि नाइका की यह अभ्यस्य है न्हान दान इत्यादि सब भूले प्राणतो पीठि चौकी ताकी पीठिसे भयेहैं ताते तुम भोगकी जक छांड़ि देहु वहवाल तो तुम्हें देखि के सब सुख छांड़ि है ऐसी शोच सीठी अरु चिठी सो सीठीहै अति फीकीहै काहे- ते जु नाइका सुनति है मीठी मीठी बातें नीकेहूमें क्योंहूं क्योंहूं हँसो तौ अब यह अवस्थाहै और ईठनि सो जु टूटीहै ईठी जाके सो ताकी अँगीठी वाके उरमें उठी है सो कैसे तुम सों हँसिकै देखि है तो इहां भोग में शोक वरण्यो याते विरस भयो इहां वृत्यनुप्रास है यह भी पूर्ववत् जानिये ॥ ७ ॥

अथ दुःसंधान लक्षण।

दोहा—येकहोइअनुकूलजहँ, दूजोहैप्रतिकूल ॥
केशवदुःसंधानरस, शोभिततहांसमूल ॥ ८ ॥

जहां एकतो अनुकूल मित्रभाव होइ अरु दूजो प्रतिकूल शत्रुभाव होइ तहां दुःसंधान रस सहित मूल जड़के सोहतहै ॥ ८ ॥

उदाहरण सवैया।

दैदधिदीनोउधारहोकेशवदानकहांअरुमोललैखैहैं।
दीनोविनाजुगईहोगईनगईनगईघरहीफिरिजैहैं ॥

गौहितुवैरकियोकबहोहितुवारुकियेवरनीकीन्हैरैहैं ।
वैरुकैगोरसबेचहुगीअहोबेच्योनबेच्योतोढारिनदैहैं ॥ ९ ॥

इहां प्रत्युत्तरहै नायक अनुकूलतासों बोलतु है नायका प्रतिकूलता सों बोलति है तहां प्रश्न॥दैदधि यहतो नायक कह्यो दीनो उधार यह नायका कह्यो तब नायक कह्यो दान कहा अरु दान देहु तब नायका कही कहा अरु मोललै लैहैं तहाँ मोल लै लैहो ऐसे चाहिये है पदतो ऐसेहै जनु औरसों कहति है प्रत्युत्तर में लैहो पद चाहिये एक प्रश्न तौ यह अरु वैरु नायक के वचन है वैरु किये वरुनीकी ह्वैरहैं इहां ह्व रैहो हरैहो चाहिये रहे पद इहां अनबन है अरु तीसरो प्रश्न नायकहूने प्रतिकूल वचन कह्यो वैरुकै गोरस बेचहुगी नायकको वचन अनुकूल न रह्यो उत्तर ॥ या कवित्तको अर्थ या भांति कीजै दैदधि यह तौ नायक ने कह्यो तब नायकाने कह्यो दान तब नायका बोली कहा अरु और कहा करोगे भिक्षाहीं मांगोगे तब नायक ने कही भली हम मोल लै लैहें मोल दैकै लैहें यह अर्थ तब फेरि नायका बोली दीने विना कहा जो हम देहिंगी नहीं तो तुम कैसे मोल लै खावगे तब नायक ने कही गई जू गई कहा लौं तुम गई जू गई कहि कह्यो प्रतिष्ठा दैके कहा कि दान देहुगी पै तब नायका ने कही नगई नगई घरहीं फिरि जैहैं फेर नायक कह्यो गयो हितु वैरु कियो उन कह्यो हितु कबहो तब नायक कही वैरु किये कर कछू करुनाहूं है श्रेष्ठता है तब नायका कही नीकी है नीकी ह्वै रैहैं हम नीकी भांति रहिहैं तुह्मारे वैरुते कछू डरिहैं नहि नीकी ह्वै रैहै वैरुकै यह वैरुकै शब्द चौथी तुकको इहां अर्थमें लगाइ लीजै कहा नीकी ह्वैरैहैं वैरुकै तुमसो तब नायक कही गोरस तौ वैरुके बेचहुगी तब नायकाने कह्यो बेच्यो न बेच्यो तौ ढारहू तो न देहिंगी घरही राखिहैं इहां सर्व वचन नायका नायकके अनुकूल प्रतिकूल लगे याते दुःसंधान रस भयो उत्तरालंकारहै उत्तर जहां प्रतिउत्तरौ यह उत्तर लक्षण है उत्तरालंकारको ऐसो अर्थ भी कोई करत अरु हमारे शिष्य नारायण कविने या कवित्तको अर्थ कवि प्रियाकि टीकामें हीनरसपर खूब लिख्यो है याते इहां नहीं लिख्यो ॥ ९ ॥

अथ पात्रादुष्टरसलक्षण ।

दोहा—जैसोजहांनबूझिये, तैसोकरियेपुष्ट ।
विनुविचारजोवरनिये, सोरसपातरदुष्ट ॥ १० ॥

जैसे जहां नहीं बूझिये तैसे ताको पुष्ट भी न करिये अरु विना विचारे वर्णन करिये सो पात्रादुष्टरसहै जैसे जाकहँ बूझिये करिये तैसो पुष्ट यह भी पाठहै ॥ १० ॥

उदाहरण कवित्त ।

कपटकूपानीमानीप्रेमरसलपटानी प्राननिकोगंगाजूकेपानीसम जानिये । स्वारथनिधानीपरमारथकीरजधानी कामकीकहानीकेशो

या रसिकप्रिया के पढ़े रति मति अति बढ़ै और सब रस विरस कहा नवरस तिनकीर
जाने और स्वारथ २ कहा याके पढ़े चातुर्यता लहै तब सब राजा प्रजा को वल्लभ होइ
भांति तौ स्वारथ लहै और श्रीकृष्णराधा को वर्णनहै याते तिनकेध्यानको परमारथ ल
याते रसिकप्रिया की प्रीति ते दोऊ बातें सिद्ध होहिं ॥ १६ ॥

इतिश्रीमन्महाराजाधिराज काशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसाद नारायण सिंहबहादुरस्या-
ज्ञाभिगामीलछितपुरनिवासी हरिजनकवीश्वरात्मजेनसरदाराख्यकवीश्वरेण
विरचितेरसिकप्रियायां भूषणेसुखविलासिकानामटीकायां रसअ-
नरसवर्णनोनाम षोडशः प्रकाशःसमाप्तः ॥ १६ ॥

शिष्यसरदार कविके नारायण कवि ता कृत स्फुट कवित्त लिख्यते ॥

परमप्रकाशीसुखराशीरहैमुक्तिदासी कलुषनिवासी ऐसीकाशी
को बसैयाहौं।दक्षिणदिशामेंविश्वनाथते सुनारपुर सन्निधिकेदारह
मानकोपुजैयाहौं ॥ पुत्रअन्नपूरणाभवानीजीकोजाहिरहौं बंदीजनज
तजह्नुसुताको नहैयाहौं।वानीअवतारसरदारकविजूकोशिष्य नारा
णनाम रामसुयशकहैयाहौं॥१॥काछनीकछोटीकसे कामरीकँधापै
रे अतिअनियारेदृगतारेकजरारेहैं। टट्ठकिचलतलटलटकैंकपोलनं
करमेंलकुटमोरमुकुटसुधारेहैं ॥ खेलतखिलतजातखिरकनरायण
कुटिलकटाक्ष कचकारेघुँघुरारेहैं। चूमिचुचुकारतचरावतधरापैध
धाइधरैंधूमरीकलिंदजाकिनारेहैं ॥ २ ॥ तहांलैसखीनसंग आई वृ
भानसुता जहां खरे श्यामसखासहितनिकाईमें । तकितकि
किजकि दोउवैदुहूंकोरहे कहेकौनकविछबिउपमानपाईमें
खेलैलगेगेंदगोरीसंगमेंनरायणजू लखिलखिमारैंलगेकुचउचताईमें
उचटिगिरतकह्योकान्ह ना अधीरहोहुल्याइहौंतुरतरहोनेकधीरत
ईमें ॥ ३ ॥ चढ़िके कदंब कान्हकूदिकालिंदीकेमांझकालीनाथिल्य
येकृपाकरिकैजननपै ॥ मंदमुसुकातजातनृत्यतनरायणजूवारतअ
कामवानिकवननपै ॥ मटकिमटकिगतिअतिचटकीलोलेत भ
तिभांतिछूटीछटाछविकीछननपै । मोदभरिमोहन मधुरसुरसाधि
साधि मोरिमुखमुरलीबजावतफननपै ॥ ४ ॥ एहोब्रजनाथहौअनाथ
निकेनाथअब कीजियेसनाथमोहिंअबलाविचारिकै। देवयक्षनारि

रजेतेजीवजंतुसबै मायामेंतिहारेपरेतुमहिंविसारिके ॥ करतिविनय बहुनागिनिनरायणसों याहिछांड़िदीजैप्रभुमोतननिहारिकै महामोहग्रसितफँसितकामआदिकमेंयाहींतेनचीन्ह्योरूपमूढ़मदधारिकै ॥५॥ मंजुमोरसुकुटकपोलपैअलकपटपीततैंचटकचारुचूनरी अनूपकी। मंदमुसुकातजातकहतवनायवात श्यामपीतगातछटाछूटीछबीकूपकी ॥ नोकदार नैननतेनिहारतनरायणजू हावभावकैप्यारीभारीब्रजभूपकी। थोरीथोरीवैसमनदेखतठगोरीहोत, आजजुरीजोरीयहयुगुलस्वरूपकी ॥६॥स० ॥ जातविहालमहाइहिकालतहांतिहिकोजुरिआइघनेरी। नीकीनईनिमकीननरायण बालविशालसबै मिलिघेरी ॥ सोनँदलालतमालतरेखरे प्रेमभरेयहबातनिबेरी। मीनचखीजिनिहोविलखीतूसखीना लखीविनतीपरमेरी ॥७॥ तेहतरेरनकीजियेमोढिगप्रीतिकीरीतिमेंहोहुनिहालहि। नातोव्यतीतभईसबबातसुतोकहिहौंसबसोंहमहालहि ॥ तानसुनेतरकीतिहिवेरनरायणकोतरताकितमालहि । होइलटूझटबांधिपटूभटूभारीभुजाभरिभेंटिगुपालहि ॥ ८ ॥ कं० ॥ जगमगजटितजवाहिरकी ज्योतिजगी जमीहैजलजमुखी जूहिनकी सेजपर। जोम भरीजोवनजलूसतेजमायेजेब ज्वालसीजरबदेतमनकीमजेजपर ॥ जाहुतोजलदयोगजानिकैनरायणजू जादाजाहिजपतभई हैं वा अमेजपर। याहीजामजोहतजनीतेलैजलजहार जातज्योंज्योंयामिनीजम्हातत्योंत्योंतेजपर ॥ ९ ॥

इतिश्रीसरदारकवि शिष्यनारायणदत्तकविकृते स्फुट। कवित्त समाप्त ॥

समाप्तोऽयंग्रंथः।

पुस्तकमिलनेकाठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना खेतवाड़ी–बम्बई.